

हाललक्षणा ॥ यहकछुअचरजनिजियजानो । संतनदीनिहिमाचरभानो ॥ दोहा ॥
 आसुअशुअहोवहैलगउतपतिपितिनाश । सोजिनकेवसअसंसासमरथसवहरिदास ॥
 चौपाई ॥ रामनामकीधाराधारी । नामाकीआभाअतिभारी ॥ श्रीरामाष्टयानजोभाषे ।
 ग्रानसमानसन्तसवरखे ॥ हेरतरामरसिक्कहियहर्षतं । प्रभुसनमुन्नसयकोमनकपत ॥
 यहींसहीसुखिसत्यसिखात्र । हरिहरिजनलेवनमनलावन ॥ किरीटछन्द ॥ श्रीसिधि
 नाथपुरानप्रमानसुजानसईअनुमानसेतौलत । देहलिदीपकसेदिशिदोउमैदेरियेदेखिपरी
 दुतिदौलत ॥ आखिरमेंपरलोकविशोकमजोईभजौरधुवीरतजौलत । मोदमहानजहान
 मेंजानकोजानकिनाहकेनेइवदौलत ॥ मोदकछंद ॥ रानउपासंकअप्रअलीअति । चाव
 चहुयोचितभावमलोगति ॥ मूबनस्त्रादसंराहिसदैजिमि । योंअहशानिवद्यानिकहों
 किमि ॥ घनाक्षरोछंद ॥ रूकुमिणिसत्यभामाराधानायातीनिसेईश्रीभूलीलाशक्तिनेईसी
 तानकिभीतीहै । रामवामओरीओईजनकेशोरीगोरीहावभावकोरीदोगीप्रतीतिकीमन
 नीहै ॥ आसपासदासीरासीकरतखवासीखासीकोशालानिवासीरामरंसकीरसीनीहै
 छाईछविशिद्धिनाथजैसीहैजुन्हईजुहपाईमनभाईसाईसन्तानसोदीनीहै ॥ मादिराछन्द
 कोटिमनोअसेसुन्दरश्यामसरूपसरोजसेनैजने । बाहुविजायठकुण्डलकानकिरीट
 शिरकेशधने ॥ मण्डितमोतिनमालगरेपटपीतथैरैतनतेजतने । श्रीधुनन्दनचन्दअ
 ईसेसोत्रसेसिधिनोपमने ॥ टोटकछन्द ॥ प्रभुपूजनभावभलेभरने । शिरसोनकि
 गेधरने ॥ त्रिनयायकूबूतेसागरसो । दियअप्रदुहाइगुनागरसो ॥ तपसिद्धि
 स्वामिछियो । मनकैवरवोहितपारकियो ॥ तहँताम्बनपद्मदुंराइरहे । अतचैगनि
 नाभकहे ॥ प्रभुवोहितपारअयोतवतो । भक्तिभावकिरीटधरोअवतो ॥ मनकीगति
 जानिभली । दियआयसुयोईतअप्रअली ॥ रोलछन्द ॥ श्रीपुतनागाध्वामिभ
 निरमान्यो । दिव्यदृष्टिखलसफलहाथअमलकटुवअन्यो ॥ शांतदास्यवात्सल्य
 गारपञ्चरस । अनेभक्तिभेदउपासंकलोगलखैअस ॥ भक्तरत्नकीमालकण्ठव
 ई । जगमेंजगमंगजोतिसन्तगनआदरदेई ॥ कहतसुनतफललहतमहतजगोंचई
 व ॥ रसिकेशिरोमणिरामश्यामश्यामाकोपावत ॥ चौपाई ॥ जयजयभक्तमालसुखेंदाय
 क । लोकललितापरलोकसहायक ॥ जयजयभक्तमालसुठिसांहर । महामोहतमतराणि
 मनोहर ॥ अग्रजयभक्तमालबहुरङ्गा । पापपरावनगोगुनिगङ्गा ॥ अग्रजयभक्तमालरस
 रूरी । माधवमिलनसजीवनमूरी ॥ जयजयभक्तमालपरिपूरन । भवभयरोगसोनिहित
 चूरन ॥ अग्रजयभक्तमालजनतारन । रामअनूपरूपराधिधारन ॥ जयजयभक्तमालसु
 ठिशोभे । सरससुगन्धअलीगनलोभे ॥ जयजयभक्तमालसुरधेनू । सवजगकोअभिमत
 फलदेनू ॥ जयजयभक्तमालधनसरिसा । भगवतभजनवारिवरवरिसा ॥ जयजयभक्त
 मालशशिपावन । खनवसुधासुठितापनशावन ॥ जयजयभक्तमालभगवाना । सवजग
 पोषनकोमन्माता ॥ जयजयभक्तमालखरवोहित । भवसागरतारनसयकोहित ॥ दोहा ॥
 भक्तमालमहिमामहतकहतरहतजनजौन । लहतचहतचितसोसुलभत्याहिदुर्लभकहिकौन ॥
 चौपाई ॥ सोनसींगखुररूपमदाई । बरतनवत्सवसनयुतगाई ॥ दिहदक्षिणाद्रव्यसुठिसे
 वै । विधिवंतवरविप्रनकहँदेवै ॥ तातेशतगुनसवदिनगावै । श्रुयुतंभक्तमालसेपावै ॥
 क्रात्रीकुरुक्षेत्रमेंजाई । शशिरविगहनसमयमेंजाई ॥ त्यहिदशगुनफलहेराहियेते । भक्त
 मालकेदरशक्रियेते ॥ बहुतकविप्रसोक्तकैदंपति । पापपल्लारिदानदैसंपति ॥ भोजनभ
 लीपातिकरवावै । जोफलकूबहुकककरिपावै ॥ तातेशतगुनसवदिनसोई । परसतभ

भक्तमालमाहात्म्य ।

क्तमालकेजोई ॥ तीरधराजमकरबहुवासी । प्रातनहायकलेशुडवासी ॥ ओफल
 लहैलाखगुनताते । भक्तमालकेपूजकपाते ॥ पृथिवीदानद्विजनकोदीन्हे । व्याह
 कुमारिनकेबहुकीने ॥ विधिवतबहुतकप्रतकिनकरई । नितपितुमातृवचनअनुसरई ॥
 वापीकूपतडागखनावै । गाछिवहुतवरदागबनावै ॥ कोटिगुनाफलहोतहालके ।
 नमस्कारकरिभक्तमालके ॥ श्रीप्रमत्तपचागिगितापै ॥ जाइमेंजलमेंतनुथापै ॥
 बरषावैठिसहैजलधास । धराप्रदक्षिणकैबहुवारा ॥ शय्यादानमकानदियेते ।
 जोफलपावहिंकबहुकियेते ॥ तातेकोटिकोटिगुनतच्छिन । भक्तमालकेभरतप्रदच्छिन ॥
 कोटिनवाजिमेधमखकरई । शंखनराजसूयसिधिसरई ॥ जाहिरसंज्ञाज
 पेयादिक । संयमितयमपुनीतप्रसादिक ॥ सोसवफलअनर्गतगुनेते । भक्तमाल
 भरिभावसुनेते ॥ एकादशीउपासअनेका । गंगानहानसमेतविवेका ॥ जपतप
 तीरथपानिपियेते । पोथीपुंजनिपाठकियेते ॥ भगवतकथाभावभरिगावत । भक्त
 फलभक्तमालसेपावत ॥ भक्तमालजेकहैअनूपा । उनकोअनुमातोहरिरूपा ॥ भ
 क्तमालकेवाचनहारे । तिनकोजेअननितसतकारे ॥ असनवसनधनआदरअर्चा ।
 पुनकीधमपुरहोतनचर्चा ॥ सबसुखभोगभलेभुविपावै । वैठिविमानविंकुठसिधावै ॥
 तिनकीपदपंकजजरूरी । अभिलाषैसुरगोइगरूरी ॥ दोहा ॥ धन्यधन्यधनि
 धनिधरणि भक्तमालभगवन्त । सकलसुयशसककौनकहि । जोमुखहोहिअनन्त ॥
 घनादारीछन्द ॥ भनतभकारभूरिभवभयदूरिहोतगुणगणपूरिहोतगनतगकारके ।
 तरणितमाभतेजतततकारतनमदैमनमहामोदमनतमकारके ॥ ललकिलकारकेल
 पेतेलालोकलाम सिद्धिनाथपरेप्यारे राम सरकारके । भक्तमालभाखा ताकेसरवरि
 राखा खो न ऋणीहोनअभिलाखा कौशिलाकुमारके ॥ दरसत भक्तमाल भूरिभाग
 भालहालझरसतरोगसोगकामकोह कायाके । परसतपापुंजपरमंपरातजाततांपदा
 पदूरिसुखसरसतसायाके ॥ पूजतपुनीतपुन्यकहैकविकौनगुनधरकताकेअंकशुन्यसो
 धिसीसनायाके । सिद्धिनाथ सिद्धिसुनेलोक परलोकवृद्धिगायामनभ्रायादायानि
 द्विरामरायाके ॥ सुनतसुहातसुठिसाँचसुखढेरिहोतनचतनज्ञाफेरितप्योतीनिता
 पसे । यमलोकजाँचनाहितनकनआँचताहिजाँचनुसुचितचाँहिचारोओरआपसे ॥
 सिद्धिनाथमहिमाप्रसिद्धिवदिकहिमाहैमहिमाहिंशुद्धिलहैकेतेयाप्रतापसे ॥ भक्तमा
 लभक्तमालभक्तमालभक्तमालभक्तमालभक्तमालभक्तमालजापसे ॥ वेदऔपुरा
 नोभेदधीरक्षीरनीरनिधि । नाभामतिधीरमानोमन्दरपहारहै । झारबारजाँचियाँचि साँ
 चिसाँचिसारसारसाँचिकैनिकारिलियोकियोउप्रकारहै ॥ भक्तमालकल्पवृक्षजगम
 गजाँतिहोतिऔरसबवल्पजकठोरठोरखारहै । आवैप्राकैतलतसुपावैमनभावैफल
 गावैकसिसिद्धिनाथभलाहियेहारहै ॥ जहाँजहँगनेमन्थऔरशुभपन्धमज्ञेकियेकविसंथ
 भनेठनेबेशुमारसो । तहाँतहाँअसरसकहाँरहालहाकिनछिनछिनछविद्याकिकौशिला
 कुमारसो ॥ ऊखरूखकीमिठाईपाईकिमिसमतईचूखतपियूखकीनआईअनुहार
 सो । सिद्धिनाथकैसिहालहालहैरसालप्रभक्तमालजक्तजनजीवनअधारसो ॥
 चौपाई ॥ भक्तमालभावैभगवानै । सुनैजहाँजनकोउग्रखानै ॥ भगवतभक्तमालके
 नेमी । सुठिसुखसमुद्धिसुनैप्रमुप्रेमी ॥ जैसेसन्तभजेभगवन्तहि । त्योथगवन्तहिभा
 वतसन्तहि ॥ भक्तमालकोवाँचिसुनावै । श्रीपतिसन्मुखमलफलपावै ॥ परसथ
 ससहोतहरिहेती । तवसबपूरपैचितचेती ॥ चहसुनिजनिअचरजउरआनो । भ

क्तमालसुनतेभगवानो ॥ संशयसकलदूरिद्रुतकीजे । यकइतिहासकहैसुनिलीजे ॥
 श्रीयुतवृन्दावनकेवासी । दासमनोहरसन्तसुपासी ॥ सहसनशिष्यसमूहसुजांना ॥
 श्यामाश्यामसनेहसमाना ॥ तिनमेंश्रीयुतप्रियादासजी । श्रीपतिरतिनहिऔरआ
 सजी ॥ काव्यकलामेंकुशलकुलीना । गुणगणगावहिपरमप्रवीना ॥ सङ्गतिभेसुख
 शोधिजियाके । भयेभक्तबहुसियापियाके ॥ भक्तमालभाषणभटभारी । प्रीतिपु
 नीतिरीतिरुचिकारी ॥ भक्तमालकोमानिप्रतापा । राजारंकरहेकरियापा ॥ किये
 कवित्तबन्धजोटीका । सोनगमेंजाहिरनितनीका ॥ साधूप्रियादासयकपेरा । होइ
 लगाउयेकरिफेरा ॥ जोहैब्रजकेनिरखिनगीचा । केवलवीसकोसफोवीचा ॥
 लालदासतहंसन्तमहन्ता । ठाकुरद्वारामेंश्रीकन्ता ॥ लालदासजीलकलखाई ।
 प्रेमीप्रियादासमनभाई ॥ तबठाकुरसिंहासनआगे । भक्तमालवरवाचनलागे ॥
 दोहा ॥ उरउपज्योअनुरागअति सुनैसदासंघसन्त । आवैऔरअनन्तइत महिमामो
 निमहन्त ॥ सोरठा ॥ जेजड़जीवजहान कानकियेकवहुकथा । भक्तभयेभगवान
 भक्तमालकेभावभरि ॥ मालतीछन्द ॥ सतसंगकिकौनकहैमहिमांसतसंगिनसंग
 विशेषअनन्दहि । त्रिमिसन्तसमागमपावततन्तअनन्तपुरीगेअनामिलमन्दहि ॥
 श्मिमालिनिमालतिमालबनैशिवशीशधरोसिधिनाथसोयन्दहि । त्यहिसंगचढीक
 ढिअन्तरसेचिरचोरपिपीलिकचुम्बतचन्दहि ॥ मत्तगमेन्द्रछन्द ॥ यासनसारअसा
 रबजारअहैअबलाअनुहारिअमासे । मोहमहाठगठाकुरसो सिधिनाथरहौहुशियार
 जमासे ॥ लागितृषाकिमृषाजलजोवतक्रयोनहिखोवतक्षीरक्षमासे । साहेबिपायन
 भूखोभलादिनचारिमेंहैतमामतमासे ॥ चौबोलाछन्द ॥ तहयकरोजकथाकेकार
 नभावतभारीभीरभई । सहितसमानश्यामसिंहासननिशिमंचोरनचोरिलई ॥ प्रांत
 सबहिदिलखातदेखिद्रुतप्रियादासयहवातकह्यो । श्रीपतिसन्तसुयशसुटिसुनतेसो
 श्रुतिसौचौबोलरह्यो ॥ उनबिनकहोफथाकिमिकहियेसोशुभश्रोतापरखकरो । ऐहै
 भक्तमालसुनिबेकहैयहप्रभुकेप्रणूपरो ॥ ताहीरैनिरामकीइच्छाशुभशिक्षासबचो
 ररहै । धनसमेतसिंहासनदेकैदिसालैकैचरणगहे ॥ गीतिकाछन्द ॥ यहभक्तमाल
 प्रतापपूरनपेखिकूरनकोपरो । कहुकानकैकवहुकथामनमैलमोहमहाटरो ॥ भगवा
 नभावभरेखरेभवभीमसागरततरे । अनुरागसेसुनतेसदाउनभागभाषणकोकरे ॥
 हरिगीतिकाछन्द ॥ यकमुक्तदूजेमुक्तिचाहीवरनिविषयीतीसरे । श्रीभक्तमालसु
 हातसयकोबोधविस्वांशीसरे ॥ मनमुक्तऔरमुमुक्षुजनकोरामरंगरिझावई । माशुक
 आशिकरीतिगखिलखिलाभविषयीपावई ॥ दण्डकलाछन्द ॥ सुनतेभगवानाज
 नमनमानो भक्तमालकीकथायथा । दूजोइतिहासकरैप्रकासाभासाभासानित
 था ॥ भवकीभयभूरीसंशयदूरीभक्तनमेंभलभावभरै । सुनियोसवसज्जनयहइतम
 ज्जनमहामोहमनमैलहै ॥ प्रजमण्डलवीचानिपटनगीचाकामानामाप्रामअहै । त
 हैवाकोवासीसन्तसुपासीसाधुगुरुधनदासरहै ॥ भलभक्तभरोसोखुखरोसोश्या
 माश्यामसनेहसटो । सतसङ्गतिभावैजहंतहैजावैगावैगुणगणरामरटो ॥ जैपुरहिअ
 वादीगलतागादी जाहिरजोइजहानअहै । गालवसुनिनामाउनकोधामाआगेकोस
 वकोउकहै ॥ सियरामभजनभलभावनपलपलरहितहितलचितनितउपगौ । गुरुधना
 यकवारातहासिंधाराभक्तमालपरप्रेमपगै ॥ गोविंदपधारेठाकुरद्वारेपूजकराधारमण
 रह्यो । लहिशुभसंगतिअतिरसंगतिजंनसंगतिप्रभुप्रीतिगह्यो ॥ वाचनतहैलागेअति

अनुरागेभक्तमालभरिभावभलो ॥ सुनिवेजनआवैसुठिसुखपावैगुरुधनकेवचविगतम
लो ॥ घनाक्षरीछन्द ॥ जैसेअन्यअन्दरमकानकेरजानहेतटकिटेकिभीतिआवैद्वारओर
हेरि कै । छुटिकैलंगोटीलगिचोटीखजुआनतव अटकेसेहाथपावैभीतिछोरफेरि कै ॥
मायाअन्यजीवजोहीभीतिचवरोसीसोहीनरदेहद्वारओहीआयाजबधेरिकै ॥ तुंसना
लंगोटीचोटीप्रीतिरीतिछोटीकरिकहेसिधिनाथधामधसोरामटेरि कै ॥ चौपाई ॥ भ
क्तमालपूरानहिभयऊ ॥ गुरुधनदासकहूचलिगयऊ ॥ सोसतसङ्गविद्योहविधारी ।
सुजनसमाजदुखारीभारी ॥ सुरपुरनरपुरमुक्तिहुमाहीं ॥ लवसतसङ्गसरिससुख
माहीं । ठाकुरद्वारेंभुभसूरति । श्रीगोविन्ददेवकीमूरति ॥ भक्तमालकीकथासुने
बिन । श्रीपतिवड़ेविकलछतिछिनछिन ॥ गुरुधनदासओलकोफेर । आपबुलाइ
लियेनिबनेरे ॥ बोलेसन्तकथाअबवाँचो । सकलसमाजसुधासुखसाँचो ॥ प्रथम
प्रबन्धकहाँसेछूटे । लागिबिसूरनभावनऊटे ॥ वैरविचारिविकलभगवाना ॥ संत्र
केसुनतहिवचनबखाना ॥ लागिकथारैदासकथासो ॥ भावतभक्तमालम्वहिभा
सो ॥ भक्तमालकीकथापियारी । मोकोलागतिहैभलभारी ॥ जोकोऊवाँचितज्य
हिठाऊँ । नितचितचोपसुनैतहँजाऊँ ॥ बाँचनधारेपरमापियारे । उनकोदेखलो
कसुखसार ॥ मुक्तिचारिविधदेउँजहूँपर । तिनकेरिनियारहौँतहूँपर ॥ आँचीभ
क्तमालजहँजाई । तीरथशतसमभूमिसुहाई ॥ केवलपोधीधरोजहाँहीं । यमगण
जायसकैतहाँहीं ॥ भक्तमालभलवाँचनवारा । ताकेमानिसुखसंसारा ॥ अन्तस
मयवरवैठिविमाना । भरेसरिसुखरूपसुहाना ॥ जाहिरजगमगजगमगहोती । कोटि
नसूरजकेसमजोती ॥ यदपिप्रकाशपुंजकबिफैला ॥ लोगलखैनलग्योमनमैछा ॥
सुरसुन्दरीकरैसुठिसेवा । गुणगणाइरहैदिहदेवा ॥ खानपानसामानसमीपहि ॥
सपनेसुलभनमहामहीपहि ॥ दोहा ॥ ऐसेवेआवैअवशि भरेलोकअशोक । भक्त
मालगावैगुनहिजेतेसबसुखओक ॥ सोरठ ॥ भक्तमालकीथापपूजितपोधीजहँ
रहै । होतनहींसन्ताप रोगसोगताऊनतहँ ॥ ऊनपरैताऊनभक्तमालकेनामसे । सुने
गुनेफलदून वाचकदरशतपरसतहु ॥ चौपाई ॥ श्रीगोविन्दचन्दकेमुखसे । भक्त
मालमहिमासुतसुखसे ॥ सुनिसवसाधुसभासुखपाया । प्रकटप्रभावप्रभूदरशाया ॥
श्रीपतिप्रतिभावोलवतावत । लोगनलगिअचरजअतिभावत ॥ विदितवाहसंसा
ररहीसो । सरहतसन्ततसन्तसहीसो ॥ वेदलयेदबिषलखिलीजे । सन्तमहन्तअनन्त
भनीजे ॥ संशयसोउतजोवरकेरो । सन्तनकवशमेहरिहेरो ॥ श्रीपतिकोअभिलाष
लहेजव । भक्तमालकीकथाकहतव ॥ बरनतवनतनअतिआनन्दा । सोसुनिभेसुठि
श्यामपसन्दा ॥ जहँतहँकेश्रोताजआये । तेजनमनभार्येफलपाये ॥ तन्तजिअन्तअ
नन्तलोकलहि । वैठिविमानअशोकओकवहि ॥ तवसवलोगअधिकअभिलाषे ।
यकथकपोधीकीप्रतिराखे ॥ लाखनपोधीराखनचहँहीं । भारीभयेभागसेलइहीं ॥
दोहा ॥ भक्तमालभाषाभली श्रुतिशाखासमशुद्ध । श्रीपतिश्रीमुखजासुको ब्रह्म
वरनेश्रविरुद्ध ॥ रूपसवैयाछन्द ॥ भक्तमालपोधीकेपावनपूरिप्रतापपुनीतप्रमानो ।
यक्रनमदनि कटवडेनक्रोवासीविप्रविनीतवखानो ॥ जासुपुनरदेवजगजाहिरसोगल
तागादीकहँआयो । कैसतसङ्गतिरामरगरखिभक्तमाललखिलकलिलिखायो ॥ सो
लैचल्योदेशअपनेको अतिअटपटभगमैठगघरे । सबअसवाबकितावछीनिछलिमारि
डारिगुनिगङ्गमंगरे ॥ ताहीरातिजातिअपनेको सपनेकोसबकोदरशायो । भक्तमाल

रुचिररूपभयङ्करचोरनकोचहुँ औरस्तवायो ॥ जोनिजमलाचहैरेधोरो द्विमकीदेहगेह
 पहुँचावो ॥ भक्तमालछातीपरछापो आपोताकोनायजिवावो ॥ मुनिगुनिपुनिइत
 नितवित्चाकसः खोरचतुरचलिभोरभयेजु । हरिकोहकुमहरपिहियकरिकै उरपरपो
 भीराखिदमेजु ॥ निप्रयहोरिब्रेमिजठिवैठो सोवतसेजनजागतजैसे । सबसामान
 सोपिअनिरुचिसे सिगरेशिष्यहुयेतहँतैसे ॥ लखिलोगनकोअचरजलागो असयश
 अगजागोचहुँओरा ॥ प्रीतिप्रतीतिपरीपोथीपर लोधीजियतकृपाकीकोरा ॥ सोर
 सुमेरदेवद्विजडुनियो । भक्तमालकेहालवतायो । सुरपुरमेंसुठिमुयशस्तमाना इन्द्रादि
 कंदेवनमनुभायो ॥ देवदराजसमाजसाजसुठि बुचिसेहासनसोहैसोई । तापर
 भक्तमालकीपोथी पूजाप्रकटबरीमेंजोई ॥ मोयोभक्तमालअनुगामी समुझिसुरेशहिये
 हरखाने । आगेआयखिलेमनुमोदित नैनननोरलमेवरखाने ॥ दायपभरिलेसायगेब
 गृहदयेसुआसनमुखसुपसन्दा । जयश्रीभक्तमालधुनिअईपुनिपुनिसुनिमुनिअधिकअ
 त्तन्दा ॥ सबैयाछन्द ॥ सुरपुरहालहेरिमेंआयोतुमकोलौटिमुनायाँसोद । नुनतसुमेर
 देवकीधानी उरआनीबुभिरुचिसवकोई ॥ धन्यधन्यश्रीभक्तमालमहिनाकीकीरतिसुर
 पुरमाहि । जोपैमृतकजिब्रेजगजाहिर तौभलफलकशुद्धुलभनाहि ॥ अवडिहासथान
 इतआनत सुनौकानदैसेकलसुजान । रामतगयेसन्तसङ्गाहिमें निवसेएकनगरमेंआन ॥
 कवहूप्रियादासहियहरेपेवरपेभक्तमालजलइल । सोमंसारतापतहँतारयो मुनिगुनिपुनि
 नरतिप्रदतिहाल ॥ तहँयकनिकयापपारायण मुखनगिलोनारायणनाम । कामफाह
 मंदमोहमधामन मण्डितदेहगेहधनधाम ॥ पण्डितसङ्गति करतनकवहँतवहँप्रियादास
 केपास । हाथजोरिपदमाथमोरिकै कीन्हींआपनिआसप्रकास ॥ भवसागरकेतारन
 कारनवारनसमरथहँयकसन्त । आपहुकधोकोथामेंअसयशठनकेवशचरतीभगवन्त ॥
 ज्योथीराउरकेकरपोथी वामेंसन्तअनन्तवसन्त । भेगोनरणचपायवहीहैदेहुलियायमितौ
 श्रीकन्त ॥ मुनिगुनिप्रियादासदायाकैदूसरिभक्तमालप्रतिदीन । पायपल्लोदिलाय
 निजमन्दिद्वैदिनपोधीपूजाकीन ॥ आखिरवाकोअन्तकालमेंआनैआनिअटयमदूत ।
 थापीपेखिगेमेंकांसीगांसीदीहेविकलवहूत ॥ ॥ तौलौभक्तमालकीपोथीलौधीपरपुत्रन
 द्वियराखि । प्रकटप्रतापपापुनिदृटिगकटिगेसङ्कटसोसुठिजालि ॥ प्रभुपार्षद
 तआप्रायेदेखतयमकेदूतपरानि । वनिकधन्यवैतन्यभयोसोभाप्योसवसाहाललखा
 ति ॥ हरिपदछन्द ॥ पोथीपूजप्रतापथापसेछुटिगईयमफांस । हरिजनआयेदूतभगा
 येमोकोभिलीडिसांस ॥ यहीरीतिरुचिकीन्हींकुलकेराखेरह्योप्रतीति । अवनिमानवर
 वैदिक्रतहौ हरिपदआरअभीति ॥ सुतसमुझायतेगितनतैसे वेगिबनिकवरसोई । अ
 त्तिअशोकैकृपठलोकको गयोभयोजियजोई ॥ ताकुलरोतिचलीअव आवतलोधीपो
 थोधाय ॥ जयश्रीभक्तमालहरिपदप्रदयमपुरप्रकटप्रताप ॥ मौक्तिकदामछन्द ॥
 तत्रैयनदूतगयेअमपास । द्वियेधरिदएहहुपाशउदास ॥ करोप्रभुआपननौकरऔर ।
 खहँहमकयौ दुखडौरहिठौर ॥ गयेजवविभ्र अजामिलधाम । लयेउनपुत्रनरायणना
 म ॥ हँहैहरिपार्षद गारनलाशि । तहातितसे बचिआयनभाशि ॥ चंबलाछन्द ॥
 तैसहालहालमेंही जनकोवैश्यभोक । भक्तमालपोथिलोपि राखिगोअशोकलोक ॥
 भक्तमालकोप्रताप जकमेंजगातपूर । कौनथापआपको जुतापलेतेपेनकूर ॥ दूतपेन
 कानकैप्रधान भक्तधर्मराज । दीनहैनिदेशयो विचारिकै करोस्वकाज ॥ रामभक्ति
 भक्तमालप्रती रीतिदेखिलेहु । पापपुंजपैनजाहु ताहुगेहुलेनकेहु ॥ वनाक्षरीछन्द ॥

कह्यंमराजजीववाजकैदराज भाजकाजकैविचारि शिरताजताविसारिदे । परेमेरे
 चित्रगुप्ततोसौ कह्यंविरेवेरेफरदको फारिफेरेगरदमेंगारिदे ॥ सहीकानिसहीरही बही
 फिरवहीवही खोजुरोजुनामचकौ भूमिभारेमारिदे । सिद्धिनाथजकजोभै भक्तमाल
 भोरसालताको अकबालफक्तनाम पापीतारिदे ॥ वरजतधारमार वृत्तश्रौयमराज
 गरजतभक्तमाल जहांजनिचायोरे । श्रोताअरुवक्ता जेतभगवतभक्ता तेतेआन्धोजस
 जक्ताजोरिहाथ माधनायोरे ॥ पापनकोथापनपै आपननिवैहैराम सिद्धिनाथ तापनको
 शोखिसुखदायोरे । रंफेरछोमेरेलोक आवैनाहिपावै ओईनातोखोई नरकनफेरकप
 रायोरे ॥ दोषकछन्द ॥ सुनिस्वामि सिखावनसोइसवैते । करतेनितनेम निपाहनवैते ॥
 यमदूतशकानि शकानिरहैजू । हरिभक्तकया नहिजाहितहैजू ॥ इसपुस्तकप्रीति प्रती
 तिकियेते । मनभावतंसोफल लोगलियेते ॥ परकासकरौ इतिहासतथा । सिंगेरसु
 निलहु सुजानयथा ॥ विष्णुपदछन्द ॥ नाउँगुमानीलाल ठाउँठपिरत्यकगाँवसे ।
 प्रीतिप्रतीतिसन्तभगवन्ताहि इन्द्रियभानिकसे ॥ रामगामकीरटनिपटनिसँ रुचिभुचिसो
 इसदै । गुरसुरमहिसुरपूजत प्रतिदिनबन्दतविष्णुपदै ॥ भक्तमालभांपान्तर कान्होप्रो
 धीप्रकटअहै । ताहीकालहालजो भयऊसोसबकोउकहै ॥ बहुतवरसकीवधसे भीति
 कैदकहिपुत्रभयो । याहीतेअधिकीउसऊपर छिनछिनछोहल्यो ॥ ताकोतहाविमारी
 भारीरोगमृगीकिसही । सोईभईभवनकेभीतर भांगिनिराहरही ॥ प्रीतिपुनीतपरी
 पोधीपर लाललिखतरहो । बड़ीबेरमेंगशोवालदिग तवतियकटुकह्यो ॥ पोधीनिन्दा
 बैनसकेसाहिबोले बैनतहां । पेलुप्रतापअरीअव याकारैहैरोगकहां ॥ भक्तमालउत
 सुतकेउरपर धरतहिमृगीगई । विदितवातसंसार सबकोवहुरिकबानभई ॥ मल्लिका
 छन्द ॥ भक्तमालकोप्रताप । जक्तमेंअहैअनाप ॥ ऐसहीअनेकऔर ॥ भे विचित्रठौर
 ठौर ॥ भापियेसुकौनकौन । चारुहैचरित्रजौन ॥ प्रीतिकैमनोथिजोई ॥ पूरिहोतसोइ
 सोइ ॥ चौपाई ॥ सुनहुसुजान औरअवभाखौ । संक्षेपहिकहि गोइनराखौ ॥ ढा
 लामऊ गंगकेतीरा । तहैश्रीहरीदासमतिधीरा ॥ रामनामजपि अक्तभियेसो ॥ भक्त
 मालपरप्रीति कियेसो ॥ ममप्रपितामहके व्यवहारी । उनकेअमित चरितभलभारी ॥
 तुलसीदलदीन्है काहूको । अन्नकमी परधोताहूको ॥ सोआखपाहित बनीसुहारी ॥
 हानेलांगी पायंपखारी ॥ साधुपांचसौ आहंपरेजू । ताहीसमप्र उचहिसतरजू ॥ उत
 नेहीभोजनमें सबको । पूरोपरोकरै यहभवको ॥ सोप्रतापभव भक्तमालको ॥ हरी
 दासकी चारुवालको ॥ रायबरेली जिलाअताऊंग । खिखवरनाउँ गाउँकटाऊंग ॥
 गुणगणमाण्डतपण्डिततामहँ । लालाराममोरप्रेपितामहँ ॥ रूढवांकेराजी जिनमुखसे ।
 श्रीभागवतसुने सुटिसुखसे ॥ गनिअध्याय तीनिसैपैतिसँ । तैयिगदाभुवदेन चह्योति
 सं ॥ बाबाकह्यो भूपसुनिलीजे । केवलवारह विगहादीजेग । सोसन्तोष कहैंकोपाई ।
 भक्तमालपर प्रीतिददाई ॥ श्रीशिवदीनगम लघुभाई । तिनसेकोऊ कियोलराई ॥
 वन्दुहिवरजिबवा कियक्षमसो । गारीदित लेतकाहमसो ॥ नामहुलासः परोसीसोई ।
 पैटपिरानेजान सबकोई ॥ मलोभयो पुनिपाँचपरसे । भक्तमालअस सुयशभरेखे ॥
 ब्राह्मणभामपितामहमेरे । श्रीभागवत कण्ठजिनकेरे ॥ तालुकदार शिष्यप्रदपरहीं ।
 सानितनेम नीकनिरवरहीं ॥ वारहपाठ सहस्रनामकी । साठसहस्र जपरोमनामकी ॥
 श्रीभागवत पाठपुनिकरते । दशअध्याय सबहिसुखभरते ॥ उनकेमुखसे मैसुनिपाई ।
 भक्तमालकी करतबड़ाई ॥ छीतूदासभक्त भलप्रेमी । भक्तमाल वाचनके नेमी ॥ अं

तरवेदएक दिनभाये । धनुषयज्ञउत्सव करवाये ॥ तह्यैकविप्रवान् मरिगपऊ । पो
 धिलोधिषरि ज्यावठभयऊ ॥ दोहा ॥ पितुश्रीरामदयालनम पण्डितश्रीपतिप्रीति ।
 श्रीभागवतादिकभनत भक्तमालरुचिराति ॥ घनाक्षरीछन्द ॥ निजमुग्नगानसन
 भावतहैनिजहृत् सन्तपशभावतयतावतहैताहिते । भक्तमालकृपाकरभयाभनभायो
 मोरटोरटोरकौशिकशिरोरओरगाहिते ॥ औरैकोअघटमोऊ सुघटभोचटचटअट
 तनअटपटखटकनकाहिते । सिद्धिनाथमेरेमाथ हाथफोरसीतानाथ मगटगवेरेसाथन
 च्योजीवजाहिते ॥ मत्तगजेन्द्रछन्द ॥ भावौमहेदानत्यागै हलाहलशेराकेदीशमै भू
 निवसौहै । अम्युधिभातश आकरकोउरअन्तरराखतजानियसौहै ॥ हैनयकौगुनतौ
 गुनमानतसौगुन औगुनचाहचसौहै । जोसियनाथतजोसिधिनाथ तौनेरीहैसीनद्विरेरी
 हँसौहै ॥ रोलाछन्द ॥ भक्तमालकीपाप पापसन्तापनशावत । रोगसोगत्तवशान्त त
 हांताऊननभावत ॥ तापरयदइतिहास प्रकाशतसृजनमुनोजी । कहियतफांकीनाहिं
 सुसांचीतोइगनोजी ॥ मेरोपुत्रप्रधान रामशंकरज्यहिनऊं । ताहिभयोताऊन रघो
 जोगाऊंकाऊं ॥ गिलटीनिकसीनिरखि भक्तमालहिसुधिआई । सुमिरशोसांझसवेन
 गइसोयेगिबिलाई ॥ रामनरायणनाम पुत्रजोदूजोअहई । ताकेयकदिन रुत्रिसटी
 श्रीमनेचहई ॥ भक्तमालभक्त्याल बालवचिगोजगजानत । लहैसकलफलसोई प्री
 तितापरजोभानत ॥ कहँलगिकहँवखानि जानिजैहैसवसोई । भक्तमालपरश्रीधि
 प्रगीतिपुनीतमजोई ॥ नहिंकल्लुदुर्लभजक भक्तमालहिनुनिगुनिपुनि । जातविकुण्ठ
 विमान वैटिजनसोजयजयधुनि ॥ मोरट ॥ श्रीयुतनाभादास भक्तमालविरचविश
 द । उनकौसुपशंपकास रसिकाईकीरीतियह ॥ घनाक्षरीछन्द ॥ सीताजीकोना
 मनीकोपवित नीतापकगीता श्रुतिश्रीरसिन्धुशोधिभननीनाहै । सीकेजपशोतसेत्रिताप
 भरिभातहौदरामचन्द्र मीतहातजगजालजीताहै ॥ ताततमत्टीजात थनजोरहुटि
 जातमहाभेदभूटिजात विधिरेखरीताहै ॥ सिधिनाथअर्थकोई कहतसमर्थजोईमेरोजा
 नसीतासोईअक्षरअतीताहै ॥ निजगुणडोरीगासपीतमको लेतकसिपीतमकेवासिआ
 प गुणगणफन्दसे । पाणिनीयमन्तलीन सीताशब्दअर्थकीन मुनिनप्रमानदीनश्रुतिकी
 सनन्दसे । जैसेपाखदूनोमाहँलखिलेहु ऊनोचन्दपूरणसोपूनोपायेअधिकअनन्दसे ।
 तैसेसिद्धिनाथजानो सीतापदप्रोतिमानौ जिनविनअनुमानौरामरहँवन्दसे ॥ शोभि
 तसकारसोइशंभुशक्तिहेतुहेरु तमगुणधारश्रुतिसारसुनिलीजिये । ऐसहीइकार
 इत्यकारणहै शारदाकोरजोगुणधारणको ताहिततवीजिये ॥ तैसेहैतकारसत्त्व सिन्धुसु
 नीपेखिपुनिप्रकृतिअकारजाते । तीनिगुणकीजिये । सिद्धिनाथभाकेआगे औरजोअ
 कारलंगसोईशक्तिशिरऔर सीताभावभीजिये ॥ कुण्डलिकाछन्द ॥ चनइससौयक
 सटसमुझि संघतशुचिहरिवार । भक्तमालमाहात्म्ययह इतलीन्होअवतार ॥ इतली
 न्होअवतारजोहजन पदिहँसुनिहँ । अतिअनन्दउपजाय छन्दवन्दहिगतिगुनिहँ ॥ गु
 निहँवैजेनजगत सकलसुखपैहँसौगुन । सीतापतिपदप्रीति आनिअपवर्वासुलभदन ॥
 घनाक्षरीछन्द ॥ भारद्वाजगोत्रश्रीत्रिवेदीकान्हवंशवर पण्डितनिरंजनसंगगादीनजा
 निये । तासुसुतलालारामतेशालप्रामनाम तासुतदयालराम मेरेपितामानिये ॥
 सिद्धिनाथनाँउममडिधवर गाँउटाँउवैशवारे जिजाजोचरेलीको बखानिये । औसमे
 तमथुराप्रसाद गुरुपदकंजवन्दिछन्दबन्दकीन्होसवसुखदानिये ॥
 इति श्रीभक्तमालमाहात्म्यसमाप्तिमगात् ॐशंभुं श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ भक्तमाल सटीक ॥

अथ टीकाकर्ताको मङ्गलाचरण लिख्यते ॥

श्री मन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥ तहां अर्थ भक्तमाल में लिख्यो है भक्त भक्ति भगवन्त गुरु चार रूप लिखेहैं तहां हरिको स्वरूप नहीं लिख्यो जाय तापै राजा को चित्रकारको दृष्टांत ॥ दोहा ॥ लिखन बैठी जाकी छबी गहि गहि गर्व गरूर ॥ भये न केते जगत के चतुर चितेरे क्रूर १ चित्र चितेरो जो लिखै रचिपचि मूरतिवाल ॥ वह चितवनि वह मुरि चलनि कैसे लिखै जमाल २ दृग पुतरीलौ श्याम वह लिख्यो कौन पै जाय ॥ जग उजियारी श्यामता देखौ जीय लगाय ३ कोटि भानु जो ऊगवै तऊ उज्यार न सोय ॥ तनक श्यामकी श्यामता जो दृगलगी न होय ४ सोहन जग ब्योहार तजि वणिज करो यहिहाट ॥ पीव प्रदारथ पाइये जिय कौडी के साट ५ छवि निरखत अतिथकित हैं दृग पुतरी ब्रजवास ॥ फिरन उठी बैठी चुहट कियो गौरतन श्याम ६ ॥ पद ॥ मैया दालजी मोहि बहुत खिझायो ॥ मोसों कहत मोल को लीयो तोहि यशुदा नहि जायो ॥ नन्दहु गोरो यशुदहु गोरी तू कित श्याम शरीर ॥ तारी दै दै उवाल नखावै सिखवत हैं बलवीर ॥ सिखवन दै बलवीर चवाई मिश्याबादी धूत ॥ सुरदास मोहि गोधनकी सो मैं जननी तू पूत ७ ॥ संमोहनी तंत्रे ॥ फुल्लन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं वहावतसप्रियं श्रीवत्साङ्गमु दारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम् ॥ गोपीनांनयनोत्पलाञ्जिततनुं

गोगोपसङ्घावृतं गोविन्दकलवेणुवादनपरं दिव्याङ्गभूपभजे ८ ॥
 बोहो ॥ प्रेम चित्तरे की सुसति काप्रे वरणीजाय ॥ मोहन मूरति
 श्यामि की हियपट लिखी बनाय ६ तीक्ष्ण बहनी चाण सों बंध्यो
 हियो दुत्तार ॥ जालरंध्र कीन्हों मनो प्रेमीघट अधियार १० लिखि
 स्वरूप चितको दियो लियो हिये सों लाय ॥ चित्रकार पर वारि
 तन रह्यो पाइलपटाय ११ ॥ कवित्त ॥ द्यामता उज्यारी मुख
 मुरली अधरधारी रूपमतवारी आँखें रूपतकि रही है । केश खैचि
 बांध्यो जुरा घेस सुनमांभ चूरा प्रेमछवि पूरा श्रुति चन्द्रिका सुवही
 है ॥ अलक कपोलनिपै छुटिआई पुद मानों घटलेत हिये कहु
 वैसि हिये बही है । श्रीगोविन्दचन्दजूको चित्रलिखि चित्र दियो
 बड़ेई विचित्रनिकी मति अतिगही है १ ॥ पद ॥ नमो नमो
 श्रीभक्ति सुमाल । जाके सुनत महातम नाशत उर झलकत राधा
 नंदलाल ॥ गदगद सुर पुलकत अंगअंगन लोचन धरषत अंगुवन
 जाल । उतरजात अभिमान व्यालत्रिप लेत जिवाइ सुरसतिहि
 काल ॥ होत प्रीति हरिभक्त जननसों लेतेसीतहठि चरण प्रछाला
 तजत कुसंग लेत सतसंगति भाग जगत कोउ अद्भुत भाल ॥
 निशिबासर सोवत अरु जागत रोम रोम है करत निहाल ।
 अग्रनरायन दास प्रिया प्रिय प्रकटी जीवनि रसिक रसाल ३
 हरिको स्वरूप प्रेमरूपी चित्रकार सों लिख्यो जाय और सों नहीं
 महाप्रभु विशेष काहेते जीव हरिसों विमुख सम्मुख आवैजाय
 प्राप्त होइ १ ॥ गीतायाम् ॥ देवीहिषागुणमयीममनायादुरस्यया ॥
 माभेवयेप्रपद्यन्तेमायामेतांतरन्तिते २ ॥ चेतन्यभागवते ॥ एतेर्चाश
 क्रैलाःपुंसःकृष्णस्तुभगवान्स्वयम् ॥ इन्द्रारिदयोकुललोकं मृडय
 न्तिद्युगेद्युगे ४ ॥ मनहरन अक्षर सों कामधेनु है ॥ राधाचरणदीपि
 काया ॥ दृष्टःकापिचकेशवाव्रजवधमादायकाश्चिद्वतः सर्वाएवविमो
 चिताःसखिवध सौन्धेवणीयोयदि ॥ द्वौद्वौगच्छतमित्यदीर्घसहस्रा
 राधाग्रहीत्वाकरे गोपीवेषधरोनिकुञ्जभवनं ॥ सोहरिःपांतुवः ३ ॥
 सखीको उदाहरण ॥ कवित्त ॥ आजु मनमोहनसोंसोंसों ऐसी होइ

परी और इन अलितसों कहाधों विशेषिये । दर्पण निहारिकान्ह
 कही मेरे बड़े नैन हांकही इनहूँ तो बोली होंहूँ देखिये ॥ दीरघ
 दरारे दग मेरी राधा कौरिके है कैसे करिजानों चलो दिगलाइ
 पेखिये । आये है हरावा इन्हूँ अहो येही बलिगई एकबार आखिन
 सों आँखें माहि देखिये ४ जैसी नित रहतिहै तैसी आँखियाँहेमेरी
 इनकी अनैसी अरुनई भये देखिये । चित्त जे चढ़ी है प्यारी दीसत
 न उजियारी उसहीके बल अहो माहि अवरैखिये ॥ होंहूँ जानति
 हों दोज सम कैसे हैहूँ द्वैतें चारि किये प्रेम नेमसों विशेषिये ।
 जित घट हैहै तित जोरहै सुजान कान्ह कैसे ऐसी आँखिन सों
 आँखें माहि देखिये ५ मीनसम थरथरात उधर दुरत कच्छ वामन
 हैं मनहरिवतैं निश्चै हेरे हैं । नेकु न निहारे हिय फारत बाराह
 सम अरिवतैं धर्जुराम फिरत न फेरे हैं ॥ तीक्ष्ण नृसिंह नख वो-
 धक अबोलिवतैं तारिवतैं राघव गुलाब चित्त नरे हैं । मोहिवतैं
 मोहन योंकलकी हैं निष्कलंक दशौ अवतार कियो प्यारीनेन तरे
 हैं १ ॥ वृन्दावन मनहरणपै ॥ श्लोक ॥ कृष्णान्योयदिसम्भूतीय
 स्तुगोपेन्द्रनन्दनः ॥ वृन्दावत्परित्यज्य पादभेकनगच्छति १ वहाँ
 पीडनटवरवपुःकर्णयोःकर्णिकारं विभ्रद्रासःकनककपिशवैजयन्ती
 चसल्लोम ॥ रन्ध्रान्वेणोरधरसुधयापरयन्गोपवृन्दैर्वृन्दारण्यस्वप
 दरमर्णाप्रविशद्दीप्तकीर्तिः ३ ॥ ब्रजवासी मनहरणपै ॥ भागवते ॥
 अहोभाग्यमहोभाग्यं नन्दगोपब्रजौकसाम् ॥ यन्मित्रपरमानन्द
 पूर्णब्रह्मसनतिनम् ४ ॥ साधमनहरणपै ॥ भागवते ॥ निरपक्षमुनिशा
 न्तं निर्वैरसमदर्शनम् ॥ अनुब्रजाम्यह्नित्यं तपूयन्त्यधिरणुभिः ५ ॥
 आज्ञानिरूपन कवित्त घनाक्षरी छन्द ॥ महाप्रभुकृ-
 ष्ण चैतन्य मनहरणजूके चरण को ध्यान मेरे नाम मुख
 गाइये । तार्हासमे नामाजी ने आज्ञादई लईधारि टीका
 विसतारि भक्तमालकी सुनाइये ॥ कीजिये कवित्तबन्द
 छन्द अतिप्यारो लगी जगै जगसाहि कहि बाणी विरः

माइये । जानों निजमति येपै सुनो भागवत शुक द्रुमन
प्रवेश कियो ऐसेई कहाइये १ ॥

टीका को नाम स्वरूप वर्णन ॥

भगवान् कह्यो मैं भक्तन को ऋणियां हों याते इनकी चरण रेणु
में शिरपर धारों हों क्योंकि मेरो अपराध मिटै ६ ॥ गीतायाम् ॥
येयथात्माप्रपद्यन्ते तास्तथैव भजाम्यहम् ॥ येदारागारपुत्रासान् ७
सो कही पै बनी नहीं क्योंकि इन्होंने घर बार पति पुत्रादि कुल
धर्म सब छोड़े अरु मोते कछु न छूटयो याते हों इनको ऋणियां हों
याते विचारो इनहीं की चरण रेणु शिरपर धारों तव मेरो अप-
राध मिटैगो सो याते धारों हों ८ ध्यान मेरे नाममुख गाइये ६
तहां दोऊ कैसे वनै श्लोक ॥ इन्द्रियाणां लयो ध्यानम् ॥ तापै दृष्टा-
न्तसिद्धके द्वैरूप इन्द्रिनको १० ताही समय ॥ दोहा ॥ पायलपाय
लगी रहै लगे अमोलक लाल ॥ भोडरहूकी भांसिहै वेंदी भामि-
नि भाल १ ॥ सुनाइये ॥ सनत्कुमारवाक्ये ॥ सर्वापराधकृदपि मु-
च्यते हरिसंश्रयः ॥ हरेरप्यपराधान्यः कुर्याद्द्विपदपांसनः २ ॥ आ-
गमे ॥ यानैर्वापादुकाभिर्वा गमनं भगवद्ग्रहे ॥ देवोत्सवाद्यसेवाच
अप्रणामस्तदग्रतः ३ उच्छिष्टो वाप्यशौचे वा भगवच्चन्दनादिकम् ॥
एकहस्तप्रणामश्च तत्पुरश्चाप्रदक्षिणम् ४ पादप्रसारणं चाग्रे तथा
पर्यङ्कबन्धनम् ॥ शयनं भक्षणं चापि मिथ्याभाषणमेव च ५ उच्चैर्भा-
षामिथोजल्पो रोदनानि च विग्रहः ॥ निग्रहानुग्रहौ चैव नृषु च क्रूर-
भाषणम् ६ कम्बलावरणं चैव परनिन्दापरस्तुतिः ॥ अश्लीलभाष-
णं चैव अधोत्रायोर्विमोक्षणम् ७ शक्तौ गौणोपचारश्च अनिवेदित
भक्षणं ॥ तत्तत्कालोद्भवानां च फलादीनामनर्पणम् ८ विनियुक्ता
वशिष्टस्य प्रदानव्यजनादिकम् ॥ पृष्ठीकृत्वा सने चैव परेषामभिवा-
दनम् ९ गुरोमौनं निजस्तोत्रं देवतानिन्दनं तथा ॥ अपराधास्तथा
विष्णोर्द्वात्रिंशत्परिकीर्तिताः १० नामाश्रयः कदाचित्स्थान्तरत्येव स-
नामतः ॥ नाम्नोपि सर्वसुहृदो ह्यपराधात्पतत्यधः ११ नामाछापै ॥

गुरुअवज्ञाकरै साधु निंदाविस्तारै । शिवकी निंदाकरै ब्रह्ममें भेद
विचारै ॥ नामहि बल करि पाप नाम परताप न जानै । वेदनिशास्त्र
उलंघि आप मनको मतठानै ॥ बिन श्रद्धा उपदेश और ठगि-
आयो पोषै । निज इन्द्रिनके हेतुचेतपरि पिण्डह सोषै ॥ ये दश
अपराध तजि देहते साधु संगति से मिलिरलै ॥ तत्त्ववेत्तातीनिहुं
लोकमें राम नाम ताको फलै १२ ॥ गीतायाम् ॥ सूक्तकरोतिवा
चालं पङ्कलङ्घयतेगिरिम् ॥ यत्कृपातमहं वन्दे परमानन्दमाधवम् १
कहाइयेपै ॥ दोहा ॥ संत कृपा रवि उदयते मिटै तिमिरअज्ञाना ॥
हृदय सरोवर विमल है फूलेहित बुधज्ञान २ ॥ श्रीभागवतहि की
सुबुधि कही कीरकलगान ॥ भक्तमाल अभिप्राय जो जानै संत
सुजान ॥ ३ ॥

रचिकविताई सुखदाई लगेनि पटसुहाई औ सचाई पुनरु
क्तिले मिटाई है । अक्षरमधुरताई अनुप्रासजमकाई अतिछ
विद्याई मोदझरीसीलगाई है ॥ काव्यकी बडाई निजमुखन
भलाई होति नामाजू कहाइयाते प्रौढकै सुनाई है । हियेसर
साई जो पै सुनिये सदाई यह भक्तिरसबोधिनी सोनामटीका
गाई है २ ॥

रचिकविताईपै ॥ श्लोक ॥ यद्ब्रह्ममातृवधपातकिर्मन्मथारी
क्षत्रान्तकारिकरसङ्गमपापभीत्या ॥ ऐशंधनुर्निजपुरदचरणाग्रनून्दे
हंसुमोचरघुनन्दनपाणितीर्थे ४ ॥ दोहा ॥ पियलखिसियकीमाधुरी
तृणतोरनकेचाइ ॥ भौरै धनुषउठाइकै तोरयो सहज सुभाइ ५ ॥
श्लोक ॥ कसठपृष्ठकठोरमिदंधनुर्मधुरमूर्तिरसौरघुनन्दनः ॥ कथ
मधिज्यमनेनविधीयतमहहतातपणस्तत्रदारुणः ६ ॥ रत्निबो नाम
रंगको है कविताको कहा रँगिवो चौज कादिलेवो यही कविता
को रँगिवो है ७ ॥ सुखदाई सुहाई पुनरुक्ति भई नहीं सो कविता
तीनि प्रकार की शब्दचित्र अर्थचित्र शब्दार्थचित्र ॥ सबैया ॥
हटके न रहै भटके पलओढ भटू मेरे नैननि माँ बसके ॥ अटके

उतहीं सटके मनलैं नटकेसे बटा टटकेरसंके ॥ लटके लटछोरनि
 सों लटके खटकेन कटाक्षनके कसके । मटकेन छटा छवि
 के झलकै न लगे इन चाहन के चसके ८ पीसों भुकी रसना
 बिन काज लखे गुणनाम समान तिहारै । नैन चले अतिरुखेरहे
 तुम ताही ते नैन ये नास धरारै ॥ संत विरुद्ध चंद्रयो अतिही जिय
 ते दुख नेकु टरै नहि टारै । पाइ सुलक्षण राग अरे करकाहे को
 नंदलला भिभकारे १ दृगहौ तुम दाई अदाई बड़े अरु धूषट
 माहिं रहे फांसिके । रसना रस जानति तू न कछू मुखवन कहेनहिं
 तैं हंसिके भुजहौ तुम भूलकरी इतनी प्रिय प्यारे सों क्यों न
 मिले गंसिके । मन तू न मिल्यो मनमोहन सों संवहीके सयान
 गये नंसिके २ ॥ दोहा ॥ चष उपमा कमलासन आसन निज तन
 कीन ॥ विसलज हृदया अमल को धूरि कमल मुखदीन ३ वारों
 बलि तो दृगनि पर अलि खञ्जन भृगमीन ॥ आधी दृष्टि चित्तोन
 जिभि किये लाल आधीन ४ ॥ कवित्त ॥ कारे भूपकारे रतनारै
 अनियारै सोहैं सहज दरारै मनमथ मतवारै हें । लाज भरि भारे
 जो चपल अनियारै तारे साचिके से डारै प्यारे रूपके उज्यारे हें ॥
 आधी चितवनिही में आधीन कियेते हरि टोने से वशीकरके
 लोने पनियारे हें । कमल कुरंग मीन खञ्जन अंबर वृषभानु की
 कुंवरि तेरे दृगनिपै वारै हें ५ ॥ सचाई इलोक ॥ हरोहिमालये
 शैते हरिदशेतेचवारिधौ ॥ आकाशेभ्रमतेसूर्यो जानेमत्कुणशंकया ॥
 वायसाःकिन्नभक्षन्तिकवयोनवदन्तिकिम ॥ मद्रपाःकिन्नजल्पन्ति
 किन्नकुर्वन्तियोषितः ६ मृषागिरस्ताह्यसतीरसत्कथानकथ्यतेयद्ग
 गवान्नधोक्षजः ॥ तदेवसत्यंतदुहैवसंगलं नदेवपुण्यंभगवद्गुणोदयं
 ७ ॥ पुनरुक्ति दोहा ॥ दोष नहीं पुनरुक्तिकी एक कहत कवि
 राज ॥ अर्थ गहे पुनि अर्थ की ये कविगण के साज ॥ वारणको
 तारण अहो वार न लागी तोहिं ॥ वार न कीजै हे प्रभो ! वारण

१ चरण के अंत में लघुके विकल्प करके गुरुलखा होती है इससे नकार में दो मात्रा गिनने से तेरह मात्रा के दोहा का चरण होता है ॥

भटकन मोहिं न मनकी सचाई पाइके उठिआये प्रभुप्रास ॥ मन
 वाञ्छित फलपाइके हियमें अधिकहुलास ६ शुद्धघटमें तौ हरि सदा
 वासकरैहैं ताको चिंता कौन शत्रुकीहै मधुरताइपै ॥ कवित्त ॥ करत
 कवित्त तुक दौरैमनदौरैजहाँ औरैऔरैऔरैजहाँ रसकोठसांकरै ।
 सौनैकीसी सांकरै ये मिश्रीकीसी कांकरै ये आकरस आकरै सुहा
 करै निसाकरै ॥ सौंठिकीसी गांठ तुकगांठि तेऊगांठिकीन सांठिसौं
 लैआनी काहु आकनिकेराकरै । दोऊते समान ये जहानको जमा-
 नादेख्यो भोरभये जीत्यो षटपद पदमाकरै १ अंग अंग औघटन
 घाट है मनावोकोउ लालको तृषाहै या अधररसपानकी । मोह
 कीं सरोरनिमें भीरसे परतजात त्योरी की तरंगनि में निठुर नि-
 दान की ॥ जगन गहर मौन उत्तर न थाहकिहूँ ऐसी गरबीली है
 हठीली वृषभानकी । रिसके प्रवाह रसकूलन विदोरैजात नदी
 सी उमडि चली मानिनीके मानकी २ ॥ अनुप्रास ॥ मदनतुका
 सी किधौं राजकुंदकाली मानों कजकलिकासी कुच जौरीहू वि-
 कालीहै । गांसीभरी हांसी मुखभासी मोहफांसी मदयौवन उजा-
 सी नेहदिये की शिखासीहै ॥ जाकी रतिदासी रतरासी हैरमासी
 को कहै तिलोत्तमासी रूपसरन प्रकासीहै । काम की कलासी
 चपलासी कविनाथ किधौं चपलतिकासी चारुचंद्र चंद्रिकासीहै ३
 सोई मेरोचिर जोलैआवै बलवीर ताहि देहौं दोऊचिर मेरो बिरह
 बँटाइ लै । भजन छपाके पीर छपे न छपाये पीर छपाकरि छपे
 तो छपाकर छपाइले ॥ मदनलग्यो है धाइधाइसो कहौरी धाइ
 येसी मेरी धाइ नेक मोहूतन धाइले । देहसी थरथराइ देहरी चढ़्यो
 न जाइ देहरी तनकहाथ देहरी लँघाइले ४ ॥ काव्यकी बड़ाई ॥
 कवित्त ॥ थहै कविताई जामें भरी सरसाई मृदुपद सुखदाई अंक
 रचना सुहाई है । जाके ढूँढिये को बड़े रसिक प्रवीन मन लीन
 भये रसमाझ जवै जाइपाई है ॥ जैसे तीरगरउर निपट एकाग्र
 करि अधीआखि मूँदि लखै तीरकुटिलाईहै ॥ ऐसे वह कविताई
 प्रकटदिखाई देति ताकी न बड़ाई वा बनाई की बड़ाईहै १ ॥

भक्तिस्वरूप ॥ श्रद्धाई फुलेल औ उबटनो श्रवणकथामै
लअभिमानअंगअंगनिछुटाइये ॥ मननसुनीरअन्हवाय
अंगुब्राधदयानवनवसनपनसौधौलैलगाइये ॥ आभरण
नामहरिसाधुसेवाकर्णफूलमानसीसुनथसंगअजनवनाइ
ये ॥ भक्तिमहारानीकोशंगारचारुबीरीचाह रहैजोनिहा
लहैलालप्यारीगाइये ३ ॥

श्रद्धाई फुलेल भक्ति महारानी को शंगार आगमे ॥ हरेभ
क्तिर्महादिव्या सर्वासुक्त्यादिसिद्धयः ॥ भक्तयश्चाद्भुतास्तस्याश्चे
टिकावदनुवताः २ ॥ भागवते ॥ तत्सर्वं भक्तियोगेन मद्भक्तो
लभतेऽजसा ॥ स्वर्गापवर्गौमद्भाम कथञ्चिद्यदिवाञ्छति ३ ता
पैदृष्टांतराकावाकाको ॥ आगमे ॥ आदौश्रद्धाततः साधुसंगोथ
भजनक्रिया ॥ ततो नर्थनिवृत्तिश्च ततो निष्कारुचिस्ततः ३ कथाशक्त
स्तथाभावस्ततः प्रेमाभ्युदञ्चति ॥ साधकानामिदंप्रेम प्रादुर्भा
वोभवेत्क्रमात् ४ ॥ मैलअभिमान ॥ जातिविद्यामहत्त्वचरूपयौवन
मेवच ॥ यत्नेनपरितस्त्याज्यः पञ्चैतेभक्तिकण्टकाः ५ ॥ पांचकांटे
सोई पांचोमैल ॥ भागवते ॥ नालं द्विजत्वं देवत्वमृषित्वं वासुरा
त्मजाः ॥ प्रीणनायमुकुन्दस्य नम्रतनबहुज्ञता ६ नदानं नतपाने
ज्या नशोचनं नप्रतानिच ॥ प्रीयते मलयाभक्त्या हरिरन्यद्विडम्बनम
७ मननसुनीरन्हवायबेमें आनंद जैसेही मननमें अंगौछादयामेंतीन
गुण तेलछुटावै उबटनो अरु मैल श्रद्धाकथामनन ॥ नारद पंच
रात्रे ॥ वैष्णवानां त्रयं कर्म दया जीवेषु नारद ॥ श्रीगोविन्दे पराभक्ति
स्तदीयानां समर्चनम् ॥ कर्णफल पांचजातिके जडाऊ सोनेके रूपे
के रांगके काठके पै सुहाग पांचोही में रहै याते करै तो दोऊकरै
साधुसेवा न बनिआवे तो प्रभुकी भी उठाइ धरै ॥ पात्रे ॥ अर्च
यित्वा तु गोविन्द तदीयान्नाचयन्तिये ॥ नते विष्णु प्रसादस्य भाज
नंदाभिभवाजनाः २ सतसंगपैभागवते ॥ नरोधयति मायोगो न
सांख्यधर्मएवच ॥ नस्त्राध्यायस्तपस्त्यागो नेष्टापूजनदक्षिणा ३

व्रतानियञ्जलन्दासितीर्थानिनियमायमाः ॥ यथावरुन्धत्सत्सङ्गः सर्व
सङ्गपिहाहिमामः ४ अथवा भक्तिके अंग भक्तमालही में हैं श्रद्धा
सर्वामें गदाधरभट्टकथासेपरीक्षित मननसुचोर चतुरभुज दासकी
कथा सुनी ५ दया केवलराम साँटी पीठिमें उपह्यो ६ नवन गो-
पालदास जोवमेरी पन राजाआशकरन नाम आभरणअन्तर्निष्ठ ७
हरिसेवा रत्नावती रानी ८ साधुसेवा सदाव्रती मानसी रघुनाथ
गोसाई सत्संग ग्वालभक्तः ९ चाहवारी मधुगोसाई १० ॥

भक्तिपंचरस ॥ शांतदास्यसख्यवातसल्यऔश्रृंगा
रुवारुपाचौरसमार विसतारनीके गाये है । टीकाको
चमत्कारजानागे विचारिमन इतके स्वरूप में अनूपले
दिखाये है ॥ जिनके न अश्रुपातपूलकितगातकहुंतिनहूं
कोभावसिद्धवारेसोलकाये है । जौलौरइदूरिहै विमुखता
परि हियौहोयचरिचरिनेकुश्रवणलगायेहै ४ पंचरससोई
पंचरंगफलथाकिनीके पीकेपहराइबेकोरचिकैबनाईहै । बै
जयतीदामभाववतीअलिनाभानाम लाईअभिरामश्याम
मलिललचाईहै ॥ धारीउरप्यारीकिहूंकरतनन्यारीअहौ
देखैगतिन्यारीठरिपायँनिकौआईहै । भक्तिछबिभारताते
नामितश्रृंगारहोतहोतबशलखैजोईयातेँजानिपाईहै ५ ॥

भक्तिपंचरसपै ॥ सोभक्तिको स्वरूप क्रियात्मकहै सो क्रिया
हीते जानी जाइहै ॥ भागवते ॥ देवानांगुणलिङ्गानामानुश्रवि-
ककर्मणाम् ॥ सत्त्वएवैकमनसो वृत्तिःस्वाभावकीतुया १ आनि
मित्ताभागवती भक्तिःसिद्धेगरीयसी ॥ जरयत्याशुयाकोशं निगी
णमनलोयथा २ जैसे रसन में इन्द्रियस्वाभाविकीही चले है ऐसे
ही समस्त इन्द्रिय भक्तिमें स्वाभाविकी लगे या क्रियाते भक्ति
जानीजाइ है सो भक्ति पञ्चप्रकारकी वर्णन की है जैसे ईषकी
रस खांड घुरा मिथी कन्द ओला स्वाद न्यारे न्यार तत्त्व एक ३

शान्तरस ॥ दोहा ॥ समकरि मुहतर हठिपरयो यह धरिहरि चि-
 तलाइ ॥ विषय तृष्ण परिहरि अजौ नरहरिके गुणगाइ २ दास्य
 रस ॥ दासनदास तिहारो ऋणी प्रभुमोते नहीं कलुवे वनिभाइ ।
 तेदुखटावनि मोदबढ़ावनि मोहित भागकी नीमदिवाइ ॥ आपुही
 मैं बिसख्यो तिनमें पगिताते तहां तुम्हरीको चलाइ । पै अपनो-
 जन जानि गहो नहीं जातिअहो तुम्हरी ये बड़ाइ ५ ॥ कवित्त ॥
 गुणनगहैहौं मन व्यारमें बहैहौं तेरी ढीलनदहैहौं पंचरंगको पत-
 गमें । जितहींकन्यावसहो तितहींमें आवतहौं ऐयेझुकि धावतहौं
 पवनके संगमें ॥ गयोभरिवाय हरि उपरन रह्यो आइ तात थिन
 थाअर्थभ्यो थिरकनिके रंगमें । हरैहरै ऐचिनाय कीजिय ज अपनी
 घानातरु अनाथ जात अनंग तरंगमें द सख्यरस करुणाभरना-
 टके ॥ एककहै असयत्ताहिं कीजे । कृष्ण द्वारका जान न दीजे ॥
 एककहै हां लेहोंदांव । कहा भयो है आयोराव ७ एककहै आवत
 तौ देहु । तव तुम दांव आपनो लेहु ॥ वात्सल्य पद ॥ जोपै रा-
 खतहो पहिंचानि । तौ वै बालक मोहन सुरति मोहि मिलावो
 आनि ॥ भली करी कंसादिक मारे सुरसुनि काजकियो । अब इन
 गाइन कौन चरावै भरि भरि लेतहियो ॥ तुमरानी बसुदेव गेहती
 हम अहीर ब्रजवासी । पठैदेहु मेरे लाल लड़ैते जारो ऐसीहासी ॥
 खानिपान परधान विविधसुख जो कोउ लाललड़ावै । तदपि सर-
 भेशे कुंवर कन्हैया गोरसही सुखपावै १ शृंगाररत्न कवित्त ॥
 सीखे रसरीति सीखे प्रीतिके प्रकार सब सीखे केशोराइ मन
 मनको मिलाइबो । सीखे सोहै खान नटिजान सुसकान सीखे
 सीखे सैनबैननि में हँसिबो हँसाइबो ॥ सीखेचाह चाहसों जु-
 चाह उपजाइबोकि जैसी कोऊ चाहै चाह तैसी चाह चाहियो ।
 जहाँ जहाँ सीखे ऐसी बातेंघातें तातें सब तहां क्यों न सीखे नेकु
 नेहको निवाहियो २ ऊधो कहा कहिये जियकी तिय कौनसी
 जो न संभारति है । परतासु भलो नहीं या जगमें हमतो अपने
 दिन टालति है ॥ सुखसीठो महाहिरदै कपटी वतियां छतियां

नित जालति है । अहाँ दासनिदास तिहारो ऋणी थई बोल गों-
पालके शालति है ३ गहिबो अकाश पुनि लहिबो अथाह थाह
अति विकराल काल व्यालहि खिलाइबो । शैल रामशेरधार
सहिबो प्रहारवान गज सृगराज ले हथरिनि लगइबो ॥ गिरते
गिरनपन्थ अगिनि में जरनि काशी में करवट तन बफलो गरा-
इबो । पीबो विष विषम कबूल कवि नागरजू कठिन कराल एक
नेहको निवाहिबो ४ ॥ दोहा ॥ नैनमूदि मुखमूदिके धरौत्रिकुटी
मधिध्यान ॥ तव आपहिमें देखिहौ पूरणआतसराम ५ ॥ कवित्त ॥
ओढ़िबे को कन्था औ रमाइबे को अंरुम अंग काननि में मुद्रा
शिर टोपियां धरावैगी । क्रममें कसएडलके खप्पर भराइबे को
आदेश आदेश करि शृंगीहू चजावैगी ॥ कुविजाको अष्टिदई
गोपिनको सिद्धिदई फिरैगी मशाननि में गोरख जमावैगी । एक
बार ऊधवजू फेरि समझाइकहौ एती ब्रजवाला सृगळालि कहां
पावैगी १ योगीजग तजै हसयोगजग दोऊ तजै योगीभषैपौन हस
पौनहुते हटिहै । योगीकर सींगी हस सींगी भई श्यामनिन योगी
लविधूरि हस धरिहुते लटिहै ॥ योगीछेदैं कान हस छेदैंहियो
वेधे प्राण योगीदूहैं दण्ड हस हरिदण्ड टटिहै । अविनकी आश
सुधि बीतिगई ऊधो जोतो योगीकी जुगतिते वियोगी कहा घटि
है २ सुखाई शरीर अधीनकरे दृग नीरकी धँदसौ माल फिरावै ।
नेहकी सेली वियोग जटा लिख आहकी सींगी संपर वजावै ॥
प्रेमकी आवभे ठाढ़िजै सुधि आरलै आपनी देह चिरावै । सु-
जानकहैं कलाकोटि करोपे वियोगीके भेदको योगी न पावै ३
श्यामतन श्याममन श्यामही हमारा धन आठौयास ऊधो यहाँ
श्यामही सौ कामहै । श्यामहिय श्यामजिय श्याम बिन नाहि
तिय आवरेकी लाकरी आधार नामश्याम है ॥ श्यामगति श्याम
मति श्यामही प्रतापपति श्याम सुखदायी लोभलाय घरधाम
है । तुमभय वारे यहाँ पाती लाय आये वारे योग कहा राखे हम
राम राम श्यामहै ४ रूसिरहौ हमसौ तो हमें नितही परि पाईनि

पाइमनाइबो । बोलो न बोलो हमें नित बोलिबो चाहकरो नकरो
हमें चाहिबो ॥ देखे न देखे दयाकरिप्यार हमें नितनेवनि ते दर-
शाइबो । मानो न मानो हमें यह नेम नयो नित नेहको नातो
निबाहिबो ५ बिचार सन ॥ तापै द्रष्टान्त चित्रकी पुतरी को अरु
खानखानाको १ होइ चूरचूर ॥ कवित्त ॥ बेले ते चिल्लरि परिपान
पर पाटिख ह्वे कसन कसाइ अंग हाथनि नचतु है । वेशुमार
दागिल ह्वे परम कतरनी में पाइके मरारी बहुविकानि विकतुहै ॥
सरस मसाले अनुमानके लै दियेवीच धरिके चितौनी रस सचि
के पचतु है । एते पै सखी सुखरासिक हाथआये कहा चूरचूर भये
खिना रंग क्यों रचतु है ? ॥

सतसंगप्रभाव ॥ भक्तितरु पौधाताहि विघ्नडर छरीइ
कोबारदैबिचारबारिसींचोसतसंगसों । लाग्योईबदनामो
दाचहुंदिशिकडनसो चढनअकाशयशफैल्योबहुंरंगसों ॥
संतउरआलबालशोभितबिशालछाया जियेजीवजालता
पगयेयोंप्रसंगसों । देखीबदबारिजाहिअजहुकीशकाहु
तीताहीपेइबांधेभूलैहाथीजीतेजंगसों ६ ॥

सतसंग ॥ भागवते ॥ सतांप्रसङ्गान्ममवीर्यसंविदो भवन्ति ह
तकर्णरसायनाःकथाः ॥ तज्जोषणादाश्वपवर्गवर्त्मनि श्रद्धारतिभ
किरनुकमिष्यति १ दोहा ॥ इष्टमिले अरु मनमिले मिले भजन
रसरीति ॥ मिलिये तहां निशंक ह्वे कीजे तिनसों प्रीति १ एक
कहै जागे लोचन घूम घुमारे ॥ दूसरो कहै एक निरजन है अवि-
नाशी ॥ दोहा ॥ बहता पानी निर्मला बंधा गंधीला होइ ॥ साधु
जन रमता भला दाग न लागै कोइ २ ॥ वृन्दावनशतक ॥ मि
लन्तुचिन्तामणिकोटिकोटयः स्वयंत्रहिर्दृष्टिमुपैतु वा हरिः ॥ तथा
पिवृन्दावनधरि धूसरं देहमन्यत्रकदापियातुमे ३ ॥ कवित्त ॥ व-
चन विलास में मिठास आइ वासकरै हरै हृदै रोग भोग मानै
जे जियारीके । नयेई जे जात जाति बातन सुहात नेकु पुलकत

गात दृग धाराजल न्यारीके ॥ रूप गुणमाते देह नाते जिते हाते
 होत सो तज्यां सलिल मन मिलत जियारीके । और सब संग
 हम संगकेसमान किये सोई सतसंग रंग बारैलाल प्यारीके ४
 सबहीते बड़ी क्षिति क्षितेहूते बड़े सिंधु सिंधुहूते बड़े मुनि बारिधि
 अचैरहे । तिनहूते बड़ा नम तामे मुनिसे अनेक तारा अरु दारा
 येन सबन अछैरहे ॥ तिनहूते बड़े पग बावन बढाये जब ताही
 की उँचाई देखि तीनोंलोक नैरहे । तिनहूमें बड़े संत साहिब अ-
 गमगम ऐसे हरिवड़े ताके हृद घर कैरहे ५ ॥

नाभाजूकोवर्णन ॥ जाको जोस्वरूपसो अनूपलैदिखाइ
 द्वियोकियोयो कवित्तपटमिहीमध्यलालहै । गुणपैअपारसा
 धुकहँ आंकचारिहीमै अर्थविसतारिकविराजटकसाखहै ॥
 सुनिसंतसभा भूमिरही अलिश्रेणीमानों धूमिरहीकहँ यह
 कहाधौरसालहै । सुनहे अगरअवजानेभँ अगरसही ची
 वामयेनाभासोसुगंधभक्तमालहै ७ ॥

चारही में ॥ छप्पै ॥ कहा न सज्जन अवत कहा मनि गोपी
 मोहित । कहा दासको नाम कवित्त में कहियत कोहित ॥ को
 प्यारो जगमाहि कहाक्षिति लागे आवै । को वासरही करे कहा
 संसारहि भावै ॥ कहि काहिदेखि कायर कपल आदि अत को हे
 शरन । यह उत्तर केशवदास द्विय सबे जगत शोभाधरन १ ॥
 कवित्त ॥ चतुर बिहारीजपे मिलिआई बाला सातमांमति है आजु
 कलु हमको दिवाइये । गोदलैहो फल देहो नाक पहिराइ मोती
 पाननकी पातरि हुतासनहू लाइये ॥ ऊंचेसे अवासके भरोखा
 चयठाइयेज मेरीसेज श्याम आजु रतिपति ध्याइये । ग्वाल समु-
 झाइवे को उक्त सब दीन्हों एक उत्तर विशेष भाति बारी नहीं
 आइये २ ॥ श्लोक ॥ कोदुराग्रस्यमोहाय काप्रियामुरविद्विषः ।
 पदंप्रश्नवितर्कैर्कि कोदन्तच्छदभूषणम् ॥ काप्युपोष्यह हे विद्वन् ।
 सर्वेषामर्थानारामानुरागइन्दिरालोकमाता । मानुप्रश्नचचित्तकच

जसवंतसिंहकीसनीनैसिमरफकीसालिख्यो ॥ ताम लालसी
वांच्यो जैसे ब्रजसुंदरीने पाती लिखी ॥ दोहा ॥ तर भुरसी ऊ-
परगरी कज्जल जल छिरकाई । पिय पाती बिनही लिखी वांची
विरह बलाइ ३ दृष्टास्त गुलाब को औ गुलाला को ४ ॥

भक्तमालस्वरूप ॥ बड़े भक्तमाननिशिदिन गुणगान
करै हरै जमपाप-जाप हियो प्ररिपूर है । जानिसुखसान्नि
हरिसंतसनमानसचै बचै ऊजगतरीतिप्रीतिजानी मूर है ॥
तऊदुराराध्यकोऊकैसेकै अराध्यसकैसमझो नजातमन
कंपभयोचूर है । शोभिततिलकभालमालउरराजैएपैबिना
भक्तमालभक्तिरूपअतिदूर है ॥ मूलमंगलाचरण ॥ दोहा ॥
भक्तभक्तिभगवंतगुरु चतुरनामबपुएक ॥ इनकेपदबंदन
करैनाशैविघनअनेक १ ॥

भक्तिरूप अतिदूर है ॥ भागवत ॥ तत्कथ्यतामहाभाग यदिकृ
ष्णकथाश्रयः ॥ अथत्रास्यपदान्भोजमकरन्दलिहासताम् १ भक्त
भक्ति मंगलाचरण तीनि प्रकार वस्तु निदेशात्मक गीतगोविन्दे ॥
मेघभेदुरम्बवरवनभुवः श्यामास्तसालद्रुमर्तकभीरुरयत्वमेवतदि
मं राधियहंप्राप्य ॥ इत्थनन्दनिदेशात्तश्चलितयोः प्रत्यध्वकुञ्जद्रुम
राधामाधवयो जयन्तियमुनाकलरहः कलयः ॥ नमस्कारात्मकम् ॥
किरातहूणान्ध्रपुलिन्दपुष्केशी आभीरकङ्गायमनाख्यसादयः । य
न्धेचपापायदुपाश्रयाश्रयाः शुद्धयन्तितस्मैप्रभविष्णवेनमः २ आशी
वीदात्मकम् ॥ नृसिंहपुराण ॥ यस्तंभाद्गर्जमानो गगडगडगडड
भालचद्राद्ध्रष्टृव्योमाद्भव्याप्यमाना जजडजडजडत्साध्यमा
नःसटाभिः ॥ दष्टाभिःखाद्यसान ककटकटकटचज्जमानोसुरेन्द्रनि
ष्क्रीतोहास्ययुक्तो गगहर्गहर्गहत्पातुवःश्रीनृसिंहः ३ वपुष्कश्लो
क ॥ वैष्णवोममदेहस्तु तस्मात्पुज्योमहामुने ॥ अन्ययत्नपरित्य
ज्यवैष्णवान्भजसुव्रत ४ भक्तिकसै तसै फूलमै सुमन्ध ॥

टीका विशेष लक्षण ॥ हरिगुरुदासनिसोंसांचो सोई भक्त
 सही गही एकटे कफेरि उरते नटरी है ॥ भक्तिरसरूपको स्व
 रूपय है छबिसार चारु हरिनामलेत अंगुवनझरी है ॥ वही
 भगवंत संत प्रीतिको बिचार करै धरै दूरि ईशतीहूँ प्रांडवन
 करी है ॥ गुरुगुरुताईकी सचीई लै दिखाई जहां गाई श्री
 पैहारी जूकीरी तिरंग भरी है २ मूल ॥ भगल आदि बिचारसो
 वस्तुन और अनूप ॥ हरिजनकोष गाइये हरिजनमंगलरू
 प २ सब संतन्हनिणय कियो मधि पुराण इतिहास ॥ भजित्र
 को दोऊ सुघरकै हरिकै हरिदास ॥ अग्रदेव अज्ञादई भक्तनि
 कोष गाइ ॥ भवसागरके तरनको नाहिन और उपाइ ४ ॥

हरिगुरुदासनिसोंसांचो । पटनाकी वाई भगदको आमिल
 लाहौर को सुदर्शन खत्री को वृष्टांत ॥ कवित्त ॥ शोचरूप-
 सागरमें सने रघुराई कहै लंक यह देत को न लगे कछुघात है ।
 कौन का विभीषणको राखे राकि रावण सो जीवजाल माछरी
 लो परयो पछितात है ॥ लक्ष्मणपछि मंहभरन परन लीनो जस
 राम बुरव्योत बूडी घुधिजात है । जीवको न लालच वचनकी
 विशेष डर जीव गये वचन वचै तो वडीबात है १ भक्त रसरूपको
 एकादश ॥ वाग्गदगदा द्रवते यस्य चित्त हसत्यभीक्षण रुदति कचि
 च्च ॥ विलज्ज उदगायति नृत्यते च मद्भक्तियुक्तो भुवन पुनाति २ ॥
 भवसागर ॥ निमज्ज्योन्मज्जताघोर भवाब्धौ परमायणम् ॥
 सन्तो ब्रह्मविदः शान्तानो बृहवाणमज्जताम् ६ ॥

टीका आज्ञासमयकी ॥ मानसी स्वरूपमें लगे है अग्रदास
 जबै करत बयारना भासधुरसंभारसां । चढ्यो है जहाज पैजु
 शिष्य एक आपदामें कखो ध्यान खिच्यो मन छुट्यो रूपसार
 सो ॥ कहत समर्थ गयो बोहित बहुत दूरि आयो छबिपूरि

फिरि ढरोताहीढारसों ॥ लोचनउधारिकै मिहारिकह्यो
बोल्यो कौनवही जौनपाल्यो सीतदेसुकुमारसों १० ॥

मानसी स्वरूपमें ॥ तापै भूतको दृष्टांत ॥ दोहा ॥ यह मन भूत
समान है दौरैदांत पसारि ॥ वांसगांठि उतरै चढ़े सब बल जावे
हारि १ चलदल पत्र पताक पट दामिनि कच्छप माथ ॥ भूत
दीप दीपकशिखा यों मनवृत्य अनाथ १ ॥ सवेया ॥ चंचल
जो मनकी गतिहै अलिरूप सुवै वनमें फिरियै । कुण्डल लोल
कपोलन में अलकै भलकै चितमें धरियै ॥ दरवाँदाहि भाल रसा-
ल दिये अधरानि में मोती थहराइये । अलवेली औ लालविहा-
रिनिको दिन रैन निहारनिहीं करियै ३ मन है तो भली थिरकै
रहितू हरिके प्रदपंकज में गिरितू । कवि सुन्दर जौन सुभाव
तजै फिरिबोई करै तो इहां फिरितू ॥ मुरलीपर मोरपखा परहै
लकुटी परहै भृकुटी भिरितू । इन कुण्डल लोल कपोलनि में
धनसे तनमें रहिये धिरितू ३ करत वयारि नाभा जूने विचारि
यह सुख कैसे मिलै ॥ टहलते मिलै दृष्टांत मरजिया को ४ ॥
सभार सौ क्योंकि मानसी ऐसी कोमल है सो वयारि की चोट
लगे ५ सारसौ ॥ कवित्त ॥ कंचन जटित भूमि सुरतरु रह्यो भू-
मि तापर सिंहासन सुखासन बिछायो है । अष्टदल कमल अमल
रघुनाथ तहां अंग अंग मानो कोऊ रंग भरलायो है ॥ कुण्डल
करणकर कंकण मुकुट कटि किंकिणी कि धुनि सुनि मन भरमा-
यो है । चपके चमेली के अरु कुंद मंदार के सुहारनि में हारिके
विचारि विसरायो है ६ ॥

अचरजदयो नयो यहाँ लौ प्रवेश भयो मनसुखछयो जा
न्योसतनप्रभावको । आज्ञातवदई यह भई तो पैसाधु कृपा
उनहीं कोरूपगुण कहो हियेभावको ॥ बोल्यो कर जोरिया
को पावतन ओर छोरा ऊराम कृपानहीं पाऊं भक्तिदावको ।
कही समझाई बोई हृद आइ कहै सब जिनलै दिखाइ दई

सागरमें नावको ११ श्रीनाभाजीकी आदि अवस्था ॥ हनु
मानवंशही में जनमप्रसिद्धजाको भयो दृगहीनसोनवी
नबातधारिये । उमरिवरषपांचमानिकैअकालआंचमाता
बनछोडिगई विपतिविचारिये ॥ कीलहऔअगरताहीड
गरदरशदियोलियोयोंअनाथजानिपूछीसोउचारिये । ब
डेसिद्धजललैकमण्डलसों सींचेनैनचैनभयोखुलेचखजौ
रीकोनिहारिये १२ ॥

रूप गुण ॥ श्लोक ॥ येकणठलग्नतुलसीनलिनाक्षमाला ये
वाहुदण्डपरिचिहितशङ्खचक्राः ॥ तृतीये ॥ तितितत्रवःकारुणिकाः
सुदृढःसर्वदेहिनाम् ॥ अजातशत्रवःशान्ताःसाधवःसाधुभूषणाः १
माता ॥ सवैया ॥ बारिध तातहुते विधिसे सुत आदित सोस
सहोदर दोऊ । रम्भा रमा तिनकी भगिनी मघवा मधुसूदन से
बहनोऊ ॥ तुच्छ तुसार इतौ परिवार भयो शरमध्य सहाय न
कोऊ । सुखिसरोज रह्यो जलमें सुख सम्पति में सबको सब
कोऊ २ पिता कोऊ कहै अरु कोऊ कहै सुत कोऊ कहै नाना
बाबा तिन तीनि तापतयो है । प्रभु कोऊ कहै जन कोऊ कहै
मोल लयो तुम अब कहौ ये जू काहि काहि दयो है ॥ ब्रह्मभने
जित तित चलि चलि होइ रही सुख नहीं कहू बहु हाथ गेद
भयो है । कियो हूँ तिहारो अरु पाल्यो हूँ तिहारो ही हौँ इन बीच
के लोगन ने बांटो बांट लयो है ॥ सींचे नैन ॥ एकादशे ॥ स
न्तोदिशन्तिवक्ष्ण्षिबहिरकःसमुत्थितः ॥ देवताबान्धवाःसन्तः स
न्तआत्माहमेवच १ ॥

पाँपरिआंशआयेकृपाकरिसंगलाये कीलहअज्ञापाइ
मंत्रअगरसुनायोहै । गलतेप्रकटसाधुसेवासोंविराजमा
न जानिउनमानताहीटहललायोहै ॥ चरणप्रछालिसं
तशीतसौअजंतघीनिजानीरसरीतिततातेहदै रंगलायोहै ।

भई बढवारिताको प्रावैकौनपारावारजैसो भक्तिरूपसो अनु
पगिरागायोहै १३ ॥

मन्त्र अगर आगसे ॥ तापः पौण्ड्रं तथानाम् मन्त्रो यागश्च पञ्च
मः ॥ एते च पञ्च संस्काराः परमैकान्त्यहेतवः २ जन्मना जायते
शूद्रः संस्काराद्विज उच्यते ॥ वेदाभ्यासी स वेद्विप्रः ब्रह्मजानाति
ब्राह्मणः ३ सन्तशीत नारदवाक्यम् ॥ उच्छिष्टलेपाननुसोदितो
द्विजैः ४ अथो है ॥ कवित्त ॥ कोऊ यह कहे संस्कारहीसो भक्त
होत बिना संस्कार भक्ति कैसे करि पाइये । जान्यो हम स्वार
सब अन्य अनुसार पुनि एपैहै विचार गूढ़ कहिके सुनाइये ॥
महिमा अगाध साधु रसिक प्रवीननि की नेरु चितवत काम
बन्धु उलटाइये । अंगअंग रंग सतसंगको प्रभात्र अहो जैसे दत्ता-
त्रेय वारसुखीहित छाड्ये ५ भई बढवारि ॥ दोहा ॥ मृतक चीर
जूठनि बचन काग विपुजन मित्र ॥ शिव निरसायल आदिदे ये
सब वस्तु पवित्र ६ शुकवाक्यम् ॥ किरातहूणान्धपुलिन्दपुण्ड्रशां
आभीरककायवनाखलादयः ॥ येन्ये च पापायदुपाशयाश्चाः शुष्य
न्तितस्मै प्रभविष्णवे नमः ७ ॥

षट्पदब्रह्मसूत्र ॥ जयजयमीनवराहकमठनरहरिवलि
बादन । परशुरामरघुवीरकृष्णकीरतिजगपादन ॥ बुद्धकलं
कीव्यासपृथुहरिहसमन्वतर । यज्ञशृषभहयग्रीवध्रुववृष
देनधन्वतर ॥ बद्धीपतिदत्तकपिलदेवसनकादिककरुणा
करो ॥ चौबीसरूपलीलारुचिर अग्रदासपदउरधरो ५
टीका ॥ जिते अवतारसुखसागरनपारावारकरै विसतारली
लाजीवनउधारको । जाहीरूपसांभूमनलागै जाको पागै
तहीं जागै हिये भाववही प्रावैकौनपारको ॥ सबहीहै नित्य
ध्यानकरतप्रकाशचित्त जैसरूपवैवित्त जोपैजोनेसार

१ मन्वन्तरआदिक प्रदामे गुरुउच्चारण इहां नहीं होत इससे पदमे चौबीस मानाहै ॥

को । केशनकुटिलताई ऐसे मीन सुखदाई अगरसुरीति भाई
वसौ उरहारको १४ ॥ मूल ॥ ये चरणचिह्नरघुवीरके संत
निसदासहायका ॥ अंकुशअम्बरकुलिश कमलयवधुजा
धनुपद । शङ्खचक्रस्वस्तीकजम्बुफल कलशसुधाहृद ॥
अद्भुतदृष्टकानमीनविटुऊरधरेखा ॥ अष्टकोनत्रकोनइंद्र
धनुपुरुषविशेखा ॥ श्रीसीतापतिपदनितबसतसकलसु
संगलदायका । ये चरणचिह्न रघुवीरके संतनिसदासहा
यका ६ ॥

जैजै मीन वाराह ॥ मीनवाराह क्यों गाये राम कृष्ण छोंड़िके
सब जाति के साधु गाये जाहिगे कोऊ नीक चढ़ावै चाते पहिले
हरिहीकी जातिकहों हौं क्योंकि कोऊनाकचढ़ावै सो अबहीं च-
ढ़ावो कृष्ण कीरति को विषयहि सुने १-तिते अवतार कोऊ कहे
गुरुने आज्ञादई संतनिकीइन्हों ने प्रथमअवतार क्यों धरे । ब-
टुआ पहिले आवै साधुपदें आवै २ जाहीरूप जापै फकीर को
औ लरिका को दृष्टान्त कोऊ कहे मीन वाराह कैसे सुखदाई सु-
न्दर के संग ते सुन्दर होई केशन के संग ते कुटिलता ३ ॥

टीका ॥ संतनिसदाइकाजधारेनृपराजराभचरणसरो
जनिये चिह्नसुखदाइये । मनहींमतंगमतवारोहाथआवै
नाहीं ताकेलियेअंकुशलधारेहियेध्याइये ॥ ऐसेहीकुलिश
पापपर्वतकेफोरिबेको भक्तिनिधिजोरिबेकोकज्जमनलाइ
ये । जोपैबुधिवन्तरसवन्तरूपसम्पतिमें करिलेबिचारसब
निशिदिनगाइये १५ ॥

मनमतंग चतुर्थे ॥ अयत्त्वत्कथामृष्टपीयूषनद्या मनोवारणःक्ले
शदावाग्निदग्धः ॥ तृषातोवगाढनसस्मारदाव्रंननिष्कामतिब्रह्मस
म्पन्नवन्नः १ छप्पै ॥ सो सदा रहत नवरंगमेंमनमतंग बित्तख्योबुरो ॥
धरना धर्म उखारि सरम सांकरगहि तोरत । तरुणि करावल

लखत शील सालहिगहि मोरत ॥ विनय घाण नहिं वदत ज्ञान
 अंकुश नहिं मानत । गुरु महावत ताहि चाहि डारन उर आनत ॥
 लखिलेइवो व वारुण विषय कुन्दन मद यौवनजुरो । सो सदा
 रहत नवरंग में मनमतंग विचरयो सुरो २ कवित्त ॥ जनम जनम
 तोहिं जहां तहाधिरे फिख्यो मन मुट मरद गनीमतेरी पागी है ।
 कलह प्रसंगी पञ्चरङ्गी जङ्गी जोरावर अलख अनङ्गी सुउपाधि
 अनुरागी है ॥ कैदकरि पायो मनी राम नरकाया बीच अवकै जो
 चकै गो तो वडो तू अभागी है । सुमिर को सारपांच भूतनि
 को सरदार मारि ऐसी मार तेरी भलीघात लागी है ३ यव को
 हेतसुनो सदा दाता सब विद्या की सुमति को सम्पति को सुख
 को निवास है । क्षण में समीतहोत कलिकी कुचालि देखि ध्वजा
 सो विशेषज्ञां अभयविश्वास है ॥ गोपद सुद्धै है भवसागर सु
 नागर न जोपै नेकु हिये को लगावै मिटै त्रास है । कपट कु
 चालि मायाजाल सब जीतिवै को अम्बर को दर्श कियो जो पै
 अनायास है १ कामहू निशाचर के सारिवे को चक्र धरयो संगल
 कल्याण हेत स्वस्ति कहूमानिये । मङ्गलीकजम्बूफल फलचारहूको
 फल मनकामनाअनेक पूरणहोष्यानिये ॥ कलश औजुषाकोसरस
 हीरेभक्ति भस्थो नैनपुट पानकीजै जीजै मन आनिये । भक्तिकी
 वढ़ावैऔघटावैतीनितापनिकोअर्द्धचन्द्रधारणवेकारणहूं जानिये २
 विषयसुवंगवलमीकतनमाहिं वसै दास कोनइसै ताते यलअनुस-
 स्थोहै । सीनविन्दुरामचन्द्रकीनोवसीकर्णप्रायताहीते निकायजन
 मनजातहरयो है ॥ अष्टकोन त्रयकोनयन्त्र किये जीतिवैको जिये
 जोईजानो जाके ध्यानउरभरयोहै । सनसारसागरकोपारावारपावै
 नाहिलध्वरेखादासनिको सेतबंधकरयोहै ३ धनुपदमाहिं धरयोह-
 ल्योशोकध्यानिको मानिकोमारयोमानरात्रणादि शाखिये ।
 पुरुष विशेषपद कमलबसायोराम हेतअभिरामसुनौइयाम अभि-
 लाखिये ॥ सूधेमनसूधेनसूधीकरतूसव ऐसो जनहोइ मेरो
 याहीतेजुराखिये । जोपैषुधिवतरसबंतरूपसंपति में करिलै विचार

सब निशिदिन भाखिये ४ ॥ दोहा ॥ दुख में तो सबकोउ भजे
सुख में भजे न कोइ ॥ जो सुखमें हरिकोभजे तो दुख-काहेको
होइ ५ कवहुँ न सुख में हरिभजे दुखमें कीने यादि ॥ कहि
कवीर वा जीवकी कैसे लगे फिरादि ६ जो साहिबसों तू मिलै
साहिब मिलै तौ तोहि ॥ बिना भजन-मिलतो नहीं सुख-काहे
के होहि ७ वसति हृदय जाके दया रामहि जानत जोइ ॥ दया
राम पावै तवै दया राम की होइ ८ ॥

हरिपदछंद मूल ॥ त्रिधिनारदशंकरसनकादिककपि
लदेवमनुभूप । नरहरिदासजनकभीषमबलि शुकमुनि
धर्मस्वरूपा ॥ अंतरंगअनुचरहरिजुके जोइनकोयशंगाव ।
आदिअंतलोंमंगलतिनकोश्रोताबिक्तापाव ॥ अजासील
प्रसंगयहनिर्णयपरमधर्मकेजान । इतकीकृपाऔरुपुनिस
मभैद्वादशभक्तप्रधान ॥ टीका ॥ द्वादशप्रसिद्धभक्तराजक
थाभागवतअतिसुखदाईनानाविधिकरिगायेहैं ॥ शिवजुको
बातएकबहुधानजानैकोऊसुनिरससानैहियो भावउरभा
येहैं ॥ सीताकेबियोगरामबिक्रलबिपिनिदेखि शंकरनिपुण
सतीवचनसुनायेहैं । कैसेयेप्रबीणईशकौतुकनवीनदेखो
मनैहूँकरतअंगवैसेहूँबनायेहैं १६ सीताहीसौरूपबेषले
शहूनफेरफाररामजुनिहारिनेकमनमनआईहै । तबफिरि
आइकेसुनाइदईशंकरको अतिदुखपाहबहुविधिसमुभा
ईहै ॥ इष्टकोस्वरूपधख्योततितनपरिहृद्यो पख्योबड़ाशो
चमतिअतिभरमाईहै । ऐसेप्रभुभावपगेपोथिनमैजगम
गेलगेमोकोप्यारेयहवातरीभिगाईहै १७ ॥

अन्तरंग ॥ बाणासुर के युद्धमें महादेव कृष्णसों लरे ॥ भाग-
वते ॥ स्वयंभूर्नारदः शंभुः कुमारः कपिलोमनुः ॥ प्रह्लादो जनकोभी

प्रावलि वैयासकिर्णयम् २ निपुणपरमेश्वरका प्रमको स्वादे नहीं
 जैसे पादशाहीको फकीरीको नहीं ॥ नाटके ॥ कथ्ययदनायनाथ
 किमिदं द्वासीस्मितलक्ष्मणः कोहवत्सनु आयुष्वभगवानाथ्यश्च
 कोराधवः ॥ किंकुसोविजनेवमे तत इतो देवीभूशो वीक्ष्यते कादे-
 वीजनकाधिराजतनया हाहाप्रिये जानकि ४ ॥ मनेहुकरत ॥
 हाहा ॥ ल्या जगके राजानिको भेटे न जानकोइ ॥ तीसु अन्त क्यों
 पाइये सबको करता सोइ ॥

चलेजातमगउ भैखेरेशिघदीठिपरे करेपरनापद्वियेभ
 किलागीप्यारिये ॥ पारवतीपूछेकियेकौनकोजूकहौमोसो
 दीसतनजनकोऊतबसोउचारिये ॥ वरषहजारदशवीतेत
 हांभक्तभयो नयोओरुहैहैदूजाठोरवीतेधारिये । सुनिकै
 प्रभावहरिदासनिसेभाववदयो रदयोकेसेजातचढ्योरंग
 अतिभारिये २८ टीका अजामीलकी ॥ धरयोपितुमातु
 नामअजामीलसाचभयोअजामलरह्योछुटी तियाशुभजा
 तकी ॥ कियोमदपानसोसमानगहिदूरडाखो ॥ गाखो
 तनबाहीसोजोकीन्होलेकेपातकी ॥ करिपरिहासकाहुदु
 प्रनैपठायेसाधु आयधरदेखिनुद्धिआइगईसातकी ॥ से
 वाकरिसावधानसंतनिरिझाइलियो नारायणनामधरयो
 गर्भवालवातकी १९ ॥

वरषहजार बाबा नानक श्ररु मरदाने चेलाको दृष्टान्त भाग-
 वते ॥ सुक्तानासभिसिद्धाना नारायणपरायणः ॥ सुदुर्लभःप्रशांता
 त्माः कोटिष्वपिमहामुने १ नीतो ॥ गिरोगिरौनमाणिक्यं मौक्ति
 कनगजगजे ॥ साधवोनहिसर्वत्र चन्द्रतनवनेवने २ रंगचढयोभा-
 गवते ॥ वरमेकवृणोथापि पूर्णात्कामाभिवर्षणात् ॥ भगवत्युत्तमा
 भक्तिं तत्परिषुतथास्त्रिये ३ ॥ सयान दोहा ॥ तनक नरहै विर-
 क्तिता लगे दुगनिकी थाप ॥ कहू पूजा मालाकहू कहू बटुवा कहू

आप ४ करिपरिहास तापै शिवजीको दृष्टान्त ॥ सातकी भागवती ॥
 नह्यन्मयानितीर्थानिनदेवासृच्छिलमयाः ॥ तेषु नृत्युरुकालेन दर्श
 नादेवसाधवः ६ सावधान नीतौ ॥ आत्मना मुखदोषेण बध्यन्ते शुक्
 सारिकाः ॥ वकास्तत्र न बध्नन्ते मौनं सर्वार्थसाधकम् ७ मोहजाल ॥
 श्लोक ॥ अङ्गलितं पलितं मुण्डं जातं दर्शनं विहीनं तुण्डं वृद्धो याति
 गृहीत्वा दण्डं तदपिन मुञ्चत्याशापिण्डम् १ ॥

आयगयो काल मोह जाल मेल पटिर ह्यो महा बिकरालय
 मदूत दी दिखाइये । वही सुत नारायण नाम जो कृपा कै दियो
 लियो सो पुकारि सुर आरत सुनाइये ॥ सुनत ही पारषद आये
 ता ही ठौर दौरि तोरि डारे पाश क ह्यो धर्म समुद्राइये । हारै लै बि
 डारे जोइ पति पै पुकारे क ही सुनो बज मारे मति जावो हरि गाइ
 ये २० मूल ॥ मोचित वृत्ति नित त हर हो जहँ नारायण प
 द पारषद ॥ विष्वक्सेन जय विजय प्रबल बल मङ्गलकारी ।
 नन्द सुनन्द सुभद्र भद्र जग आभय हारी ॥ चण्ड प्रचण्ड बि
 नीत कुमुद कुमुदाक्ष कृपालय । गील सुशील सुमेन भाव भक्त
 न प्रतिपालय ॥ लक्ष्मी पति प्रीति प्रबीन मति भजनानन्द
 सुभक्त हृद । मोचित वृत्ति नित त हर हो जहँ नारायण पद
 पारषद ८ ॥

आरत भागवते ॥ साकेत्य पारिहास्य वा स्तोमहे लनमेव च ॥ द्वै
 कुण्ठनामग्रहणमशेषाघहरविदुः १ धर्मसमुद्राडपै ॥ एतेनैव ह्यघो
 नास्य कृतस्यादघनिष्कृतम् ॥ यद्गनारायणाय विजगादचतुरक्षर
 म् २ स्तेनः सुरापो मित्रभृग्व्रह्महा गुरुतल्पगः ॥ स्त्रीराजपितृगोहंता ये
 च पातं क्रिनोपरि ३ सर्वेषामप्यघवता सिद्धमवसुनिष्कृतम् ॥ नामव्या
 हरणं विष्णोयते स्तोद्विषयामतिः ४ अहोवतवपचो तो गरीयान्य
 जिज्हाश्रिवर्ततनाम तुभ्यम् १ तेषु स्तपस्ते जुहुवुः सन्तुराया ब्रह्मानुचु
 ना मश्रुहन्ति यते ४ स० ॥ कह ब्रतने मगजेन्द्र क्रिया कहा वेदप्राण

पद्मीगनिका । अजमील ने कौन अचार कियो निशिवासर संगसु-
रापनिका । कबहीं कहजाप वधिककियो सोहुतो धनजीवनको
हनिका । तुलसी अर्घ पर्वत कोटिजरे हरिनाम हुताशनको क-
निका ६ हरिगाइपै दूतनि प्रति । नामोच्चारणमाहात्म्य हरेः प
श्यत पुत्रकाः ॥ अजामिलोपि येनैव मृत्युपाशादमुच्यत ७ ॥

टीका ॥ पारषदमुख्यकहेसोरहसुभावसिद्धिसेवाहीकी
ऋद्धिहियेराखीवहुजोरिकै । श्रीपतिनरायणकेप्रीतसुप्रवी
णमहाध्यानकरैजनपालैभावदृगकोरिकै ॥ सनकादिदि
योशापप्रेरि कै दिवायो आपप्रकटहै कह्यो पियोसुधाजिमि
घोरिकै । गहीप्रतिकूलताईजोपैयहैमनभाई यातेरीतिह
दगाईधरीरंगबोरिकै २१ मूल ० ॥ हरिवल्लभसबप्रारथो
जिनचरणरेणुआशाधरी ॥ कमलागरुडसुनंदआदिषोड
शप्रभुपदरति । हनुमतजाम्बवान्सुग्रिवविभीषणशबरी
खगपति ध्रुवउद्धवअवरीषविदुर अक्रूरसुदामा । चन्द्र
हासचित्रकेतुग्राहगजपाडवनामा ॥ कौषारवकुंतीबधूपट
एचतलज्जानहिहरी । हरिवल्लभसबप्रारथोजिनचरणरे
णुआशाधरी ९ ॥

प्रेरिकै दिवायो ॥ नीतौ ॥ लक्ष्मीवन्तो न जानन्ति प्रायेणपर
वेदनाम् ॥ शेषधराभराक्रान्ते शैतेलक्ष्मी पतिस्वयम् १ पियो सुधा
जिमि॥दोहा ॥ तुम मति भूल्यो भूलनो सुनि मनमोहन मित्त ।
भूलेपर भूलो नहीं तोही सुमिरो नित्त २ कवित्त ॥ प्रतिकूलता-
ई ॥ नरक जो देहि तौन निदरि विमुखहूजै स्वर्ग जो तेहि तौन
हरष सराहिये । रदकरिडारैतौन कीजियेकलेश जियकरै जो कवूल

० मूलकीनवई छप्पै के सुग्रिव और चित्रकेतु इन दोनों पदों में गुरुउच्चारणन
करना जिस में सु और चि इन दोनों में एकही एक मात्रा के गिनने से चौबीस
मात्रा का चरण बनारहे ॥

तौन फूलिके उमाहिये ॥ जिहीअंग रंगहोइ तिही अंग रंग हूँ जिये
दिल सनेही नेही नीके के निवाहिये । चित क्या न चाहमरी आव
चाह चूल्हे परी प्रीतम जो चाहे चाह सोई चाह चाहिये ३ दोहा ॥
दियो सुशीश चढाइलै अच्छी भांति अपेर ॥ जासो सुख चाहत
लयो ताके दुखहि न फेर ४ चरणरेणु ॥ श्लोक ॥ रङ्गगोतत्तपसा
नयाति न चैज्यथानिर्दपणाद्गृहोद्वा ॥ नच्छन्दसानेवजलाग्निसूत्रे
विनामहत्पादरजोभिषेकम् ५ लज्जाहरी ॥ दोहा ॥ पट्टचत
मटकी नहीं भुजवल भई अत्राय ॥ तुलसी क्रीन्हो ग्यारहो बसन
रूप रघुनाथ ६ ॥

टीका ॥ हरिकेजवल्लभहैदुर्लभभवनमांझ । तिनहीकी
पदरेणुआशाजियकरीहै । योगीयतीतप्रीतासोमेरोकहुका
जनाहै प्रीतिपरतीतिरोतिमेरीमतिहरीहै ॥ कमलागरु
इजामवानऔसुग्रीवआदि सबैस्वादरूपकथापोथिनमे
धरीहै । प्रभुसोसचाईजगकीरतिचलाईअतिमेरेमनमा
ई सुखदाईरसभरीहै २२ टीका हनुमानजकी ॥ रतनअ
पारक्षीरसागरउधारकिये लियेहितचायकैबनाइमालाक
रीहै । सबसुखसाजरघुनाथमहराजजूके भक्तसोविभीष
णजूआदिभेटधरीहै ॥ समाहीकीचाहअवगाहहनुमानग
रेडारिदईसुधिभईमतिअरवरीहै । रामबिनकामकौनफोरि
मणिदीनोडारिखोलितुत्तानामहीदिखायोबुधिहरीहै २३ ॥

डारिदई ॥ रामायणे ॥ ककणेनेत्रजानामि नैत्रजानामिकुण्ड-
ले ॥ नूपुरात्रेवजानामिसदापादाभिवन्दनात् १ छपे ॥ श्रीराम
चरण तजि आन रति गजतजि मनु गदहै चढो ॥ वहै नीच वहै
पोच वहै आतम चडपापी । वहै अविद्या मूल वहै गुरुद्रोहि सु-
रापी ॥ वहै दीन मतिहीन वहै नरकनि में नामी । वहै कृतघ्नी
कुटिल वहै बड़ लोन हरामी ॥ कहै अग्रदास तहि गति नहीं तीनि

तापसो हियदहौ । श्रीरामचरण तजि ० २ ॥ फोरि मणि दीनी । कि-
कंठभूषणम् ३ खोलित्वा ॥ कवित्त ॥ न्यारी न्यारी दीसैं जैसे का-
गदकी चोरीपर मसी की डँढीरी ऐसी मजनूकी पांसुरी । गरि-
गयो गात घेरी पात सो पुरानो हैकै पान पान रही परयो लेत है
उसांसुरी ॥ तेरी ये तलब तेरे तालवदिवानोको है देखत हवाल
वाको आवत है आंसुरी । लेरी अब लैलै उरलाइ लेरी अपनी सों
फेरि पछितै है जब माटी मिलै मांसुरी ४ ॥

टीकाविभीषणजूकी ॥ भक्तिसौविभीषणकी कहै ऐसो कौ-
नजनएपैकलुकहीजातिसुनोचितलाइकै । चलतजहाजप-
रअटकिविचारिकियोकोऊअंगहीननरदियोलैबहाइकै ॥
जाइलग्यो टापूताहिराक्षसिनिगोदलियो मोदभरिराजा
पासगयेकिलकाइकै । देखतसिंहासनतेकूदिपरैनैनभरे
याहीकेअकाररामदेखैभागपाइकै २४ रचिसोसिंहासनपै
लैबैठाये ताहीक्षण राजसनरीभ्रिदेतमानी शुभघरीहै ।
चाहतमुखारविदअतिहीअनंदभरि ढरकतनैन नीरटेकि-
ठाढो छरीहै ॥ तऊनप्रसन्नहोतक्षणक्षणज्योतिहूजिये
कूपालमतिमेरीअतिहरीहै । करौसिंधुपारमेरेपहीसुखसार
दियेरतनअपारलायेवाहीठौरफरीहै २५ रामनामलिखि
शीशमध्यधरि दियोयाको यहीजलपारकरैभावसांचोपां-
योहै । ताहीठौरबढयोमानोनयोऔररूपभयोगयोजो-
हाजसोईफेरिकरिआयोहै ॥ लियोपहिंचानिपूछेसबसोब-
खानकियोहियोहुलशायोसुनिधिनैकैचढायो है । परयो
नीरकूदिनेकुमायानेप्रवेशकियो हस्योमनदेखिरघुनाथना-
मभायो है २६ ॥

दियो लैबहाइ ॥ नीतौ ॥ बनानिदहतोवहेः सखाभवतिमारु

तः ॥ सएवदीपनाशायकशेकस्यास्तिसौहृदम् १ अश्वनैव गजनै-
वसिंहनैवचनैवच ॥ अजापुत्रबालदद्याद्विबुधुर्वलघातकम् २ जाइ
लग्यो ॥ दोहा ॥ कबिरातेरनामपदकियो सुराई लौन ॥ जिन्हच-
लाओ पथतुम तिन्है भुलावैकौन ३ राम नाम श्लोक ॥ रामत्व
सौधिकनाम इतिमेनिश्चितामतिः ॥ त्वयातुतारितायोध्यानाम्ना
चभुवनत्रयम् ४ रामनामकेलिखेतरपाषाणरे । दुष्टअजामिलतरयो
नामते जानरे ॥ सबतजि भजि हरि नाम सुनो सबजतरे । नाम
बिना है नरक समुक्ति सुठि संतरे ५ ॥

शबरीजीकीटीका ॥ वनमें रहतिनामसेबरीकहतसबब
हतटहलसाधुतनन्यूनताईहै । रजनीकेशेषऋषिआश्रम
प्रवेशकियोलकरीनबोभधरिआवै मनमाईहै ॥ न्हाइबेको
मगझारिकांकरनिवीनिडारि बेगिउठिजाइक्रोऊजातन
लखाईहै । उठतसवारैकहैकौनभ्रौवहारिगयोभयोहियेशो
चक्रोऊबडोसुखदाईहै २७ बड़ेईअसंगवेमातंगरसरंगभ
रेधरेदेखिबोभकह्योकौनचोरआयोहै । करैनितचोरीअ
होगहोवाहिएकदिनबिनापाये प्रीतिवाकीसनभरमायोहै ॥
बैठेनिशिचौकीदेत शिष्यसबसावधान आइगईगहिलई
कापै तननायोहै । देखतहीऋषिजलधाराबहीनैनिते बै
ननिसोकह्योजातकहाकठुपायोहै २८ ॥

वन में रहत दोहा ॥ लाल पनन लोजे भरे उधरे डांक लगाइ ॥
करणफूलभूलतरहै काननहीं में आइ १ कवित्त ॥ जाइये न तहां
जहांसंगतिकुसंगतिहै कायरकेसंगशूर भागिहैपै भागिहै । फूलनिके
बास बस फूलनि की बासहोति कामिनीके संग काम जागिहै पै
जागिहै ॥ घरबसेघरबसेघरमें वैरागकहा सायामोहममतामें पागि
है पै पागिहै । काजर की कोठरीमें कैसोहू सयानो बैठे काजर की
एक रेख लागिहै पै लागिहै २ निशिबासरवस्तु विचारि करै सुख

सांचहिये करुणाधतहै । अघनिग्रहसे ग्रहधर्म कथा सुपरियहसा-
धन का गुन है ॥ कहिकेशवभीतरयागजये अतिऊपरभोगनिमें
तनहै । मन हाथ सदा जिनके तिनको बनही घरहै घरही बनहै ३
रसरगभरे ॥ रसोवैसः रसहवायलब्ध्वानदीभवति इतिश्रुतः ॥ काई
कहै विरक्त हूँकर रसरगमें कैसेभरे जैसे शुक्रदेवजी चीरहरण की
लीला दुलराइके गाई है ४ ॥

ढीबिहूनसौहीहोतिमानितनगोतछोत परी जायशो
चसोतकैसेके निकारिये । भक्तिकोप्रतापऋषिजानतनि
पटनीकेकेऊकोटिनिप्रताईयापैवारिडारिये ॥ दियोवासआ
श्रममेंश्रवणमेंनाभदियो कियोमुनिशेषतवैकीनीपांतिन्या
रिये । सबरीसांकह्योतुमरामदरशनकरौभैतौपरलोकजा
तआज्ञाप्रभुपारिये २९ गुरुकोत्रिशोभहियेदारुणलैशोक
दियोजियेनहींजाततऊरामआशलागीहै । न्हाइवेकोघाट
निशिजातिहीबहारिसब भईस्योअवारऋषिदेखिव्यथापा
भीहै ॥ लुयोग्योनेककहूंखीजतअनेकभांतिकरिकैविवेक
गयोन्हानयहभागीहै । जलसौरुधिरभयोनानाकृनिभरि
गयोनायोपायोशोचतौहूजानैनअभागीहै ३० लावेवनवेर
लागीरामकीआँसेरभठ चाखैधरिराखैफिरभीठेउनयोग
हैं । मारगभरहैजाइलोचनबिछाइकभुंआवैरदुराइदृगपा
वैनिजभोगहै ॥ ऐसेहीबहुतदिननीतेलगजोवतहीआइ
गयेऔचकासुमितेसबलोगहैं । नूनताईआई सुधिछिपी
जाइपूछैआप सेबरीकीकूटी कहाँठढेसबलोग है ३१ ॥

भक्तिको प्रताप इतिहास ॥ शिवलिंगसहस्राणिशालग्रामशता-
निच ॥ कोटिद्वादशकाविप्राएकःश्वपचवषणवः १ हरिभक्तिलति-
कायाम् ॥ व्याधस्याचरणंघुनस्यचवयोविद्यागजेद्रवकाकृज्याः

किमुनामरुपमधिकं क्वित्तुदासोधनम् ॥ वंशःकोविदुरस्ययाद
 वपरेरुपस्यकिमोरुषसभक्त्यातुष्यतिकवलं नतुगुणैर्भक्तिप्रियोन्मा
 धनः २ नामदियो ॥ पंचरात्रे ॥ यावद्गुरुर्नक्रियते सिद्धिस्तावन्न
 लभ्यते ॥ तस्माद्गुरुर्हिकर्तव्यो नैवसिद्धिर्गुरुविना ३ अभागीहै॥
 छप्पे ॥ मत्सर क्रोध मिलि रह्यो गर्व गिरिपरयो जु गाजे । क्रोध
 गोद हिय मध्य वृन्द मद मदन विराजे ॥ लोभ भंवर हृदकमल
 क्रोम भीतर तिहि आसन । कपट भूठ मिलि मिलै शिष्य न
 भ्रान्त विश्वासन ॥ मन मोह कोह कन्दर परयो अपरस है भी-
 टनडरे । भनि लाल बाल हरिवेशहित बिन प्रसाद तम को हरे ॥

पंछिपंछिआयेतहांसवरीअस्थानजहां कहां वहभागव
 तीदेखौ दृगप्यासेहैं । आगईआश्रममेंजानिकैप्रधारेआ
 पदूरहीतेसासटांगकरोचषभासेहैं ॥ रवकिउठाइलईव्यथा
 तनदूरगईनई नैननीरभरीपरे प्रेमपासेहैं । बैठेसुखपाइ
 फलखाइकैसराहेवेइकह्यो कहाकहाँ मेरे मगदुख नाश है
 ३२ करतहैंशोचसबबैठेरूषिआश्रममें जलकोविगारसो
 सुधारिकैसेकीजिये । आवतसुनेहैंबनवथरघुनाथकहूंआ
 वैजवकहैंयाकोभेदकहिदीजिये ॥ इतनेहींमांझसुनिसवरी
 केराजेआनि गयो अभिमानचलोपगगाहिलीजिये । आ
 येखुनसाइकहीनीरकोउपाइकहो गहोपगभीलनीकेबुवो
 रुदच्छभीजिये ३३ ॥

इतनेही ॥ नीतौ ॥ राज्यहीनानराःसर्वे बुद्धिहीनाभवन्तिहि ॥
 बुद्धिहीनानराःसर्वे राज्यहीनाभवन्तिहि १ खाइकै ॥ पद मीठे
 मीठे चाखि चाखि बेर लाई भीलनी । कौनसी अचारवती नहीं
 रूप रंग रती जातिहूमें कुलहीन बड़ी है कुचीलनी ॥ जूठे फल
 खाये राम सकुचे न भावजानि तुमतौ प्रभु ऐसी कीनी रसकी
 शीलनी । कौनसी तपस्या कीनी बैकुण्ठ पदवी दीनी विमानमें

चढ़ीजात ऐसी है सुशीलनी ॥ सांची प्रीतिकरै कोई अमरदास
 तरै सोई प्रीतिहीसों तरिगई गोकुल अहीरनी २ कही नीर नीर ॥
 नीतौ ॥ शठप्रतिशठंकुर्यादादरंप्रतिचादरम् ॥ त्वयाचलुवितेपक्ष
 मयातेमुण्डितंशिरः ३ तापै तोता को अरु वेदया को दृष्टान्त ४
 स्वच्छ भीजियै ॥ दोहा ॥ अधिक बढ़ावत आपते जन महिमा
 रघुवीर ॥ सवरी पद रज परशते शुभ भयो सरिता नीर ५ हरिभ-
 गतनि को मिलत है भगवतके यश थाप ॥ हृदय बीच को फलत
 है समुझौ आपहि आप ६ अभिसानी ऋषि छौडि सवरी के गये ॥

जटायुकीटीका ॥ जानकीहरणकियोरावणमरणकाजगु
 निसीतावाणीखगराजदौख्योआयोहै । बड़ीपैलडाईलीनी
 देहवारिफेरिदीनीराखेप्राणराममुखदेखिवोसुहायोहै ॥ आ
 येआपगोदशीशधरिदृग्धारसीच्यो दईसुधिलईगति
 नहूंजरायोहै । दशरथवतरासकियोजलदानयहअतिसन
 माननिजरूपधामपायोहै ३४ अंबरीषजकीटीका ॥ अंबरी
 षभक्तकीजुरीषकोऊकरै और बड़ोभतियौरकिहूंजातनहि
 माखिये । दुरवासाऋषिशिषसुनीनहींकहूंसाधुमानिअपरा
 धशिरजटाखैचिनाखिये ॥ लईउपजाहकालकृत्याविकरा
 लरूपभूपमहाधीररह्योठाढोअभिलाखिये । चक्रदुखमा
 निलैकृशानु तेजराखकरी परीभीरब्राह्मणकोभागवतसा
 खिये ३५ ॥

गोद शीश ॥ सवैया ॥ श्रीरघुनाथजू लै खग हाथ निहारै औ
 नैननि ते जलडारै । टूक हैजात है सीता विधाकै सो याकी सनेह
 कथाकै विचारै ॥ तजि मोहि चले लागि नीको तुम्हें हमें सौह
 तिहारी है संग तिहारै । योंकाहि राम गरो भरिफेरि जटायु की
 धूरि जटानसों भारै १ लई गति दोहा ॥ सुये मरत मरिहैं सकल

घरी पहर के बीच ॥ लही न काहू आजुलों गीधराजकी मीच २
 दई सुधि ॥ रघुबर विकल विहंग लखि सो विलोकि दोउ वीर ॥
 सियसुधि कहि सिय राम कहि देह तजी मतिधीर ३ घरी जना-
 वतहीरहैं घरी भजे नहिं राम ॥ घरीभई सब पुण्यकी खरी सुमति
 बेकाम ४ ॥ रीखकोऊ ॥ नत्रमे ॥ सबै मनःकृष्णपदारविन्दयोर्व
 चांसिवैकुण्ठगुणानुवर्णने ॥ करौहरेर्मदिरसार्जनादिपुश्रुतिचकारा
 च्युतसत्कथोदये ५ मुकुन्दलिङ्गालयदर्शनेदृशौ तद्भृत्यगात्रस्पर्शंग
 संगमम् ॥ घ्राणंचतत्पादसरोजसौरभे श्रीमनुलस्यारसनातदपि
 ते ६ पादौहरेःक्षेत्रपदानुसर्पणो शिरोहृषीकेशपदाभिवन्दने ॥
 कामञ्चदास्येनतुक्रामकाम्यया यथोत्तमश्लोकगुणाश्रयारतिः ७ ॥

भाज्योदिशादिशासवलोकलोकपालपासगथोनयोतेज
 चक्रचूनकियेढारेहैं । ब्रह्माशिवकहीयहगहीतुमटेवबुरी
 दासनिकोभेदनहीजान्योभेदधारेहैं ॥ पहुं चैकंठजाइकह्यो
 दुखअकुलाइ हायहायराखौप्रभुखरौतनजारहैं । मैतो हौं
 अधीनतीनिगुणकोनमानमेरेभक्तवात्सल्यगुणसबहीको
 ढारेहैं ३६ मोकोअतिप्यारेसाधुउनकी अगाधमत्तिकरौ
 अपराधतुमसह्योकैसेजातहै । धामधनवामसुतप्राणतन
 त्याग करैठरै मेरीधोरनिशिरोस्मोसोबातहै ॥ मेरेउनसंत
 बिनुऔर कलुसांचीकहौंजाओवाहीठौर यातेभिटैउत
 पातहै । बड़ेइदयालसदादीनप्रतिपालकरै न्यूनता न
 धरै कहूंभक्तिगातगातहै ३७ ॥

ब्रह्मवाक्य ॥ लक्ष्मीः प्राणाधिकाराश्चक्ष्मस्ति कोपिततोधिकः ॥
 भक्तानद्वेषिस्वयसाचेत् तूर्णत्यजतिताविभुः १ ॥ शिववाक्य ॥ म
 हतिप्रलयेब्रह्मन् ब्रह्माण्डोपिजलप्लुतः ॥ नतत्रनाशोभक्तानां सर्वे
 पांचविशिष्यते २ ॥ हाय हाय ॥ पद ॥ हरि भक्तनिसों गर्व त

करिवो । यह अपराध परम पदहूते उतरि नरक में परिवो ॥ गज
 सिंहासन अङ्गुली चङ्कि भवसागर नहि तरिवो । हृद कुलवन्त
 धनी यो भिक्षुक लीचन मनमें धरिवो ॥ यह सत भली नहीं आपुन
 बड़ा नर कूकर अनुसरिवो । हरिलेखी प्रशगाइक को लघु मानत
 नेकु न डरिवो ॥ अपने दोष निपट आंखेपर दोष कुतर्कनि जरिवो ।
 वृथा चातुरीकाँढ़ जनमते भले गर्भमें गरिवो ॥ खानपान ऐडान
 भले जो बदन प्रसारि न डरिवो । श्रीकृष्णदास हित धरि वि-
 वेकचित्त साधन संग उवरिवो ३ ॥ आधीन नवने ॥ अहं भक्त
 पराधीनो ह्यस्वतन्त्र इव द्विजः ॥ साधुभिर्ग्रस्तहृदयो भक्तैर्भक्तज-
 नप्रियः ४ धामधन भागवते ॥ येदारागारपुत्रासान् प्राणान्वित-
 मिसंपरम ॥ हित्वा मां शरणयाताः कथं तांस्त्यक्तुमुत्सहे ५ नाहमा-
 त्मानमाशासि सन्नक्तैस्साधुभिर्दिना ॥ श्रियं चात्यन्तिकीं ब्रह्मण येषां
 गतिरहंपरा ६ तीननाम शरणागतपालक आरतनाशन ब्रह्मण्य-
 देवना भलोगर्भ में गरिवो ७ ॥

है करि तिरास क्रुद्धि आयो नृपयास च ल्यो गर्वसो उदास
 पम । गहे दीन भाख्यो है । राजालाजमानि मृदुकहि सनमान
 कख्यो देख्यो चक्र और करजोरि अभिलाख्यो है । भक्तनि
 शिकामकहूँ कामनान चाहत है चाहत है विप्रदूरिकरो दुख
 चाख्यो है । देखिकै विकलताई सदा संतसुखदाई आई मन
 मां भूसवैते जटांपिराख्यो है ३८ एकनृपसुतासुनिअंवरी
 षभक्तिभावभख्यो हियभावऐसोबर करिलीजिये । पितासो
 निशंकहै केकहीपतिकियोमैहीं विनै मानिमेरी बेगिचिष्टी
 लिखदीजिये ॥ पातीलै च ल्यो विप्रक्षिप्रवहिपुरीगयो
 नयोवावजान्यो ऐपैकैमेतियाधीजिये । कहौ तुमजाइरा-
 नाबैठीसत आइसोको बोल्यो न सुहाइ प्रभुसेवामां भभी
 जिये ३९ ॥

गभंसों उदास ॥ पद ॥ हम भक्तनसों भूलि बिगारी । जान्यों
 नहीं इतो बल इनको ये हरिके अधिकारी ॥ कमलपराग भँवर भल
 जानै वहे वासना बिहारी । निपट नालके निकट मेडुका भयो
 कीचकोचारी ॥ काम क्रोध मद अतिशय जडमीत तप बल बढ़यो
 बिकारी । अंगीकार किये हरि इनको यह कलु हम न बिचारी ॥
 दुर्बासा अम्बरीषहि आगे करी दीनता भारी । अद्यदास अभिमान
 पोटरी ऋषिशिरते तब डारी १ ॥ निशंक है कै ॥ सवैया ॥ चन्दन
 पंक गुलाबको नीर सरोजकी सेज उठाइ धरौरी । तूल भयो तन
 जात जगो यह बैरी दुकूल उतारि हरौरी ॥ शम्भुजू झूठे सवे उ-
 पचारयो माह तुसारके भारपरौरी । लाजके ऊपर गाजपरै ब्रज-
 राज मिलै सोइ लाजकरौरी २ जरिजाहु जो लाज सो काज
 बिगारे ३ तिया धीजिय तिया धीजेयके सरानी की लौड़ी पंडित
 कोइ द्रष्टान्त ॥ चोरसाहूकारको द्रष्टान्त ॥ दो व्याहाकान्याय ॥
 नखिनाचनदीनाच शृङ्गिणाश्रपाणिनाम् ॥ त्रिश्वासो नैव कर्त्तव्यः
 स्त्रीपुराजकुलेषु च ४ द्रष्टान्तनानकशाहको ४ ॥

कही नृपसुतासों जोकी जियेयतन कौन पौनजिमि गयो
 आयो कामनाहीं वियाको । फेरिकै पठायो सुखपायो मैतौ जा
 न्यो वह बड़ो धरमज्ञवाके लोभनहीं तियाको ॥ बोली अकुला
 इमन भक्ति हीरि भाइलियो कियो पति मुखनहीं देखो और
 पियाको । जाइके निशंक यह बात तुममेरी कहाँ चैरी जो नक
 रौतौ पैलेवौ पापजियाको ४० कही बिप्रजाइ सुनि चाइ भ
 हराइ गयो दयौ लै खड़गयासो फेरि फेरि लीलिये । भयो जु बि
 वाह उतसाह कहूं मातनाहीं आई पुर अंबरीष देखि छबि भी
 जिये ॥ कही नवमंदिरमें भारिकै बसेरा देवो देहराव भोग
 बिभौ नाना सुखकी जिये । पूरव जनमको ऊमेरे भक्तिगंध
 हुतिया तेसुन बंधपायो यहै मानधी जिये ४१ रजनीकेशो

षपतिभौनमें प्रवेश कियो लियो प्रेमसाथ ढिगमंदिरके
 आइये । बाहरी टहल पात्र चौका करिरी भिरही गही कौन
 जाइ जा में होत न लखाइये ॥ आवत ही राजा देखे लगे ननि
 मेष कहूं कौन चोर आयो मेरी से बाले चुराइये । देखी दिन
 तीनि फिर चीन्हिके प्रवीन कही ऐसो मन जो पै प्रभुमाथे प
 धराइये ४३ ॥

बोली अकुलाइ ॥ ऋषभदेववाक्यम् ॥ गुरुनसस्यात् स्वजनो
 नसस्यात् पितानसस्याज्जननी न सा स्यात् ॥ देवं न तत्स्यान्न
 पतिश्चसस्यान्नमोचयेद्यः समुपेतमृत्युम् १ पतिभवनमें ॥ लक्ष्मी
 वाक्यम् ॥ सवैपतिः स्यादकुतोभयः स्वयं समंततः पाति भयातुरं
 जनम् ॥ स एक एवैतरथा मिथोभयं नैवात्मलाभादधि मन्यते परम् २
 विना टहलतौ भक्ति प्राप्ति नहीं होइ है अनेक उपाइ करौ विना
 हरिकी कृपा कहौ कहति आवे जैसे रसयनीकी रसायनि विना
 टहल नहीं पावै जब टहल करिके प्रसन्न करै तब मिलै ३ ॥

लई बात मानमानो मंत्र लै सुनायो कान होत ही बिहान
 सेवानीकी पधराई है । करति शिगार फिर आप ही निहारि रहै
 लहै नहीं पारद गझरी सील गाई है ॥ भई बढ धारि राग भोगसों
 अपार भाव भक्ति बिसतार सीति पुरी सब छाई है । नृप हू सुनत
 अब लागी चोप देखिबेकी आयो तत काल मति अति अकुला
 ई है ४३ हरै हरै पाँव धरै पौरियान मने करै खरै अरब रै कब
 देखो भाग भरीको । गये चलि मंदिर लौ सुंदर न सुधि अंगरंग
 भीजर ही टगलाइ रहे भरीको ॥ बीण लै बजावै गावै लालन
 रिझावै त्यों त्यों अति सनी भावै कहै धन्य यह घरीको । द्वार पै
 नरह्यो जाइ गये ललचाइ ढिग भई उठि ठाढी देखि राजा गुरु
 हरीको ४४ वैसही बजाओ व्रीनताननिनवीनलैकै भीन

सुरकानपरैजातमतिखोइये । जैसेरंगभीजिरहीकहीसो
 नजातिमोपै ऐयैमननैनचैनकैसेकरिगोइये ॥ करिकैअ
 लापचारोफेरिकैसँभारीतानआइगयो ध्यानरूपताहीमां
 झभोइये । प्रीतिरसरूपभई रातिसबवीतिगईनईकळू
 रीतिअहोजामेनहीं सोइये ४५ ॥

लईवातमानि ॥ गीतार्था ॥ जन्मान्तरसहस्रेपुतपोध्यानसमा
 धिभिः ॥ नराणांक्षीणपापानांकृष्णेभक्तिःप्रजायते ॥ रीक्षिये ॥ पं-
 चरात्र ॥ नाहंवसामिवैकुण्ठे योगिनांहृदयेनच ॥ मद्भक्त्यायत्रगाय
 न्ति तत्रतिष्ठामिनारद २ ॥ भई उठिठादी न्याये ॥ नराणांचनराधि-
 पः ३ ॥ एक उपदेशकर्त्ता गुरु ॥ एक पति परमेश्वर सो तीन जाति
 जानिकै उठी नहीं सोइये ॥ रोगी भोगी योगियावपु जेही पर
 काज ॥ शामन इनके दृगन में नींदे आवै लाज ॥ नासकेत ॥ एका
 क्षरप्रदातार योगुरुनैव मन्यते ॥ श्वानजन्मशतंगत्वाचांडालेष्वपि
 जायते ४ ॥

वातसुनोरानी औरराजागयेनईठौर भईशिरमौरअन
 कौनवाकीसरहै । हमहूँलेसेवाकरैपतिमतिब्रशकरैधरैनि
 तध्यानविषैबुद्धिराखीघरहै ॥ सुनिकैप्रसन्नभये अतिअँ
 वरीप्रईशलागीचोपफैलगईभक्तिघरघरहै । बढैदिनदि
 नचावऐसोईप्रभावकोईपलटैसुभावहोतआनँदकोभरहै ॥
 ४६ ॥ टीकाबिदुरजीकी ॥ न्हातिहीबिदुरनारिअंगनिप्र
 स्वारिकरिआइगयेद्वारकृष्णबोलिकै सुनायोहै । सुनतही
 सुरसुधिडारीलेनिंदरिमानो राख्योमदभरिदौरिआनिकै
 चितायोहै ॥ डारि दियोपीतपटकटिलपटाइलियोहियोसकु
 चायो वेसबेगिही बनायोहै । वैठीदिगआयकेराळीलिखी
 लिकाखवायआयोप्रतिखीज्योदुखकोटिगुनोपायोहै ४७ ॥

पलटै ॥ तापै इष्टांत राजाकी बेटीको अरु फकीर को १ धीस
 इहु रसिकहै जैहै ॥ पालपरै ज्यों आव मिटेहै १ आइगये ॥ इलोक ॥
 इद्रप्रस्थंयमप्रस्थमवन्तीवारणावतम् ॥ देहिमाचतुरोग्रामान्प
 अमंहस्तिनापुरम् २ विनायुद्धनदातव्यंसूच्यग्रसपिकेशव ३ यद्वाअ
 यंमंत्रकृद्वोभगवानखिलेश्वरः ॥ पौरवेन्द्रग्रहहित्वाप्रविवेशात्ससा
 त्कृतम् ४ ॥ कवित्त ॥ नार्हीं नार्हींकरै थोरो मांगैं सब देनकहै मंगन
 को देखिपेटदेत बारवारहै । जिनके मिलते भली प्रापतिकी घरी
 हौति ऐसकरतार किये ऐसे निरधारहै ॥ भोगी ह्वैरहत विलसत
 अबनी के मध्य कनकन जोरि दान पाढ़ परिवारहै । सेनापति
 समाक्षि विचारिदेखो चारदाता अरु सुम दोनों किये एकसारहै ५
 दुर्योधनघर त्यागतभये ॥ अपनोमानि विदुरकेगये ६ बोलिकै ॥
 दोहा ॥ सुधि सुरताल औ तान की रह्यो न सुरठहराइ ॥ येरी
 राग विगारिगयो वैरीबोल सुनाइ ७ रही दहेडी डिगधरी भरी
 मथनियां वारि ॥ फेरतकर उलटी रई नई विलोचनहारि ८ ॥
 कवित्त ॥ सोवतसमाधिते जगाइ दिये मुनिगणपशुहू चकितचित्त
 करैनाचरनको । गाइनते बछरा लुटायेजे पिवतक्षीर अद्भुतकथा
 तेरी कहाँलौ वरनको ॥ आन हथकरी गोपी सवै है डरनि डरी
 लेऊ तहाँपरीते गई धरा धरनको । बांसुरी में तोहिपछौं बारवार
 तहै लागी लालके अधर में अधरमें करनको ९ ॥ फली सांफके
 शिगार सूही सारी जुहीहार सोने सौ लपटी गोरी गौने कीसी
 आई है । आलम न फेरफंद जान कछु चंदमुखी शीपक बरावन
 कोनंदभौन लाई है ॥ ज्योतिके जुरतही में जुरनैनादुरेजाइचा-
 तुरी अचेतभई चितयो कन्हई है । बाती रही हाती छवि छाती
 रसझाती पूर पांगुरी भईहै मति आंगुरीलगाईहै १ गीतायां ॥ पत्रं
 पुष्पफलतोययोमभक्त्याप्रयच्छति ॥ तदहंभक्त्युपहृतमश्नामिप्र
 यत्तारसनः ॥ सवैया ॥ सूहीसीसारीसुहाईहैसांझमेनैनमांझमि
 जाजमईहै । कोहै कहांकीहै कौनकीहै घर कौनकेआई नवेलीनई
 है ॥ ठौरठगे उमंगेसे ममारष रीझिरहे अलिभेंटभई है । कोवलि

यागलियामें गई सुदियालै गई सो जियालै गई हे इ प्रेम को विचार ॥
 तत्सुखस्य सुख ॥ दोहा ॥ पूजि भवानी भाइ सो भागत यह घर
 देहु ॥ ब्रजमें सुन्दर साँवरो हमसो करे सनेहु ४ ॥ सबैया ॥ हमकूं
 तुम एक अनेक तुमहै उनहीके विवेक बनाइवहो । इतचाहतिहारी
 तिहारी उतै घरबाहर प्रेम सदा निवहो ॥ मनभावे ममारष सोई
 करौ अनुराग लता जिन वोयदहो । धनश्यामसुखी रहो आनंदमें
 रहो नीकेरहो उनहीकेरहो ५ नाकचढ़े सीवाँकरे जितेछवीलो
 छेल ॥ फिरि फिरि भूलवहै गहै पियककरीली गेल ६ ततवेत्ता
 तिहुँलोकमें भोजन किये अपार ॥ केशवरी कैविदुरघर रुचिमापी
 द्वै वार १ ॥

प्रेमकोविचारि आपलागे फलसारदैन चैनपायोहिये
 नारिवड़ीदुखदाईहै । बोलैरीभियामतुमकीनोवड़ोकाम
 ऐपै स्वादअभिरामवैसीवस्तु में नपाईहै ॥ तियासकुचाइ
 करकाटिडारोहाइप्राण प्यारकोखवाय ब्रीलिलकान
 भाईहै । हितहीकीवात दोऊकोऊपारपावैनाहि नीकेलै
 लड़ावैसोइ जानैयहगाईहै ४८ टीका ॥ सुदामाजूकी ॥
 वड़ोनिशिकामसेरचनहूनधामढिगआई निजबामप्रीति
 हरिसाँजनाईहै । सुनिशोचपस्योहियोखस्योअरबस्योमन
 गाढोलैकैकस्यो बोल्योहांजुसरसाईहै ॥ जावोएकवारवह
 वदननिहारिआवो जोपैकछुपावोलावोमोकोसुखदाईहै ।
 कहीभलीवात सबलोकमेंकलकहैहै जानीपतियाहीलिये
 कीनो मित्रताईहै ४९ ॥

मित्रताई ॥ कवित्त ॥ बोल्यो सुसुकाइ नारिबावरी कहाँ
 आई मोतनयै माँगैसोकपूतनिकोरावहै । गिरिदूतेभारे ऐसे दा-
 रिद हमारे भाग दई फिटकारे तिनहै कहौ कहांठामहै ॥ खैवेको
 नरोटी ऐसी आपदाहै मोटीसाथ बेगरीकछोटी सो सुदामा मेरो

नाम है । जौलौ गावै श्याम व्रनमणि पावै भीखकन तौलौ मानिलीजै
 शिरछत्रनकी छाम है २ आवति है लाज भारी जात ब्रजराजजुपे
 बसनसमाज देखिखसेमरिजाइये । एकहीपिछौरीसोतोठोरठोर
 फाटिरही ओढ़िये निशाको जासौ प्रांतउठि न्हाइये ॥ भेटऐसी
 नाहि जौलैजाई भगवंतजुपे अंतकभई है नारिकौलौसमुझाइये ।
 देह परमांस जौलौ नासिकामे श्वास तौलौ बड़ोउपहासमांगि
 सीतन सताइये ३ ॥

तियासुनिकहैकृष्णरूपक्योनचहै जाहिदहैदुखआप
 हीसो बचनसुनाये है । आईसुधिप्यारेकीविचारैमतिटारै
 तबधारेपगमगभूमिद्वारावतीआयेहै ॥ देखिकैविभूतिसुख
 उपज्योअभतकोऊ चलयोसुखमाधुरीकेलोचनतिसायेहै ।
 डरपति हियो ब्योढीलाधि मनगाढोकियो लियोकरचाह
 तबतहांपहुंचायै है ५० देख्योश्यामआयो मित्रचित्रवत
 रहेनेकुहितको चरित्रदौरिरोयगरेलागे है । मानोएकतन
 भयो लयोऐसेलाइछाती नयो यहप्रमदुटैनाहि अंगपागे
 है ॥ आईदुबराईसुधिमिलनिछुटाई ताते आने जलरानी
 पगधोयेभांगजागे है । सेजपधराइगुरुचरचाचलाइसुख
 सागरबडाइआइअतिअनुरागे है ५१ ॥

आईसुधि ॥ सवैया ॥ हेकरतारहौ तोसोकहां कवहुं जनिदी-
 जिये काहुकेटोटी । और लिखौ जिनिकाहुके भागमें मालकेकाजे
 महीपनिपोटी ॥ तूहुंतो जानतहै अपनेजिय मांगिवेतै कलु औरन
 खोटो । जोगयोमांगन तूबलिद्वार तोयाहीते हैगयोवावन छोटो १
 मतिमांगि मतिमांगि जाकोनाम मांगना २ मनगाढो कियो ॥
 दोहा ॥ मोंसरने को नेमहै मरौंतौ हरिकेद्वार ॥ कवहुंतो हरि
 भिहै कौन सरयोदरवार ३ ॥ सवैया ॥ कैसे विहाल विवाइ
 पग कंटक जालगड़े पुनिजोये । हायमहादुख पायोसखा

आयेइतै न कितै दिनखोये ॥ देखिसुदामाकी दीनदशा करुणा
करिकै करुणानिधिरोये । पानीपरातिको हाथ छुयो नहीं नैननके
जल सो पगधोये ३ ॥

चिरवाछिपायेकांखपुछैकहालायेनोको अतिसकुचाये
भूमितकैदृगभीजेहैं । खैचिलईगांठिमुठीएकमुखसांझद
ई दूसरीहूलेतस्वादपायोआपरीझेहैं । गह्योकररानीसुख
सानीप्यारीवस्तुयहै खावोबांठिमानौ श्रीसुदामाप्रेमधीजे
हैं । श्यामजूविचारिदीनीसंपत्तिअपारविदाभयेपैनजानी
सारविछुरनखीजेहैं ५२ ॥

दियोमुखमांभ ॥ कवित्त ॥ हूलहियरामे काम कासीन परी है
रौरभेटतसुदामेश्यामैवनेना अघातही । शिरोमणि ऋद्धिनमेंलि-
द्धिनमें शोरपख्यो काहिधौ बकसिठाढी कापैकमलातही ॥ नरलोक
नागलोक नगलोक नाकलोक थोकथोक कापैहरि देखिसुसकात
ही । हालो परयो हालनमें लालो लोकपालनमें चालो परयो चकनि
में चिरवा चवातही १ रमाकर पकरो हो याहीते सुदामा कहै
कहां तुच्छतंदुल कहैं जगत गुसाई है । यहहन जाने दीनक्षीन
तीन पैसा दैके सुखतीनिलोक बिभौ मिलि करिपाई है ॥ हरि
सकुचाइकलु द्विजको मैं दियो नाहि ताते यासो कहैं मेरी बड़ी
हीनताई है । दीनोहौं जुदानताको ब्राह्मणी विना न जानै जाके
धन यौवन पुलोमजा लजाई है २ विदाभये ॥ कवित्त ॥ विदाकरि
दीनो द्विजप्रकटनकीनो कलु भेटि भुज चलयो मनमें विषाद भायो
है । याहीते उदास प्रभुपास न रहनपायो याहीते सुखीहौं मोहि
कलु न दिवायो है ॥ एक दुखभारी मेरी ब्राह्मणी है खुटसारी ताहू
को तौ उत्तरु में सरस बनायो है । मैं जुनिधिपाईही सोराह मे
छिनाई काहू मोविना हमारो सब कुटुंब बुलायो है ४ ॥

आयनिजग्रामवहै अतिअभिरामभयो नृयोपुरद्वारका

सो देखि मति गई है । तियारंगभीनीसंगतरुनसहेलीली
नी कीनीमनहारियोप्रतीतिउरभई है ॥ करैहरिध्यानरूप
माधुरीको पान वहै राखे निजप्रानजकेप्रीतिनितनई है ।
भोगकीनचाह ऐसतननिरबाहकरैढरैसोई चालसुखजाल
रसभई है ५३ ॥

मति गई है ॥ कवित्त ॥ याहीते जनमभरिगयो नहीं श्यामजूपे
मेरोकह्यो बचन पँडाइनि नमानै हो । जाहुजाहु लै रहो न
मानति अनाजखाइ ऐंडी मँडी वारें मेंतौ गोविंद की जानै हो ॥
द्रौपदी को चीर दये गोपिनके छीनिलये आहते बचायो गजरंग-
भूमि भानैहो । ब्राह्मणी समेति कहूं खेततैं उखारयो घर यातहं
बचायो वाको कह्यो में न मानै हो १ चौतरा उजारि काहु चा-
मीकर धामकीन्हों छानितौ छवाय डारी छाई चित्रसारीजू । जौहूं
होतो घर तोपै काहेकोधननदेतो होनहार ऐसीखोटी दशाही ह-
भासीजू ॥ होतो होतो काहल हलाहल दिखाव करि जाहल उठा-
इ देतो देइ मुखगारीजू । लोभकी सवारी दुखभूखकी दलनहारी
भैयाधनवारी काहु सोऊ मारि डारीजू २ तियारंगभीनी ॥ आलिन
के गृथ ज्यों ज्यों आदरसों बोलैं आइ त्यों त्यों डरपाइ पग आगे
को न देतहै । पंडित न ज्योतिपी न वैदना न कौतुकी हों रानीजू
बुलावति है कहौ कोन हेतहै ॥ द्वारकाके राजाते मिलते घर छीनों
गयो रानी कहा छीनेगी फल्यो न मेरो खेतहै । मोसो कहा नातो
तुम जाइ कहौ वाते मोहि भूलि न सुहातो कोऊ ऐसे पर लेत
है ३ नईहै ॥ दोहा ॥ जे गरीब सों हितकरैं धनि रहीम वे लोग ॥
कहा सुदामा बापुरो कृष्ण मित्रता योग ४ भोग की न चाह ॥
गीतार्या ॥ युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्यकर्मसु ॥ युक्तस्वभावबो
धस्य योगोभवतिदुःखहा ५ ॥

टीका चन्द्रहासकी ॥ हुतो नृप एकताकोसुत चन्द्रहा

सभयोपरीयोविपतिधाइलाई औरपुरहै । राजाकोदिवान
ताके रहीघरआनिबाल आपनोसमानसंगखेलेरसटुरहै ॥
भयोत्रहभोजकोई ऐसोईसंयोगबन्यो आयेवैकुमारजहां
विप्रनिकोसुरहै । बोलिउठेसबै तेरीसुताकोजुपतिप्रहैहुवो
चाहैजानीसुनिगयोलाजघुरहै ५४ पख्योशोचभारीकहा
करोयोविचारीअहोसुताजोहमाराताकोपतिऐसोचाहिये ।
डारोयाहिमारियाकोयहैहै विचारतवबोलेनीचजनकहयो
मारोहियेदाहिये ॥ लैकैगयेदूरिदेखिबालछविपूरिहमजौन
परोधूरिदुखऐसोअवगाहिये । बोलेअकुलाइतोहिंमारंगे
सहाइकौनमांगोएकवातजबकहौतबचाहिये ५५ ॥

श्लोक आदिपुराणे ॥ यस्यतुष्टोह्यहंपार्थवित्तंतस्यहराम्यहम् ॥
करोमिवन्धुविच्छेदं सर्वकष्टेनजीवितम् १ येततस्यापिसंतुष्टोददासि
त्वव्ययंपदम् २ दोहा ॥ तुलसी जो होतव्यता प्रकटै तैसी तौन ॥
करजायलके सींग को कहौ उमेठैकौन ३ बाहिपै आदिपुराणे ॥
यदिवातादिदोषेण मद्भक्तोमां च विस्मरेत् ॥ तर्हिस्मराम्यहभक्तस
यातिपरमांगतिम् ४ गीतायां ॥ उमित्येकाक्षरं ब्रह्मव्याहरन्मामनु
स्मरन् ॥ यः प्रयातित्यजन्देहंसयातिपरमांगतिम् ५ अंतकालेचमा
मेवस्मरन्मुक्त्वाकलेवरम् ॥ यः प्रयातिसमद्भावं यातिनास्त्यत्रसंश
यः ६ ययंचापिस्मरन्भावंत्यजत्यन्तेकलेवरम् ॥ तंतमेवेतिकौते
यसदातद्भावभावितः ७ सहाय ॥ जिन राखो ऋषियज्ञ जनक नृप
को पनराखो । जिनराखो पितबाल काक केवटु जिनराखो ॥ जि
नराखो ऋषि सकल विकल दंडक वन वासी । जिनराखो सुग्रीव
वसत गिरि त्रसत उदासी ॥ रिपु अनुज विभीषणपगपरत लंकदई
सचमानिकै । सुप्रमसखा पति राखिहै दीनबंधु जन जानिकै ॥
मानिलीन्होबोलिसो कपोलमध्यगोलएकगंडकीकोसु
तकादिसेवानीकीकीन्हीहै । भयोतदाकारयोनिहारिसुख

भारभरिनैननिकोकोरहीसों अज्ञावधदीन्हीहै ॥ गिरेमुर
झाइदयाआइकछुभाइभरेढरेप्रभुओरमतिआनँदसों भी
न्हीहै। हुतीछठीआंगुरीसुकाटिलईदूषणही भूषणहीभयो
जाइकहीसांचचीन्हीहै ५६ वहेदेशभूमिमेंरहतलघुभूप
औरऔरसुखसबैएकसुतचाहभारीहै । निकस्योविपिन
आनिदेखियाहिमोदमानिकीनीखगछांहधिरी मृगीपांति
सारीहै ॥ दौरिकैनिशंकलियोपाइनिधिरंकजियो कियोमन
भायोसोवधायोधनवारीहै । कोऊदिनशीतेभयेनृपचित
चीतेदियोरजकोतिलकभावभक्तिविसतारीहै ५७ रहे
जाकेदेशसोनरेशकछुपावैनाहिं वांइवलजोरिदियोसचि
वपठाइकै । आयोघरजानिकियो अतिसनमानसोंपिञ्चा
निलियोवहैबालमाख्योछलछाइकै ॥ दर्ईलिखिचिष्टीजा
हुभरेसुतहाथदीजैकीजैवही ब्रातजाकोआयोलैलिखाइकै।
गयेपुरपासवागसेवामतिपगकरी भरीदृगनींदनेकुसोयो
सुखपाइकै ५८ ॥

अज्ञावध ॥ दोहा ॥ तुलसीतेरहसैवरष यद्यपिलगीसमाधि ॥
तदपिभांडिकी नागई दुष्टवासनाव्याधि १ वाहुवल ॥ नीतौ ॥ उत्
खातान् प्रतिरोपयन्कुसुमितांश्चिन्वन् लघून्वर्द्धयन्तुंगान्नमय
न्नतान्समुदयन् विद्वलषयन् संहतान् ॥ क्षुद्रान्कंटकिनोबहिर्नि
सयन्म्लानान्समुत्सेचयन्मालाकारइवप्रयोगनिपुणो राजाचिरंन
न्दति २ ॥ कवित्त ॥ छोटेछोटेगुलनि को शूरनिकी वारिकरो
पातरेसे पौधातिन्हें पानीदेईपालियो । नीचेगिरिगये तिन्हें दे दे
टेक ऊंचेकरो ऊंचेवढ़िजाई ते जरूरकाटिडारियो ॥ फूलफूलफूल
सवधानिइकठोरिकरो घनेघनेरुख एक ठौरते उखारियो । राज-
निको मालिनिको नितप्रतिदेवीदास चारिधरीरातिरहे इतनोंवि-

चारिबो ३ तापैराजाको अरु गाँडेको दृष्टांत ४ माथोकटिबेतै अंगु-
लीकटी ५ ॥ चिट्ठी ॥ श्लोक ॥ विषमस्मैप्रदातव्यं त्वयामदनश-
त्रवे ॥ कार्याकार्यनकर्तव्यं कर्तव्यं किल मे प्रियम् १ ॥

खलतिसहेलिनिसोआइवाहीभागमांभु करिअनुराग
भईन्यारीदेखिरोभिये । पागमतिपातीछविमातीभुकिखै
चलईबांचीखोलिलिख्योविषदैनपिताखीभिये ॥ विषया
सुनामअभिरामदृगअजनसो विषयावनाइ मनभाइरस
भीजिये । आइमिलीआलिनमेंलालनकोध्यानहिये भिये
मदमानोगृहआइतबर्धाजिये ५६ ॥

नामअभिराम ॥ मैजानोमेरोनाम सबतेबुरोहै क्योंकि काहूको
कनकमंजरी काहूकोरूपलतापरितै अबजानीविषयाही अभिराम
है यात यहवात बनीचरी एक ॥ कुरडलिया ॥ अगर मुकुर प्रति-
विम्बमें अपनो आनन जोइ । हरिसन्मुखसुख पाइये विमुख भये
दुख होइ ॥ विमुख भयेदुखहोइ देखिदशग्रीवविभीषन । देखिसु-
रुचिसुनीति देखिप्रह्लादपितातन ॥ देखिदत्तको यज्ञ देखिपृथुवेणु
विनीता । कंसजनकमुतअंध देखिपांडवजंगजीता १ ॥ श्लोक ॥
यस्यास्तिभक्तिर्भगवत्यक्रिञ्चनासर्वगुणास्तत्रममासतेसुराः ॥ हरा
वभक्तस्थकुतो महद्गुणा मनोरथेनासतिधावतोवहिः २तापैदृष्टांत
हपसीके दरपणको ३ ॥

उठ्योचन्द्रहासजिहिपास लिख्योलायोजायो देखिम
नभायोगाढेगेरसोलगायोहै । दईकरपातीबातलिखीसो
सुहातीबोलिविप्र घरीएकमांभुव्याहउघरायोहै ॥ करी
ऐसीरीतिडारेबड़ेनृपजीति श्रियदेतगईबीतिचावपारपैन
पायोहै । आयोपितानीचसुनिघूमिआईमीचमानोदानो
लिखिदूलहकोशूलसस्सायोहै ६० बैठ्योलैइकांतसुतक
रीकड़ाभ्रांतयहकखीसो नितान्तकरपातीलैदिखाईहै । वां

चिआंजलागीमैतोबडोईअभागीऐये । मारौमतिपागीवे
 टीरांडहसुहाईहै ॥ बोलिनीचजातिवातकहीतुमजावोमठ
 आवैतहांकोऊमारिडारौमोहिभाईहै । चंद्रहासजूसोभा
 ष्योदेवीपूजिआवोआजु मेरीकुलपूजिसदारीतिचलिआ
 ईहै ६१ चलेईकरनपूजादेशपतिराजाकहीमेरेसुतनाहि
 राजवाहीकोलैदीजिये । सचिवसुवनसोजुकह्योतुमला
 वोजावोपावोनहींफेरिसमैअवकामकीजिये ॥ दौख्योसुख
 पाइचाहमगहीमैलियोजाइदियोसोपठाइनृप रंगमाहिभी
 जिये । देवीअपमाननेनडरोसनमानकरोजातमारिडाख्यो
 यासोभाष्योभपलीजिये ६२ ॥

गूलसरसायो ॥ कविज्ञ ॥ भावनि वनाये जे वधाये ते सुनाये
 सुनि अतिही रिसाये दुख सागर बुझायो है । नगर नगारेनगहूते
 गुनै भारेसुनि याके शिर मानो काहू आरासो फिरायो है ॥ आं-
 गनमे जातिहि सुअंगनि में आगि लागी अंगना के करसो सुक-
 कना खुलायो है । पाती लेत हाथही सुमारीशिर माथही सुविष
 याके वांचे विष याके लपटायो है १ ॥

काहूआनिकही सुतमारैतेरोनीचनिने सींचनशरीर
 जलदगझरीलागीहै । चलयोनतकालदेखिगिख्योहोविहा
 लशीशपाथरसोफोरिमख्योऐसोहीअभागीहै ॥ सुनिचंद्र
 हासचलिबेगिमठपासआयोध्यायेपगदेवताकेकाटेअंगरा
 गीहै । कह्योतेरोदोषीयाहिक्रोधकरिमाख्यो मैंहींउठैदोऊ
 दीजैदानजियैबडभागीहै ६३ कख्योऐसोराजसबदेशभ
 करराजकख्यो ढिगकोसमाजताकीवातकहाभाखिये । हरि
 हरिनामअभिरामधामधामसुनै औरकामनाहिसेवाअति
 अभिलाखिये ॥ कामक्रोधलोभमदआदिदुकैदूरिकरैजि

यैनृपपाइऐसोनैननिमेंसाखिये । कहीजितीबातआदिअं
तलौंसुहातिहियेपढैउठिप्रातफलजैमिनिमेंसाखिये ६४
टीकासमुदाइकी ॥ कौषारवनामसोबखानकियोनाभाज
नेमैत्रैअभिरामऋषिजानिलीजैबातमें । आज्ञाप्रभुदईजा
हुबिदुरहैभक्तमेरोकरौउपदेशरूपगुणज्ञातगातमें ॥ चित्र
केतुप्रेमकेतुभागवतरख्यातजात पलटयोजनमप्रतिकूलफू
लघातमें । ऐसेअकूशादिध्रुवभयेसबभक्तभूपउद्वसंप्या
रेनकीख्यातपातपातमें ६५ ॥

बेटीरांडहूसुहाइ ॥ दोहा ॥ अगर दुष्टताजीवकी शिर तजि
अपयशलेइ ॥ सनतन खाल कढ़ाइके परतन बंधन देइ २ ॥ बड़
भागी है ॥ दोहा ॥ दुष्ट न छोड़ै दुष्टता सज्जन तजै न हैत ॥
कळजल तजै न श्यामता मोती तजै न श्वेत १ सज्जन ऐसो
कीजिये जैसो आको दुष्ट ॥ औगुण ऊपर गुणकरै तौ जानै कुल
शुद्ध २ ॥ भक्तराज ॥ राजनीतौ ॥ अश्वायांजायतेवत्सो मिथ्याव
दतिभूपतिः ॥ ब्रह्मजलाग्निनादग्धंयथाराजातथाप्रजा ३ पलटयो
जन्म ॥ दोहा ॥ जासने सो जग डरै सो मेरे आनंद ॥ कब मरिहौ
कब भेंटिहौपूरणपरमानंद ४ वृत्रासुरबधोपेतंतद्भागवतमिष्यते ५

कुन्तीकरततिऐसीकरैकौनभूतप्राणी मांगतविपति
जासोभाजैसबजनहै । देख्योमुखचाहौंलालदेखेबिनहि
येशाल हूजियेकृपालनहींदीजैवासबनहै ॥ देखिबिकलाई
प्रभुआंखभरिआई फेरिघरहीकोलाई कृष्णप्राणतनध
नहै । श्रवणवियोगसुनितनकरह्योगयो भयोवपुन्यारो
अहोयहीसांचो पन है ६६ ॥

मांगतविपति ॥ आगवते ॥ विपदःसन्तुनःशश्वत्तत्रतत्रजगद्गु

रो ॥ भवतोदर्शनं घृतस्यादपुनर्भवदर्शनम् १ जन्मैश्वर्यसुतश्रीभिरेध
मानमदःपुमान् ॥ नैवाहृत्याभिधातुं त्वामकिञ्चनगोचरम् २ दोहा ॥
प्रीतम नहीं बजार में सोइ बजारउजार ॥ प्रीतम मिलै उजार
में सोइ उजारबजार ३ कहाकरोवैकुण्ठलै कल्पवृक्षकी छांह ॥ अ-
हमदढाकसुहावने जो प्रीतमगलवांह ४ ॥ घरहीकोलाइये ॥ गम-
नसमयअंचलगह्यो छांडनकह्यो सुजान ॥ प्राणपियारे प्रथमहीं
अंचलतजौ कि प्राण ५ वपुन्यारा ॥ जासों मिलि सुख भिलिरहे
दीनों दुख विसराइ ॥ फिरि जो जाके बिलुरतै फटयो न उरकहि
हाइ ६ मन बँदूक तन जामगी हियरंजक जियसाज ॥ प्रेमपली-
तादगिगई निकसी आहि अवाज ७ ॥

द्रौपदीसतीकीबातकहैऐसोकौनपटुखेंचतहीपटपटको
टिगुनेभयेहैं । द्वारकाकेनाथजबबोलीतबसाधहुतेद्वारका
सौफेरिआयेभक्तबाणीनयेहैं ॥ गयेदुरवासाऋषिवनमेंप
ठायेनीचधर्मपुत्रबोलेबिनैआवैपनलयेहैं । भोजननिवारि
त्रियांआइकहीशोचपख्यो चाहैंतनत्याग्योकह्योकृष्णक
हूंगयेहैं ६७ सुन्योभागवतीकोवचनभक्तिभावभख्योक
ख्योमनआयेश्यामपूजेहियेकामहैं । आवतहीकहीमोहिंभू
खलागीदेवोकछूमहासकुचायेमांगेंप्यारोनहींधामहैं ॥ वि
श्वकेभरणहारधरहैंअहारअजू हमसोंदुरावोकहीवाणीअ
भिरामहैं । लग्योशाकपत्रपत्र जलसंगपाइगयेपूरणात्रि
लोकीबिप्रगनैकौननामहैं ६८ ॥

पटकोटिगुने ॥ ऋतुबसंतयाचकभई रीभिवियेद्रुमपात ॥ या
तेनवपल्लवभये दियोदूरनहिजात ८ ॥ कवित्त ॥ दुश्शासनदु-
श्मनदुकूलगह्यो दीनअंधु दीनहैकै द्रुपददुलारीयोंपुकारी है । छां-
ड़ेपुरुषारथकोठाड़े पियपारथसे भीमसंहाभीमश्रीवानीचेको निहा
रीहै ॥ अम्बर जो अम्बरअमरकिये वंशीधरभीषमकरणद्रोणशोभा

यो निहारी है । सारीमध्यनारी है कि नारीमध्यसारी है कि सारी है
 कि नारी है किसारिहीकी नारी है ६ नये हैं ॥ भारते ॥ यद्गोविन्देति
 लुकोशकृष्णेमादूरवासिनम् ॥ ऋणमेतत्प्रवृद्धम् हृदयान्नापस
 प्पति १ आयेइयाम ॥ पद ॥ तौहंपावनविरदलजाऊं ॥ जो जन के
 संकट में राजा सुमिरण समय न आऊं । सुनौ अजातशत्रु क-
 रुणामय करुणासिंधु कहाऊं ॥ अनघअनाथनि दीन जानिकै ग-
 रुडासन विसराऊं । शीघ्रसुकाज भक्त अपने के जहां तहां उठि
 धाऊं ॥ लघुभगवान प्रतिज्ञा मेरे यश त्रैलोक्यवाहुं १ कौननाम
 है ॥ पद्ये ॥ यथाहिस्कन्धशाखानां तरोर्मूलनिषेचनम् ॥ एवमारा
 धनंविष्णोः सर्वेषामात्मनश्च हि ३ यथातरोर्मूलनिषेचनेन तृप्य
 न्तितत्स्कन्धभुजोपशाखाः ॥ प्राणोपहाराच्चयथेन्द्रियाणांतथैवस
 र्वीहणमन्युतेज्या ४ कोउ अंगस्तको मंत्रउचारे । कोउचरणकोहा
 थपसारै ॥ कोऊअमलवेतकोयांचै । कोऊपेटपीटिकैनांचै ५ एक
 भगवत्नाम औषधविना रोग नहीं कटै कोटि यतन करौ ६ ॥
 मूल ॥ पदपङ्कजरजबंदौसदाजिनकेहरिनितउरबसै ॥
 श्रुति देव अंगमुचुकुंदभूपप्रीयव्रतजेता । पृथूपरीक्षित
 शेषसूतशौनकपरचेता ॥ शतरूपात्रयसुतासुनीतीसतीमं
 दालश । यज्ञपत्निव्रजनारिकियेकेशवअपनेवश ॥ इतए
 सेनरनारीजितेतिनहींकेगाऊंयसै । पदपङ्कजरजबंदौसदा
 जिनकेहरिनितउरबसै ११ ॥ टीकासमुदायकी ॥ जिनहींके
 हरिउरनितबसै तिनहींकेपदरेणुचैनदैनआभरणकीजि
 ये । योगेश्वरआदिरसंस्वादभंप्रवीणमहाविप्रश्रुतिदेवता
 कीवातकहिदीजिये ॥ आयेहरिघरदेखिगयोप्रेमभरिहियो
 ऊंचोकरकरिपटफेरिमतभीजिये । जितेसाधुसंगतिन्हैबि
 नैनप्रसंगकियो कियोउपदेशमोसोबाढिपांवलीजिये ७०

१ श्रुतिदेवके नाममें दे, को लघुकरके वांचनेसे मात्राओं अधिक न होंगी ॥

मूल ॥ इनअंघ्रीअंबुजपांशुको जनमजनमहोयाचिहौ ।
 प्राचिनबहिंसत्यत्रतरघुगणसगरभागीरथ । बालमीकि
 मिथिलेशगयेजेजगोविदपथ ॥ रुकमांगदहरिचंदभरत
 दधीचिउदारा । सुरथसुधन्वाशिबीसुमतिअतिबलिकी
 दारा ॥ नृपनीलमोरध्वजतास्रध्वजअलरककीरतिराचि
 हौ । इनअंघ्रीअंबुजपांशुकोजन्मजन्महोयाचिहौ १२ ॥

प्रेमभरि दशमे ॥ धन्योहंकृतकृत्योहं पुण्योहंपुरुषोत्तम ॥ अद्य
 मे सफलंजन्म जीवितंसफलंचमे १ ऋषिः संगऋषी श्लोक ॥ दा
 रापुत्रोनराणांस्वजनपरिकरो वन्धुवर्गःप्रियोवा माताभ्रातापिता
 वा इवशुरबुधजनो ज्ञातिरैश्वर्यवित्तम् ॥ विद्यानीतिर्विपुलसुहृदो
 यौवनमानगर्व मिथ्याभूतंमरणसमये धर्मएकः सहायः १ कुंड-
 लिय ॥ अगर कामहरि नामसंकट-होतः सहाइ । कोऊकाहूको
 नहीं देखो ठोकि वजाइ ॥ देखो ठोकि वजाइ न रिपट भूषणचा
 है । सुतसोषे नित प्राण सुता प्रत्यक्ष अवगाहै ॥ तात मातकरे घै
 रुबधूनितचित्तविगारी । स्वारथताके सजन दास दासी देगारी ॥

टीका उभयबालमीकिकी ॥ जन्मपुनिजन्मको न मेरे
 कछुशोचअहोसंतपदकंजरेणुशीशपरधारिये । प्राचीनब
 हिआदिकथाप्रसिद्धिजगउभै बालमीकिऋषिवातजियते
 नटारिये ॥ भयेभील संगभीलऋषिसंगऋषिभयेभयेराम
 दरशनलीलाबिसतारिये । जिन्हैजगगाईकहूसकैनअघा
 इचाइभाइभरिहियोभरिनैनभरिठारिये ७१ ॥ टीकासुपच
 बालमीकिकी ॥ हुतौबालमीकिएकसुपचसुनामताकाइया
 मलैप्रकटकियोभारतमेगाइये । पाण्डवनिमध्यमुख्यधर्म
 पुत्रराजाआपकीनोयज्ञभारीऋषिआयेभूमिछाइये ॥ ता

१ स, इस अक्षर को गुरुउच्चारण न करना और त्य, को गुरुकरिके याचना ॥

को अनुभाव शुभशङ्खसो प्रभाव कहै जो पै नही बाजै तौ अपर
णता आइये । सोई बात भई वहु बाज्यो नाहि शोच परयो पूछे
प्रभुपासयाकी न्यूनता बताइये ७२ ॥

तिन्हें जगगाइ ॥ छप्ये ॥ मुक्ति सुवनिता श्रवण आभरण अक्षय द्वै
कहि । मुनिमनपत्नीपतिदास जैरामतासगहि ॥ जगतसमुद्र अ-
पारतीर भुवनै न वेद भल । कलिपातकतम प्रबल हरणको रविशशि
मंडल ॥ विपरीति नाम उच्चार किय वाल्मीक ऋषि भये तदा ।
जिहि तिहि प्रकार सब काम तजि रामनाम सुमिरौ सदा १ रा-
मायणे ॥ चरितरघुनाथस्य शतकोटि प्रविस्तरम् ॥ एकैक मक्षरं पुंसां
महापातकनाशनम् २ वाल्मीक बुधिवत्सदा सीतापतिगात्रे । रा-
मायणशतकोटि रामराघवे मन भावै ॥ तैतिसकोटि तैतीसलाख
तैतीस हजार । त्रिशत बहुरि अश्लोक थोक तैतीस विचारा ॥
दश दश अक्षर और भक्ति भजिबे को कीना । रामनाम दोउअक
सांगि शंकर तब लीना ॥ ततवेत्ता तीनिहुं लोक में रामचरित
विस्तरि रह्यो । एक एक नाम सुमिरतसदा महा पाप परलै गह्यो
३ दोहा ॥ तुलसी रघुवर नामको रीक्ति भजौ के खीज । उलटा
सुलटा जामिहै परे खेत में बीज ॥

बोले कृष्णदेवयाको सुनो सब भेव ऐपे नीके मानिले बो
बातदुरीस मझाइये । भागवतसतरसवतकोरु ज्योनाहि
ऋषिनसमह भूमिचहुं दिशिआइये ॥ जोपैकहो भक्तिनाही
नाही कैसे कहौगहौ । गास एक और कुलजाति सो बहाइये ।
दासनिको दास अभिमानकीन बासकहुं पूरणकी आसतोपै
ऐसो लौजिमाइये ७३ ऐसो हरिदासपुर आसपास दीखे
नाहि बामबिनको उलोकलोकनि भेपाइये । तेरेई नगर
माझनिशिदिन भौरसांझ आनै जाइऐपैकाहुं बात नलखा
इये ॥ सनिसबशोच परे भाव अचरज भरे हरे मननेन अजू

बेगिही जताइये । कहानामकहां ठामजहां हमजाइ देखें
 लेखें करि भागधाइ पाइ लपटाइये ७४ जिते मेरे साधुक भू
 चहैं न प्रकाश भयो करौ जो प्रकाश मानै महा दुखदाइये । मो
 को परयो शोचयज्ञ पूरण कीन्हो चहिये लिये वाको नाम जिनि
 ग्रामतजिजाइये ॥ ऐसे तुम कहौ जामै रहौ न्यारे प्यारे सदा
 हमहीं लिवाइ लावै नीके कौजिमाइये । जावो बालमी कि घर ब
 डो अवलीक साधुकियो अपराध हमदियो जोवताइये ७५ ॥

वासविन ॥ सवैया ॥ नखविन कटा देखे योगी कनफटा देखे
 शीश भारी जटा देखे चारलाये तनमें । मौनी अन्धबोल देखे जैनी
 शिरछोल देखे करत कलाल देखे बनखंडी बन में ॥ गुणी अरु
 क्रूर देखे कायर औ शूर देखे माया के अपूर देखे पूरि रहे धनमें ।
 आदि अंत सुखी देखे जनमके दुखी देखे ऐसै नहीं देखे जिन्हें लोभ
 नाहि मनमें १ जावो बालमी कि घर ॥ भागवते ॥ नमै प्रियरचतुर्वे
 दीमद्भक्तः श्वपचः प्रियः ॥ तस्मै देयं ततो ग्राह्यं स च पूज्यो यथा ह्यहम् २
 अवलीक ॥ दोहा ॥ पेट कपट जिह्वा कपट नैना कपट निराट ॥
 तुलसी हरि केसे मिले घटमें औ घट घाट ३ अहमद या मन
 सदन में हरि आवै किहि बात ॥ विकट जुरै जौलों निपट खुलै न
 कपट कपाट ४ भक्त्या हमे कवायाह्यः श्रद्धयात्मा प्रियः सताम् ॥ भ
 क्तिः पुनाति मन्निष्ठा श्वपाकानपि सम्भवात् ५ ॥

अर्जुन औ भीमसेन चलेई निमंत्रणको अंतर उघारिक
 ही भक्तिभावदूरि है । पहुंचे भवन जाइ चहुं दिशि फिरि आइ
 परे भूमि भूमि घर देख्यो छत्रिपरि है ॥ आये नृपराज निको दे
 खित जेकां त्रिकोला जनि सांकां पिकां पिभयो मन चरि है ।
 पावनको धारिये जू जूठनको डारिये जू पापग्रहटारिये जू की
 जे भाग भूरि है ७६ जूठनलै डारौ सदा द्वारको बुहारौ नहीं

औरकोनिहारो अजयहीसांघोपनहै । कहौकहाजैवोकहूपा
छेलेजिमाओहमजांनिगयेरीतिभक्तिभावतुमतनहै ॥ तव
तोलजानोहियकृष्णपैरिसानोनुप चाहौसांइठानोमेरेसग
कोऊजनहै । भोरहीपधारोअबयहीउरधारोऔरभूलिनबि
चारोकहीभलोजोपैमनहै ७७ कहीसबरीतिसुनिधर्मपुत्र
प्रीतिभईकरीलेरसोईकृष्णद्रौपदीसिखाईहै । जतिकप्रका
रसबव्यंजनसुधारिकरो आजुतेरेहाथनिकीहोतिसफटाई
है ॥ लायेजालिवाइकहैवाहिरजिमाइदेवोकहीप्रभआप
लावोअंकभरिभाईहै । आनिकेबैठायोपाकशालामैरसा
लग्रासलेतवाज्योशंखहरिदंडकीलगाईहै ७८ ॥

पापग्रहटारिये ॥ प्रथमे ॥ येषांस्मरणात्पुंसांसद्यःशुद्ध्यन्तिवै
गृहाः॥किंपुनर्दर्शनस्पर्शपादशौचासनादिभिः १ साधुजगमें तीरथ
हैं जा घरमें आवैं सब तीरथही आवैं २ सफलईहै ॥ एकादशमद्रक्त
पूजाभ्यधिका ३ कृष्णद्रौपदीसिखाई ॥ नेवेद्यंपुरतोन्न्यस्तंचक्षुषा
गृह्यतेमया ॥ रसंचदासजिदायामइनामिकमलोद्भव ४ नष्टप्राये
एवभद्रपुनित्यंभगवत्सेवया ॥ भगवत्युत्तमश्लोके भक्तिर्भवतिनेष्टि
की ५ अंकभरि भक्तिकोनातो दुनिया कोमिलाप छोटातुच्छजानि
ये व्याधि उत्पत्ति करे याते पारहरिये ६ ॥

सीतसीतप्रतिक्रयोनवाज्योकछुलाज्योकहाभक्तिकोप्र
भावनहिंजानतयो जानिये । बोल्योअकुलाइजाइपूंछोअ
जूद्रौपदीको मेरोदोषनाहीयह आपमनआनिये ॥ मानि
सांचिवातजातिबुद्धिआईदेखि याहिसबहीमिलाइमेरीचा
तुरीबिहानिये ॥ पूंछेतकहीहैवालमीकमेमिलायोयातेआ
दिप्रभुपायोपाऊंस्वादउनमानिये ७९ ॥

सीतसीतप्रति ॥ श्लोक ॥ प्रासमानेकृते नादे कृष्णतडित

पृष्ठके ॥ प्रोक्तो भक्तिप्रतापः किंसिकथे सिकथे न नादितः १ जाति
 बुद्धि आई ॥ पाद्रे ॥ अर्चावतारोपादानेवैष्णवोत्पत्त्यचिन्तने ॥
 मातृयोनिपरीक्षार्था तुल्यमाहुर्मनीषिणः ॥ २ ॥ उनमानिये ॥
 ऊंचनीचमानेनहिकोइ । हरिकोभजेसोहरिकोहोइ ॥ ३ ॥ आशंका
 इकउपजी मनमें । अर्जुनकहेउकृष्णसो क्षनमें ॥ कोटिनयज्ञब्राह्म
 णजेयेपूरेउनहीसकोनहत । जैसेयज्ञहोइ प्रभुपूरण सोइकृपाकरि
 काजनेत ॥ ४ ॥ कहेश्रीकृष्ण सुनोहोपाण्डव कोउनसंत तिहारे
 वाराताजेयेजग-पूरोहोतो वाजेघटा देवद्वार ॥ प्रभुहमऊंचऊंचकुल
 पूजे हमजान्यो यह निर्मल भाइ । इनहूसो कोऊ निर्मलहैहै तो हम
 भूल देहु घताइ ॥ बालमीकहे जातिसरगरो जाके राजा आयेथाइ ॥
 वाजेयेजग पूराहैहे मनसापूरणकाय सवारि । अर्जुन भीम नकुल
 सहदेवा राजासहितसुपहुंचजाइ । करिदंडवत चरणगहि कीन्हें
 बालमीककेलागेपाइ ॥ तुमतो ऊंचऊंचकुल जनमे हमतो नीच
 महाकुल माहि । ऊंचनीचकी शंकाआवै तातेतिहरे आवै नाहि ७ ॥
 तुमतो या जग सकल शिरोमणि तुम सम तल और नहि कोइ ।
 कृपाकरो अरु भवन पधारौ तुम्हें चले यज्ञ पूरण होइ ॥ ८ ॥ जब
 बालमीक राजाके आयो प्रेमप्राप्ति सो लियो अहार । जितनेग्रास
 जेवतेलीने शखजु बाज्यातितनीबार ॥ ९ ॥ भूधर कहै हाथसो
 भाजो खंडखंड करिहो चकचूर । हमरो साधु जेवतग्रासजुकणिक
 णिकाहेनबाज्योकूर ॥ १० ॥ देवदेव मोहि दोष न दीजे दोषजुकोइ
 द्रौपदीमाहि । ऊंच नीचकी शंकाआई याते कणिकणि बाज्यो
 नाहि ॥ ११ ॥ परख्यासाधु पारखा आई जगमें न्योति जिमायो
 सोइ । जाजेये जग पूरण हूवो नाम देव कहें शिरोमणि सोइ ॥ १२ ॥
 टीकारुक्ममांगदराजाकी ॥ रुक्ममांगदबागशुभगंधफ
 लपागिरह्योकरिअनुसगदेवबधूलेनआवहीं । रहिगईएक
 कांटाचुभ्योपगवैगनको सुनिनृपमालीपासआयोसुखपा
 वहीं ॥ कहोकोउपाइस्वर्गलोककोपठाइदीजेकरैएकादशी

जलधारैकरजावहीं । व्रतकोतौनामयहग्रामकोऊजानेनी
 हिंकीनोहींअजानकालिहलावोगुनगावहीं ८० फेरिनृप
 डोंडीसुनिबनिककीलौं डीभूखीरहीहीकनौडी निशिजागी
 उनमारिये । राजाढिगआइकरिदियोव्रतदानभइतियायों
 उड़ानिनिजलोकरकोषधारिये ॥ महिमाअपारदेखिभूपने
 विचारियाकोकोऊअन्नखाइताकोबांधिमारिडारिये । या
 हीकेप्रभावभावभाकि विसतारभयोनयोचोजासुनौ सबपु
 रीलैउधारिये ८१ एकादशीव्रतकीसचाईलैदिखाई राजा
 सुताकीनिकाईसुनौनीकेचितलायकै । पिताघरआयोपति
 भूखनैसतायोअति मांगैतियापासनहींदियोयहभाइकै ॥
 आजुहरिचासरसोतासरणपूजेकोऊ डरकहांमीचको यों
 मानीसुखपाइकै । तजेउनप्राणपायेवेगिभगवानबधूहिये
 सरसानभईकह्योपनगाइकै ८२ ॥

याहीके प्रभाव । ब्रह्मवैवर्ते ॥ सर्वपापप्रशमनं पुण्यमात्यन्ति
 कंयया ॥ गोविन्दस्मरणं नृणां यदेकादश्यपारणम् ॥ १ ॥ सबही को
 कर्त्तव्यहै ॥ नीतौ ॥ कष्टाधिकष्टंसतंतंप्रवासी ततोधिकष्टं परगेह
 वासी ॥ ततोधिकष्टंकृपणस्यसेवा ततोधिकष्टंधनहीनसेवा ८२ ॥
 अपनकोसेवा ते भूखी रही एकादशीके महात्म्यमें इतिहासकी
 कथा है एक राजाकी स्त्री देखिकै मगनभये पूछी महाराज आप
 कैसे मगन भये तब कही एकादशी के प्रताप सों राज्य पायो
 याते मगनभये ॥ २ ॥ नृमराजा शिकार को गये देवलऋषि सों
 पूछी भद्रश्रवाखण्ड अगस्त्यजी गये हैं ३ ॥

टीका समुदायको ॥ सुनौहरिचंद्रकथाव्यथाबिनद्रव्य
 दियो तथानहींराखीबेचिसुततियातनहै । सुरथसुधन्वा
 जूसोंदोषकेकरतमरे शंखऔलिखित विप्रभयोमेलोमन

है ॥ इंद्र औं अग्निगये शिविपैपरीक्षालेन काटिदियोमा
 सरीभिसांचोजान्योपनहै । भरतदधीच आदिभागवतवी
 चगायेसबनिसुहाये जिनदियोतनधनहै ८३ टीका विंध्या
 वलीकी ॥ विंध्यावलीतियासी न देखीकहूं तियानैन बांध्यो
 प्रभुपियादेखिकियोमनचौगुनो । करिअभिमानदान देन
 बैठयोतुमहंको कियोअपमानमेंतोमान्योसुखसौगुनो ॥
 त्रिभुवनछीनिलियेदियेबैरीदेवतानि प्राणमात्ररहेहरिआ
 न्योनहिंश्रीगुनो । ऐसीभक्तिहोइजोपैजागोरहोसोइअहो
 रहेभवमांझपैलागेनहींभौगुनो ८४ टीकामोरध्वजरा
 जाजूकी ॥ अर्जुनकेगर्भवयो कृष्णप्रभुजानिलयोदयो
 रसभारीयाहिरोगयोमिटाइये । मेरोएकभक्त आइतोकोले
 दिखाऊंताहि भयेविप्रवृद्धसंगबालचलिजाइये ॥ पहुंच
 तभाष्योजाइमोरध्वजराजाकहां बेगिसुधि देवोकाहुवात
 योजनाइये । सेवाप्रभुकरौनेकरहौपांवधरौजाइकहौ तुम
 बैठोकहीआगिसीलगाइये ८५ ॥

दियो तनधन है ॥ भागवते ॥ जहौयुवैवमलवदुत्तमइलोक
 लालसः १ करि अभिमान ॥ दोहा ॥ नारी कोहू रंक की अपनी
 कहे न कोइ ॥ हरिनारी अपनी कहे क्यों न फजीहत होइ २ ॥
 नहींभौगुनो ॥ साधुजन जगमें रहे ज्यों कमला जलमाहि । सदा
 सर्वदा संग रहे जलको परसत नाहि ॥ गर्वभयो ॥ भागवते ॥ तपो
 विद्याचविप्राणां निश्श्रेयसकरेउभे ॥ तपवदुर्विनीतस्य कल्पतेक
 तुमन्यथा ४ सेनयोरुभयौर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ५ ॥ दोहा ॥
 तिमिरगयो रविदेखिके कुमतिगई गुरुजान ॥ सुमतिगई परलोभ
 ते भक्तिगई अभिमान ६ ॥

चलेअनखाइपाइंगहिअटकाइजाइ नृपकोसुनाईतत

कालदौरे आये हैं । बड़ी कृपा करी आजु फरीबेलि चाह मेरी
निपटन बेलि फल पायो याते पाये हैं ॥ दीजे अज्ञामोहि सोई
कीजे सुखली जेवही पीजे बानीर समरे नैन लै सिराये हैं । सु
निक्रो धगयो मोद भयो सोपरिक्षाहिये लिये चित चाव ऐसे
घचन सुनाये हैं ८६ देवे की प्रतिज्ञा करी करी जू प्रतिज्ञा हम
जाही भांति सुख तुम्हें सोई मोको भाई है । मिल्यो मर्ग सिंह यह
बालक को खाये जात कही खावो मोहि नहीं यही सुख दाई है ॥
काहु भांति छांडौ नृप आधोजो शरीर आवे तोही याहित जो
कहि बात मोजनाई है । बोली उठितिया अरधमी मोहि जाय
देवो पुत्र कहै मोको लेवो और सुधि आई है ८७ सुनो एक बात
सुततिया लै करौत गात ची रैधी रे भीरै नाहि पीछे उन भाखि
ये । कीना वाही भांति अहोना सालगि आयोजव ठरे उदग
नी भीरवा करन चाखिये ॥ बले अनखाइ गहि पाई सो सुना
येवन नैन जल आयो अंग काम किहि नाखिये । सुनि भरि
आयो हियो निज तन श्याम कियो दियो सुख रूप व्यथा गई
अभिलाखिये ८९ ॥

कीन्हों वाही भांति ॥ दोहा ॥ कांच रुथीर अभीर नर कसे न
उपजे प्रेम ॥ परमा कसनी साधु सहे के हीरा के हेम १ ॥ कवित्त ॥
अग्नि कनक जारे चन्दन खंडित आरे शिलाघसे शीतल तो
बासना घटात है । क्षीरमथे माखन बटुरि आवे गेदिलह सुकुर
मलिन भाजें मरति दिखात है ॥ तोरेहूं सरस अरु मोरहूं सरस
रस छीलें छारें काटें ओटें अधिक मिठात है । रचिबेकी कहा कही
बिरचें सहस गुनो सज्जन सनेह कहूं बातनि सिठात है १ सुना
येवन ॥ नाटके ॥ गृह्णात्यपरिपोः शिरः प्रतिपदं गृह्णात्यसौ वाजिनं
नीस्वाचर्मधनुश्च याति पुरतः संप्रामभूमावपि ॥ द्यूतचौर्यपरखि

यंश्चशपथंजानातिनायं करो दानानुद्यमतां निरीक्ष्यविधिनाशौच
धिकारीकृतः १ ॥

मोपैतौ नदियो जाइनिपट्टरि भाइलियो तऊरीझिदिरे
विना मेरी हेयेशाल है । मांगीवरकोटि चोट बदलोन दूकत
है सूकत है मुखसुधि आये वहां हाल है ॥ बोल्यो भक्तराज तुम
बड़े महाराजको ज्योरोई करतका जमानो कृतजाल है । एव
मोको दीजे दाव दीयो जूबखानो वेगि साधुपै परिचाजिनिक
रोकलिकाल है ६० ॥

कलिकाल है ॥ दोहा ॥ चारिसघेरी चारि अवेरो इतनी दे
गोपाला ॥ इतनी सेते एकघटे तौ यहले अपनी माला २ जब अ-
जुन को गर्वगयो तबबाले ॥ पद ॥ कहाँ कहाँ कृपा तिहारी ।
कुलकलक सबमेठि हमारे किये जगत वशपावनकारी ॥ द्विजका-
नीन हमारो आजा गोलक पिता वंशकोगारी । हम तौ कुंड सबै
जग जानै ताहमें औरे गतिन्यारी ॥ महाकष्टकारि व्याहजुकीनों है
गइ तियापंचभतारी । बड़े व्यसन दूषण युत सजा हमते अधिक
जु अग्रजुवारी ॥ याकु कर्मकी अवधि कहाँ जोतियराज सभामें
हारी । हते पितामह अंधु विप्र गुरुलोभी पीत्रस्वार्थी भारी ॥ सम-
भक्त नहीं कौन विधिरीभे हम तौ ऐसे अरुम विकारी । अति आ-
तुरहै रक्षाकीनी असन बसनकी सबै सभारी ॥ यह तौ साधन को
फलनाहीं बारबार हम यह विचारी । घोरमद्रकवल कृपाते सु-
विगरतिगई सो सबै सुधारी ३ ॥

टीका अलरककी ॥ अलरककीरतिमें राख्यो नितसां
चोहिये किये उपदेश हून छटै विषैवासना । मातामंडाल
साकी बड़ीये प्रतिजासुनौ आवै जो उदरमांभ फेरि गर्भ आ-
सना ॥ पतिको निहोरोताते रह्यो छोटै कोरोताको लै गधेनि
कासिमिलि केशीनृपशासना । मुद्रिका उघारि औनिहारि

दत्तात्रेयजूको भये भवभारकरी प्रभुकी उपासना ९१ मूल ॥
 तिनचरणधूरिमोभरि शिरजे जे हरिमायातरे ॥ रिभुइक्ष्वा
 कुअरुएलगा धिरयगयशतधन्वा । आमूरतिरतिदेवउत
 कभूरिदेवलमन्वा ॥ नहुषययातिदिलीपपूरुयदुगुहमांधा
 ता । पिप्पलनिमिभरद्वाजदन्नशरभंगसघाता ॥ संजयस
 मीकउत्तानपदयाज्ञवल्क्ययशजगभरे । तिनचरणधूरिमो
 भरिशिरजे जे हरिमायातरे १२ टीकारंतिदेवकी ॥ अहोरंति
 देवनृपसंतदुसकंतवंशअतिही प्रशंससो अकाशवृत्तिलई
 है । भूखेकोनदेखिसकैआमिसोउठाइदेत नेतनहींकरै भूखे
 देहज्ञाणभईहै ॥ चालीसऔआठदिनपाँचैजलअन्नआयो
 दियोबिप्रशूद्रनीचश्वानयहनईहै । हरिहीनिहारउनमाँझ
 तबआयेप्रभुभायेजगदुखजितेभोगोभक्तिछईहै ९२ ॥

मुद्रिकानि ० ॥ मदालसावाक्यम् ॥ संगः सर्वात्मनात्याज्यो यदि
 त्यक्तुं न शक्यते ॥ सद्भिरेव प्रकर्तव्यः सत्सङ्गो भव भेषजम् १ हरिहीनि
 हारे ॥ गीतार्या ॥ विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ॥ शुनि
 चैव श्वपाके च ॥ पण्डिताः समदर्शिनः ॥ सबैया ॥ अहोसौरहजार में
 लाखकरोरमें एकघट्टै टिकै नौहीसही । इहाँ ऐसेही इश्यप्रपंच
 केसाहिं गहैअविवेकरहै सुबही ॥ पुनिनानमें एकमिलाइलिखै
 होइऔरकीऔरसुजाइचही । यहीब्रह्मसवैसुअबोधहिपाइ भयो
 भवसोधकबोधयही ३ दुल्लभोवैष्णवीनारीदुल्लभोविप्रवैष्णवः ॥
 दुल्लभोवैष्णवीराजाअतिदुल्लभदुल्लभः ४ ॥

राजागुहकीटीका ॥ भिल्लनिकोराजागुहरामअभिराम
 प्रीति भयोवनवासमिल्योमारगमेआइकै । करौयहराज
 जूविराजिसुखदीजैमोको बोलेचैनसाजितज्योआज्ञापितु

पाइके ॥ दारुणवियोगअकुलाइदृग्अश्रुपात पाछेलोहू
जातलबसकेकौनगाइके । रहेनैनभूदिरधुनाथविनदेखैक
हाअहा प्रेमरातिमेरोहियेरहीछाइके ९३ ॥

भयो वनवास ॥ रामचन्द्रका ॥ पहाविरचि वेदसोनजीवसान
छंडिरे । कुवेर वेरके कही न यक्षभीर मंडिरे ॥ दिनेश दूरजाइ
बैठि नारदादि संगही । न बोलवदमदबुद्धि इद्रकी समानही १ ॥
दोहा ॥ नामसंथरा मद्र मति चेरि केकयीकेरि ॥ अयशापितारि
ताहिकरि गईगिरा मतिफेरि ॥ २ ॥ इन्द्रके युंझके द्वेवर ॥ कुंडः
लिया ॥ पुत्रप्राण सर्वते बड़े चारोंगुन परमानि । तेराजा दोऊ
तजे बचन न दीनेजान ॥ बचन न दीनेजान बड़की यह बड़ाई ।
बचन रहसो कार्य और सर्वसाकिनजाई ॥ काहि गिरिधर कविराय
भये दशरथ नृप ऐसे । प्राणपुत्र परिहर बचन परिहर न तेसे ३ ॥
रही न रानी केकयी अमर भई यहवात । काहु पूरव योगत वन
पठये जगतात ॥ वनपठये जगतात पिता परलोकसिंधारे । जिहि
हित सुतके कार्य फेरि निहि वदत निहारे ॥ काहि गिरिधर कविराय
लोकमें जली कहाजी । अपकीरति राहिगई केकयी रही न रानी ३ ॥
सवेया ॥ अहोप्रत कहा चलिहो अबही तुमसांघी कहौ किन मो
सौलला । सुनिनैननवे जलसो भरिके जस चोइपरे नइजात
पला ॥ सियके मुखकीछवि यो न घटे मनोद्वैजसोले द्विजेराज
कला । सुधिराखनहेत सियावरकी पलट्यो कनकी श्रुगुरी को
छला ॥ ४ ॥ जानकी तिहारे संग जानत न एकौ दुख याके
लाडेवेटा तुमबनहू में सहियो । पायनको चलिबो हे जौलौ पांय
चलो जाइ आगे जनिचलौ याहि संगलै निबहियो ॥ लक्ष्मणको
मनरुखा भूखा जनिदेखि सको आवे कोऊ उतते संदेशोताहि
कहियो । उतरत जाहु काहु ग्रामन के बीच पूत मेरे वनवासी
मेरी सुधिलेत रहियो ५ ॥ हनुमन्नाटक ॥ सद्यःपुरपरिसरे
रिदिरापकृद्धी सीताजवात्त्रिचतुराणिपदानिगत्वा ॥ गन्तव्या

स्तिक्रियवित्यसकद्बुवाणा समाश्रुणः कृतवती प्रथमा शतारमा ॥ १ ॥
 पुरते निकसी रघुवीरबध करिसाहस धीर दई डगद्वै । भस्मिभाल
 कनी निकसीश्रमकी पटसूक्रिगये अप्रसमृतहै ॥ पुनि पूछत यो
 चलनों व कितौ कहै पर्णकुटी करिहौ कितवै । तुलसी सियकी
 लखि आतुरता पियके युगवैनचले जलचवै ॥ २ ॥ भोरहीके भूखे
 हैंहै प्यासमुख सूखे हैंहै चलेपग दुखे हैंहै फिरे मगरातके ।
 रवि की किरणिलगे लालकुम्हिलाने हैंहै भार लपटाने अशा
 फाटैहैं गात के ॥ अब तौ भई है साझ वैहै बनभाझ हम रही
 क्यों न बाँझ हिये फटे क्यों न मात के । सेरी वेछौना गये तजिके
 घरीना हौगे तरुके तरौना सो बिछौना किये पातके ॥ ३ ॥ मग
 में परतपग सुंदर भरत डग कोमल विमलभूमि छोड़तहै बनको ।
 जिहिठौर कांटेकाठ कांकर परत आइ तिहिठौर धरत है आपने
 चरनको ॥ जिते छांह सीरी तिते बीजतहै प्यारी नीरी जितेधाम
 तिते कीजे नीरद से तन को । गहे रघुनाथ निजहाथन सो हाथ
 ऐसे जानकी को लियेसाथ चलेजात बनको ॥ ४ ॥ मुख सूक्रि
 गये रसनाधर मंजुल कंजसे लोचन चारुचितै । करुणानिधि कृत
 तुरंत कह्यो कि दुरंत महावन भरिअबै ॥ सरसीरुह लोचन नीर
 चितै रघुनाथकही सियसोजुतवै । अबहीं बनभासिनि पूछतिहौ
 तजि कौशलराजपुरी दिनहै ॥ ५ ॥ जासुके नाम अजाभिल से
 खल कोटि नदी भव छंडतकाढ़े । जो सुमिरै गिरिमेरु शिला कन
 होत अजाखुर वारिध चाढ़े ॥ तुलसी जिहिके पद पंकजसों प्रकटी
 तटनी जुहरैअगगाढ़े । ते प्रभुहै सरिता तरिवेकह मांगत नाव क-
 रारिपैठाढ़े २ इहिघाटते थोरिबदूरि अहो कटिलो जलथाह बता-
 इहोजू । परशेपगधरि तरै तरणी धरणी धर क्यों समुझाइहो जू ॥
 बरुमारिये मोहि बिनापगधोये हौनाथ न नावचढ़ाइहोजू । तुलसी
 अवलम्ब न और कछु लरिका किहिभाति जिवाइहोजू ४ रा-
 वरेदोषनि पायनि को पगधूरि को भूरि प्रभावसहा है । पाहनते
 बलवान त काठकी कोमल है जलखाइरहा है ॥ तुलसी सुनिकेव-

टके बरबैन हँसे प्रभुजानकी ओर हहाहै । पावन पाव पखारिके
 नाव चढ़ाइहौं आयसु होत कहाहै ५ प्रभु रुखपाइके वुलाइवाल
 घरणिकुं बंदिके चरण चहुं दिशिबैठे घेरिघेरि।छोटोसो कठोता भ-
 रिआन्यो पानी गंगाजूको धोइपाइ पीवतपुनीतवारि फेरिफेरि ॥
 तुलसी सराहँ ताको भागसानुराग सुर वरपे सुमनजयजय कहँ
 टेरिटेरि। विबुधसनेहसानी बानी सुसयानी सुनि हँसेरामजानकी
 लषण तनहेरिहेरि ६ लक्ष्मणसों हमसों इकसाथ सिया पुनि
 साथहि छाँड़ि न दैहँ । धानरऋक्ष जितेकहि केशव ते सब कंदर
 खोह समै हँ ॥ छाँड़िके आनि मिल्यो हमसों तिन को यह संग
 कहा करि एहँ । और सबे घर के वन के कहुकौन के भौन विभी-
 षण जैहँ ७ ॥

चौदहवरषपात्रेआये रघुनाथनाथसाथकेजेभीलकहँ
 आयेप्रभुदेखिये । बोल्योअबपाऊंकहांहोतनप्रतीतक्यो
 हूँ प्रीतिकरिमिलेरामकहीमोकोपेखिये ॥ परसपिछाने
 लपटानेसुखसागर समानेप्राणप्रायेमानो भालभागले
 खिये । प्रेमकीजुबातक्योहूँवानीमेंसमातनाहिं अतिअकु
 लातकहोकैसेकेशिखिये ९४ मूल ॥ निमिनृपतिनवोयो
 गेश्वरा पादत्राणकीहौंशरण ॥ कविहरिकरिभाजनहु
 भक्तरत्नाकरभारी । अंतरिक्षअरुचमस अनन्यतापधति
 उधारी ॥ प्रबुधप्रेमकीराशि भूरिदाआविरहोता । पिप्प
 लद्रुमलप्रसिद्धभवाम्बुधिपारकेपोता ॥ श्रीजयँतीनंदन
 जगतिके त्रिविधितापत्रामैहरण । निमिनृप्रतिनवो
 योगेश्वरापादत्राणकीहौंशरण १३ पदपरागकरुणाकरौ
 जेनिँतानवधाभगतिके ॥ श्रवणपरीक्षितसुमति व्यास
 सावककहिकीर्तन । सुठिसुमिरणप्रह्लादपृथुपूजाकमला

चैन । वंदनसुफलकसुवन दासदीपत्तिकपीश्वर । सख्य
 त्वेपारत्थसमर्पनआत्माबलिधर ॥ उपजीवीइनकेनामके
 एतेत्राताअगतिके । पदपरागकरुणाकरो जेनिचैतानव
 धामगतिके १४ ॥

दोहा ॥ यानपुष्पमय एकलिय चढ़े लषण सिय श्याम ॥
 करतस्तुति सब देवमुनि चले अवधपुर राम १ रघुबर आगससुनि
 अवध घरघरघुरत निशान ॥ मिले भरतपरिजनप्रजा प्रथमहि गुरु
 सनमान १ पादत्राणकीहौ शरण ॥ वेदाचार्यवाक्यम् ॥ कर्मावलं
 बकाःकेचित् केचिज्जानावलम्बकाः ॥ वयन्तु हरिदासानां पादत्रा
 णावलम्बकाः २ भक्तिके भागवते ॥ श्रीविष्णोःश्रवणेपरीक्षिदभ
 वद्वैयासकिःकीर्तने प्रह्लादःस्मरणेतदाग्निभजने लक्ष्मीःपृथुःपूजने ॥
 अक्रूरस्त्वभिवन्दने कपिपतिदास्येचसख्येर्जुनः सर्वस्वात्मनिवे
 दनेवल्लिरभूत्कृष्णासिपारंपरा ५ ॥

श्रवणरसिककहूंसुतेनपरीक्षितसे पानहूकरत लागै
 कोटिगुनीप्यासहै । मुनिमनमांझक्योहूं आवतनध्यावतहू
 वहीगर्भमध्य देखिआयोरूपरासहै ॥ कहीशुकदेवजूसोटि
 वमेरीलीजैजानिप्राणलागै कथानहींतक्षककात्रासहै । की
 जियेपरीक्षाउरआनीमतिसानीअहो बानीविरमानीजहां
 जीवननिरासहै १५ ॥ शुकदेवकीशंका ॥ गर्भतेनिकसि
 चलेवनहीं मेंकीनोवास व्याससे पिताको नहीं उत्तरहू
 दियोहै । दशमलोकसुनिगुणमतिहरिगई नईभईरीति
 पदिभागवतलियोहै ॥ रूपगुणभरसह्योजातकसेकरिआ
 ये समानृपदरिभीज्योप्रेमरसहियोहै । पूजैभक्तभूपठौर
 ठौरपरैभौरजाइ गाइउठैजबैमानोरगभरि कियोहै १६ ॥

प्यासहै ॥ पारनो ॥ प्रवराश्चातकोहंसः शुकोमीनादयस्तथा ॥

अत्रावृत्तमूरण्डवृषोद्याः प्रकीर्तिताः १ ॥ छप्पे ॥ अन्य मनाद-
गलोलपदलेदकअसमंजस । स्थित अधीर श्रुति मद् पलकभपकै
निद्रावस ॥ प्रश्न प्रसंगति मिलै मधुर अनुसोदन अक्रिय । वाद
रसिकअनभिज्ञ अलापत जौन प्रियाप्रिय ॥ रसरसिक अनन्य
विशालमति वातकहत अनुभौसुकृत । दश दोपरहित श्रोतामिलै
उज्ज्वल रसवरषे अमृत २ दशमश्लोक ॥ दशमे ॥ अहोवकीय
स्तनकालकट जिघांसयापाययदप्यसाध्वी ॥ लेभगतिधात्रयुचिता
ततोऽन्यंकनोदयालुशरणब्रजेम ३ परिनिष्ठितोपिनैर्गुण्येउत्तमश्लो
कलीलिया ॥ ग्रहीतचेत्ताराजपे आख्यानंयदधीतवान् ४ परेभवर
जाइ ॥ कवित्त ॥ सूक्त न वारांपार लिख्यो प्रेमहै अपार मिलन
अथाहै देखि धीरज हिरात है । पातीको अधारपाइ पैरत सनेह
सिंधु विरुह लहरि मांझ हियरा हिरातहै ॥ नौल गुनबंधी बूडि
ढूढ़त रत्नन औधी सुरति मरजियाकी नेक न थिरात है । एक
बरवांचि पुनि फेरि खोलि फेरि वांचि वांचि वांचि प्राणप्यारी
बूडि बूडि जात है ५ ॥

प्रह्लादकीटीका ॥ सुमिरणसां चो कियो लियो देखित ब्र
हीमें एकभगवानकैसेकाटैतरवारहै । काटिबोखडगजल
बोरिबोसकतिजाकी ताहीकोनेहारैचहुंओरसोअपारहै ॥
पूछतेवतायोखंभतहांहींदिखायोरूप प्रकटअनूपभक्तवा
णीहींसोप्यारहै । दुष्टुडाख्योमारिगैआतैलईडारितऊको
धको न पारकहाकियोयोविचारहै १७ ॥

पूछेत ॥ श्लोक ॥ तस्माधुमन्येसुरत्रय्येदेहिनां सदासमुद्विग्न
धियामसद्ग्रहात् ॥ हित्वात्मपातंगृहमन्धकूपं वनंगतोयच्छरिमाश्र
येत् १ श्रवणकीर्तनविष्णोःस्मरणंपादसेवनम् ॥ अर्चनं वन्दनं दास्यं
सख्यमात्मनिवेदनम् २ ॥ कवित्त ॥ पाशानिसौ वांधिके अगाध जल
बोरिराखे तीर तरवारनि सां मारि मारि हारै हैं । गिरिते गिराय
दिये डरपे न नेकु तब मत्तवारे पर्वत से हाथीतर डारै हैं ॥ फेरै

शिर आराले अग्नि मीझि जारे पुनि पूछि मीडिगातनु लगाये
नाग कारे है । भावते के प्रेम में मगन कळु जाने नाहि ऐसे प्रह-
लाद पूरे प्रेम मतवारे है ३ ब्याल कराल महा विषपावक मत
गयन्दनिक रदतारे । ताते निशक चले डरपे नहीं किकरते करनी
मुख मोरे ॥ नेक विषाद नहीं प्रहलादाहे कारण के हरि केवल
हारे । कौनकीत्रास सहै तुलसी जोपै राखि है रामतौ सीरिहोकरे ४ ॥
छप्ये ॥ मगन गूज गुंजरत शोर दशहूँदिशि पूरण । हरत धरति
कलमलत शेष शंकर विषचूरण ॥ उसरसंक सकपकत धीर धक
पकत धमक सुनि । भगत भीर भहराइ खंभ फहराइ फटतपुनि ॥
अति विकट दन्त कट कट करत चट पटाइ नख करत तपु । लफ
लफतजीभ दुर्जन दलन जय जय श्रीनरसिंह वपु ५ अति भ-
क्तिके काज सुधारनको अद्भुत अवतार मुरारिधर ६ ॥

डरे शिव आदिकहुं देखे नही कोधएसो आवत नदिग
कोऊ लक्ष्मीहुं त्रासहै । तवतौ पठायो प्रहलाद अहलाद
महा अहा भक्ति भावपग्यो आयो प्रमुपासहै ॥ गौदमें उठा
इलियो शीश परहाथ दियो हियो हुलशायो कही बाणी बिनै
राशहै । आई जगदयालगि परयो श्रीनृसिंहजूको अख्यो
यो लुटावो करौ माया ज्ञाननाशहै ७० ॥

चाणी बिनै राशिहै ॥ पाद्रे ॥ कुलपवित्रं जननी कृतार्थावसुध
रासावसती च धन्या ॥ स्वर्गोस्थितास्तत्पितरोपि धन्या येषां कुले वै-
ष्णवनामधेयम् १ ॥ छप्ये ॥ मनोरथ मनके आवसत कहते अ-
धिकारी । सो हम निपट असत्य न आताहे देखि सुखारी ॥ सोऊ
भूठ जो होय तऊ नहि काम सतावे । जो मनके अनुभाव जासु
तिहि जगन डरावे ॥ सुपनोहू है नहि सांचे पुन जगतमिटै पहि-
चानिये । इतयोही विषय निवेशता गये सांचसो जानिये २ ॥
श्लोक ॥ विषयान् ध्यायताश्चित्तं विषयेषु विषज्जते ॥ मामनुस्मर
तश्चित्तं मय्येव प्रविशति ३ कवित्त ॥ उवाचि अन्हाइ लालघोती

झमकाय पट पीताम्बर छोरन भुराई भ्रमकाइ कै । सेलिके अतर
वह चतुर किशोर बर वांध्यो केश जूरा कर चूरा चमकाइ कै ॥
पहिरि खराजं मणि रचित खचित तान वानमुसकान पान खात
उठ्यो गाइकै । ठाढ़ोसिंह पौरिकर चन्दनकी खौरि चितै करयो
मनकोर तन गिरयो भौरखाइकै ४ ॥

॥ अक्रूरकीटीका ॥ चले अकरूरमधुपुरीते विशूरनयनच
लीजलधारा कबदे खौंछविपूरिकी । संगुनमनावै एकदे
खिबोई भवै देहसुधिविसरावै लोठ्योलाखिपगधूरिको ॥
वंदनप्रवीनचाह निपटनवीनभईदईशुकदेव कहिजीवन
कीमूरिको । मिलेरामकृष्णझिलेपाइकैमनोरथको हिले
दृगरूपकिये चूरिचूरिचूरिको ९९ ॥ टीकाबलिजूकी ॥
दियोसरबसुकरि अतिअनुरागबलि पागिगयोहियो प्रह
लादसुधिआईहै । गुरुभरमावै नीतिकहिसमुभावैबोलउ
रमेनआधिकितीभीतउपजाईहै ॥ कह्योजोईकियोसांचोभा
वपनलियोअहो दियोडरहरिहूनेमतिनचलाईहै । रीभे
प्रभुरहेद्वारभयेबशहारिमानी श्रीशुकबखानी प्रीतिरीति
सोईगाई है १०० मूल ॥ श्रीहरिप्रसादरसस्वादकेभक्त
इतेपरमानहै ॥ शङ्करशुकसनकादि कपिलनारदहनुमा
ना । विष्वक्सेनप्रहलाद बलिरुभीषमजगजाना ॥ अ
र्जुनध्रुवअंबरीषविभीषणमहिमाभारी । अनुरागीअक्रूरस
दाउद्धवअधिकारी ॥ भगवन्तभक्तअवशिष्टकी कीरति
कहनसुजानहै । श्रीहरिप्रसादरसस्वादके भक्तइतेपर
मानहै १५ ॥

चूरिचूरि चूरिको ॥ कवित्त ॥ बांधिकै मुकैसी चौरा कलंगी
जदित हीरा तुरीदिया गोचपेच ललितही सवारयो है । अंगा एक

लमकाम कञ्चन चदरंग होत एक छोर पटकाको छैल तासो हा-
रयोहै ॥ धुकधुकी कण्ठमध्य हीरानग मोतीजरे शोभित गल-
माल आजु लाल मै निहारयो है । पहुँचनिमें पहुँची सुन्दर रतन
जरी अमैट करे ननै अमैटि मनडारयो है १ कद्यो जोई ॥श्लोका॥
असन्तुष्टाद्विजानष्टाः सन्तुष्टश्चमहीपतिः । सलज्जागणिकानुष्टा
निलज्जाचकुलाङ्गना २ ॥ हरिप्रसाद ॥ पाद्ये ॥ वलिर्विभीषणो
भीष्मः कपिलोनारदोर्जुनः ॥ प्रह्लादोजनकोव्यासो ह्यम्बरीषः पृथु-
स्तथा ३ विष्वक्सेनो ध्रुवाक्रूरस्सनकाद्याः शुकादयः ॥ वासुदेवप्र-
सादान्नसर्वे गृह्णन्तुवेषणाः ४ ॥

जिनध्यानचतुर्भुजचितधस्यो तिनहै शरणहो अनुसरौ ॥
पुलहपुलस्त्यअगस्त्य चमनवशिष्ठसौभरऋषि । कर्दम
अत्रिऋचीकर्मर्गौतमहुव्यासशिषि ॥ लोमशभृगुदाल
भ्यअंगिराशृङ्गिप्रकाशी । मांडवविश्वामित्र द्रुवासासहस
अठाशी ॥ यावलिजमदग्नीमादरशकश्यपप्रवतपाराशरौ ॥
जिनध्यानचतुर्भुजचितधस्यो तिनहै शरणहो अनुसरौ १६

चतुर्भुज ॥ छप्प ॥ क्रीट मुकुट अरु तिलक माल राजतच्छवि
छाजत । पीतवसन तनैश्याम कामकोटिक लखि लाजत ॥ कंठ
त्रिवलि श्रीवत्ससुभग शोभित मनमोहत ॥ बैजती वनमाल कौन
उपमा कवि टोहत ॥ कर शंख चक्र गदपद्मधर रूप अमित
गुण गरुडभुज । गोविंद धरण वंदत सदा जय जय जय श्रीच-
तुर्भुज १ ॥

साधनसाधिसत्रहपुराणफलरूपीश्रीभागवत ॥ ब्रह्म
विष्णुशिवलिंगपदमस्कंदविस्तारा । वावनमीनबराहअ
ग्निअरुकूर्मउदारा ॥ गरुडनारदीभविष्य ब्रह्मवैवर्तश्र
वणशक्ति । मार्कंडेब्रह्मांडकथानानाउपजैरुचि ॥ इतप
र्मधर्मश्रीमुखकथितचतुरश्लोकीनिगमसत । साधनसाधि

सत्रहपुराणफलरूपीश्रीभागवत १७ दशआठस्मृतिजिन
 उच्चरीतिनपदसरसिजभालमो॥मनुअस्मृतिआत्रेयविष्णु
 हारीतकयामी । याज्ञवल्क्यअंगिराशनीसंबर्तकनामी ॥
 कात्यायनिशंखलिखितगौतमीवाशिष्ठीदाखी । सुरगुरु
 शांतातापपराशरकृतमुनिसाखी ॥ आसापासउदारधीप
 रत्नोकलोकसाधननमो । दशआठस्मृतिजिनउच्चरीतिनप
 दसरसिजभालमो १८ मूल ॥ पावैभक्तिअनपायनीजेराम
 सचिवसुमिरणकरै ॥ विजयीसृष्टिजयंतनीतिपरशुचिरवि
 नीता । राष्ट्रविवर्द्धननिपुणसुराष्ट्रहुपरमपुनीता ॥ सदा
 अनन्दअशोकधर्मपालकततवेता । मंत्रीवर्यसुमंतचतु
 र्युगमंत्रीजेता ॥ अतिअनायासरघुपतिप्रसनभवसागरदु
 स्तरतरै ॥ पावैभक्तिअनपायनीजेरामसचिवसुमिरण
 करै १९ ॥

फलरूपी श्रीभागवत ॥ मंगल रूप अनूप निगम कल्पद्रुम
 को फल । बीजबकुलतै रहित मधुररस सहित विमल कल ॥
 कहत सुनत सुख देत अधिक हरि भक्ति बढावत । सर्व सारनि
 को सार व्याससुत शुक मुख गावत ॥ त्यों किमिरे हरणको सूरसंम
 श्रीगुर्विद जगजगमगत । पूरण पुराणप्रति प्रकट जित जय
 जय श्रीभागवत १ प्रथमे ॥ निगमकल्पतरुगलितफलं शुक
 मुखादमृतद्रवसंयुतम् ॥ पिबतभागवतरसमालयं मुहुरहोरसिका
 भुविभावुकाः २ ॥ लप्यै ॥ एकवेद के चारि सहसशाखा विस्ता
 री । साठि लाख इतिहास महाभारत कियो भारी ॥ चारिलाख
 अरु अर्द्ध व्यास वेदांत बखान्यो । अठदश किये पुराण हृदयहरि
 नाम न जान्यो ॥ बहुकहत पढ़त लीखत सुनत दाह न हिरदय
 को गयो । ततवेत्ता नारद मिले तब व्यास हृदय शीतल भयो ३
 दशहजार ब्रह्मपुराण तेइस हजार विष्णुपुराण चौबीस हजार

शिवपुराण ग्यारह हजार लिङ्गपुराण पचपन हजार पद्मपुराण ए-
कसौ इक्यासी हजार स्कंदपुराण दश हजार वामनपुराण चौदह
मीनपुराण चौबीस वाराहपुराण पंद्रह अग्निपुराण सत्रह कूर्म-
पुराण उनईस गरुड़पुराण पचीस नारदपुराण चौदह भविष्यपुराण
अठारह ब्रह्मवैवर्त नव मार्कण्डेयपुराण बारह ब्रह्मांडपुराण अठारह
हजार श्रीभागवत ॥ श्लोक ॥ एवंपुराणसंदोहश्चतुर्लक्षमुदाहृतः ४
कृष्णतन ॥ छणै ॥ प्रथम द्वितिय दोउचरण तृतीय चतुर्थ शीउ
ऊरु । पंचम नाभि गंभीर हृदय षष्ठम सुखपूरु ॥ सप्तम अष्टम
भुजा नवम कंठवर चिराजै । दशम वदन सुखसदन भाल एका-
दशराजै ॥ द्वादश शिर शोभित सदा मंगलरूपी सुमिरमन । तत
वेत्ता तीनहुँलोकमें कीरतिरूपी कृष्ण तन ५ ॥ नवमे ॥ मात्रास्व-
स्वाहुहित्रावा नविविक्तासनोभवेत् ॥ बलवानिन्द्रियग्रामोविद्वांसम
पिकर्षति ६ तापै सन्यासीको दृष्टांत ॥

तेशुभदृष्टिदृष्टिमोपरकरी जेसहचररघुवीरके ॥ दिन
करसुतहरिराजबालिवच्छकेशरिऔरस । दधिमुखदुवि
दमयंदत्तक्षपतिसमकोपौरस ॥ उल्कासुभटसुसेनदरी
मुखकुमुदनीलनल । सरभोगवैगवात्तपनसगंधमादनअ
तिवल ॥ पुनिपद्मअठारहयूथपति रामकाजभटभीरके ।
तेशुभदृष्टिदृष्टिमोपरकरी जेसहचररघुवीरके २० मूल ॥
ब्रजबड़ेगोपपरजन्यकेसुतनीकेनवनंदहैं ॥ धरानंदध्रुव
नंद तृतीय उपनंद सुनागर । चतुर्थ तहैं अभिनंदनंद
सुखसिंधुउजागर ॥ सुठिसुनंदपशुपालनिमलनिश्चय
अभिनंदन । करमाधरमानंद विदितवल्लभजगबंदन ॥ ज
हैंआसपास वा बगरके बिहरतपशुपशुछंदहैं । ब्रजबड़े
गोपपरजन्यकेसुतनीकेनवनंदहैं २१ ॥

बालबच्छ ॥ कवित्त ॥ हरगिरि हाल हद मेरुगिरि हाल पुनि

उद्रगिरि हाल और रुद्रगिरि हालवी । लपतपताल हाल दशौं
 दिगपाल हाल जलहाल थलहाल उपर उभालवी ॥ केशोदास
 लंकको त्रिपुल दल बलहाल दशशीश हाल उख्यो भुजवीश हा-
 लवी । भुवलोक हाल और ध्रुवलोक हाल एक बालि बलवंत सुत
 पग नहीं हालवी १ पादरज भागवते ॥ तद्भूरिभाग्यमिहजन्म
 किमप्यटव्यायद्गोकुलेपिकतमांग्रिजोभिपेकम् ॥ यज्जीवितं
 तुनिखिलभगवान्मुकुन्दस्त्वद्यापियत्पदरजःश्रुतिमृग्यमेव २ अहो
 भाग्यमहोभाग्यं नन्दगोपव्रजौकसाम् ॥ यन्मित्रं परमानन्दं पूर्णब्रह्म
 सनातनम् ३ आसामहोचरणरेणुजुषामहंस्यां वृन्दावने किमपि गु-
 ल्मलतौषधीनाम् ॥ यादुस्त्यजं स्वजनमार्यपथंच हित्वा भेजुर्मुकुन्दप-
 दवीं श्रुतिभिर्विमृग्याम् ४ यादोहनेवहननेमथनोपलेपप्रंखेखनाभरु-
 दितेक्षणमार्जनादौ ॥ गायन्ति चैनमनुरक्तधियोऽश्रुकण्ठ्यो धन्याव्रज-
 द्वियउरुक्रमचिन्तयानाः ५ षष्टिवर्षसहस्राणि मया तसंतपःपुरा ॥
 नन्दगोपव्रजस्त्रीणां पादरेणुपलब्धये ६ ॥

जेषालवृद्धनरनारिगोप हौं अर्थीउनपादरज ॥ नंद
 गोपउपनंद धराध्रुवमहरयशोदा । कीरतदावृषभानुकुं
 वरिसहचरिमनमोदा ॥ मंगलसुबलसुबाहुभोजअर्जुन
 श्रीदामा । मंडलगवालअनेकश्यामसंगीबहुनामा ॥ घ-
 नघोषनिवासनकीकृपा सुरनरवाञ्छितआदिअज । जेवा
 लवृद्धनरनारिगोप हौं अर्थीउनपादरज २२ मूल ॥ ब्र-
 जराजसुवनसंगसदनवनअनुगसदातत्पररहैं ॥ रक्तक-
 पत्रक औरपत्रिसबहीमनभावि । मधुकंठौमधुवर्तरसाल
 विशालसुहावै ॥ प्रेमकंदमकरंदसदाआनंदचंद्रहासा ।
 यादवकुल रसदानसारदाबुद्धिप्रकासा ॥ शुचिसेवा स-
 मयविचारिके चारुचतुरवितकीलहैं । ब्रजराजसुवनसं-

गसदनवनअनुगसदातत्पररहै २३ मूल ॥ सबसप्तद्वीपमें
दासजेतेमेरेशिरताजसम ॥ जंबूऔरपलड्विशालमलि
बहुतराजऋषि । कुशपवित्र पुनिकौचकौनमहिमाजानै
लिखि ॥ शाकविपुलबिस्तार प्रसिधनामीअतिपुहकर ।
परबतलोकालोक ओकटापूकंचनधर ॥ हरिभृत्यबसतजे
जेजहां तिनसों नितप्रतिक्राजमम । सबसप्तद्वीपमेंदास
जेतेमेरेशिरताजसम २४ ॥

मनमोदा ॥ कवित्त ॥ कहाइतरातजात अहो आवो कहैंबात
सुनैमनकंठ सुखगात न समाइगो । थोरै बैस भोरे भाइ चोरे
लेत लकचित्त कुंडल भालकहेरि हियराहिराइगो ॥ तुम कान्ह
सांवरे पधारि देखौ एकवार मेरो गोरोकान्ह लखै मनललचाइ
गो । ग्रीवकी लटक मुरि भौहकी मटकवीच धीराकी चटकमें अ-
टकै मन जाइगो ? ॥ दोहा ॥ राधा हरिहरि राधिका वनिआये
संकेत । दंपति रति विपरीति रस सहज सुरति सुखलेत २ ॥

महिमध्यदीपनवखण्डमें भक्तजितेममभूपभूप ॥ इला
वर्त्तआधीशसंकर्षणअनुगसदाशिव । रमनकमंडमनुदा
सहिरण्यकूरमअर्यमइव ॥ कुरुबराहभूमृत्यवरषहरिसिं
हप्रह्लादा । किंपुरुषरामकपि भरतनारायनवीनानादा ॥
भद्रासुग्रीवहयभद्रस्रवकेतुकामकमलाअनूप । महिमध्य
दीपनवखंडमेंभक्तजितेममभूपभूप २५ मूल ॥ श्रीश्वेत
द्वीपमेंदासजेश्रवणसुनोतिनकीकथा ॥ श्रीनारायण बदन
निरंतरताहीदेखै । पलकपरैजोबीचकोटियमजातनलेखै ॥
तिनकेदरशनकाजगये जहँवीणाधारी ॥ श्यामदर्दतहँसेन
उलटिअवनहि अधिकारी ॥ नारायणीयआख्यानहृदतहँ
प्रसंगनाहिंनतथा । श्रीश्वेतद्वीपमेंदासजे श्रवणसुनो

तिनकीकथा २६ ॥ टीका ॥ श्वेतद्वीपवासीसदारूपके
उपासी गये नारदविलासी उपदेशआशलागी है । दई
प्रभुसैन जिनिआवोइहिऐनदृग देखे सदाचैनमतिगति
अनुरागी है ॥ फिरेदुखपाइजाइकहीश्रीवैकुण्ठनाथसाथ
लियेचलेलखों भक्तिअंगपागीहै । देख्योएकसरखगरह्यो
ध्यानधरिऋषि पूंछैहरिकहोकह्योबड़ो बड़भागी है १०१

पलक परै जो बीच ॥ कवित्त ॥ मंजु मोर मुकुट लटकि घुँघु-
वारी लटै भूमिभूमि कुण्डल कपोलनिमें झलकै । बारिज बदन
रस रूपको सदन लखि दसकै रदन भरि भरि छवि छलकै ॥
कानन छुवतकोपे ऐन मैन कोटि माहे शोभा सर लखिलखि मन
मीन ललकै । देखिबेको श्याम शोभा देतो दृग रोम रोम सो न
करो विधि औः अविधि करी पलकै १ ॥ दोहा ॥ बड़ो मन्द अर-
विंदसुत जिहि न भ्रम पहिचानि ॥ पियमुख निरखनि दृगनिको
पलकरची बिच आनि २ ॥

बरषहजारबीतेनहींचितचीते प्यासोईरहत ऐपैपानी
नहींपीजिये । पावैजोप्रसादजबजीभसोंसवादलेतलेत न
हींऔरयाकीमतिरसभीजिये ॥ लीजैबातमानिजलपानक
रिडारिदियो चोंचभरिदृगभरबुधिमतिधीजिये । अचरज
देखिचषलगेननिमेषकहूं चहूंदिशिफिरयोअबसेवायाकी
कीजिये १०२ चलोआगेदेखोकोऊरहेनपरेखोभावभक्त
करिलेखोगयेदीपहरिगाइये । आयो एकजनधायआरती
समैबिहायखीचिलियेप्राणफेरि बधूयाकीआइये ॥ वही
इनकहीपतिदेखोनहींमहीपख्योचख्यायाकोजीवतनगिख्यो
मनभाइये । ऐसेपुत्रआदिआयेसाचेहितमें दिखायेफेरिके
जिवायेऋषिगायेचितलाइये १०३ ॥ मूल ॥ येउरगअष्ट

कुलद्वारपतिसावधानहरिधामथति ॥ इलापत्रमुखअनंत
अनंत कीरतिविस्तारत । पद्मसंकुपनप्रकटध्यानउरते
नहिं टारत ॥ अश्रुकमलवासुकी अजितअज्ञानुवरती ।
करकोटकतक्षकसुभटसेवाशिरधरती ॥ आगमोक्तशिव
संहिताअगरएकरसभजनरति । येउरगअष्टकुलद्वारपति
सावधानहरिधामथति २७ ॥

उरग अष्ट ॥ दोहा ॥ दोड़ जीभ तन श्याम हैं वाकचलन
विष खानि ॥ तुलसी गुरुके मंत्रपै शीश समर्पत-आनि १ अनंत
कीरति ॥ कवित्त ॥ दीननिको है दयाल दासनिको रत्नपाल
सबको शिरोमणि है सदा अविचार है । धन धनहीन को है
गुननि गुनीनको है रूपहै विरूप को अनूप है उदार है ॥ आनंद
को कंद भवसिंधु को पगार दुख द्वंदको हरणहार महिमा अ-
पारहै । श्रीगुर्विंद हरिजूके नामको उचार चारु सारन को सार
निरधारको अधार है २ ॥ दोहा ॥ मैं मानस सौ चितते मन दीनो
इहि भाव ॥ आवा जावा नित्त में ततो नजरि न आव ३ ॥

चौबीसप्रथमहरिवपुधरे चतुर्व्यूहकलियुगप्रकट ॥
रामाअनुजउदारसुधानिधि अवनिकलपतरु । विष्णुस्वा
मिबोहित्यसिंधुसंसारप्रारकरु ॥ मध्वाचारजमेघभक्तिस
रऊसरभरिया । निवादित्यअदित्यकुहरअज्ञानजुहरिया ॥
जगजनमकरमभगवतधरमसंप्रदायथापीअघट । चौबी
सप्रथमहरिवपुधरेचतुर्व्यूहकलियुगप्रकट २८ ॥

चौबीस ॥ एकादशे ॥ कृतादिषुप्रजाराजन्कलाविच्छन्तिसभ
वम् ॥ कलौखलुभविष्यन्तिनारायणपरायणाः १ ॥ गीतायाम् ॥ परित्रा
णायसाधूनांविनाशायचहुष्कृताम् ॥ धर्मसंस्थापनाथीयसंभवाभियु
गेयुगे २ ननुभागवतालोके लोकतत्त्वत्रिचक्षणाः ॥ ब्रजन्तिसर्वेसंदि
ष्टाह्वास्थितेनमहात्मना ३ भगवानेवभूतानांसर्वत्रकृपयाहरिः ॥

रक्षणाग्रचरेह्लोकान्भक्तरूपेणनारद ४ ॥ आदिपुराणे ॥ भक्ताननेव
 सेद्मद्वाशिरस्येदवसाय्यहम् ॥ नाभौचशंकरोदेवःपदेगंधर्वकिन्नराः
 ५ ॥ दोहा ॥ दम्भसहित कलिधर्म लखि छलहिसहितव्यौहार ॥ स्वा-
 रथ सहित तनेह सब समैरुचितआचार ६ ॥ श्लोकः ॥ घोरेकलि
 युगेप्राप्तेसर्वधर्मविवांजते ॥ वालुदेवपराभक्तास्तेकृतार्थानसंशयः ७
 कलियुगप्रकट ॥ छप्यै ॥ दयास्वर्गउठि गई धर्म धंसिगयो धराणि
 में । पुण्य गयो पाताल पाप भयो वरण वरणमें ॥ प्रीति रीति सब
 गई बैर भयो घर घर भारी । आप आपनी परी जिते जगमें नर
 नारी ॥ कविराज कहत सांचो सबे निपट पलटि समयो गयो ॥ नर
 निरध सुनि कानदै अब प्रतप्त कलियुग भयो ॥ दोहा ॥ कलियुग
 काल कराल की वराणि न जाइ अनीति ॥ बैर बढ़यो चारयो वरन
 आपसमय भयभीति ६ ॥

निंबादित्यनामजातेभयोअभिराम कथाआयोएकदंड
 ग्रामन्योतोकरिआयेहैं । पाककोअवारभईसंध्यामानिलई
 यतीरतीहूनपाऊवेदवचनसुनायेहैं ॥ आंगनमेंनीमतापै
 आदित्यदिखायोवाहिभोजनकरायो पाछेनिशिचिन्हपाये
 हैं । प्रकटप्रभावदेखिजान्योभक्तिभावजग दावयावनाम
 परयोहरयोमनगायेहैं १०५ दोहा ॥ रमापधतिरामानु
 ज विष्णुस्वामिन्निपुरारि ॥ निम्बादित्यसनकादिका मधु
 करगुरुमुखचारि २६ ॥ मूल ॥ संप्रदाशिरोमणिसिंधु
 जारच्योभक्तवित्तानइमि ॥ विष्वक्सेनमुनिवर्यपूर्णशठ
 कोपपुनीता । बोपदेवभागौतलुसउधस्योनवनीता ॥ मंगल
 मुनि श्रीनाथपुंडरीकाक्षपरमयश । राममिश्रसरशिप्र
 कटपरतापपरांकुश ॥ यामुनिमुनिरामानुजतिमिरहरणउ
 दयभेभानुजिमि । संप्रदाशिरोमणिसिंधुजारच्योभक्तवि
 त्तानइमि ३० ॥ मूल ॥ जिनसहस्रआस्यउपदेशकरि

जगतउधारणयत्नकिय । गोपुरद्वैआरुढउच्चसुरसंत्रउ
चाख्यो । सूतेनरपरेजागिबहुत्तरश्रवणनिघ्राख्यो ॥ तितने
ईगुरुदेवपधतिभङ्गन्यारीन्यारी । कुरुतारकशिष्यप्रथम
भक्तिवपुसंगलकारी ॥ कहँहुपणपालकरुणासमुद्ररामा
नुजसमनाहिंविष्य । जिनसहसआस्थउपदेशकरिजह्कड
धारणयत्नकिय ॥

वेदवचन ॥ भागवते ॥ सन्ध्याकालेचसंप्राप्ते कर्मचत्वारिवर्ज
येत् ॥ आहारमैथुननिद्रांस्वाध्यायंचविशेषतः १ आहारेजायते
ठ्याधिर्गर्भदौष्यंचमैथुने ॥ निद्रायांहियतेलक्ष्मीः स्वाध्यायेमरणं
ध्रुवम् २ आदित्वदिखायो ॥ समये ॥ यस्यास्तिभक्तिर्भगवत्यकिंचिना
सर्वे गुणास्तत्र समासतेगुराः ॥ हरावभक्तस्यकुतोमहद्गुणा स-
नोरथेनालतिश्रावतोवहिः ३ ॥ रमापद्धति ॥ पाद्ये ॥ कलौखलु
भविष्यन्तिचत्वारःसम्प्रदायकाः ॥ श्रीब्रह्मरुद्रसनकाथैष्यवाःक्षिति
पावनाः ४ ॥

टीका ॥ आस्यसोयद्वननामसहस्रहजारमुखशेषश्रवता
रजानोवहीसुधिआईहै । गुरुउपदेशमंत्रकह्योनीकेराख्यो
अंत्रजपतहीश्यामजूनसूरतिदिखाईहै ॥ करुणानिधानक
हीसन्नमगवानपावै चढिदरवाजेसोपुकाख्योधुनिछाईहै ।
सुनिसीखिलियोयांबहत्तरिहीसिद्धभये नयेभक्तिचौजयह
रीतिलैहोंगाईहै १०६ ॥ गयेनीलाचलजगन्नाथजूकेदेखि
बेको देख्योअनाचारसवंपंडादूरिकियेहै । संगलैहजार
शिष्यरंगभरिसेवाकरै धरैहियेभावगूढमतदरशायेहै ॥
बोलेप्रभुवेईआवै करैअंगीकारमैती प्यारहीकोलेतकभूं
औगुणनलियेहै । तउदृढ़कीनीफिरकहीनहींकानकीनी
लीनीवेदवाणीविधिकैसेजातियेहै १०७ ॥ जोरावरभक्त

सोंबसाइनहींकहीकितीरतीहूनखावैमनचोजदरशायोहै।
गरुड़कोअज्ञादईसोईमानिलईउन शिष्यनिसमेतनिज
देशब्रोडिआयोहै ॥ जागकैनिहारैठौरआरहीमगनभये
दयेयोप्रकटकरगूढ़भावपायोहै । वेईसवसेवाकरैश्याम
मनहरैसदाधरैसांचोप्रेमहियेप्रभुजूदिखायोहै १०८ ॥

मुरति दिखाई हे ॥ यह तो बड़ो आश्चर्य्य है तत्काल मूर्ति
कैसे देखी तीन वस्तु शुद्धहोहिं तो खेत में बीजऊगे ॥ बीज धुनों
भजो न होइ खेतकर बंजर न होइ किरान को भाग होइ चेला
निर्वासिक होइ यह खेत शुद्ध गुरु निर्वासिक यह बीजशुद्ध गुरु
के भाग ॥ दोहा ॥ गुरुलोभी शिष्य लालची दोऊखेलै दाव ॥
दोऊबूड़ै वापुरै चढ़ि पाथरकी नाव १ पारथकी नावपै मल्लाह
चूड़ै चढनहाराहू चूड़ै सब भगवान् पावै तापै कठारीजू वाको
दृष्टांत ॥ श्लोक ॥ अपिचेत्सुदुराचारो भजतेमामनन्यभाक् ॥
साधुरेवसमंतव्यःसम्यग्व्यवसितोहिसः २ ॥

मूल ॥ चतुरमहंदिग्गजचतुरभक्तिभूमिदाबेरहैं । श्रु
तिप्राज्ञश्रुतिदेवऋषभपुहकरइभएसे । श्रुतिधामाश्रुतिउ
दधिपराजितवामनजैसे ॥ रामानुजगुरुबंधुविदितजग
मंगलकारी । शिवसंहिताप्रणीतज्ञानसनकादिकसारी ॥
इंदिरापद्धतिउदारधीसभासापिसारैगकहैं । चतुरमहंत
दिग्गजचतुरभक्तिभूमिदाबेरहैं ३२ ॥ आचारजकेजामात
कीकथासुनतहरिहोइरति ॥ कौउमालाधरमृतकबह्योसरि
तामेंआयो । दाहकृत्यज्योबंधुन्योतिसबकुटुंबबुलायो ॥ ना
कसकोचैविप्रतबहिंहरिपुरजनआये । जैवतदेखसबनिजा

१ पादांतमें इस प्रकार की गुरुमानने से पंद्रह मात्रा ठीक हैं ॥ पादांत में लघु
की विकल्प कर के गुरुसंज्ञा होतीहै अथवा चतुरमहंत, यह पाठ है ॥

तकोहूनाहिपाये ॥ श्रीलालाचारजलक्षुधाप्रचुरभईसहिमा
जगतिआचारजकेजामातकीकथासुनतहरिहोइरति ३३
टीका ॥ आचारकोजामातवातताकी सुनोंनीकेपायो
उपदेशसंतबंधुकरमानिये । कीजेकोटगुणीप्रीति ऐपैन
बनतरीतितातेइतिकरौयातेघटतीनआनिये ॥ मालाधा
रीतनसाधुसरितामेंबह्योआयोलायोघरफेरके विमानस
वजानिये । गावतवजावतलैनीरतीरदाहकियो हियोदु
खपायोसुखपायोसमाधानिये १०९ ॥

चतुरमहंत ॥ श्लोकः ॥ अद्यापिनोज्झतिहरःकिलकालकूट
कूमोविभक्तिधरणीखलुष्ट्रभागे ॥ अम्भोनिधिर्वहतिदुःसहवाड
वाग्निमङ्गीकृतसुकृतिनःपरिपालयन्ति १ लालाचार्य्य पैस्कान्दे ॥
तुलसीकापुजांमालांकण्ठस्थांवहतेतुयः ॥ अशौचश्चाप्यनाचारोमा
मेवैतिसंशयः २ केशरि कश्मीरमोंहोइ है सो राजा जैसिंहस-
वाई ने अमेर में लगाई सो नहीं भई तब पूछी काहेते न भई
महाराज जल आवै तो होइ जहाँ जलहू मँगायो तऊ न भई म-
हाराज माटी आवै तो होइ माटीहू आई तऊ न भई महाराज
हवाआवै तो होइ जैसेही प्रेम हृदय ते उपजै खैचेते न आवै ३ ॥

कियोसोमहोत्सौजातिविप्रनिकोन्योतोदियो लियो
आयेनाहिआनीशंकादुखदाहिये । भयेइकठौरेमायाकीने
सबधौरेकछू कहैवातऔरैमरोदेहवहीआहिये ॥ यातेनहीं
खातवाकीजानतनजातिपांति बडोउतपातघरलाइजाइ
दाहिये । मगअवलोकउतपथ्योसुनशोचहिये जिथेआइ
पूछैगुरुकैसेकैनिबाहिये ११० चलेश्रीआचार्य्यजूपैवारि
जवदनदेखि करीसासटांगवातकहींसोजनाइये । जावोजू
निशंकवेप्रसादकोनजानैरंक जानैजेप्रभावआवैवेगिसुख

दाइये ॥ देखेनभूमिद्वारेहैनिरधारजन वैकुंठनिवासी
पांतिदिगहैकैआइये । इन्हैअबजानदेवोजिनकहूकहौ
अहौ करौहांसिजवैघरजाहनिजपाइये १११ ॥

आयेनाहिं ॥ आगमे ॥ सालाधारकमात्रोपि वैष्णवोभक्तिवर्जि
तः ॥ पूजनीयःप्रयत्नेन ब्रह्मणार्तिमानुषैः १ प्रसाद को न जानै
रंक ॥ स्कादि ॥ महाप्रसादेगोविन्देनास्मिन्ब्राह्मणवैष्णवो ॥ स्वरूपपुण्य
वताराजन् विश्वात्मनैवजायते २ घरजाइ स्नाहये ॥ प्रतिमासंत्र
तीर्थेषु भेषजवैष्णवगुरौ ॥ आइशीभावना यस्य सिद्धिर्भवतिताइ
शी ३ कवित्त ॥ मल्लजानै कुलिश नरेशनरजानै पुनि नारीजानै
मीनकेतुसूरतिरसाजहै । गोपजानै स्वजन सहीपजानै दंडदेनयादव
र्यौ जानै इष्टदेवता कृपालहै ॥ अज्ञानीविराट जानैयोगी परतत्व
जानै रंगभिराम कृष्णगये बैसेहालहै । नंदजानै बालक गुर्विंद
प्रतिपालजानै शाल शत्रुवंशजानै कंसजानैकालहै ४ ॥

आयेदेखिपारषदगयोगिरिभूमिसद हृदकरीकृपाग्रह
जानिनिजजनको । पायोलेप्रसादस्वादकहिअहलाददयो
नयोलयोभौदजान्योसांचोसंतपनको ॥ विदाहैपधारेनभ
सगभैसिधारेविप्र देखतविचारेद्वारठयथाभईमनको । ग
योअभिमानआनमांदिरमगनभये नयेदगलाजबानबीनि
लेतकनको ११२ ॥ पाइलपटाअंगधूरिमेलुटायेकहै क
रौमनभायो औरदीनबहुभाष्योहै । कहीभक्तराजतुमकृपा
देसलाजपायो पायोजोपुरापनमेरूपनैनचाष्योहै ॥ छांडो
उपहासअबकरौनिजदासहमें पूजाजियआसमनअतिअ
भिलाष्योहै । कियेयेप्रशंसमानोहंसयेपरमकोऊऐसे जस
लाखभांतिघरघरराष्योहै ११३ सूल ॥ श्रीभारवासेउपदे
शज्ञतिश्रवणसुनौ आख्यानसुचि ॥ सुलगनेपरदेश

शिष्यसुरधुनीद्वारै । इकमंजनइकपानएकहृदबदनकरा
ई ॥ गुरुगंगामेप्रवेशशिष्यकोवेगिबुलायो । विष्णुपदीभ
यैजानिकमलपत्रनपरधायो ॥ परेपादपदमतादिनप्रगट
सबप्रसन्नमनपरमरुचि । श्रीमारगमेउपदेशकृतिश्रवण
सुनौआख्यानशुचि ३५ ॥

गयोगिरि भूमि ॥ पद ॥ संतचरणपरशीशधरयो ॥ राखिलियो
बहुभांति कृपाकरि मनतेसंशयशूलहृद्यो । हमरअंगुणमेटिदूरि
घटमेहरिरसअमृतभरयो ॥ कीटभृगज्योमृतकजिवायो जीव काग
ते हंसकरयो । दूरिकियोअज्ञानअंधरो ज्ञानरत्नजबदीपवरयो ॥
हरिहृदियाइकियोहरिहीसो इहिमुखमायादूरिततरयो । प्रभुवश
भयेसाधुकीसेवा साधुसंगतेकाजसरयो ॥ रामरइकेहितभगवानै
साधुसंगको अमलपख्यो १ ॥

टीका ॥ देवधुनीतीरसोकुठीरबहुसाधुरहै रहैगुरुभक्त
एकन्यारोनहिहैसकै । चलेप्रभुगांवजिनितजोबलिजांव
कही करौदाससेवागंगामेहीकैसेछैसकै ॥ क्रियासबकपक
रैविष्णुपदीध्यानधरै राषभरेसंतश्रेणीभावनहिभैसकै ।
आयेईशजानिदुखमानिसोबखानिकियो आनिमनजानि
बातभ्रंगकैसेधरैसकै ११४ चलेलैकेन्हानसंगगंगामेप्रवेश
कियोरंगभरिबोलेसोअंगोअविगिलाइये । करताबिचार
शोचसागरनवारापार गंगजप्रकटकह्योकंजनपैआइये ॥
चलेइअधरप्रगधरैसोमधुरजाइ प्रभुहाथदियोलियोतीर
भीरछाइये । निकसतधाइचाइपाइलपटाइगये बड़ोपर
तापयहनिशिदिनगाइये ११५ ॥

देवधुनी कैसी है ॥ प्रथम ॥ याधैलसच्छ्रीतुलसीविमिश्र
कृष्णांघ्रिरेणवभ्यधिकाम्बुनेत्री ॥ पुनातिलोकानुभयत्रसेशान्क

स्तान्नसेवेतमरिष्यमाणः १ आदिपुराणे ॥ दृष्ट्वा जन्मशतं पापं स्पृ
 द्वा जन्मशतद्वयम् ॥ स्नात्वा पीत्वा सहस्राणि हन्ति गंगा कलौ युगे २
 तापैदृष्ट्वा त भूतको अरु सिद्धको ॥ भोदरिद्रेनमस्तुभ्यं सिद्धो हंतव
 दर्शनात् ॥ पद्म्याभ्यहं जगत्सर्वनामपश्यतिकश्चत्त ३ ॥ कवित्त ॥
 कारौकुळकंठक डरारो बोलभारो जाको तीरथके तीर पग कबहू
 न लैगयो । कहै कविगंगकारेकागहूते सर्सआप आनियमप्रेरयो
 तत्रखांटमें कुपैगयो ॥ गंगाजीको धोयोपट वकुचामें घरी करी
 ताके अग लागतही तारागणलैगयो । चाहचौरठौरैसबदेवता नि
 होरै बहिगंगाजीकी चादरि सों चारिभुजहैगयो ४ ॥ ऐसो गंगा
 को प्रताप ताको क्यों उटिधाइये ५ ॥

मूल ॥ श्रीरामानुजपद्वितिप्रतापअवनिअमृतहैअनुस
 ख्यो ॥ देवाचारजद्वितियमहामहिमाहरियानंद । तस्यराघ
 वानंदभयेभक्तनकोमानंद ॥ पत्रालंबपृथिवीकेआपुकाशी
 अस्थाई । चारिवरणआश्रमहुसबहिकोभक्तिदृढाई ॥ त्यों
 तिनकेरामानंदप्रकटविश्वमंगलजिहबपुधस्यो । श्रीरामा
 नुजपद्वितिप्रताप अवनिअमृतहैअनुसख्यो ३६ श्रीरामा
 नंदरघुनाथज्यो द्वितियसेतुजगतरनकिय । अनंतानंदक
 वीरसुखा पद्मावतनरहरि । पीपाभावानंदसेन सुरसुरकी
 धरहरि ॥ औरौशिष्य प्रशिष्यएकतेएकउजागर । विश्व
 मंगलआधारभक्तिदशधाकेआगर ॥ बसिबहुतकालबपु
 धारिकेप्रणतजननिकोप्रारदिय । श्रीरामानंदरघुनाथज्यो
 द्वितियसेतुजगतरणकिय ३७ अनंतानंदपदपरशकैलो
 कपालसेते भये । योगानंदगयेशकरमचंदअल्हपैहारी ।
 रामदासश्रीरंगअवधिगुणमहिमासारी ॥ तिनकेनरहरि
 उदित मुदितमाहामंगलतन । रघुवरयदुवरगायविमल

कीरतिसंच्योधन ॥ हरिभक्तिसिंधुवेलारचेपानिपद्यजा
शिरदये । अनंतानंदपदपरशकैलोकपालसेतेभये ३८ ॥

चारिवरण एकादशे ॥ मुखवाहूरुपादेभ्यः पुरुषस्याश्रमैः सहा च-
त्वारोयज्ञिरेवर्णाशुणैर्विप्रादयः पृथक् ॥ परेशंपुरुषंसाक्षादात्मप्रभव
मीश्वरम् । नभजन्त्यवजानन्तिस्थानभ्रष्टाःपतन्त्यधः २ ॥ वारैसि
ष्येवारैहीसैतरूपीहोतभये ॥ छप्पै ॥ जगतसमुद्र अपार तासकैजे
नमरन्तट । काम क्रोध मद लोभतासमें लहरि महाभट ॥ मोह
ग्राहतम प्रबलनिगलि जावै सीसारा । तामै गोताखातनाहिकोउ
तनकअधारा ॥ दुखपाये वूडकलेत है सुखसे उछरत जानि जव ।
जन दीननाथ रघुनाथ विन कौन छुटावै आनि अव ॥

टीका ॥ द्योसाएकगांवतहां श्रीरंगसुनामरहैबनिकस
रावगीर्काकथालैबखानिये । रहतोगुलामगयोधर्मराजधा
मवहां भयोबड़ोदूतकहीयेरेसुनिवानिये ॥ आयेबनिजारे
लैनदेखितूदिखावैचैन बैलशृङ्गमध्यपैठिमाख्योपाहिचानि
ये । विनहरिभक्तिसवजगतकायहरीतीभयोहरिभक्तिश्री
अनंतपदध्यानिये ११६ सुतकोदिखाइदेतभूतनितसूक्यो
जातपूछैकहीबाततनवाहीठौरस्थायो है । आयोनिशिमार
वेकोधायोयहरोषमख्यो देवोगतिमोको उनबोलिकैसुना
यो है ॥ जातकोसुनारपरिनारलगप्रेतभयो लयोतेरोशर
णमें दूढजगपायो है । दीनोंचरणासृतलैकियोदिव्यरूप
वाकोअतिहीअनूपसुनो भक्तिभावगायो है ११७ ॥ मूल ॥
निधेदअवधिकलिकृष्णदासअनपरिहरिपयपान किय ॥
जाकेशिरकरधख्योतासुकरतरनहिआड्यो । अप्योपदनि
वाणशोचनिभयकरिछोड्यो ॥ तेजपुजबलभजनमहामुनि
ऊरधरता । सेवतचरणसरोजराइराणाभुविजेता ॥ दाहि

नावंशदिनकरउदयसंतकमलहियसुखदिय । निर्भेदअ
वधिकलिक्कृष्णदासअनपरिहरिपयपानकिय १९ ॥

धर्मराज धाम ॥ सवैया ॥ जागत के हम पाहरू हैं पुनि सो-
वतके गटिया सरकावैं । षटकोन करै परकोधन चोरत दोरत
चोरके शोरसुनावैं ॥ हमहीं शिर भूत चढ़ाइ सुजाइ के पाइधुवाइ
के प्याइछुड़ावैं । याहीते नाथ वरो वरिहौ कहूं धर्म अधर्म की बात
चलावैं १ चरणावृत ॥ पात्रे ॥ गङ्गासिन्धुसहस्राणिद्वारकायां
शतैरपि ॥ एवंतीर्थाधिकंपुण्यंस्ततांपादोदकंपिवेत् २ शिरकर
धरयो ॥ स्कान्दे ॥ गुकारोहान्धकारस्तुउकारोस्यविनाशकृत् ॥ अ-
न्धकारविनाशीचगुरुरित्यभिधीयते ३ ॥

टीका ॥ जकेशिरकरधरयोतातरनऔडयोहाथदीनोब
डोबरराजाकुलहकोजुसाखिये । परचतकंदरामेंदरशनदी
न्योआनिदियोभावसाधुहरिसेवाअभिलाखिये ॥ गिरीजो
जलेबीथारमांभतेउठाइवाल भयोहियेशालबिन अरपि
तचाखिये । लैकरिखडगताहि मारणउपाइकियो जियोसं
तओटफिरमौलकरिराखिय १३८ नृपसुतभक्तबडौअबलौं
विराजमानसाधुसनमानमेंनदूसरोबखानिये । संतबधुग
भदेखिउभैपनवारेदियेकही गर्भइष्टमेरोऐसीउरआनिये ॥
कोऊभेषधारीसोब्योहारी पगदासनकोकहीकृपाकरोकहा
जानेऔरप्रानिये । ऐपैतजिबोईक्रियादेखिजगबुरोहोतजो
तिबहुदईदामरसममतिसानिये ११६ ॥ मूल ॥ श्रीपैहारी
परसादतेशिष्यसबैभयोपारकर ॥ कीलहअगरकेवल्लचरण
व्रतहठीनरायन । सूरजपुरुषाष्टयुतपूरहदिभक्तपरायन ॥
पद्मनाभगोपालटेकटीलागंधारी । देवाहेमकल्याणगंग
गंगासमनारी ॥ वरविष्णुदासकन्हरंगाचांदनशबरीगोविं

दपर । श्रीपैहारीपरसादते शिष्यसर्वभयेपारकर ४० ॥

विनअर्पित ॥ श्लोक ॥ विनार्पितंतुगोविन्दे भोजनंकुरुते यदि ।
शुनोविघ्नासमंचाञ्चतोयंचसुरयासमम् १ भागवते ॥ येषांलंस्मरणा
त्पुंसांसद्यःशुद्धयन्तिवैगृहाः ॥ किंपुनर्दर्शनस्पर्शापादशौचासनादि
भिः २ आगमे ॥ मालाधारकम्रात्रोपिवैष्णवोभक्तिवर्जितः ॥ पूज
नीयःप्रयत्नेनब्रह्मणाकिनुमानुषैः ३ मालातिलकसंचिह्नैःसयुक्तोयः
प्रहृश्यते ॥ चाण्डालोपिनहीपालपूजनीयोनसंशयः ४ साधुवैगुण
अवगुण कछू न देखै भगवत्स्वरूप जानै ५ ॥

गांगेयमृत्युगंज्यो न त्योंकीलहकरणनहिकालबश ॥
रामचरणचितवनरहतनिशिदिनलौलागी । सर्वभूतशिर
नमितसूरभजनानंदभागी ॥ सांख्ययोगमतिरुदृढकियो
अनुभवहस्तामल । ब्रह्मरंध्रकरिगौनभयेहरितनकरणीव
ल ॥ सुभेरुदेवसुतजगविदित भुविविस्तारद्योत्रिमलयश ।
गांगेयमृत्युगंज्यो न त्योंकीलहकरणनहिकालबश ४१ टीका
सुभेरुदेवकी ॥ श्रीसुभेरुदेवपितासूबेगुजरातहुतेभयेतन
पातलोविमानचढिचलेहैं।वैठेमधुपुरीमाहिमानसिहराजा
दिगदेखेनभतातउठिकहीभलेमलेहैं ॥ पूछैनृपत्रोलेकासां
कैसेकैप्रकाशोकहोकह्योहठपरे सुनअचरजरलेहैं । मानुष
पठायेसुधिलायेसांचआंचलागी करोसासटांगवातमानी
भागफलेहैं ११९ ऐसेप्रभुलीननहींकालकेअधीनवातसु
नियेनवीनचाहैरामसेवाकीजियोधरीहीपिटारेफलमालहा
थडास्थो तहां व्यालकरकाठ्यो कह्योफेरिकाटिलीजिये ॥
ऐसेहीकटाचोवारतीनिहुलसायोहियो कियोनप्रभावनेक
सदारसप्रीजिये । करिकैसमाजसाधु सधयसोत्रिराजमान
तजेदशैद्वारयोगीथकेसुनिजीजिये १२० ॥

चितवन ॥ दशमे ॥ मर्त्योमृत्युद्वयालभीतःपलायल्लोकान्स
 वान्निर्भयनाध्यगच्छत् ॥ त्वत्पादाब्जं प्राप्य यदृच्छयाद्यस्वस्थः शेतृ
 त्यरस्मादपैति १ ॥ सप्तमे ॥ तस्माद्भ्रजोरागविषादमन्युमानस्पृहाभ
 यदैन्याधिमूलम् ॥ हित्वाश्वहंसं सृतिचक्रवालं नृसिंहपादं भजतां कुतो
 भयम् २ ज्ञानवैराग्ययुक्तेन भक्तियोगेन योगिनः ॥ क्षेमाय पादमूलं मे
 प्रविशन्त्यकुतो भयम् ३ दोहा ॥ मारीचमरिजाद्वये छूटि परै संसार ।
 अहमदमरनोको वदेदिनमेंसौ सौ बार ४ तापै दृष्टांतराजाके गुलाम
 ने विषकी गोली खाई सो मरेउ नहीं ॥

मूल ॥ श्रीअग्रदासहरिभजनविन कालवृथानर्हिवित्त
 यो ॥ सदाचारज्योसंतप्रीतिजैसेकरिआये । सेवासुमिरण
 सावधानराघवचितलाये ॥ प्रसिधवागसोप्रीतिसुहृत्कृत
 करतनिरंतर । रसनानिर्मलनाममनोवर्षतधाराधर ॥ किय
 कृष्णदासकिरपाभगतिमनवचक्रमभ्रदृलदयो । श्रीअग्र
 दासहरिभजनविनकालवृथानर्हिवित्तयो ४२ ॥ टीकाअग्र
 दासजीकी ॥ दरशनकाजमहाराजमानसिंहआयोछायो
 बागमाहिबैठेद्वारद्वारपालहैं । भारिकैपतौवागयेबाहिरलै
 डारिबेको देखीभीरभाररहेबैठियेसालहैं ॥ आयेदेखिना
 भाजुनेउठिसासटांगकरी भरीजलआरिचलेअसुवनिजा
 लहैं । राजमगचाहहारिआनिकैनिहारेनैनजानीआपजा
 तीभयेदासनिदयालहैं १२१ ॥

काल वृथा नर्हि वित्तयो ॥ कुण्डलिया ॥ अगरकहाँलगियेगरी
 दीजैफाटेआभ । आगिलगतेभोपरा जो निकसै सो लाभ ॥ जो नि-
 कसै सो लाभ देखिमानुषतनचोरी । जेलोषकी श्वास जात आवत
 न बहोरी ॥ ज्यों कर अंजलि माहि घटत जल थिर न रहाई । करि
 आरतहर भजन साखिकायावधगाई १ सो श्रीअग्रदास अष्टपहर
 भजनही में लगेरहैं सोतो काल दोनोंहीको गयो अभजनी हूँ को

और भजनीहूँको गया हाथ तौ काहूके न आयो एक ब्राह्मण ने
रुपैया साधुन को खत्रायो एक के गैलमें लूटिलिये ऐसे एक को
तो माल ठिकाने गया एको वृथाही गयो ऐसे अग्रदासजीको
माल ठिकाने जाय जैसे नाव बहुतभरो तो बूढ़िहीजाइ थोरी भरी
होइ तो पार लागि जाइ ऐसेही व्योहारी थोरो व्योहार करे तो
हरिको भजन करि पार उतरि जाइ बहुत करे तो संसार में
बूढ़िजाइ २ ॥

मूल ॥ कलियुगगधर्मपालकप्रकटआचारजशंकरसुभ
ट ॥ उतशृंखलअज्ञानजितेअनईश्वरवादी । बौधकुत
कीजैनऔरपाखंडहैआदी ॥ बिमुखनिकोदियो दंडएँचि
सनमारगआनै । सदाचारकीसीवविश्वकारतिहिबखानै ॥
इतईश्वरांशअवतारमहिमर्यादामंडीअघट । कलियु
गगधर्मपालकप्रकटआचारजशंकरसुभट ४३ ॥ टीका शं
कराचार्यकी ॥ बिमुखसमूहलैकैकियेसनमुखइयामअति
अभिरामलीलाजगबिसतारीहै । सेवराप्रबलवासेकेवरा
ज्योफैलिरहे गयेनहींजाहिबादीशुचिबातधारीहै ॥ तजि
कैशरीरकान्हनृपभेप्रवेशकियो दियोकरिग्रन्थमोहसुद्धर
सुभारीहै । शिष्यनिसोकह्योकभूदेहमेंअवेशजानां तबहीं
बखानांआनिसुनिकीजन्यारीहै १२२ जानिकैअवेशतन
शिष्यनेप्रवेशकियो रावलेभदेखिसोंशलोकलैउचाख्योहै ।
सुनतहीतज्योतननिजतनआयलियो कियोसोप्रणामदा
संप्रणपूरोपाख्योहै ॥ सेवराहरायेवादीआयेनृपपासऊंची
छातिपरबैठिएकमायाफन्दडाख्योहै । जलचढिआयो
नावभावलैदिखायो कहेंचढ़ीनहींबूड़ोआपकौतुकसोंधा
रयोहै १२३ ॥

कलियुग धर्म ॥ एकादशे ॥ कृतेयञ्जयायतोविष्णुं त्रेतायां यजतो
 मखैः ॥ द्वापरे षड्विंशत्यां कलौ तद्विरकीर्तनात् १ हरेर्नामैवना
 भैवना भैवमसजीवनम् ॥ कलौ नास्त्येवनास्त्येवनास्त्येवनास्तिरन्य
 था १ प्राप्तेसन्निति मरणे नहिन हिरक्षतिदुःखं करणे ॥ भजयो
 विंदं भजं गोविंदं गोविंदं भजं मते ३ शृङ्गारः शुचिरुज्ज्वल इत्यमरः
 ४ नखिनीदलगतजलवत्तरलम् ॥ तद्वज्जीवनमतिशयचपलम् ॥
 क्षणमपितजनसंगतिरेका । भवति भवार्णवतरणे नौका ५ ॥ कुण्ड-
 लिया ॥ अगर डरत जे मृत्युमे तिनते अधिक डराउँ । मीयाधरा
 निकासिधैतरकसकहांधराउँ ॥ तरकसकहांधराउँ प्रथमजीवन
 निर्णयकरि । पलकमाहिं प्रस्थानजीवपुनिचलिहेपरिहरि ॥ द्यावत
 गहरी नीच सदन नोहराचगीचा । अश्वगज रथपरवान कोऊ
 ऊंचाअरुनीचा ६ ॥

आचारजकहीयो चढावोइनसेवरानिराजानैचढायेजव
 गिरिबुडिगयेहैं । तबतौ प्रसन्नरूपपांइपखोभावभस्योक
 ह्यो जेइकह्यो धर्मभागवतलयेहैं ॥ भक्तिही प्रचारपालेमा
 यावादडारिदीनों कीनों प्रभु कह्यो कितैविमुखहूभयहैं । ऐसे
 सोगम्भीरसंततीरवहरीतिजानै प्रीतिहीमैसानेहरि रूपगु
 णनयेहैं १२४ मूल ॥ नामदेवप्रतिज्ञानिर्वहीज्यो त्रेता
 नरहरिदासकी ॥ बालदशाबीठल्यपानजाकेपयपीयो । मृ
 तरुगऊर्जावाइपरचोअसुरनिकोदीयो ॥ सेजसलिलतेका
 डिपहलेजेसीहीहोती । देवलउलटोदेखिसकुचिरहेसवही
 सोती ॥ पंडरीनाथकृतिअनुगत्याछानिछाइदइदासकी ।
 नामदेवप्रतिज्ञानिर्वहीज्यो त्रेतानरहरिदासकी ४४ ॥

दीनों प्रभु कह्यो ॥ पद ॥ द्वापरादौयुगेभूत्वा कलयामानुषा
 दिषु ॥ स्वागमैः कल्पितैस्त्वाहि जनान्मद्विमुखान्कुरु १ आससोग-
 भीर । नमश्चरुपाणे हरेवासुदेव प्रभोतेभवारेसुरारेसुकुन्द ॥ नम

स्तुभ्यमित्यालङ्कृतमुदासाकुरुश्रीपतेत्वंतपदाभोजभृङ्गम् २ ॥ प्रति-
ज्ञापद ॥ आये भरे अधरे धरके सदनराइ । चाकी चाटै चूनखाइ ॥
तुरु गुरु गखंग प्रभुजूकी चालि । फुलहले ज्यो जोकीवालि ॥ चल्हे
काहि जु प्रभुजू की सेज । छीकेकीनो अधिकतेज १ कातिकर्म जू
प्रभुजी को भोव । लैले लकुट खिजावै लोग ॥ तीनि पाप प्रभु
सेटन योग । नामदेवस्वामि बन्यो संयोग २ परजापतिके चित्तहीं
चारै । संजारी के पुत्र अवां भे उवारे ॥ आंचलगै न तपै तन
वासन । राखिलये हरिनै विश्वासन ३ ॥

टीका नामदेवजूकी ॥ छीपावामदेवहरिदेवजूका भक्तव
डोताकी एकवेटीपतिहीन भई जानिये । द्वादशबरषमांभ
भयोतवकहीपितासेवासाधधानसननीकेकरिआनिये ॥ तरे
जेमनोरथहैपरणकरनयेई जोपैदत्तचित्तहैकैमेरीवातमा
निये । करतटहलप्रभुवेगिहीप्रसन्नभये कीनीकामवासना
सपोषीउनमानिये १२५ विधवाक्रोगभताकीवातठौरठौर
चलीहुष्टिशरमौरनिकीभईमनभाइये । चलतचलतवाम
देवजूकेकानपरी करीनिरधारप्रभुआपअपनाइये ॥ भयोजू
प्रकटबालनामनामदेवधख्योकख्योमनभायो सबसंपति
लुटाइये । दिनदिनबढ़योफलऔरैरंगचढ़योभक्तिभावअं
गमढ़योकढ़योरूपसुखदाइये १२६ खेलतखिलौनाप्रीति
रीतिसवसेवाहीकी पटकहरावैपुनिभोगकोलगावहीं । घं
टालैबजावैगीकेध्यानमनलावै त्योंत्यों अतिसुखपावैनैन
नीरभरिआवहीं ॥ बारबारकहैनामदेववामदेवजूसोदेवोमो
हिसेवामांझअतिहीमुहावहीं । जाऊँएकगांवफिरिआवोंदि
नतीनमध्यदूधकोपिवावोसतिपीवोमोहिंभावहीं १२७ ॥

विपत्ति ॥ दोहा ॥ बड़ेबड़ेभोगैविपत्ति छोटदुखतेदूर ॥ तारे

न्यारेह्वरहे गहतचंदअरूसूर ॥१॥ कामवासना ॥ द्वितीये ॥ अकामः
सवकामोवा मोक्षकामउदारधीः ॥ तीव्रिगभक्तियोगेन भजेतपुरुष
परम् ॥ २ ॥ प्रीतिरीति ॥ छप्यै ॥ कठिन प्रीतिकी रीति कठिन तन
मन वशकरिवो । कठिन है कर्मनिर्कंद कठिनभवसागर तरिवो ॥
कठिनसंकट में दान कठिन संभ्रमकोसमता । कठिनहै परउप-
कार कठिन मनमारनममता ॥ बरवचननिवाहन अतिकठिन-नि-
धन नेहपाउन हाठिन । मुनिईश्वर-सिखवत चतुर नर ज्ञान युद्ध
जीतन कठिन ॥ ३ ॥

कौनवहवेरजिहिवेरदिनफेरिहोइ फेरिफेरिकहैवहोवेर
नहींआइये । आईवहवेरलैकराहीमांझहेरिदूधडास्योयुग
सेरमननीकेकैवनाइये ॥ चौपनिकेठेरलागीनिपटऔसेरदृ
गआयोनीरघेरिजिनिगिरेघुंटीजाइये । माताकहैठेरकरी
बड़ीतेअवेरअबकरोमतिभेर अजुचित्तदौआटाइये १२८
चल्यौप्रभुपासलैकटोरछविराशितामें दूधसोसुवासमध्य
भिश्रीलैमिलाइये । हियेमेंहुलासनजअज्ञताकोत्रासरेसे
करैजोपैदासमोहिंमहामुखदाइये ॥ देख्योमृदुहासकोटि
चांदनीकोभासकियो भावकोप्रकाशमतिअतिसरसाइये ।
प्याइबेकीआशकरि ओटकलुभरयोश्वासदेखिकैनिराश
कह्योपीवौजूअघाइये १२९ ॥

फेरिफेरि ॥ कवित्त ॥ दिनतोनघटै और घटै प्राण पल पल लाल
मुखचंदको धिरोधी पल नाटै । कबकी निहारिरही रविन तजत
ठौर बीते युगकोटि तऊनेकहू नहीटै ॥ तूतौरी कहतश्यामरजनी
मिलाय देहों मिलिबो न मेरेबांट मरिवोहुलैधरै । जानि पाति व-
रनिबनाईहुती विधिनेजु फेरि मनआई मेरे रात्रिदिन को करै १ ॥
चौपाई ॥ कुंवरिकहै सखि या शशिराजै । राहुराइ क्योंगिलिगि-
लिछाजै ॥ सखिकहै राहुअमृत जब पियो । तेरेकंतखंड विविकि-

यो ॥ उदरनहीं तौनै यहपचै । निकसि निकसि बिरही जनतचै ॥
कुंवरिकहै दोउखंडनि माहीं । जरा आनि किनि लेहुं जुराहीं २ ॥
दोहा ॥ कै अहरनि परधरि मुकर सुकर लोहघनलेहु ॥ जबहीं
आनिपरै जहां तवहीं ता शिरदेहु ३ कौन दिवसआयो है सजनी ।
इंदु अनल बरषै है रजनी ॥ भलोकरै जो यादिन माहीं । प्राण
पियारो आवैनाहीं ४ ॥

ऐसेदिनबीतदोइराखीहियेबातगोइ रह्योनिशिसोइये
पैनीदनहींआवहीं । भयोजूसवारोफेरि वैसेहीसुधारिलि
योहियोकियोगादो जाइधर्योपीवोभावहीं ॥ बारवारपीयो
कहुंअबतमपीवोनाहिं आवैभोरनानागरेरुरीदोदिखावहीं ।
गहिलियोकरजिनिकरिएसीपीवोभैतोपीवैकोलगेईनेकरा
खोसदापावहीं १३० आयेबामदेवपाछेपूछैनामदेवजूसो
दूधकोप्रसंगअतिरंगभरिभाखिये । मोसोनपिछानिदिन
दोइहानिभईतव मानिडरप्राणतज्योलाहोअभिलाखिये ॥
पियोसुखदियोजबनेकराखिलियोभैतौ जियोसुनिवातैक
हीप्यायोकोनसाखिये । धर्योपैनपीवैअख्योप्यायोसुखपा
योनाना यामेलेदिखायोभक्तबशरसचाखिये १३१ ॥

सदापावहीं तव तौ भगवान् ने हैसिदियो ॥ भागवते ॥ न
देवोविद्यतेकाष्ठेनपाषाणेनमृन्मये ॥ देवोहिविद्यतेभावे तस्मान्जावो
हिकारणम् १ प्रतिमामन्त्रतीर्थेषु भेषजेवैष्णवेगुरौ ॥ यादृशीभाव
ना यस्य सिद्धिर्भवतितादृशी २ जिवाइगाइ ॥ पद ॥ बिनती सुनु
जगदीश हमारी । तेरोदास आशमोहिं तेरी इतकरो कानमुरारी ॥
दीनानाथ दीनहै टेरत गाइहि क्योंनहिं ज्यावो । आछे सबे अंग
हैं याके मेरे यशहि बढ़ावो ॥ जो कहूं याके कर्मनमें नहिं जीवन
लिख्यो विधाता । नामदेवकी आयुदा सो होहु तुमहिं प्रभुदाता
३ भक्तबडल भगवान् हैं दृष्टांत व्यासको ॥ शिशुफूके जब व्या-

सजी लैगये-तबमरयो ॥ वेदशास्त्रप्रमाणंतुनकरोत्यथसोनर ॥
अज्ञानीचमसद्रोहीनरकंयातिनित्यशः ४ ॥

नृपसोमलेच्छबोखिकहीमिलैसाहिबको दीजियेमिला
इकरामातिदिवराइये । होइकरामातितोपैकाहेकोकसब
करै भरेदिनऐसेवांटिसंतनसोखाइये ॥ ताहीकेप्रतापआप
इहांलौबुलाई हमैदीजियेजिवायगाईघरचलिजाइये । द
ईलौजिवाइगायसहजसुभावहीमै अतिसुखपाइपाइपरौम
नभाइये १३२ लेवादेशगांवयातेमेरोकछूनामहोइचाहि
येनकछुदईसेजमणिमईहै । धरिलईशीशदेउसंगदशवी
सनरताहीकरआयेजलमांभुडारिदईहै ॥ भूपसुनिचौंकि
परयोलावोफेरिआयेकहौं कहीनेकुआनिकेदिखावोकीजै
नईहै । जलतेनिकाभिवहुआतिगहिडारीतट लीजियेपि
छानिदेखिसुधिवुधिगईहै १३३ आनिपरयोपाइप्रभुपास
तेबचाइलीजै कीजैएकवातकभूसधुनदुखाइये । लेइय
हीमानिफेरिकीजियेनसुधिमरी लीजियेगुणनिगाइमन्दिर
रलौजाइये ॥ देखीद्वारभीरपगदासीकटिवांधीधीर करसो
उछीरकरिचाहैपदगाइये । देखिलीनावेईकाहूदीतीपांच
सातचोट कीनीधकाधुकीरिममनमैनआइये १३४ बैठे
पिछवारैजाइकीनीजुअचितयह लीजियेलगाइचोटमेरेम
नभाइये । कानदैकैसुनोअन्नचाहतनऔरकछु ठौरमोको
यहीनितनेमपदगाइये ॥ सुनतहीआनिकारिकरुणाविक
लभजे फेरयोद्वारइतेगहिमन्दिरफिराइये । जतिकवेसो
तीमोतीआबसीउतरि गई भई हियेप्रीतिगह्योसबसख
दाइये १३५ ॥

साधु न दुखाइये ॥ दोहा ॥ साधुसताये हानित्रय अर्थ धर्म अरु
 वंत ॥ टीलानीके देखि ले कौरव रावण कंस ॥ १ ॥ सुधि मेरी ॥
 अतिशीतलता कहकरै कालूकेडैलागि ॥ मथतमथतही ऊपजै चं-
 दनहूतेआगि ॥ २ ॥ घासवासना हियेवन ऊपरते जरिआइ ॥ विष-
 यावरषाकेमिले ऊगैअंकुरपाइ ॥ ३ ॥ पदगाइये ॥ पद ॥ हीनहो
 जातिभेरी यादवराइ ॥ कलिमेंनासा इहांकाहेको पठाइ ॥ यों ताल
 पखावजवाजै पातुरि नाचै । हमरीभक्ति बीठल काहेकोराचै ॥ पंढ-
 रप्रभुजवचनसुनीजै । नामदेवस्वामी दरशनदीजै ॥ ४ ॥ मंदि-
 रके पिछवारे बैठिकै यहपदगायो तब प्रभुने विचारो यह भजन
 मेरेऊपर कहेउ प्रसन्नहैकै तुरतआइमिले अवतूकहै सो करौ ॥ ५ ॥
 मंदिर फिरायो ॥ पद ॥ उठिभाई नामदेवपरै है जाइ । यहांदुबे
 तिवारी बैठेआइ ॥ ब्राह्मणवनिथा उत्तमलोग । यहां नहीं नाम-
 देवतुम्हरो संयोग ॥ नामदेव कमरी लई उठाइ । मंदिर पाछे बैठे
 जाइ ॥ पायँनघुँघुरू हाथनि ताल । नामदेव गावै गुणगोपाल ॥
 मंदिर ऊपर ध्वजा फरहरै । उलटि द्वारनामातन करै ॥ नामदेव
 नरहरि दर्शनपाये । बांहपकरि ठिग लै बैठाये ॥ दोऊ हिलिमिलि
 एकै भये । दासकबीर अचभैरये ॥ १ ॥

औचकहीघरमाझसांझही अगिनिलागीबड़ोअनुरा
 गी रहिगई सोऊडारिये । कहैआयोनाथसबकीजियेजुअं
 गीकार हँसेसुकुवारहरिमोहींकोनिहारिये ॥ तुम्हरोभवन
 औरुसकैकौनआइ यहां भयेयोंप्रसन्नछानिछाईआपसा
 रिये । पूछँआनिलोगकौनछाईहोछवाइलीजैदीजैजोईभा
 वैतनमनप्राणवारिये १३६ सुनौऔरपरचेजेआयेनकवि
 त्तमांभुवांभुभईसाताक्योंजौनमतिपागीहै । हुतौएक
 साहतुलादानकोउछाहभयो- दयोपुरसबैरहौनासदेवरा-
 गीहै ॥ लेवौजूबुलाइएकदोइतौफिराइदियेतीसरेसोंआये

कहा कहौ बड़ भागी है । कीजियेजूकछू अंगीकार मेरो भलो
 होइ भयो भलो तेरो दीजै जो पै आश लागी है १३७ जाके तुल
 सी है ऐसे तुलसीके पत्रमां भू लिख्यो आधोरामनाम यासों
 तोलि दीजिये । कहा परिहास करौ ढरौ है दयाल देखि होत
 कै सोख्यालयाको पूरौ करौ रीझिये ॥ लायो एक कांठे लै चढा
 यो पात सोनासंग भयो बडोरगसम होत नाहिं छीजिये । लई
 सोत राजजासो तुलै मन पांचसात जाति पाति हूँ क्रोधन धरे
 पै नधीजिये १३८ पखो शोच भारी दुख पावै नरनारी नाम
 देवजू विचारी एक काम और कीजिये । जिते व्रतदान औ अ
 स्नान किये तीरथमें करिये संकल्पयापे जल डारि दीजिये ॥
 करेहु उपाइ पातपलाभ मिगाडे पाइ रहेवे खिसाइ कह्योइत
 नोहीलीजिये । लैके कहां धरै सरवर हूँ करै भक्तिभावसों
 लै भरेहिये मति अतिभीजिये १३९ ॥

कीजियेजू अंगीकार ॥ श्लोक ॥ जले विष्णुस्थले विष्णुर्वि-
 ष्णुः पर्वतमस्तके ॥ ज्वालामालाकुले विष्णुः सर्वविष्णुमयं जगत् २
 पूछै आनि लोग बैठि पादियोत जाइ माई । लोग परोसिन पूछैरे नामा
 किनि यह छानि छवाई । ताते अधिक मँजूरी देहौ वेगिहि देहु
 बताई । बैठिया प्रीति मँजूरी मांगै जो कोई छानि छवावै । भाई
 बंधु सगेसों तारे बैठिया आपहि आवै । जूठे फल शबरी के खाये
 ऋषिस्थान विसरावै । दुर्घोषन के सेवा त्यागे शाकबिदुर घर
 खावै । कंचन छानि पद्मप्रददीने प्रीति की गांठि जुराई । गोविंद
 के गुण भने नामदेव जिन यह छानि छवाई ॥ जाके तुलसी हैं ॥
 दशमै । कच्चित्तुलसिकल्याणि गोविन्दचरणप्रिये १ तापैस्कंदपुराण
 की कथा में है इंद्रलोकते पारिजात लाये नारदजी याते व्रत
 दान को बडो अभिमानहो ताके खोइवे को यतन कियो । जैसे
 ऊपर को ऊपर गयो भीतर को विषम ऊपर खोयो चाहै व्रतदान

धरवाये सो पूरे न भये ॥ श्लोकः ॥ गोकोटिदानग्रहणेषुकाश्यां
माघेप्रयागेयादिकल्पवासी ॥ यज्ञायुतमेरुसुवर्णदानं गोविन्दना
म्नानभवेत्तुल्यम् ॥ कवित्त ॥ मेरुसम हेमदानं रतन अनेकदानं
गजदान भूमिदान अन्नदान करहीं । मोतिन के तुलादान मकर
प्रयाग न्हान ग्रहण में काशीवास चित्तमाहिं धरहीं ॥ सेजदान
कन्यादान कुरुक्षेत्र गऊदान येते माहिं पापहूं तौ नेकु नाहिं
हरहीं । कृष्ण के शरीर को सुनाम एकवार लिया पापी तीनलोक
के सो क्षण माहिं तरहीं ३ ॥ गऊ दान कैसो है जैसे च्यवन
ऋषीश्वरको ४ ॥

कियोरूपब्राह्मणकोदूबरोनिपटअंगभयोहियेरंगव्रत
परचैकोलीजिये । भईएकादशीअन्नमागतबहुतभखो आ
जतौनदेहैंभोरचाहैजितौलीजिये ॥ कयोहठभारी मिलि
दोऊताकोशोरपयो समझावैनामदेवयाकोकहाखीजिये ।
वीतेयामचारिमरिहैयोपसारिपाई भावपैनजानैदईहत्या
नहींछीजिये १४० रचिकैचिताकोबिप्रगोदलकैबैठेजाइ
दियोमुसुकायभैपरीक्षालीनीतेरीहै । देखीसोसचाईसुख
दाईमनभाईमेरेभयेअन्तद्वानपरेपाँइप्रीतिहेरीहै ॥ जाग
रणमांझहरिभक्तनकोप्यासलागी गयेलेनजलप्रेतआनि
कीनीफेरीहै । फेंटतेनिकासितालगायोपदततकालबड़ेई
कृपालरूपधख्योछविहेरीहै १४१ ॥

गायोपद ततकाल ॥ पद ॥ ये आये मेरे लम्बक नाथ । धरणी
पाइस्वर्गलों साथो योजन भरि भरि हाथ । शिव सनकाकिका पार
न पावै तैसेइ सखा विराजत साथ । नामदेव के स्वामी अन्त
र्यामी कीनों मोहिं सनाथ १ ॥ नवरस ॥ छप्ये ॥ श्रीवृषभानुकु
मारि हेत शृंगाररूप भय । हास्य दास्यरस हरेसात । ब्रधनकरुणा
मय । केशी प्रति अतिरुद्रवीर मारयो वत्सासुर । भय दानानल

पान कियो बीभत्सबकीउर । अतिअद्भुत वने विरंचिमति शांत
सुसंतति शोच चित । कहिकेशव सुमिरौ मैं सदा नवरस में ब्रज
राज नित २ ॥ कवित्त ॥ बीरही को काम याते ससर मनाइवो को
करुणा दिखाइ दूती विरह सुनाई है । उलटि विहारसोई अदभुत
कोई लखि सबर घृणाते सीखी हास्यरीति पाई है ॥ गुरुजन आहट
भयानक विभत्स अंत संतहू मनाइवो न आइवो रुदाई है । औरनि
सदन माहि रसराज जान कैसे राजाके सदन माहि सबकी
समाई है ॥ ३ ॥ जयदेव कवि बड़ोभक्तराजहै ४ । ५ । ६ ॥

मूल ॥ जयदेवकविवनृपचक्रवैखंडमंडलेश्वरआनक
वि । प्रचुरभयोतिहुँलोकगीतगोविंदउजागर । कोकका
व्यनवरस्ससरसशृंगारकोआगर ॥ अष्टपदीअभ्यासकरै
तिहिबुद्धिबढावै । राधारमणप्रसन्नसुनेतहँनिश्चैआवै ॥
शुभसंतसरोरुहखंडकोपदमावतिसुखजनकरवि । जय
देवकविवनृपचक्रवै खंडमंडलेश्वरआनकवि ४४ टीका
जयदेवकी ॥ किंदुबिलुग्रामतामैभयेकविराजराजभरयो
रसराजहिये मनमनचाखिये । दिनदिनप्रतिरुखरुखतर
जाइरहे गहेएकगूदरीकमंडलकोराखिये ॥ कहीदेवैवि
प्रसुताजगन्नाथदेवजूको भयोयाकोसमैचल्योदेनप्रभुभा
खिये । रसिकजैदेवनाममेरोईस्वरूपताहि देवौततकाल
अहोमेरीकहौसाखिये १४२ ॥

सुखजन ॥ दोहा ॥ जज्ञजमीत जलरविनदिन खुलै निवारण
धाम ॥ निशिको अमृतपीव यह जानिमुदे अभिराम १ रुखरुख
तर ॥ भागवते ॥ सत्याक्षितौकिंकशिपोःप्रयासैर्बाहौस्वसिद्धेद्युप
वर्हणैःकिम् ॥ सत्यञ्जलौकिंपुरुधान्यपात्र्यादिग्वल्कलादौसतिकिन्दु
कूलैः २ चीराणिकिंपथिनसन्तिदिशन्तिभिक्षा नैवाङ्घ्रिपाःपरभृतः
सरितोप्यशुष्यन् ॥ रुद्धागुहाःकिमजितोवतिनोपपन्नान् कस्माद्

भजन्तिकवयो धनदुर्मदान्धान् ३ ॥ सवैया ॥ मीतजोशीतसतावै
शरीर तो चीरिलैपथके कंथावनाइये । प्यास लगै वहतो जल
पीजिये भूललगै फल रूखके खाइये ॥ छांहचहै तो गुहागिरिको
गहि कानसो आनन रक्षकपाइये । क्योंधनअधपै जाइसुहाइयेकिते
हित आपनपेको दिखाइये ४ जे कोईभक्तजनहै तिनको प्रहीशिक्षा
कहे उपेक्षाहै जैसे जयदेव कविको सांचप्रभूको आयो हाथ पाव
कटाये पै मनमें विषाद न आयो अपने शरीरहीको दोषलगावै ऐसी
सांच विश्वास आवै अरु युगयुग के प्रमाण प्रतापी कहावै जय-
देवकवि बड़ेभक्तहैं ५ ॥

चल्योद्विजतहांजहाबैठेकविराजराज अहोमहाराज
मेरीसुतायहलीजिये । कीजियेविचारअधिकारबिसतार
जाकेताहीकोनिहारिसुकुमारियहदीजिये ॥ जगन्नाथदेव
जूकी आज्ञाप्रतिपालकरौ टरौमति धरौहिये नातोदोष
भीजिये । उनकोहजारसोहैं हमकोपहारएक तातेफिरि
जावौतुम्हेंकहाकहिखीजिये १४३ सुतासोकहततुमबैठी
रहौयाहीठौर आज्ञाशिरमौरमेरेनहींजातटारिये । चल्यो
धनखाइसमझाइहारेबातनिसों मनतूसमुझिकहाकीजै
शोचभारिये ॥ बोलेद्विजबालकासों आपनोबिचारकरौ
धरौहियेध्यानमोपैजातनसँभारिये । बोलीकरजोरिमरो
जोरनचलतकलूचाहोसोईहोहुयद्ववारिफेरिडारिये १४४
जानीजबभईतियाकियोप्रभुजोरमोपै तौपैएकझोपडीकी
छायाकरिलीजिये । भईतबछायाश्यामसेवापधराइलई
नईएकपोथीमैंबनाऊंमनकीजिये ॥ भयोजप्रगटगीतसरस
गोविंदजको मनमेंप्रसंगशीशमंडनकोदीजिये । यहीएक
पदमुखनिकसतशोचपरयो धरयोकैसेजातलाललिख्योम
तिरीझिये १४५ ॥

मनतुलमुक्त ॥ कुण्डलिया ॥ यह विचारचितचेतिये तनक न
 आवैकाज । बाप न मारी पोदनी वेटा तीरंदाज ॥ वेटा तीरंदाज
 विपैत्यागी तनक न मन । कहा इन्द्रियनि सधै दुखनि में रधै
 वृथातन ॥ नफा आपनेकु सब और तौ मूल गँवावै । यों मन के
 अनुसार चलै तनहं सुख प्रावै ॥ आपनसारी पोदनी वेटातीरंदाज
 १ छायाकरिलीजिये ॥ श्लोक ॥ द्वाविमौपुरुषौलोकेशिरः शूलकरौ
 परौ । ग्रहस्थश्चनिरारम्भोयतिश्चसपरिग्रहः २ ॥ शीशमंडन ॥
 स्मरगालखंडनं ममशिरसिमंडनं देहिपदपद्मवमुदारम् ३ लिख्यो
 मतिरीभिये जयतिषद्भावतीरमण जयदेवकविभारतीभणितमति
 शातम् ४ ॥

नीलाचलधामतामपंडितनृपतिएक करीवहीनामध-
 रिपोथीसुखदाइये । द्विजनियुलाइकहीनहीहैप्रसिद्धकरी
 लिखिलिखिपदौदेशदेशनिचलाइये ॥ बोलेमुसुकाइविप्र
 क्षिप्रसौदिखाइदई नईयहकोईमतिअतिभरमाइये । धरी
 दोउमंदिरमेंजगन्नाथदेवजूके दीनीयहडाखिहहारलप
 टाइये १४६ पख्योशोचभारीनृपतिपटखिसानोभयोगयो
 उठिसागरमेंबूडोयहवातहै । अतिअपमानकियोकियोमें
 बखानसोई गौइजातिकैसेआंचलागीगातगातहै ॥ आ-
 ज्ञाप्रभुदईमतिबूडैतुसमुद्रमांझ दूसरोनग्रन्थवैसोवृथात
 नपातहै । द्वादशश्लोकलिखिदीजैसर्गद्वादशमें ताहीसं
 गचलैजाकीख्यातपातपातहै १४७ सुताएकमालीकोजु
 वैगनकीबारीमांझ तोरैबनमालीगावैकथासर्गपांचकी ।
 डोलैजगन्नाथपाछेकाछेअङ्गमिहीझंगा आछैकहिघुमैसु-
 धिआवैविरहांचकी ॥ फट्योपटदेखिनृपपूत्रीअहोभयोकहा
 जानतनहमअब्रकहौंवातसांचकी । प्रभुहीजनाईमनमाई
 मेरेवहीगाथालायेवहबालकीकोपालकीमेंनांचकी १४८ ॥

बोले मुसिकाई ॥ बोहा ॥ अकथ कहानी प्रेमकी कहीं न माने
कोइ ॥ कोइकाजानेखलकमें जाशिरबीती होइ ॥ १ ॥ जैसे लैलैने
मजनुको बुलायो अग्निमें तापै पोस्तीको दृष्टांत अरु पतंग माखी
को २ विरह आंचकी ॥ श्लोक ॥ धीरसमीर यमुनातीरे वसतिवने
चनमाली । गोपी पीनपयोधर सईन चंचल कर युगशाली । पीन-
पयोधर भारभरेख हरिपरिरन्ध्रसरागम् । गोपवधूरनुगायतिका
चिदुदंचितपंचमरागम् । कापिविलास विलोलविलोचनि खेलत
जनितमनोजम् ३ ॥

फेरोतृपडोड़ीयहओड़ीवातजानीमहा कहाराजारंक
पढैनीकीठौरजानिकै । अक्षयमधुरऔरुमधुरसुरनिही
सो गावैजबलालप्यारीढिगहीलैमानिकै ॥ सुनोयहरीति
एकमुगलनेधारिलई - पढैचढेघोरेआगेश्यामरूपठानि
कै । पोथीकोप्रतापस्वर्गगावतहैदेववधु - आपुहीजोरीके
लिख्योनिजकरआनिकै १४९- पोथीकीतौवातसबकही
मैसुहातहिये सुनो औरवातजामेअतिआधिकाइये । गांठ
मैसुहरमगचलतमेठगमिले कहौकहांजातजहांतुमचलि
जाइये ॥ जानिलई आपखोलिद्रव्यपकराइदियो लियोचा
हो जोईसोईसोईमोकोलाइये । दुष्टनिसमझिकहीकीनीइन
विद्याअहो आवैजोनगरइन्हैवैगिपकराइये १५० ॥

श्याम रूपठानिकै ॥ मीरमाधव लाहौर के मुगल फकीरभय
सो ॥ पद ॥ दिल जानप्यारे श्याम टूकगली असाडी आवरे ॥
सावरे वदन ऊपर कोटि मदनवारे तेरी जुलफें दिलदी कुलफें
दोऊ नैन हैं सितारे । तेरी खूबी के देखने को नैन तरसै हमार ॥
जलजो कठोर होवै मीन क्यों जीवै विचारे । कृपा कीजै दर्शन
दीजै मीरमाधो को नंद के दुलारे १ ॥ पोथी को प्रताप ॥ राजा
वीर विक्रमाजीत की सभामें देवता आये तब राजाने सभा में

गीतगोविंद गवायो देवताओंने कही याको तो हमारे सदा गावैहैं
याको फल सुखकी उत्पत्ति करैहैं २ ॥ द्रव्यपकरायो ॥ श्लोक ॥
लोभमूलानिपापानि रसमूलानिव्याधयः ॥ स्नेहमूलानिदुःखानि
तस्मादेतत्त्रयंत्यजेत् ३ ॥ संमभि कही दुष्ट तीनि प्रकारके हैं ।
उत्तम मध्यम कनिष्ठ सज्जन तीनि प्रकार के हैं । आगे गुणिन
वेद निगुणारविंदकरि बताये हैं ४ ॥

एक कहै डारोमारि भलो है बिचार चही एक कहै मारो मति
धन हाथ आयो है । जो पैले पिछानि कहुं कीजिये निदान कहा
हाथ पांव काटि बड़े गाढ़ पधरायो है ॥ आयो तहां राजा एक दे
खि कै विवेक भयो छयो उजियारो औ प्रसन्न दरशायो है । बा
हिरनिकासिमानौ चन्द्रमा प्रकाशरासि पृच्छो इतिहासक
ह्यो रे सो तन पायो है १५१ बड़ोई प्रभाव मानिस कै को बखा
नि अहो मेरे को ऊभुरि भाग दरशन कीजिये । पालकी बिठाय
लिये किये सब दुंढिनीके जीके भये भाये कछु आज्ञामोहिं दी
जिये ॥ करौ हरिसाधु सेवानाना पकवानमेवा आवैं जोई
सन्ततिन्है देखि देखि भीजिये । आये वेई ठगमाला तिलक बि
लक किये किलकिकै कही बड़े बन्धुलखिलीजिये १५२ नृप
तिबुलाइ कही हिये हरि भाय भर दरेतरे भाग अब सेवाफल
लीजिये । गयो लै महलमां भटहललगाये लोग लागे होन
भोगजिय शंकातन छीजिये ॥ सांगै बारवार बिदारा जान
हिं जान देत अति अकुलाय कही स्वामी धन दीजिये । दैके
बहु भांति सो पठाये संगमान सहू आवो पहुं चाइतबनुमपर
रीभिये १५३ ॥

हाथ पांव काटे ॥ भगवान् में भलो सनेह कियो तहां टीकाकार
ने लिख्यो है जयदेव मेरे ही रूप है सो हाथ पांव कटाइ कै

आपसों कियो ॥ फेरि ख्यात करिबेको आछे करिदिये कहैं नाम
 कौनको लीजे कोऊ काल कोऊ ईश्वर कोऊ ग्रह येन जान्यो
 साक्षात् धर्मही हैं ऐसे परीक्षित सो कहीही हिय हरिभाव मोरेही
 हृद्गरणे धातुहै ॥ हरिणी जो चोरी तकि अर्थ त्रिषयवत है । ताते
 समझौती मैं समझाये हैं ॥ श्रीदामोदर नारायण बुदाबन बासु-
 देव मधुसदन मुरारी १ ॥

पूछेनृपनस्कोऊतुम्हरीनसरवरि जितेआयेसाधुरेसी
 सेवानहिभईहै । स्वामीजूसानातेकहाकहोहमखाहिहहा
 राखियेदुराइयहवातअतिनईहै ॥ इतइकठोरिपचाकरी
 में तहांइनकियोईबिगारुमारिडारोआज्ञादईहै । राखेहम
 हितजानिलोनिदानहाथपाव बाहीकेइसानहमअबभरिठ
 ईहै १५४ फाटिगईभसिसठगवेसमाइगय भयेयेचकित
 दौरस्वामीजुपेआयेहै । कहांजितोबातसुतिघातगातकां
 पिउठे हाथपात्रमोडेभयेज्योकरयोसुहायेहै ॥ अचरजदो
 ऊनृपपासजाप्रकाशकिये जियेएकमुनिआयेवाहीठोरधा
 येहैं । पत्रैबारवारशीशपायनमेंधारिरहे काहिएउघारिके
 सेभैरमनभायेहै १५५ ॥

भरिखई ॥ दोहा ॥ सिंह खाल गौडर प्रहिरि भेष सिंह को
 धारि ॥ बोलनि बोली भेडकी कूजनिडारी फारि ॥ फाटिगई
 भूसि तो दंड क्यों न दियो भेष जानि करण्ड न दियो भेष में वही
 न लगे जैसे अपरस गुरु सपरस लेला ॥ कोऊने ॥ वस्तर उठायके
 मारे अपरस बनोरहै रजि के स्यादेते जीन्यो प्रहाद झा बलि
 होहिंगे सो इच्छाचारी सिद्ध होइंगे बैकुंठलोक ले आये प्रताप
 लोकको गये जैसे दण्डहू दियो उत्कषे त राख्यो २ ॥ दोहा ॥
 घटि वहि बातें भेषकी कीजे नाहि बनाइ ॥ गुरुको जानो परशु-
 राम लीजकंठ लगाइ ३ साधनको घरदूरि है समझौ चित्तउगाइ ॥

परशुराम बिन हरि कृपा कबहुं जानि न जाइ ४ प्रगट अवगुण
दीसैं तौ जैसे नारद सनकादिकनमें भलोइ करै चेला सो कही
कोऊ कैसेई बुरो कहै ये तू मतिकहै ऐसे वृक्ष समय में फलहोइ
ऐसे हाथ पाउ पुण्य पापको फल समप्राप्तिहोय ॥

राजा अति अरगही कही सब बात खोल निपट अमोल
यह संतन को भेश है । कैसे अपकार करौ त ऊउपकार करै ठरै
रीति आपनी ही सरस सुदेश है ॥ साधु तान तजै कभूजै से दुष्ट
दुष्टता न यही जानि लीजै मिलै रसिक नरेश है । जान्यो जव
नाम ठामरहौ इहां बलि जांव भयो मैं सनाथ प्रेम भक्ति भई दे
श है १५६ गयो जालिवाइ ल्याइ कबिरा जरा जतिया किया
लौमिलाप आपरानी टिग आई है । मख्यो एक भाई वाको भई
यो भौ जाई सती कोऊ अंग काटिकोऊ कूदि परी धाई है ॥ सुन
तही नृपवधुनि पट अचं भौ भयो इनको न भयो फेरि कहिस मु
झाई है । प्रीतिकी नरीति यह बड़ी बिपरीति अहो छूटै तन
जबै प्रिया प्राण छुटि जाई है १५७ ॥

प्रीतिकी न रीति ॥ सोरठा ॥ मुख देखे की प्रीति सब कोऊ
ऐसी करै ॥ वेतो न्यारे रीति जिये जिये मूये मरै १ कवित्त ॥ सती
कहै येरी मेरी मतिहो सुमति कहौ प्रेमहै लजावै मति यहै पीव-
जोइये । साखिदै आगिनि जार हथलवा हाथ जोरे जाके साथ
बीजे ताके साथ जीव खोइये ॥ कौन आगि कौन आंचवरे ताहि
लिये बरे ताको कहा बरे काहु कहे काज रोइये । जाके संग घने
दिन सेज माहिं सत्य खोये ताके संग एकदिन आगिहुं में सोइये ॥
कवित्त ॥ अंगराग अंग करि मोती माल प्रीव धरि बैठी बाल सो है
अति चांदनी विमल में । आंगी अंग पहरे सुराग रंग गहरे औ
बारम्बार बलकै यो यौवन के बलमें ॥ त्योंही काहु आली नदनदन
आगम कह्यो सामुही निहारी मानो बारी है अनल में । मोतिन

के हार की न छार रहो उरपर अंगराग उड़िगो अबीर हैकै पल
में २ ॥ दोहा ॥ सुफल फल मनकामना तुलसी प्रेम प्रतीत ॥
त्रिया आपने करनसों लिखि पूजति है भीति ३ साधुता न तजे ॥
जैसे शिष्यपै बेगार गुरु कही गारी है ऐसे ४ ॥

ऐसी एक आपक हिराजासों सुनायो यहीं लैकै जावौ बाग
स्वामीने कुदेखों प्रीतिको १ निपट बिचारी बुरी देत मेरे गैरें लु
री तिया हठ मान करी ऐसे ही प्रतीतको ॥ आनिक हैं आप
पाये कही या ही भांति आइ बैठी ढिग तिया देखि लो ढिग ईरी
तिको । बोली भक्त बधू अजू वेतों हैं बहुत नीके तुम कहा औ
चकही पावत हो भीतिको १५८ भई लाज भारी पुनि फेरिकै
सँभारी दिन बीति गये कोऊ तब तब वही कीनी है । जानि गई
भक्त बधू चाहत परिक्षालियो कही अजू पाये सुनि तजी देह
भीनी है ॥ भयो मुख श्वेत रानी राजा आये जानी यह रची
चिता जरी मति भई मेरी हीनी है । भई मुधि आपुको जु आये धे
गिदौरि इहां देखी मृत्यु प्राय नृप कही मरी दीनी है १५९ बो
ल्यो नृप अजू मोहिं मेरे इबन त अब सब उपदेश लैकै धूरि में
मिलायो है । कह्यो बहु भांति ऐपै आवत न शान्ति किहू गाई
अष्टपदी सुरदिद्योत न ज्ययो है ॥ लाजन को मारयो राजा चा
है अपघात कियो जियो नहीं जात भक्ति लेश हून आयो है । क
रिसमाधान निज ग्राम आये किंदु बिल्व जैसो कछू सुन्यो यह
पर चालै गायो है १६० ॥

राजाको जयदेवजीके संगको रंग क्यों न लग्यो ? हरिबिलास
काव्ये ॥ भवज्वरनिवृत्तये पतितपावन त्वत्पदम् ॥ प्रबलसिद्ध
मौषधं हृदि सकृत् सुधीर्द्धारयेत् ५ ॥ अपथ्यमिह वर्जयेद्विषयनासना
संज्ञकम् ॥ चसेत विजनवन फलदलाम्बुसुशीलयत् ३ ॥ गीतगोविंदे ॥

ब्रह्मतिमलयसमीरेसदनमुपनिधाय । स्फुटतिकुसुमनिकर विरहि
हृदयदलनाय ॥ तवविरहे वनमाली सखि सीदति ४ ॥ करिसमीधाना ॥
दोहा ॥ भईमित्रकी मित्रता रहेउ कथा को भाव ॥ तोहि न घेटा
भूलही मोहिपूछको धाय ५ ॥

देवधनीधाराहै अठाराकोशआश्रमते सदाअसनान
करैधरैयोगताईको । भयोतनवृद्धतअछाडैनहींनित्यनेम
प्रेमदेखिभारीनिशिकहीसुखदाईको ॥ आवौजनिध्यान
करौकरौजनिहठऐसो सानीनहींआऊँमैंहींजानौँकैसेआई
को ॥ फूलदेखौँकंजजवकीजियोप्रतीतिमेरी भईवाहीभां
तिसेकैअपुल्लौंसुहाईको १६१ ॥ मूल ॥ श्रीश्रीधरश्रीभा
गवत्तमेपरमधर्मनिर्णीतकिय ॥ तीनिकांडएकत्वसानिकै
अज्ञानछांघत ॥ करमठझानीऐँचिअर्थकोअनर्थमानत ॥
परमहंससहिदुपिदिलटीकादिस्तारयो ॥ षटशास्त्रनिअ
धिरुद्धनेदसभतहिबिचारयो ॥ प्रअुपरमानन्दप्रसादते
माधोसुकारसुचारिदिय ॥ श्रीश्रीधरश्रीभागवत्तमेपरमधर्म
निर्णीतकिय ४५ ॥

छाँडैनहीं नित्यनेम ॥ दोहा ॥ उक्तम मध्यम अधमनर पाहन
सिकतापानि ॥ धीतिअनुक्रम जानिये वैर व्यतिक्रम सानि १ सां-
चो पनकेसमाजी आपही पधारी भूठेपन वारैनको मूठी चनाहू
न मिले जैसे छपनभोगीको वृष्टात घोड़ाके मलीदाको अरु देखन
हारको २ साई शकरखारयो शकरहू पहुंचावै । वेनिरवासीजीवजे
एकापर ज्यों धिघावै ॥ ३ ॥ श्रीधरगीतार्या ॥ सर्वधर्मानुपरित्यज्य
सामेकं शरणं व्रज ॥ अहंत्वांसर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामिमांशुचः ४ ॥
षटशास्त्रछप्ये ॥ कर्ममिमांसाकहे देहवशकरैसुपावै । कालाधी
न वैशेषन्यायकरतार बतावै ॥ नित्यानित्यविचार सांख्यमत ऐ-
सोभावै । पारंजलि हठजोति योग अष्टांग दिखावै । सर्वमे व्यापक

भक्तमाला सटीक ।

ब्रह्म है वेदांतशास्त्र धेसो कहै । षट्शास्त्र सकल विरुद्ध ये हरि
जानी द्रष्टा ह्वैरहे ५ ॥ परम धर्म ॥ प्रथम ॥ सबेपुसांपसेधर्मोयतो
भक्तिरधोव्रजे ॥ अहेतुक्यप्रतिहता यथात्मासम्प्रसीदति ६ ॥

टीकाश्रीधरस्वामीजीकी ॥ पंडितसमाजबड़ेबड़ेभक्त
राजजिते भागवतटीकाकरिआपसमेंरीझिये । भयोजवि
चारकाशीपुरी अघनाशीमांझ समाअनुसारजोईसोईलि
खिदीजिये ॥ ताकोतौप्रमाणभगवानबिंदुमाधवजूशोधो
यहीबातधरिमन्दिरबैलीजिये । धरेसबजाइप्रभुसुकरब
नाइदियो कियोसर्वोपरिलैकैचल्योमतिधीजिये १६१ ॥
मूल ॥ श्रीकृष्णकृपाकोपरप्रगटबिल्वमंगलमंगलस्वरु
प ॥ करुणामृतसुकवित्तउक्तिअनुच्छिष्टउचारी । रसिक
जननिज्यांजीवहृदयहारावलिधारी ॥ हरिपकरायोहाथब
हुरितहँलियोछुटाई । कहाभयोकरछुटैबदौतौहिथेजेजाई ॥
चिंतामणिसंगपाइकैब्रजवधूकेलिबरणीअनुप । श्रीकृष्ण
कृपाकोपरप्रगटबिल्वमंगलमंगलस्वरुप १६२ ॥

कांडकरडे कपूर कपास धरी दोऊ ॥ श्लोक ॥ वागीशा यस्य
वदनेलक्ष्मरियस्यतुवक्षसि ॥ यस्यास्तेहृदयेसंवित्तनृसिंहमहंभ
जे १ ॥ दोहा ॥ श्रीधरस्वामी तो मनो श्रीधर प्रगटे आत ॥
तिलक भांगवत को कियो सब तिलकन परमान २ ॥ अघनाशी ॥
सोरठा ॥ मुक्ति जन्म माहि जानि ज्ञान त्वानि अघहानिकर ।
जहँ बस शम्भु भवानि सो काशी सेइय कस न ३ कहाभयो ॥
श्लोक ॥ हस्तमुत्सृज्ययातोसिबलात्कृष्णकिमद्भुतम् ॥ हृदयाद्य
दिनिर्वासिपौरुषंगणयामिते ४ ॥ चिंतामणि पाइके ॥ दोहा ॥
परिदंत पूजा पाकदिल ये दिमाक मतिलाव ॥ लगै जरब अवि
यान की सबै गरब उड़िजाव ५ ॥ मांभ बोलनि हसनि चलनि
बानैतनि लै महबूब जुधाया । धीरज धरम शरम समभ कांदरबर

गोल भगाया ॥ भर भर वासा कियो अकेला इस्के लिये ठहराया ॥
बल्लभ रसिक इन इश्क दुजागी योगी मन पकराया ६ ॥ दोहा ॥
ताने तान तरंगकी बेधन तनमन प्रान ॥ कला कुसुम शर शरन
की अति अयान तनत्रान ७ ॥

टीकाविल्वमंगलकी ॥ कृष्णवेनातीर एकद्विजमतिवी
ररहै ह्वैगयो अधीरसंगचिंतामणिपाइकै । तजीलोकलाज
हियेवाहीकोजुराजभयो निशिदिनकाजवहैरहेघरजाइ
कै ॥ पिताकोसराधनेकुरह्यौ मनसाधिदिनसेसमै अवेश
चल्योअतिअकुलाइकै । नदीचढिरहीभारीपैयेनअवारी
नाव भावभरयोहियोजियोजातनंधिजाइकै १६२ करत
बिचारवारिधारमेंनरहैं प्राणतातेभलीधारमित्रसन्मुखको
जाइये । परेकूदिनीरकडूसुधिनाशरीरकीहै वहीएकपीरक
बदरशनपाइये ॥ पावतनपारतनहारिभयोबूडिवेको मृत
कनिहारिमाननीनात्रमनभाइये । लगेईकिनारेजायचल्यो
पगधाइचाइ आयेपटलागेआधीनिशिसोविहाइये १६३
अजगरघूमिझामिभूमिकोपरसकियो लियोईसहाइ चढो
छातपरजाइकै । ऊपरकेंवारलगेपरचोकूदिआंगनमें गि
रयोयोंगरतरागीजागीशोरपाइकै ॥ दीपकनारायजोपेदेखैं
विल्वमंगलहैं बडोईअमंगलतूकियोकहाआइकै । जल
अन्हवायसूखेपटपहरायहाइ कैपेकरिआयो जलपारद्वार
धाइकै १६४ ॥

हिये वाहीको जुराज्यभयो ॥ कवित्त ॥ मरकत के सूत कियो
पन्नग के पूत कियो राजत अभूत तमराज कैसे तार हैं । मख
तूल गुणग्राम शोभित सरस श्याम कामिपुंग कानन कुहूके ये
कुवार हैं ॥ कोपकी किरण जल नील के जराके तंत उपमा अनंत

चारु चमर शृंगार हैं । कारे सटकारे भीने सोधते सुगंधवास ऐसे
 बलभद्र नव बाला तेरे वार हैं १ ॥ भूलना ॥ गुलों बिचौ गुलचन्यो
 सेषु ल्यानही पर खुलसी । जलों गुलकलमतआसी बाहुहुसन
 तेरी घुलसी ॥ दाने देखि दिवाने थासी अकलतिनादा भुलसी ।
 अवजी पाकन जरिके देखन वारे छत्रतिना शिरदुरसी २ ॥ दोहा ॥
 तनक न रहै बिरक्तता लगे इगन की थाप । कहूं गीता माला
 कहूं कहूं बटुवा कहूं आप ३ ॥

नौकापठवाइद्वाररज्जुलटकाईदेखि मेरेमनभाईमैतौ
 तवैलईजानिकै । चलोदेखैअहोयहकहाधौप्रलापकरै दे
 ख्योविषधरमहाखीजीअपमानिकै ॥ जैसोमनमेरेहाडचा
 मसोलगायोतैसो श्यामसोलगावेतोपैजानियेसयानकै ।
 मैतोभयेभोरभजौयुगलकिशोरअब तेरीतुहीजानेचाहौ
 करौमनमानिकै १६५ खुलिगईआखैंअभिलाखैंरूप
 माधुरीको चाखैं रसरंगऔउमंगअंगन्यारिये । बीणलेब
 जाईगाईविपिनिकुंजक्रीडा भयोसुखपुंजजापैकोटिविषै
 वारिये । बीतिगईरातिप्रातचलेआपआपकोजु हियेवहीं
 जायदृगनीरभरिडारिये । सोमगिरिनामअभिराममुरु
 कियोआनिसकैकोबखानिलालभुवननिहारिये १६६ ॥

प्रलापानर्थकवचइत्यमरः १ हाड चामसौ ॥ कवित्त ॥ देह
 तौ मलीन मन बहुत विकार भरे ताहू मांस जरा वात पित्त कफ
 खांसीहै । कबहुंक पेटपीर कबहुंक शिरवाहु कबहुंक आंखि कानि
 मुख में बिथासी है ॥ औरहू अनक रोग मलमत्र भरे सदा हरि
 ताजि औरे भजे साधुकरे हांसी है । ऐसो जो शरीर ताहि अपना
 कै मानिरहै सुन्दर कहत याम कौन सुखरासी है १ मांस की
 गर्थी कुच कंचन कलश कहै मुख कहै चंदजो श्लेषमा को धरु
 है । दोऊ भुज कमल मृणालनाभ कूपकहै हाडहीके खभा तासौ

कहै रंभातरु है ॥ हाडही के दंत अहिं हीरामोती कहै तासों
चासको अधर तासों कहै विस्वाफरु है । ऐसी झुठी युगति वनावै
वे कहावै कवि तापर कहत हमैं शारदा को बरुहै २ ओस कोसो
मोती और पानी को बबूला जिमि ताचोकरि मान्यो सोई चूड़यो
संभधार है । एक स्त्री को पुत्रगुरु पायसो साधुपै छुटायो ऐस
चिन्तामणि कही भोर भैतौ जाहुंगी तेरी तूजानै ॥

रहेसोवरसरससागरमगनभये नयेनयेचोजकेशलो
कपटिलीजिये । चलेचुन्दावनमनकहैकबदेखौंजाइ आ
येमगमांभएकठौरमतिभीजिये ॥ पत्थोत्रडोशोरदृग
कोरकैनचाहैकाहूतहांसरतियान्हातदेखिआखैरीझिये ।
लगेवाकेपाछेकाछकाछकीनसुधिकछु गईघरआछेरहैद्व
रतनछीजिये १६७ आधोवाकोपतिद्वारदेखेभागवतठा
देबडोभागवतअतिपूछीसोजनाइये । कहीजपधारौपांव
धारोगृहपावनकोपावैनिपखारौजलधारौशीशभाइये ॥
चले भौनभाइमनआरतमिटाइवेको गाइवेकोजोईरीति
सोईकीवतइये ॥ नारिसोकह्योहोतुशृंगारकरिसेवाकीजे
लीजियौसुहगिजामैवेगिप्रभुपाइये १६८ चलीहेशृंगारक
रिथारमैप्रसदिलैकऊचीचित्रसारीजहवैठेअनुगंगी हैं ।
झनकमनकजाइजोरिकरठाढीरही गहीमतिदेखिदेखिन
नकृत्यभागीहैं ॥ कहीयुगसुईलाबौलाइदईगहीहाथफौ
रिडारीआखैअहोबडीयेअभागीहैं । गईपतिपासइवासभ
रतनबोलीआवैबोलीदुखपाइआयेपायपररागीहैं १६९॥
लागेवाकेपाछे ॥ भावते ॥ प्रठकाः पाठकाश्चैवये चान्ये शास्त्र
चिन्तकाः ॥ सर्वेण्यसनिनोमहा यः कियावान्सपण्डितः १ कुंडलि
या ॥ अग्रदात को बसकहा परे कूपतन धाइ ॥ कूकरचौक चढाइये

चाकी चाटन जाई ॥ चाकी चाटन जाई आदि अभ्यास न छोड़े ।
 वरजत वेदपुराण विषै पकरत हठि हाडै ॥ बच्छ पयोधर पाने
 कहौ तेहि कौन सिखावै ॥ अन्न भोजनम अनेक अविद्या ही को धावै ॥
 नून नृत्य भागी है ॥ नारी स्तन भर जघन निवेशं दृष्टा माया मोह विशम्भ
 घत न्मांसवसादिविकार मनसि विचारय वारंवारम् ॥ भज
 गोविन्द भज गोविन्द गोविन्द भज मूढसते ॥

कियो अपराध हम साधु को दुखायो अहो वडे तुम साधु
 हम साधुना मधर्यो है । रहौ अजु सेवा करै करी तुम सेवा
 ऐसी तैसी नही काहु वां भ्रमरो उर रह्यो है ॥ चले सुख पाइ
 गभूत से छुटाइ दिये हिये ही की आखिन सो अबै काम पख्यो
 है । बैठे वन मध्य जाइ भूखे जानि आप आये भोजन कराइ
 चलो ब्राया दिन देख्यो है १७० चले लग हाइ कर लाया घन
 तरु तर चाहत छुटायो हाथ ब्याडे के मनी को है । ज्यो ज्यो बल
 कै त्यों त्यों तजत नय ऊअर लियोई छुड़ाइ गहोगा दोरु
 पही को है ॥ ऐसी ही करत वृन्दावन घन आइ लिये पियो चाहे
 रस सब जग लाग्यो फी को है । भइ उत कंठा भारी आये श्री वि
 हासी लाल सुरलीव जाइ के सुकियो भायो जी को है १७१ ॥

॥ हम नाम साधु ॥ दोहा ॥ गलियनि में हर्षत फिरै साधु कहै सब
 कोइ ॥ इवान नाम वाघा धर्यो खोजी वाघ न होइ १ रूप ही को
 है ॥ हाथ छुड़ाये जात ही निबल जानिके मोहि ॥ हिय में ते जब जा
 हुंगे सबल बढौंगे तोहि २ ॥ कवित्त ॥ प्रीतम सुजान मेरे हित
 के निधान कहौ कैसे रहै प्रान जोपै अनाखि रिसाइहौ । तुम तो
 उदार दीनहीन आइ पख्यो द्वार सुनिये पुकार याहि कौलों तर
 साइहौ ॥ चातक हौ रावरो अनोखो मोहि आवरो सुजान रूप
 वावरो वदन दरसाइहौ । विरह नशाइ दया हिय में बसाइ आइ
 हाइ कब आनंदको घन घर साइहौ ३ तापै सूरदासजी अरु साहू

कार की स्त्रीको दृष्टांत ४ ऐसे जब कही तब करुणानिधान हूँसे प्रीति के वशभये ५ ॥

खुलिये नैनज्यों कमलरविउदभये देखिरूपराशिबा
ढीकोटिगुणीप्यासहै । मुरलीमधुरसुरराख्योमदभरि
मानों ढरिआयो काननमें आननमें भासहै ॥ मानिये प्रताप
चिंतामणिमनमांझभई चिंतामणिजैतिआदिबोलेरसरा
सहै । कर्णामृतग्रंथहदैग्रथिकोबिदारिडारै बांधैरसग्रंथपंथ
युगलप्रकासहै १७२ चिंतामणिसुनीवनमांभरूपदेख्यो
लालहैगईनिहालआईदेहनातो जानिकै । उठिबहुमानकि
योदियोदूधभातदोनादैपठावै नितहरिहितजनमानिकै ॥
लियोकेसेजायतुहैं भाइसोंदियो जोप्रभु लैहौनाथहाथसों
जोदेहैंसनमानिकै । बैठेदोऊजनकोऊपावै नही एककनरी
भैर्यामघनदीनोदूसरोहूआनिकै १७३ ॥

चिन्तामणि जयतिआदि ॥ इलोक ॥ चिन्तामणिर्जयतिसोम
गिरिर्गुरुमेशिक्षागुरुश्चभगवाञ्छिखिपिञ्जमौलिः ॥ यत्पादकल्प
तरुपल्लवशेखरेषु लीलास्वयंवररसलभतेस्वयंश्रीः १ ॥ कर्णामृत
ग्रंथ ॥ अद्वैतवीथीपथिकेरूपास्याः स्वानन्दसिंहासनलब्धदीक्षाः ॥
शठेनकेनापित्रयंहठेनदासीकृतागोपवधूवितेन २ कोऊपावै॥दोहा॥
निकट न देख्यो पारधी लग्यो न देख्यो षाण ॥ मैं तोहिं पूछों हे
सखी केहि विधि निकसे प्राण ३ जलथोरो नेहाघनो लगे प्रीति
के षाण । तूपी तूपी करिसरे इहिविधि छंडेप्राण ॥ पुमन आव
सांगे ४ आन न देखा ज्ञान कर्म नाम सों शुद्धहोइ अरु गीता में
भक्तियोग चित्त शुकने लिख्यो ज्ञान कर्म आशापाश शुद्ध होई
बचि में भक्तियोग भाष्यमें लिख्यो है भक्तिरत्न के दोऊ ढकनाहैं
चक्रवर्ती ने लिख्यो है दोऊ लरेंगे नहीं बीच में भक्तियोग रोकै हे
दोउनको ५ ॥

मूल ॥ कलिजीवजँजालीकारणै विष्णुपुरीबड़निधि
सची ॥ भगवतधर्मउतंगआनधर्महिनिहिदेखा । पीतरप
टितरविगतनिषकज्योकुंदनरेखा ॥ कृष्णकृपाकरिवेलफ
लतफलतसंगदिखायो । कोटिग्रन्थकोअर्थतेरहविरचन
मेंगायो ॥ मथिमहासमुद्रभागवततेभक्तिरतनराजीरची ।
कलिजीवजँजालीकारणै विष्णुपुरी बड़निधिसची ४७
टीका ॥ जगन्नाथक्षेत्रमांझबैठेमहाप्रभूजबै चहूंओरभक्त
भूपभीरअतिछाईहै । बोलेविष्णुपुरीपुरीकाशमध्यरहैयाते
जानियतमोक्षचाहनीकीमनआईहै ॥ लिखीप्रभुचीठीआ
पमणिगुणमालएक दीजियेपठाइमोहिलागतसुहाई है ।
जानिलईबातनिधिभागवतरतनदाम दुईपठैआदिमुक्ति
खोदिकैबहाई है १७४ मूल ॥ विष्णुस्वामिसंप्रदायदृढ
ज्ञानदेवगंभीरमति ॥ नामतिलोचनशिष्यसूरशशिसदृ
शउजागर । गिरांगउनहारिकाव्यरचनाप्रेमाकर ॥
आचारजहरिदासअतुलबलआनंददाइन । तिहिसगबल्ल
भविदितपृथपद्धतिपाराइन ॥ नवधाप्रधानसेवासुदृढम
नवचक्रमहरिचरणरति । विष्णुस्वामिसंप्रदायदृढज्ञा
नदेवगंभीरमति ४८ ॥

खोदिके वहाई हनुमन्नाटक ॥ भवबंधच्छिदेतस्मैनस्पृहयाभि
मुक्तये ॥ भवान्प्रभुरहंदास इतियत्रविलुप्यते १ सालोक्यसार्ष्टि
सामीप्यसारूप्यकत्वमप्युत ॥ दीयमानंनष्टहंति विनामत्सेवनं

१ ए, के आगे स्वा, है इससे गु, को शुद्ध उच्चारण करने से अथवा हउपद के आगे वानपद होनेसे ढकार को गुह कर कहने से या पादान्त में ढकार को गुह मानने से पंद्रह मात्रा ठीकहै ॥

जनाः २ विष्णुपुरीवाक्यम् ॥ येषुक्तावपिनिःस्पृहाःप्रतिपदं प्रोन्मी
लदानंददां यामास्थायसमस्तमस्तकमणिं कुर्वन्तियंस्त्रेशे ॥ तान्
भक्तानपितांचभक्तिमपितंभक्तिप्रियं श्रीहरिवंदेसततमर्थयेनुद्विष
नित्यंशरण्यभजे २ सुक्तिनिःस्पृहाकथा एकपुराणकीएक समय श्री
नारदजी श्रीवृन्दावन में आये श्रीलालजीकी लीलादेखिके बहुत
प्रसन्न भये पीछेते रोवनलगे यह घडो आश्चर्य है ४ ॥

ज्ञानदेवजूकीटीका ॥ विष्णुस्वामिप्रदायबडेईगंभी
रमतिज्ञानदेवनामताकीबातसुनिळीजिये । पितागृहत्या
गिआइग्रहणसंन्यासकियोदियोबोलिरूठतिया नहीगुरु
कीजिये ॥ आईसुनिवच्छपाछेकह्योजान्योमिथ्यावादभुज
नपकरिमेरेसंगकरिहीजिये । आईसोलिवाइजातिअति
ही रिसाइदियो पांतिमेतेडारिहै दूरिनहिंछीजिये १७५
भयेतीनिपुत्रतामेंमुख्यबडेज्ञानदेव ताकीकृष्णदेवजसो
हियेकीसचाईहै । वेदनपढावेकोईकहैसबजातिगईलई
करिसभाअहोकहामनआईहै ॥ उनसोत्रह्यत्वकहीश्रुति
अधिकारनाहि बोल्योयोनिहारिपढेभैसालैदिखाइये ।
देखिभक्तिभावचावभयोआनिगहेपाव कियोईशभावचही
गहीदीनताईहै १७६ ॥

काव्यरचनापद ॥ माईआजुहो निशान बाजे दशरथ राइके ।
रामजन्म सुनि सनी गावति आनंद बधाइके ॥ उभंगे ऋषिवि-
श्वामित्र पढ़त वशिष्ठतंत्र चेत्रमासनीसी शुक्लपक्ष पाइके । उभंगे
दलह किधौ जल उभंगे सत्तगज उभंगे महल सब कचन जरा-
इके ॥ उभंगे पौरी पगार उभंगे वीथी बजार उभंगी अयोध्यापुरी
रह्योसुख छाइके । उभंगे सूरज कुल धरम असुरकुल लंकके कं-
गूरा ढये अगस जनाइके ॥ उभंगे वृत्त सबसुखे हरेभये अबै उभं-
यो दनदंडक अधिक जिवाइके । उभंगे ब्रह्म बाल मर मति ॥

ईश उमंगे गौतम जानि, तृया मोक्षदाइके ॥ उमंगे वानर रीक्ष
हनुमान पूजाईश सुग्रीव रिपुको नाशकरि हानिये तशाइके ।
उमंग्यो सरयुको नीर मज्जन करि है रघुवीर उमंगे सब जीव ज-
न्तु कोउ न सके सताइके ॥ उमंगी सभा विराजै अपने समाजै
उमंगे तिलक जब मस्तक चढ़ाइके । उमंगे उघटत संगीत उमंगे
लुंवट गीत सृदंगी मन सृदंग बजाइके ॥ उमंगे मुनि समाज ब-
हुविधि वाजे वाजे महाराज दान दीजे सजिकै तुलाइके । उमंगे
हाडिया गात्र ठाढ़े बजावै उमंगी अशीश देत नृपमाथो नाइके ॥
उमंगेनाचै लागदाट तालसांचै रीक्ति वस्तुदेत जो जाही लाइके ॥
उमंगो कौशल्या रानी सुत जायो शारंगधनी उमंगे जन ज्ञान
इव सीताराम गाइके १ भूताख्या ब्रह्मणकला सोपात देव महान
देव ज्ञानदेव ऐसे तीन जैसे धायपुत्र परोसी साखी ऐसे नखन
में ब्राह्मण साखी यह जानि लीजे सो भैसा पढ़यो प्रमाणकोन ॥
॥ टीकातिलोचनजकी ॥ भयेउभैशिष्यनामदेवश्रीनि
लोचनजमूरशशिनाहीं कियो जगमें प्रकाशहै ॥ नामाकी लौ
घातसुनि आये सुनो दूसरेकी सुनेइवनत भक्त कथारसराराश
है ॥ उपजेवणिककुलसेवैकुल अच्युतको ऐयेनहीं वने एक
तियावहै पासहै । टहलुवानको ऊसंधुमननिकी जानिलई
यही अभिलाषसदादासनि को दासहै १७७ आपे प्रभुटह
लुवारूप धरि द्वारपर फटी एक कामसिंह है बाट्टी पाइहै ।
निकसत पूछै अहो कहाते पधारे आप वापसहता से औरुदे
खिये नगाइहै ॥ वापसहतारीसरे कोऊनाहिं तांची कहौ गहौ
जो टहलतौ पै मिलतसुभाइहै । अतमिलगत कौतदीजिये
जनायवह स्वाऊपांचसातसेर उठतरिसाइहै १७८ चारि
हीवरनकीजुरीतिसबमेरे हाथ साथ हूनचहै कसौ नीकेमन
त्याइके । भक्तनकीसेवासो तो करतही जन्ममयाने प्रीकड

नाहिं डारेबरषबिताइकै ॥ अंतर्यामीनाममेरोचेरोभयो
तेरोहोतोबोव्योभक्तभावखावोनिशंकअघाइकै । कामरी
पन्हैयांसवनईकरिदई औरुमीडिकैन्हवायो तनमैलको
छुड़ाइकै १७९ ॥

अनमिलपै ॥ सवैया ॥ अरसात जम्हात लगे नखगात कितौ
तुतरात सुबोलतहूं । कवि सुन्दर ऊलटि और सुनौ इतने पर
सोहकरै अजहूं ॥ तिनसों व कहा कहिये जिनके सुपनेहूं न लाज
भई कवहूं । जग में सखी औषध है सबकी पै स्वभावकी औषध
नाहिं कहूं १ मनलायकै ॥ दोहा ॥ चारिं बरणकी चातुरी सै
न मेरो काम ॥ भक्त सेव जो जानिहो रहौ हमारे धाम २ भक्तन
की सेवा ॥ गीतायाम् ॥ यद्यद्वाञ्छतिमद्भक्तस्तत्तत्कुर्व्यामतन्द्रि
तः ३ वाप महतारी नहीं ॥ जयति जननिवासो देवकीजन्मवादो ।
शास्त्र जन्मगावै अजन्मगावै दोऊ सत्तः भक्ति घेटा मित्र सखा
पेसे जानिये ॥

बोव्योघरदासीसोंतूरहैयाकीदासीहोइ देखियोउदा
सीदेतऐसोनहींपावनो । खाइसोखवावोसुखपावोनितनि
तहिये जियेजगमाहिंजौलौंमिलिगुनगावनो ॥ आवतअ
नेकसाधुभावतटहलुहिये लियेचावदाबैपांवसवनिलडा
वनो । ऐसेहीकरतमासतेरहव्यतीतभये गयेउठिआपने
कुवातकोचलावनो १८० एकदिनगईहीपरोसिनिकेभक्त
बधूपूछिलईवातअहोकाहेकोमलीनहैं । बोलीमुसिकाईवे
टहलुवालिवाइलाये कहूंनअघाइखोटिपीसितनखीनहैं ॥
काहूसोनकहौयहगहौमनमांभयेरीतेरीसोंसुनैगोजोपैजा
तरहैभीनहैं । सुनिलईयहीनेकुगयेउठिहूतीटेंक दुखहू
अनेकजैसेजलबिनमीनहैं १८१ बीतेदिनतीनिअन्नजल

करिहीनभयेएसोसोप्रवीनअहोफेरिकहांपाइये । बड़ी तू
 अभागीबातकाहेको कहनलागी रागीसाधुसेवाभंसुकैसे
 करिलाइये ॥ भईनभबानीतुमखावोअन्नपानीयहभैहीमति
 ठानीमोकोभीतिरीतिभाइये । मैतोहोअधीनतेरेघरहीमें
 रहौलीन जोपैकहोसदासेवाकरियेकोआइये १८२ काने
 हरिदासमैतो दासहूनभयोनेकु बड़ोउपहासमुख जगमें
 दिखाइये । कहैजनभक्तकहाभक्तिहमकरी कही अहोअज्ञ
 ताई रीतिमनमेंनआइये ॥ उनकीतौवातबनिआवै सबउ
 नहीसोंगुनहींकोलेत मेरेऔगुणछिपाइये । आयेघरमांझ
 ताऊमूढ़मैनजानिसक्यो आवै अबक्योहूंघाइ पाइ लप
 टाइये १८३ ॥

आवत अनेक साधु ॥ गीतायाम् ॥ अपिचेत्सुदुराचारोभजतेमा
 मनन्यभाक् ॥ साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः १
 अन्न जलकरि हीन ॥ श्लोक ॥ वैष्णवःपरमोधम्मोवैष्णवःपरमत
 पः ॥ वैष्णवःपरमोराध्यो वैष्णवःपरमोगुरुः २ चारो वेद में अरु
 अठारह पुराण में अरु श्रीभागवत में यह सुनीहै वैष्णव स्वरूप
 सर्वोपरि श्रीभगवद्रूपी साक्षात् हे ३ ॥

टीकावल्लभाचार्यजीकी ॥ हियमें सरूपसेवाकरिअ
 नुरागभरेदरेओरजीवनिकीजीवनको दीजिये । सोईलै
 प्रकासघरघरमेंबिलासकियो अतिहीहुलासफलनैनन
 कोलीजिये ॥ चातुरीअवधिनेकुआतुरीनहोतिक्योहूं चहुं
 दिशिनानारागभोगसुखकीजिये । धल्लभजूनामलियोपृ
 थुअभिरामरीति गोकुलमेंधामजानिसुनिअतिरीभिये
 १८४ गोकुलकेदेखिबेकोगयोएकसाधुसूधो गोकुलमग

नभपोरीनिकछुन्यारिये ॥ छोकरकेचुअपरखुवाभुलाइ
दियो कियो जाइदरानसोभयोसखभाषिये ॥ देखिआइना
हिप्रभकरिआपपासआयो चितासोनलीनदेखिकहीजा
निहारिये ॥ वेसाईस्वरूपकेईगइसुधिवोल्योआनि लीजि
येपिछानिकहीसिवानितधारिये १८५ ॥

गोकुल के देविवेका ॥ कवित्त ॥ जौलौ ब्रज बीधिन में विद्य
कै नथर मन तोलौ कुटिलाइ की सुकालिना जनाइये ॥ तोलौ
नं वनीत चौर चित्तमें न आने निकु जौलौ आर साधन में स्व-
च्छता न पाइये ॥ समृति पुराण वेद परिडत प्रवीणताई करि अ-
भिमान दोष पंकलपटाइये ॥ पैजकरि कहनु प्रवीणन सो कान
खालि सो कुल मलीन जहां गोकुल न गाइये १ वरहै गोधुलिके
सुनत तियागोरी गान दामिनी निकरसी निकर गृहताघरै ॥ गो-
धनकेपाछे आछे नरु नैष काछे इयास चलत कटाछे तियनैन
नैनसो भिये ॥ जोगिति किवारिनि अटारिनि झरोखनिते जित
तितमूल पाती गैल छैलै परै ॥ होति जब सांभइन गोकुल गलि-
न सांभ कोटिकवैकुण्ठसुख सहज बहेफिर २ नाही प्रभु ॥ दोहा ॥
छयोनेह कागदहि पै लय लिबाइनटाक ॥ आचल ॥ उधरयो अत्रे
सहुइकोसो आंक ३ स्नेह बिलुपनि म उधरिआत्रे वेसाई रूप ॥
दोहा ॥ प्रेम एकयक चित्तसो एकै संग समाब ॥ गधीको सोधो
नहीं सुजनन हाथ विकार्ये ४ नैनको फलना चर्हायितेतेनयने
नराणां लिंगानिविष्णोनिनीक्षतो ये प्र ॥

खुलिगई आखैअभिलाखैपहिमानिकाजै दीअजवता
इमोहिपानैनिजरूपहै ॥ कहीजाइवाहीठोरदेखोप्रेमलेखो
हिये लियेभावेसवाकशेमारगअनुपहै ॥ देखिकेमगनभ
योखयोउरधारिइहै ॥ नैनभरिआये जान्योभक्तिकेस्वरूप
है ॥ निशिदिनलगयोप्रभ्योजयोभागपूरणहो पूरणचमते

कारकृपाअनुरूपहै १८६ मूल ॥ सुठिसंतसाखिजानैसबै
 प्रकटप्रेमकलियुगप्रधान् ॥ भक्तदासइकमपश्रवणसीता
 हरकीनो । मारिमारिकरिखड्गवाजसागरमेंदीनो ॥ नर
 सिंहकोअनुकरनहोइहरणाकुशमाख्यो । वहीभयोदशरत्थ
 रामबिलुरेतनडाख्यो ॥ श्रीकृष्णदामबांधेसुनेरतिवन्तीत
 हैंदीनप्रान् । सुठिसंतसाखिजानैसबैप्रकटप्रेमकलियुग
 प्रधान् ५० टीका ॥ संतसाखिजानैकलिकालमेंप्रकटप्रे
 म बड़ोईअसंतजकेभक्तसोंअभावहै । हुतौएकभूपराम
 रूपततपरमहा रामहीकीलीलागुणसुनैकरिभावहै ॥ बि
 प्रसोसुनावैसीताचोरीकोनगावैहियोखरौभरिआवै वहजा
 नतसुभावहै । पख्योद्विजदुखीनिजसुवनपठाइदियो जानै
 नसुनायोभरमायोकियोघावहै १८७ ॥

कलियुग प्रधाम ॥ प्रेमते दर्शन प्रेमते वाको स्वरूप प्रेमते
 वाके स्वरूपको वाप प्रेमते स्वरूपके वाप को शिक्षाकार याते प्र-
 धान १ घावहै ॥ कुंडलिया ॥ अगरकहै निरफल गई सेनरि फूली
 पाक । धोबीघेटा चांदसा सीटी और पटाक ॥ सीटी और पटाक
 प्रेमहरि भक्ति न जानै । अनकरनहै न टांक छालनी सों मनछा-
 नै ॥ रवास धवनि ज्यों धवै अंग मूसा ज्यों दाढ़ै । ऐसो सहॉ
 अचेत धौस कूकर ज्यों काढ़ै २ ॥ दोहा ॥ कबहुँ न सुखमें हरिभजे
 भक्तन मिले न दौरि ॥ तीनों पनयोहीगये फिरत पराई पौरि ३ ॥

मारिमारिकरिखड्गनिकासिलियो दियोघोरसाग
 रमेंसौअवेशआयोहै । मारौ याहीकालदुष्टरावणबिहाल
 करौपावनकोदेखौसीताभावदृढब्रायोहै ॥ जानकीरमणदो
 उदरशनदीनोआनि बोलेबिनप्राणकियोनीचफलपायो
 है । सुनिसुखभयोगयोशोकसबदारुणजो रूपकोनिहा

रिनयेफेरिकैजिवायोहै १८८ नीलाचलधामतहांलीला
 अनुकर्णभयोश्रीनृसिंहरूपधारिसांचेमरिडास्योहै । को
 ऊकहैदोषकोऊकहतअवेशतोपै करौदशरथक्रियोभावपू
 रोपास्योहै । हुतीएकबाईकृष्णरूपसोंलगाईमतिकथामेन
 आईसुतसुनीकह्योधास्योहै । बांधेयशुमतिसुनिऔरभ
 ईगतिकरिदईसांचीरतितन तज्योमानौवास्योहै १८९ ॥

सोये समस्त भाव प्रेमसों होतभये जैसे श्रीगोपिकानके प्रेम
 सों भाव होत भये १ तापै दृष्टांत एक प्रेम केद्वै स्त्री एकतो आ-
 नंदिता एक व्याकुलता तिनके एक एक पुत्र आनंदिता के तो सु-
 नन्द व्याकुलताके विरह ता विरहकी स्त्री तदात्मककोस्वरूप २ ॥
 सवैया ॥ बैर बढ़यो सुबढ़यो अतिही अबके कहिको लरि कौनको
 सूझै । कैसी भई हरि हेरतही अबको हियके जियकी गतिवूझै ॥
 बाहरहू घरहू में सखी अखियां निबहै छवि जानि अरूझै । सांवरो
 रूप रम्यो उरमें सगरोजग सांवरो सांवरो सूझै ३ ॥ ब्रह्मवैवर्त
 पुराणे ॥ यास्यामितीर्थमद्यैवकण्ठेकृत्वातुवालकम् ॥ अथवात्वंशहा
 द्गच्छत्वयामेकिंप्रयोजनम् ४ ऐसे नन्दजी में बैठिके सो बाईने
 कही तदात्मककोपुत्रतद्वत् तद्वत्को स्वरूप सो कहै ५ ॥

कवित्त ॥ श्याम को जपतिहुती श्यामाजू स्वरूपभरी पगी
 प्रेम पूरणते हगई कन्हईहै । सुरति लिखी जो चिट्ठी प्यारी पिय
 ततकाल भामिनी बियोगभयो अतिदुख दाईहै ॥ व्याकुल विहा-
 ल अति प्यारीके विरहतन राधे राधे रटि पुनिभई राधिकाईहै ।
 चकित सचेत कहै बेरबेर हेरिपाती पथिक न आयो यह पाती
 कैसे आई है १ ॥ पद ॥ दुहुं दिशिको अति विरह विरहनी कैसे
 कै जुसहै । सुनो सखी यह बात श्यामसों को समुझाइकहै ॥ जब
 राधा तबहीं मुख माधो माधो रटतिरहै । जब माधो हैजाति क्ष-
 णकमें राधा विरहदहै ॥ पहले जानि अग्नि चन्दनसी सतीहोन
 उमहै । समाचार ताते सीरेके पाछे कौनकहै ॥ उभय दारुहै कीट

मध्यज्यो शीतलताहिचहै । सूरदास प्रभु व्याकुल विरहिनि क्योंहूँ
सुख नलहै ३ ॥ दोहा ॥ पियके ध्यान गही गही रही वही हैनारि ॥
आप आपही आरसी लखि रीझत रिझ वारि ३ ॥ श्लोक ॥ तटभु
वितरलाक्षोलक्षतेयःसमंतादिहवसतिसधूर्तःशीघ्रमायातयूयम् ॥
असकृदिति वदन्ती कामिनी कापिबालं कचकिमपितमालं गाढमा
लिंगतिस्म ४ तापै एक दृष्टांत लंका में त्रिजटा अरु सीताजी
के ५ ॥ रोलाछंदके दो पद ॥ भृंगीभयते भृंगहोइ वह कीट महा
जड । कृष्ण प्रेमते कृष्णहोइ कलु अचरज नहिं वड ६ प्रेमहि पी-
वाहि अंतरूपै तो । वीसी तीनि साठिहैं जेतो ७ एक सिद्ध अमली
के नीचे बैठ्यो तप करतरहौ तामग श्रीनारदजी आये सो पूछी
हरि मिलेंगे सो परमेस्वर ते पूछी नारदजी कही अमली के पत्ता
इतने युग तव नाच्यो मिल्यो तापै राजा की बेटी को अरु द्वै
मित्रन को दृष्टांत ८ ॥

मूल ॥ परसाद अवज्ञा जानिकै पाणितज्यो एकै नृपति ॥
हौं कहकहौं वनाइ वात सबही जग जानै । करतेद्यौं नाभयो
इयामसौरभरुचिमानै ॥ छपनभोगते पहिलखि चरकरमा
को भावै । शिलपिल्लेके कहत कुंवरिपै हरिचलि आवै ॥
हरिमक्तनिहितसुतविषदियो भूपनारि प्रभुराखिपति । पर
साद अवज्ञा जानिकै पाणितज्यो एकै नृपति ५ १ ॥ पुरुषोत्त
मपुरीकाराजा ॥ प्रसादकी अवज्ञाते तज्यो नृपकर एकक
रिकै वित्रेकसुनो जैसी भांति भईहै । खैलै नृपचौपरिको आ
यो प्रभुभक्तशेषदाहिनेमें पासेवायो छुयो मतिगईहै ॥ लैग
येरिसाइकै फिराइ महादुःखपाइ उठ्यो नरदेवगेहगयो सुनि
नईहै । लियो अनसनहाथ तज्यो यही छिनतव सांचौमरो
पनचो लिबिप्रपूछिलईहै १ ६ ० काटै हाथ कौन मेरो रहै गहि
मौनयाते पँछतसचिवकहाशौचयो विचारिये । आवै एक

प्रेतमोदिखाईनितदेतनिशि डारिकैझरोखाकरशोरकरि
भारिये ॥ सोऊठिगआइरहोआपकोछिपाइतव डारैहाथ
आनितवताहिकाटिडारिये। कहीनृपभलेचौकीदेतमेंघुमा
योभूप डाख्योउठिआनिछेदज्यारौकियोवरिये १९१ दे
खिकैलजानोकहाकियोसैंअथानोनृप कहीप्रेतमानोनी
प्रभुसोंबिगारिये । कहीजगन्नाथदेवजैप्रसादजावोवहां
लावोहाथबोब्रीबागसोईउरधारिये ॥ चलेतहांघाइभूपआ
गेमित्यौआइहाथ निकस्यौलगाइहियेभयोसुखभारिये ।
लायेकरफूलताकेभयेकूलदेवनाके नितहींचढ़तअंगगंध
हरिप्यारिये १९२ ॥

प्रसादअवज्ञा ॥ श्लोक ॥ प्रसादं जगदीशस्याप्यन्नपानादिकंच
यत् ॥ मग्नवस्त्रिभिकारं हि यथाविष्णुस्तथैवतत् १ पूछि लई है ॥
दोहा ॥ बाम बाहु फरकत मिलै ज्यै प्रीतन रससूरि ॥ त्यौ तोहीं
सों भेटिहों राखि दाहिनोदूरि २ ॥

करमाबाईकीटीका ॥ हुतीएकबाईताकोकरमासुनाम
जानि विनारीतिभांतिभोगखीचरीलगावही । जगन्नाथ
देवआइभोजनकरतनीके जितेलागैंभोगतामेंयहअति
भावही ॥ गयोतहांसाधुमानिवडोअपराधकरे भरैवहइवा
समदाचारलैसिखावही । भईयोअवारदेखैखोलिकैकिवा
रतोपैजूअनिलगीहैमुखधोयेबिनआवही १९३ पूछीप्रभु
भयोकहाकहियेप्रकटखोलि बोलिहूनआवैहमैदेखिनईरी
तिहै । करमासुनामएकखीचरीखवायेमोहिं मेंहूनितपाऊं
जायजानीसांचीप्रीतिहै ॥ गयोमेरोसंतरीतिभांतिसोसि
खाइआयो प्रेतमोअनतबिनजानेयोअनीतिहै । कहीवा

हीसाधुसोजुसाधिआवौवहीवात जाइकैसिखाईहियआई
बड़ीभीतिहै १९४ ॥ शिलपिल्लेउभैबाईकीटीका ॥ शि
लपिल्लेभक्तउभैबाईसोईकथासुनौ एकत्पसुताएकसुता
जिमीदारकी । आयेगुरुघरदेखिसेवादिगवैठीजाइ कही
ललचाइपूजाकीजेसुकुबारकी ॥ दियोशिलटकरकनाम
कहिदियोचही कीजियेलगाइमनमतिभवपारकी । करत
करतअनुरागबदिगयोभारी बड़ीयेविचित्ररीतियहीशो
भासारकी १९५ ॥

वैष्णवप्रेमकोसमझै नहीं ॥ वेदसमझै याते करमाबाई को
वेदही सिखायो ॥ दोहा ॥ लकरीधोत्रै भ्योंसने करै छतीसो पाका ॥
जाको षट षटकरमहैं ताको भावैझाक १ सो प्रेमको समझै ॥ नट
गोपाल कपट क्यों भावै कोटिक स्वांग बनावै २ बड़ी भीति है ॥
साधुको फेरिआया देखिकै डरी । आप कहा सिखाइ गयो तब
साधुबोले री तू डरै मतिरी ॥ यह क्रिया ब्राह्मण की है तेरी नहीं
तव पोथी देखी तव जानी तू वैसेही करयो करि तव साधु हँसे
कही ललचाइ ३ ॥

पात्रिलेकवित्तमांझदुहुनिकारकैरीति अबसुनौन्यारी
न्यारीनीकैमनदीजिये । जिमीदारसुताताकेभयेउभैभाईर
हैं आपसमेंद्वैग्राममाख्योसुवेछीजिये ॥ तामेंगईसेवाइन
बडोईकलेशकियो जियोनहींजातखानपानकैसेकीजिये
रहेसमुभाइयाहिकठुनसुहाइतब कहीजायलावौतेरेदोऊ
समधीजिये १९६ गईवाहीगांवजहांदूसरोसुभाईरहैवैव्यो
हैअथाईमांझकहीवहीवातहै । लेहुजूपिछानीतहांवैव्यो
इकठोरप्रभुबोलिउठ्यो कोऊबोलिलीजेप्रीतिगातहै । भ
ईआंखिराती लगीफाटिबेकोछातीसोपुकारिसुरआरतसो

मानोतनपातहै । हियेआइलगेसबदुखदूरिभागे कोऊ
बड़ेभागजागेघरआईनसमात १९७ ॥

भई आंखिराती ॥ कवित्त ॥ कंचनमें आंचदई चुनी चिनगा-
रीभई दूषणभयेरी सब भूषणउतारिलै । पियहै विदेश वाही देश
क्यों न परे धाइ ससकिससकि उठैमनहूं विचारिलै ॥ परघर आगि
आली मांगन क्योंजाति अब आगिमेरे अंग चिनगारी चारिभारि
लै । सांभसमैसांचसुन वाती क्यों न देति आली छाती सों लुवाइ
दियावाती क्यों न बारिलै १ वसन डसन भये हसन रसन होत
श्वासनिसों जागिहै वियोग आगिआगरी । धामतौ उजार से हैं
छारसे हैं काम काज आलिनके यूथजाल ऐसे हाल नागरी ॥ भो-
जन हलाहल कुलाहल सोनादजानि वाद है विवाह ऐसे विसद-
निकी सागरी । आपुनु मृगीके तूल कामदेव शारदूल वचि है न
मूल शूल उठी है उजागरी २ ॥ दोहा ॥ धवल महल शय्या ध-
वल धवल शरदकी रैन ॥ एक श्याम विन विकल सब ज्यों पुतरी
विन नैन ३ ॥

टीकानृपसुताकी ॥ सुनोनृपसुताबातभक्तिगातगात
पगीभजीसबधिषैवृतसेवाअनुरागी है । व्याहिहीविमुख
घरआयोलेनवहेवरखरी अरवरीकोईचितचिंतालागीहै ।
करिदईसंगभरीआपनेहीरंगचली अलीहूनकोऊएकवही
जासौरागीहै । आयोढिगपतिबोलिकियोचाहैरतियाकी
औरभईगतिमतिआवौबिधापागीहै १६८ कौनवहबिधा
ताकोकीजियेयतनबेगि बड़ेउदबेगनेकुबोलिसुखदीजि
ये । बोलिबोजोचाहौतोपैकरौहरिभक्तिहिये विनहरिभक्ति
मेरोअंगजिनिछीजिये ॥ आयोरोषभारीतब्रमनमेंबिचारी
वापिटारीमेंजुकलुसोईलैकैन्यारीकीजिये । करीवहीबात

मूर्तिजलमांझडारिदईनईभईज्वालाजियोजातनहिंखीजि
 ये १९९ तज्योजलअन्नअवचाहतप्रसन्नकियो होतक्यों
 प्रसन्नताकोसरवसलियोहै । पहुंचेभवनआइदईसोजताइ
 बातगातअलिछीनदेखिकहाहठकियोहै ॥ सासुसमझावै
 कळूहाथसों खवावेयाकोबोल्योहूतभावै तबधरकतहियो
 है । कहैसोईकरैअवपरैपाईतेरेहमबोलीजबवेईआवेतौही
 जातजियोहै २०० ॥

तज्यो जल अन्न ॥ दोहा ॥ शठमनेहसों डरपिये नंद और
 भय नाहिं ॥ सांपिनि सुत हित जानिके गिलेपेट पचि जाहिं १ ॥
 कवित्त ॥ समरमें लरयो जाइ गिरिहूते गिरयो जाइ गगनमें फिख्यो
 जाइ पावक को दहिवो । कानन में रह्यो जाइ व्यालकर गह्यो
 जाइ विरहहु सख्योजाइ और कहा कहिवो ॥ हलाहल पियोजाइ
 सरवस दियोजाइ परवत लियो जाइ वारिधि को वहिवो । और
 दुख याहूते जु दुमह कठिन ऐसो जैसो है विमुख संग एक
 छिनरहिवो २ ऐसो सत्संग मन में जानिवो ३ ॥

आयेवाहीठौरभौरआइतनभूमिगिख्यो गिख्योजलनैन
 सुरआरतपुकारीहै । भक्तिवशइयामजैसेकामबशकामी
 नरघायलागेछातीसोंजुसंगसोंपिटारीहै ॥ देखिपतिसासु
 आदिजगतविषादमित्यो वादिहीजनमगयोनेकुनसँभारी
 है । कियेसबभक्तहरिसाधुसेवामांझपगेजगेकोऊभागघर
 वधूयोपधारीहै २०१ ॥ भक्तनकेहेतुसुतविषदियोउभय
 वाईकीटीका ॥ भक्तनकेहेतुसुतविषदियो उभैवाईकथा
 सरसाईबातखोलिकैजताइये । भयोएकभूपताकेभगत
 अनेकआवै आयोभक्तभूपतासोंलगनलगाइये ॥ नित
 हीचलतएपैचलननदेतराजा बितयोबरषमांझकह्योभो

रजाइये । गई आशट्टितनछूटिवेकीरीतिभई लईयातपू
त्रिरानीसबैलैजनाइये २०२ ॥

आयोभक्त भूप ॥ श्लोक ॥ मदाश्रयाः कथामृष्टाः श्रुण्वन्ति कथ
यन्ति च ॥ तपन्ति त्रिविधास्तापानेतान्मद्गतचेतसः १ साधुमेवामं
कहालाभ ॥ तुलयामलवेनापिनस्वर्गनापुनर्भवम् ॥ भगवत्संगिसं
गस्यमर्त्यानां किमुताशेषः २ ॥ प्रथमे ॥ वासुदेवे भगवति भक्तियो
गः प्रयोजितः ॥ जनयत्याशुवैराग्यं ज्ञानं च यदहेतुकम् ३ तस्ये ॥
वासुदेवे भगवति भक्तिमुद्रहतांशुणाम् ॥ ज्ञानवैराग्यदीर्घाणां ने
ह कश्चिद्द्वयपाश्रयः ४ ॥

दियोसुतविषरानीजानीनृपजीवैनाहिं सन्तहैस्वतंत्र
सोतौइन्हैकैसैराखिये । भयेनिनभोरवधुशोरकरिरोइउठी
भोइगईरावलसेसुनीसाधुभाखिये ॥ खोलिडारीकटिपट
भौनमे प्रवेशकियो लियोदेखिबालककोनीलतनसाखियो
पूत्रयोभपतियासोंजुसांचकहिंकियोकहा कहीतुमचल्यौ
चाहौनेनअभिलाखिये २०३ छातीखोलिदोयेसन्तबोल
हूनआवैमुख सुखभयोभारीभक्तिरीतिकहुन्यारिये । जा
नीहूनजातिपातिजाकोसोविचारकहा अहोरससागरसो
सदाउरधारिये ॥ हरिगुणगाइसाखिसन्तनिबताइदियो
बालकजिवाइलागीठौरवहप्यारिये । संगकेपठाइदियेर
हेजेवेभीजेहियेबोलेआपजाउंजौनमारिकैविडारिये २०४
सुनौचित्तलाइकहीदूसरोसुहाइहिये जियेजगमाहिंजौलौ
सन्तसंगकीजिये । भक्तनृपएकसुताब्याहीसोअभक्तमहा
जाकेघरमांभजननामनहिलीजिये ॥ पल्योसाधुशीतसों
शरीरदृगरूपपले जीभचरणामृतकेस्वादहीसोंभीजिये ।

रह्यो कैसे जाइ अकुलाइन बस्याइ कछु आवै पुरप्यारे तब विष
सुत दीजिये २०५ ॥

जानीहू न जानिपाति ॥ कुंडलिया ॥ अगर कहे तादासपर तन
मनदी जैवारि । सोई नारिसुते वड़ी जाकी कोठी ज्वारि ॥ जाकी कोठी
ज्वारि जाहि यादबपति भावै । श्रवण सुनत हरिकथारसन गोवि-
दगुण गावै ॥ आंरज विदुपउदारसुमति सुकुलीनी सोई । हृदय
वसत हरि चरण जगत डारयो करि छोई १ ॥ दोहा ॥ यद्यपि
सुन्दर सुघर पुनि सगुनौ दीपक देह ॥ तऊ प्रकाश करै तितौ
भरिये जितौ सनेह २ ॥ एकादशे ॥ मखिङ्गमद्भक्तजनदर्शनस्पर्श
नार्चनम् ॥ परिचर्यास्तुतिप्रह्लागुणकर्मानुकीर्तनम् २ हरि गुणगात्रे
साखिसंतन ॥ आदिपुराणे ॥ मद्भक्तायत्रगच्छन्तितत्रगच्छामिपा
थित्व ॥ भक्तानामनुगच्छन्ति भुक्तयो मुक्तिभिः सह ४ ॥

आये पुरसंत आइ दासीने जनाइ कही सही कैसे जाति सु
त विषलै कै दियो है । गये वाके प्राणरोइ उठी किलकारि सब
भूमिगिरे आनिटक भयो जात हियो है ॥ बोली अकुलाइ एक
जीवेको उपाय जोपै कियो जाय पिता मेरेको उबार कियो है ।
कहै सोई करे दृगभरे लावो संतनिको कैसे होत संत पूछौ चरी
नाम लियो है २०६ चलीलै लिवाय चरी बोलियो सिखाइ
दियो देखि कै धरणि परी पांइ गहि लीजिये । कीनी चही सीति
दृगधरामानो प्रीतिसत करीयो प्रतीति गृहपावनको कीजि
ये ॥ चले सुखपाइ दासी आगेही जनाई जाहि आइ ठाढी पौरि
पांइ गहे मति भीजिये । कही हरेवाल भरे जानौ पिता मात भै
तौ अंगमें नमहात आजु प्राणवारि दीजिये २०७ रीझि गये
संत प्रीति देखि कै अनन्त कह्यो होइ गीजु वही सो प्रीति ज्ञातै जु
करी है । बालकनिहारि जानी विषनि रधारि दियो दियो चर

णामृत को प्राणसंज्ञाधरी है ॥ देखतविमुखजाइपाइतत
काललिये कियेतबशिष्यसाधुसेवामतिहरी है । ऐसेभूप
नारिपतिराखी सबसाखीजन रहै अभिलाषी तोषै देखो
यहघरी है २०८ ॥

दियोचरणामृत ॥ श्लोक ॥ अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाश
नम ॥ विष्णुपादोदकं पीत्वा शिरसाधारयाम्यहम् १ देवतानने कही
शुकदेव जी सों श्रीभागवत हमें देहु अमृत राजा परीक्षितको देहु
सो इन भागवत न दयोहै याते हरिको बालकको चरणामृतदियो ॥
दोहा ॥ धन्य सन्त जहँ जहँ फिरे तहँ तहँ करत निहाल ॥ चरणामृत
मुखडारिके फेरिजियायो बाल २ ॥ श्लोक ॥ वरं हुतवहज्जालापि
जरांतर्व्यवस्थितिः ॥ नासौश्रीविष्णुविमुखजनसंवासवैशसः ३ ॥

मूल ॥ आशयअगाधदोउभक्तको हरितोषनअतिशय
कियो ॥ रंगनाथको सदनकरनबहुबुद्धिविचारी । कपट
धर्मरचिजैनद्रव्यहितदेहविसारी ॥ हंसपकरनेकाजबधिक
बानोंधरिआये । तिलकदामकीसकुचजानितिहिआपवै
धाये ॥ सुतबाध्योहरिजनदेखिकैदकन्याआदरदियो ।
आशयअगाधदोउभक्तको हरितोषनअतिशयकियो ५२
टीका ॥ आशैसोअगाधदोउभक्तमामाभानजेकोदियोप्रभु
पोषताकीबातचितधारिये । घरतेनिकसिचलेबनकोविवेक
रूपमूरतिअनूपबिनमंदिरनिहारिये ॥ दक्षिणमें रंगनाथ
नामअभिरामजाको ताकोलैबनावैधामकामसबटारिये ।
धनकेयतनफिरैभूमिपैनपायोकहूं चहूंदिशिहरिदेख्यो
भयोसुखभारिये २०९ मंदिरसरावगीकोप्रतिमासोपार
सकी आरसनकियोवेदनहूबतायो है । पावैप्रभुसुखहम
नरकगयेतौकहा धरकनआईजाइकानलैफुकायोहै ॥ ऐसी

करीसेवाजासोंहरीमतिकेवराज्यों सेवरासमाजसबनीके
कैरिभायोहै । दियोसोंपिभारतबलेबेकोबिचारकरैहरैकौन
राहभेदराजनपैपायोहै २१० ॥

घरते निकसिचले ॥ कवित्त ॥ चाहैधन धाम वाम सुत अभि-
रामसुख कह्यो नाहीं नाहीं कछु सरत न काजहै । चतुरन आगे
कोटि चातुरी न काम आवै बातन बनाइ सुनि उपजत लाज
है ॥ जोपै कहीं सांच यामें भूठ न मिलाव नैकु तोपै श्वान से क्यों
कहूं रोक्यो गजराज है । वृन्दाबिन चाहै तौ न चाहै जीवतनहूंकौ
मनहूंकौ दूरि ऐसे मिलत समाज है ॥ वेदनूनहूं बंतावै ॥ श्लोक ॥
गजैरापीड्यमानोपि न गच्छेजैनमंदिरम् ॥ यावर्ननिववक्तव्या
कण्ठैःप्राणगतैरपि १ रंगनाथ ॥ कावेरीविरजातोय वैकुण्ठ रंगमं-
दिरम् ॥ प्रवासीदेवरंगेशःप्रत्यक्षपरमपदम् २ ॥

मामारहोभीतरऔरसोंमानजोहौ कलशभँवर
कलीहाथसोंफिरायोहै । जेवरलैफांसिदियोमूरतिसुखैचि
लईऔरवारबहुआपनीकैचदिआयोहै ॥ कियोहोजोद्वार
तामैफूलितनफांसिबैठ्योअति सुखपाइतबबोलिकैसुनायो
है । काटिलेबोशीशईशवेषकीननिंदाकरै भरैअंकवारिम
नकीजियोसवायोहै २११ काटिलियोशीशईशइच्छाको
बिचारकियोजियोनहींजाततऊचाहमतिपागीहै । जोपैत
नत्यागकरोकैसेआशसिंधुतरौवाहीऔरआयो तहांनीम
खुदीलागीहै ॥ भयोशोकभारीहमैहैगईअवारीकाहूऔर
नैबिचारीदेखैवहीबडभागीहै । भरिअंकवारिमिलेमंदिर
सँवारिभिले खिलेसुखपाइनैनजानेसोईरागीहै २१२
काढीभयो राजाकियोयतनअनेकएपै एकहूनलागैकह्यो
ईसनिमगाइये । अधिकबुलायकहीबेगिहीउपायकरौ जहां

तहांढूंढिअहो इहांलगिलाइये ॥ कैसेकरिलावैवैतोरहैमा
नसरमांभलावौगेछुटौगेतबजनेचारि जाइये । देखतहि
उडिजातजातिकोपिछानिलेत साधुसोनडरैजानिवेषले
बनाइये २१३ ॥

आमारह्यो भीतर ॥ दोहा ॥ साधु कती अरु शूरमा ज्ञानी अरु
गजदंत ॥ येतेनिकलि न वाहुरै जो युगजाहि अनंत १ ॥ श्लोक ॥
स्वर्गापवर्गनरकेष्वपितुल्यार्थदर्शिनः ॥ सर्वधर्मान्परित्यज्यमाने
कंशरणं व्रजेति २ अथेवहिःशृष्टेभानुः सायंचिब्रुकसमर्पितजानुः ॥
करतलभिक्षा तरुतलवातस्तदपिनसुंचत्याज्ञापाशम् ३ ॥ दोहा ॥
जौन युगति पिय मिलनकी धूरि मुक्ति मुख दीन ॥ जो लहिये
संग सजन तौ धरकनरकहू दीन ४ ईश इच्छा भली करी ॥
यद्यद्वाञ्छतिमद्भक्तः ॥ इनकही मुँह कैसे दिखावैगे सेवराके चेला
भये याते काठ्यो प्रथम पाप पुण्य भोगे ऐसे औषध ऋषीन
व्यवहार कलि ये वैद पसारी ऐसे कोढ़ी भयो खर कुत्ता नहीं भले
मनुष्य पै हे ॥

गये जहांहंसमंतबानोमोप्रशंसदेखि जानिकेवंध्यायेरा
जापासलेकैआये हैं । मानिमतिमारप्रभुवैद्यकोस्वरूपधा
रिपुंनिकैवजारलोगभूगढगलाये हैं ॥ काहेकोमैगायेपक्षी
आलीहमदेहकरै छाडिदीजेइन्हें कहीनीठिकारिपाये हैं ।
औषधीपिसाई अंगअंगनिमिलाइकियेनीकेसुखपाइकही
उनकोछुड़ाये हैं २१४ ॥

जानिकेवंध्याये ॥ दोहा ॥ हंस कहै सुनि हंसिनो सुनो पुरा-
तम साखि ॥ वधिकभेद जाने नहीं पतिवानैकीराखि १ वैद्यको ॥
कवित्त ॥ तपत हजूरहै हरौल औ चंडौल कफ मूलहूल हल-
कारा काहली विचारिये । कोटकोतवालको तो दादहै दिवानफा-
रा फौजदार पिचीपदचरन हंकारिये ॥ तिजारी तापतिह्यी संग्रही

सेठमानिलेहु खईखाज खांसी राजपतनी निहारियो। शीतअती-
सार युग मंत्री विष्म बादशाहि भाजि वैदराज आयो सेना
लिये भारिये २ आइ मनजनके जनून बड़ीनून सेती भूनि डारै
रोग अरु आमल वैठायो है । अरक फरकसेतो प्यादिनके यूथ
बहु चूरण चतुर चाबदार मनभायो है ॥ गोली किधौ गोला काथ
कटक भुशुण्डी मानौ उसन सलिल शीत बातको नशायो है ।
अंजन सुगन्ध लेप मर्दन कराइ पुनि सेन चतुरंग सजि वैदराज
आयो है ३ ॥ छप्यै नारद शुक सदबैद प्रथ भागवत बतवै करै सत-
संग जब वृत्तिकुपथ होने नहि पावै ॥ औषधनवधाभक्ति यतनप्रभु
को आचारा । चरणामृत करिकाथ हरै सो सकल बिकारा ॥ संत
चरण रजधोइ तौइमारौ करि दीजे । पथदे महाप्रसाद अन्न रस-
ना नहि लीजे ॥ तब त्रिगुण दोष चौरासिही जनम मरणकोठहि
हरै । तत्त्ववेत्ता तीनहुँ लोकमें फिरि न रोग तिहि संचरै ४ ॥

लेवो भूमिगांव बलिजांवयादयालुताकी भागभालजा
केताको दर्शन दीजिये । पायोहम सबअवकरोहरिसाधु
भेवामानुषजनमजाकीसफलताकीजिये ॥ करिलैनिदेश
देशभक्तिविसतारमईहंसहितसारजानिहियेधरिलीजिये ।
बधिकनजानीजासोखगनिप्रतीतिकीनी ऐसोवेषछाड़िये
नराख्योमतिभीजिये २१५ महाजनसदावर्तीकीटीका ॥
महाजनसुनोसदाव्रतीताकोभक्तपन मनमें विचार सेवा
कीजैचितलाइकै । आवतअनेकसाधुनिपटअगाधमति
साधलेतजैसेअवेसुबुधिमिलाइकै ॥ संतसुखमानिरहिग
योघरमांभसदा सुतसोसनेहनितखेलेसंगजाइकै । इ
च्छामगवानमुख्यसोनलोभजानि मारिडाख्यो धूरिगाड़ि
ग्रहआयोपछिताइकै २१६ देखैमहतारीमगवेटाकहार
ह्योपगित्रीतेचारियामतउधामनेनआयोहै। फेरीनृपडौड़ी

जाकेसंतसंगआयलौंड़ी कह्यो योंपुकारिसुत कौने बिर
मायो है ॥ बेगिदेवताइदीजेआभरणदियो लीजैकहीसो
सँन्यासीयहमाख्योमनलायो है । दईलैदिखाइदेहबोल्या
याकोगहिलेहुयाहीनेहमारोपुत्रमाख्योनीकेपायोहै २१७॥

हिये ॥ श्लोक ॥ आराधनानांसर्वेषांविष्णोराराधनंपरम् ॥
तस्मात्परतरंदेवितदीयानांसमर्चनम् १ भक्तेतुष्टेहरिस्तुष्येद्धरौतुष्टे
चदेवताः॥भवंतिसिक्ताःशाखाश्चतरोर्मूलनिषेचनात् २ आरंभगुर्वी
क्षयिणीक्रमेणलघ्वीपुरावृद्धिमतीचपश्चात् ॥ दिनस्यपूर्वाद्धपरार्द्ध
भिन्नाह्यायेवमैत्रीखलसज्जनानाम् ३ मनमें विचार ॥ नवमे ॥ मन
एवमनुष्याणांकारणबंधमोक्षयोः ४ चितलाइके ॥ कर नहीं तौ भक्ति
डिगिजाइ जैसे पाधर चढ़ावते तौ बड़ी वेरचढ़े चितविना नेक
में गिरिपरे है ५ साधुलेत अनेक प्रकारके साधु आवे हैं ॥ जिन
में न्यारी न्यारी क्रिया महादेवकीसी रीतिजानौ ६ ॥

बोल्याअकुलाइमेंतौदियोहैवताइ सोकोदेवौजुछुड़ाइ
नहींझूठकछुभाखिये । लेवौमतिनामसाधुजोउपाधिमेठ्यो
चाहौजावौउठिऔरकहूंमानिछोरिनाखिये ॥ आइकेविचार
क्रियोजानीसकुचायोहियो बोलिउठीतियासुतदेके नीके
राखिये । पखोबधूपाइतेरोलीजियेबुलाइ पुत्रशोकको
मिटाइऔरखरीअभिलाखिये २१८ बोलिलियोसंतसुता
कीजियेजुअंगीकारदुखसो अपारकाहूबिमुखकोदीजिये ।
बोल्यामुरझाइमेंतौ माख्योसुतहाइमोपैजियेहूनजाइ मेरो
नामनहींलीजिये ॥ देखौसाधुताइधरीशीशपैबुराईइनर
तीहूनहोसकियोमेरुसमरीझिये । दईबेटीब्याहिकहिमेरो
उरदाहमिटोकीजियेनिबाहजगमाहिंजौलौंजीजिये २१९
आयेगुरुघरसुनिदीजैकौनसरिबड़े संतसुखदाईसाधुसेवा

लेबताई है । कह्यो सुत कहाँ अजू पायो सुत कैसी भाँतिकहि
को बखाने जगमीचुलपटाई है ॥ प्रभुने परीक्षालई सोईहमें
आज्ञादई चलिये दिखावौ जहां देहको जराई है । गयोवाही
ठौर शिरमौर हरि ध्यान कियो जियो चलो आयो दास कीर
तिवड़ाई है २२० मूल ॥ चारों युग चतुर्भुज सदा भक्त
गिरासांची करन ॥ दारु भई तरवारिसारु मयरची भुवनकी ।
देवाहितसितकेशप्रतिज्ञाराखीजनकी ॥ कमध्वजके कपि
चारुचितापरकाष्ठ लाये । जैमलके युधमाहिं अश्वचढि
आपहि धाये ॥ घृतसहितमें सभई चौगुणी श्रीधरसंग शाय
रुधरना चारों युग चतुर्भुज सदा भक्त गिरासांची करन ५३ ॥

लेवोमति नाम साधु ॥ कुंडलिया ॥ आन उपासक रामबिनु
अगर सुपेसीरीति । भुस ऊपरको लीपनो अरु वारू की भीति ॥
अरु वारूकी भीति भूनकी मनो मिठाई । बाजीगरको बाग स्वप्नमें
नवनिधिपाई ॥ अजअस्तन ज्यों कंठ तुच्छ बादरकी छाया । पूरब
वस्तु विसारि पछिमदिशि दूंदन धाया ॥ कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तु
समर्थः ॥ ऐसे प्रीतिमें अवगुण दीखे जैसे मजनू की सहनकफोरी
जब नाच्यो १ ॥

भुवनचौहानकी टीका ॥ सुनोकलिकालवात औरहै
पुराणख्यात भुवन चौहानजहारानाकी दुहाई है । पद्मयु
गलाखखातसेवाअभिलाषसाधुचल्योई शिकारनृपभीर
संगधाई है ॥ मृगीपाछे परेकरे टुकहतिज्ञानभये आइगई
दयाकहीकाहेकोलगाई है । कहैमोको भक्तक्रियाकरों में
अभक्तनिकी दारुतरवारिधरोंयहैमनभाईहै २२१ ॥

सुनो कलिकालहै तीन युगनमें तो पुराणनमें विख्यातहै

सतयुगमें तो ध्रुव त्रेतामें प्रह्लाद हैं दूसरो दास राजा रामाश्वमेध
में कथा है द्वापरमें भीष्मपितामह अरु द्रौपदी तीन युगनमें हरि
प्रकट दर्शन देते कलियुगमें तो जीव लगौहैं याते कलियुग के
जीव अधिकारी नहीं शून्य हैं सो नहीं और युगनमें वरदेके छुटि
जाते दश दश हजार वर्ष तप करिके श्री धनमाल सांगते सोहैं
छुटिते और ये कलियुग के जीव तनकहू दर्शन देहैंतो चिपटि
जाहिं क्योकि गोपिनने द्वापर में कृष्ण देखिके घर छोड़िहैं कलिक
जीव कागज देखिके घर छोड़िदेहैं फिर घरको मुख न देखें गोपीतौ
घरहूको आई १ ॥ कवित्त ॥ रसिकप्रवीणनिकी कविताई नाना
भांति गाई रसस्वादही सों ह्योति सफलई है । यहै जानि मोह-
नजु भोग भोगता वनाये आये चलेधुरिही सों सवनिजनाई है ॥
त्रियुग प्रकट रूपदेखे नित नैनन सों वैनमें स्वरूप लखि होति
अधिकई है । काल कलिकालके लगौहैं ये रसाल जीव छोड़िहैं
न क्योहूं हरि मूरति छिपाईई २ ये वागीमें साक्षात् मूरतिही
देखै है अधिकई तो येईहैं याते प्रकट दर्शन नहीं देहैंहरि ३ कृ-
पा ॥ श्लोक ॥ वैष्णवानां त्रयं कर्म दया जीवेषु नारद ॥ श्रीगोविन्दे
पराभक्तिस्तदीयानां समर्चनम् ४ ॥

और एक भाई ताने देखी तरवारिदारुसक्यो नसंभारिजा
इरानाको जनाईहै । नृपन प्रतीत करै करै यहसौं हनानाबानो
प्रभु देखिते जवातन चलाईहै ॥ ऐसेही वरष एक कहत व्यती
त भयो कहैं मोहिं मारि डारो जो पैमै बनाईहै । करी गोटकुंड
जाइ पाइके प्रसाद बैठे । प्रथमनिकासि आपसवनदिखाईहै
२२२ क्रमसोनिहारिकही भुवनविचारिकहा कह्यो चाहैदा
रुमुखनिकसतसारहै । काढिकेदिखाइमानो बीजुरीचम
चमाइ आई मनमां भुनोलेवाको मारोभारहै ॥ भक्तकरजो
रिकैवचायो अजुमारिये क्यो कहीवान भूठनहीं करी करता

रहै । पट्टाढूनाढूनपावोआवोमतिमुजराकोमैंहीधरआऊं
होइमेरोनिसतारहै २२३ ॥

नारिडारिये ॥ एतेसत्पुरुषाःपरार्थवटकाः स्वार्थं परित्यज्यते
सामान्यास्तुपरार्थलुच्यममृतःस्वार्थाविरोधेनये ॥ तेऽमीमानुषरा
क्षसाःपरहितं स्वार्थायनिघ्नन्तिये येनिघ्नन्तिनिरर्थकंपरहितंतेकेन
जानीमहे १ ॥ कविसु ॥ तजि स्वारथहू परमारथको चितदैके सु-
धारत दैवतते । अरु स्वारथहू परमारथहू चितदैके सभारत मानुष
ते ॥ परमारथ को तजि स्वारथको चितदैके सुधारत राक्षसते ।
निजस्वारथहू परमारथहू चितदैके विगारत जानौ व ते २ अरिह्व ॥
भइतला यागौ टजुरे जाहि चक्रवे । परचौतीजे आजु खाइद्वे
लप्यये ॥ परमेस्वर पतिराखी वात नहिं कहनकी । विजुली ज्यो
तरवारि चमकी भुवनकी ३ ॥

रूपचतुर्भुजकेपंडाकीटीका ॥ दर्शनआयोराणारूपच
तुर्भुजजुकेरहेप्रभुपौढिहारशीशालपटायेहैं । बेगिदेउतारि
करिलैकैगरेडारिदियोदेखिबारकहेधौरोधौरेयेइ आयेहैं ॥
कहततोकहिगईसहीनहींजातिअब महीपति डारीमारिह
रिपदध्यायेहैं । अहोहृषीकेशकरौमेरेलियेसेतकेशलेशहू
नभक्तिकहीकियेदेखौछायेहैं २२४ मानिराजात्रासदुखरा
शिसिधुबडौहुतौतुनिकैमिठासबाणीमानो फेरि जियोहै ।
देखिसेतवारजानीकृपामोअपारकरी भरीआंखिनारसेवा
लेशमैनकियोहै ॥ बडेईदयालसदाभक्तप्रतिपालकरैमैंतौ
हैंअभक्तऐयेहियोसकुचियो है । भूठेसनबंधहूतेनामली
जेमेरोहीजूतातेसुखसाजैयहदरशाइदियोहै २२५ आयो
भोररानासेतवारसोनिहारिरहे केशकाहूऔरके लैपंडाने
लगाये हैं । ऐंचिलियोएकतमैंलैचिकैचदाईनाकरुधिर

की धारानृप अंग छिर काये हैं ॥ गिखो भूमि मुच्छा द्वै कै तन की
न सुधिक छु जाग्यो या मबी ते अपराध को टिगाये हैं । यह
अब दंड राज बैठे सोन आवै इहां अब या हूं ध्यान मानिकरै जे
सिखाये हैं २२६ ॥

हरपद ध्याइये ॥ कुंडलिया ॥ अगर आसरो और तजि रामनाम
हृदसीव । खटिया टूट्यो सरन भुजा भंगन भये थीव ॥ भुजा भ-
गन भये थीव दंड यमराज धरैगो । तहां धराहर और रामविन
कौन करैगो ॥ मात तात सुत सुता प्रीय परिजन कहि चारो ।
सबसों परयो विछोह सुदिन हरिनाम सँभारो १ अहो हृपी केश ॥
गीतायाम् ॥ थंत्रस्य गुणदोषत्वं क्षमस्व पुरुषोत्तम ॥ अहं यंत्रं भवान्
यंत्री न मे दोषो न मे गुणः २ भूँटे सन्वन्ध ॥ दोहा ॥ परसा झूठे भक्त
को हरि राखत सनमान ॥ जैसे प्रोहित कुपढ़ को देत दान यजमा-
न ३ खरौ खरौ सब लेत है परखि पारखी सार ॥ खोटे दास अनन्य
के गाहक नंदकुमार ४ मन बुद्धि चित्त अहंकार सो इनके प्रेरक
नंदकुमार ५ ॥

भये चारि भाई करे चाकरी वेरानाजूकी । तामें एक भक्तिक
रै बन में बसेरो है । आइकै प्रसाद खावै फेरि उठि जाइत हांक है
नेकु चलोतौ महीनाली जैतेरो है ॥ जाके हम चाकर है रहत
हजूर सदा मरैतौ जरावै कौन वही जाको चरो है । छुट्यो तन
बनराम आज्ञा हनुमान आये कियो दाग धूवांला गि प्रेत पार
नेरो है २२७ ॥

एक भक्ति ॥ श्लोक ॥ तुल्यं भूतिजन्म तुल्यं मुभयोस्तुल्यं च मू-
ल्यं च पुस्तुल्यं दार्ढ्यं मुदप्रदं कखननं तुल्यं च पाषाणयोः ॥ एकं स्वास्त्रि-
लवं दनाय विधिना देवत्वमारोपितं तद्द्वारे विहिता परस्परपदाघाता-
स्पदं देहली १ ॥ दोहा ॥ ज्ञाति गोत सब परिहरे प्रभुसेवाकी
आस ॥ रंक हरिहिको हैर है सो कहिये निजदास २ जाके हम

चाकर हैं ॥ सबैया ॥ जिनके चिरदै पतितैं अतिपावनहै वचनै
 इमि छंदनके । सुबड़ेइ कृपाल बड़ेइ दयाल बड़े गुण दुःखनिकं-
 दनके ॥ कत्रि सूरति जे शरणागतपालहै दायक सुख अनंदन
 के । किरपालबड़े करुणाकरहै हम चाकरहैं रघुनंदनके ३ नरन
 की करै सेव बड़े अहमद भेव पाछे काम क्रोध लोभ मोह अधि-
 कात है । तासों जीव हिंसा भ्रूठ निंदा आदि कर्म है है ताहीके
 कुसंग नर दुःख दरशातहै ॥ मेरेजान बीज सब दोषनि को चा-
 करीहै सोई ताहि भावै मद अंध उतपातहै । पूजा परमेश्वरकी
 परिहरै पुण्य पाप जैसे पौन परसेते पात उडिजातहै ४ नेक सुजरा
 करिआव ॥ गीतायाम् ॥ मन्मनाभवमद्भक्तो मद्याजीमानमस्कुरु ॥
 मामेवैष्यसितत्यंते प्रतिजानेप्रियोसिमे ५ ॥ सबैया ॥ होहुनिचित
 करैमतिचिततु चोचेंदईसोईचितकरैगो । पांडपसारिपरयोरहिंसो
 इतूपेटादियोसोइपेटभरैगो ॥ जीवजितेजलकेथलकेपुनिपाहनमेंप-
 हुं चाइधरैगो । भूखहिभूखपुकारतुहैनरतु कहँसुन्दरभूखभरैगो ६ ॥
 दोवैछंद ॥ सोखालीक्योरहिंसीसतौ गलौगुपालबनायो । पांचम-
 हीनापीछेजनम्यो दूधअंगाऊआयो ॥ निरधनकेघरचाकीहोतीअन्न
 कहूँनहिंदीसे । ताहूको हरि त्रिमुख न राखें आनिपरोसिनिपीसे ॥
 कृष्णायहवरजातवतायो धिकमनमाहींवहिंसी ॥ यहतौगलौगुपाल
 बनायो सोखालीक्योरहिंसी ७ पद ॥ नारदजीमेरेसाधतेअन्तरना-
 हीं । जोमेरेसाधतेअंतरराखे तेउनरकमेंजाहीं ॥ जहँजनजैहैतहँमें
 जेवो जहँसोवेतहँसोऊं । जोकहुँभरोभक्तदुखपावै कोटियतनकरि
 खोऊं ॥ पाइँदिये चलिवे फिरिवेकहँ हाथ दिये हरिकर्मकमायो ।
 कान दिये सुनिये हरिको यश नैन दिये हरि दर्श दिखायो ॥
 नासिका दीनी उतीरज सूंघन जीभदई हरिको यश गायो । ये
 सब साज दिये अतिसुन्दर पेटादियो किधौं पाप लगायो ८ पांडव
 गीतायाम् ॥ भोजनेछादनेचिन्तां वृथाकुर्वतिवैष्णवाः ॥ योस्तौविश्व
 भ्रमरोदेवः सर्किंभक्तानुपेक्षत ९ हाथ हलाये बिनतौ पंखाहू न पवन
 देहै हाथतौ हलायोई चाहिये यतन ॥ करि खाऊं ॥ लक्ष्मी मेरी

अर्द्ध शरीरी हरिदासनकी दासी । सब तीरथ दासनिके चरणत
कोटि गंग अरु कांती ॥ जहँ जहँ भेरो हरियज्ञ गावै तेंही कियो
मैं वासा । आगे साधु पाछे उठि धाऊं मोहिं भक्तकी आसा ॥
सन वच क्रम करि हिरदे राखै सोइ परमपद पावै । कहत कवीर
साधुकी महिमा हरि अपने सुखगावै १० हरि अरु हरिजन एक
समाना । खोजिलेहु सब वेदपुराणा ॥ याते सबुहीं संसाररूपी
मायाते छुटावे अरु हरिकी भक्तिको बढ़ावे हरिमारगु लगवै ॥

मेरैतौप्रथमवासजैमलनृपतिताको सेवाअनुरागनेकु
खटकौनभावई । करैघरीदशतामेंकोऊजोखवरिदेतलेत
नाहिकानऔरठौरमरवावई ॥ हुतौएकभाईवैरीभेदयह
पाइलियोकियोआनिघेरोमाताजाइकेसुनावई । करैहरि
भलीप्रभुघोराअसवारभये मारीफौजसबैकहैलोगसचुपा
वई २२८ देखैहाफेघोराअहोकौनअसवारभयोआगेजवे
देखौ कहीवहीवैरीपरयोहै । बोल्योसुखप्राइअजुसांवरोसि
पाईकोहै अकेलेहीफौजमारीमेरोमनइरयोहै ॥ तोहींकोदि
खाइदईमेरेतरफतनैन बैननिसोजानी वहीश्यामप्रभुट
ख्यहै । पूछिकेपदाइदियोदानेपमयहलियोकियोइनहुःख
करैभलीबुरोकियो है २२९ ॥

खटकौन भावई ॥ गीतायाम् ॥ चंचलं हिमनः कृष्णप्रमाथिवल
वद्दृढम् ॥ तस्याहंनिग्रहमन्ये वायोरिवतुदुष्करम् १ ॥ कवित्त ॥
छिनमें प्रवीन छिन मायामें मलीन पुनि छिनमें है दीन छिनमाहिं
जैतो शक्रहै । लिये दौरि धूप छिन छिनमें अनन्तरूप कोलाहल
ठानत मथानकैसो तकहै ॥ नटकोतो थार कियो हारहै रहटको
सो धाराकोसो भँवर कुम्हार कोसो चक्रहै । ऐसो मन भ्रामक
सो अब कैरे थिगहोत आदिहीको चंचल अनादिहीको वक्रहै २ ॥
श्लोक ॥ यत्रयोपेद्वरः कृष्णो यत्रयार्थोऽधनुर्हरः ॥ तत्रश्रीविजया

भूतिध्रुवानीतिर्मतिर्मम ३ पूछिके पठाइ दियो ॥ कवित्त ॥ काहे
का कपूर चरि चन्दनभे सानतहौ काहेको गुलाबनिको कीजत
पतनुहै । कहै ऊयो रामराग औरेलन औरैठठै दौरे कहा होत यहां
जारत अतनुहै ॥ वैई तरुणी बरुणी वैई सुई लालडोरे उनही के
टांकेहोत दुखको हतनुहै । छांडि देव पापिनिको दूरिकै चवाइनि
को आंखिनके घाइनिको आंखेही यतनुहै ४ ॥

भयोएकगवाल साधुसेवासोरसाळकरै परैजोईहाथले
कैसंतनखचावही । पायोपकवानवनमध्यगोखचाइबेको
आइबेकीठील चोरभैसिमोचुरावही ॥ जानिकेछिपाईवात
मातासावनाइकही दईविप्रभूखेघृतसंगफिरिआवही ।
दिनहोदिवारीको सोउनबहरायोहांस आईघरजामलिये
रांभिकैमुनावही २३० भागवतटीकाकरिश्रीधरसुजानि
लेहु गृहमेंरहनकरैजगतव्याहारहै । चलेजातमगठगभि
लेकहेकौनसंगसंगरघुनाथमेरोजीवनअधारहै ॥ जानिइन
कोईनाहिं मापिबोउपावकरैधरेचापदाणआवैवहीसुकुदार
है । आयेघरलायेपूत्रैश्यामसोस्वरूपकहां जानिवेतौपार
कियेआपडाख्योभारहै २३१ ॥ मूल ॥ नितभक्तनसंग
भगवानज्योगऊबच्छगोहनफिरे ॥ निष्किचनइकदास
तासुकेहरिजनआये । विदितबटोहीरूपभये हरिआपलु
टाये ॥ साखिदेनकोश्यामखुदइहांप्रभुद्विप्रधारे । रामदास
केसदनराइरनछोरसिधारे ॥ आयुधत्रातनतनअनुगके
बलिवंधनअपुवपुधरे । नितभक्तनसंगभगवानज्योगऊब
च्छगोहनफिरे ५४ ॥

आईधर ॥ दोहा ॥ छल करि बलकरि बुद्धि करि साधनके

मुख देहिं ॥ हुण्डीकेसे दामको हरिजु सों गनिलेहिं १ ॥ धरेचाप
बाण ॥ कोटि विघन शिरपररहे कोटि दुष्टको साथ ॥ तुलसी कळू
ने करिभकैं जो सहाय रघुनाथ २ गोहन फिरै ॥ ब्रह्मवैवर्ते ॥ भक्त
संगेभ्रमत्येव छायेवसततंहरिः ॥ चक्रेणरक्षतेभक्तान् भक्त्याभक्त
जनप्रियः ३ कृष्णकृष्णेतिकृष्णेति यत्रयातिजपन्नरः ॥ पश्चान्म
द्गमनंपार्थ सत्यंसत्यंवदान्यहम् ४ ॥

टीका ॥ भक्तनकेसंगभगवानऐसेफिख्योकरैजेसेवच्छ
संगफिरैनेहवतीगाई है । हरिपालनामविप्रधाममेंजनम
लियोकियोअनुरागसाधुदर्श्रीलुटाईहै ॥ केतिकहजारले
बजारकेकरजत्राये गरजनसरैकियोचोरीको उपाई है ।
त्रिमुखकोलेत हरिदासकोनदेतदुख आये घरसंततिया
संगवतराई है २३२ बैठेकृष्णरुक्मिणीमहलनतहांशोच
पख्योहख्योमनसाधुसेवासाहरूपकियो है । पूछिचलैकहा
कहीभक्तहैहमारोएकमैंहूंआऊंआवोआयेजहांपूछिलियो
है ॥ अजूमगचलयोजातबड़ोउतपातमध्यकोऊ पहुँचाइ
देवोलैरुपइयादियोहै । करौसमाधानसंतमैलिवाइजाउ
इन्हैजाइबनमांभदेखिबहुधनजियो है २३३ देखिजो
निहारिमालातिलकनसदाचारहोहिंगे भंडारघनजोपैइ
तौलायो है । लीजियेछिनाइयेहीवारकहेडारिदेवौदियो
सबडारिछलाछिगुनीमेंछायोहै ॥ अंगुरीमरोरिकहीबड़ात
कठोरअहोतोको कैसेछाड़ौंसंतजबैमोकोभायो है । प्रकट
दिखायोरूपसुन्दरअनूपवह मेरोभक्तभूपलैकैछातीसौल
गायो है २३४ ॥

चोरीको उपाव ॥ श्लोक ॥ वैष्णवोबंधुसत्कृत्ये । विजयरथ
कुटुम्बे ॥ बैठेकृष्णरुक्मिणीमहल ॥ वर्जयित्वा महाराज श्रीमद्भगव

दालवम् १ हरयोमनसाधुसेवा ॥ साधवो हृदयमह्यं साधूनां हृदयं
त्वहम् ॥ मदन्वतेन जानंति नाहन्तेभ्यो मनांगपि २ कोउं पहुँचावै
बिमुख को लेत बनिया है कै चोरी करी वह वैष्णव निकस्यो पि-
छोरी लैके भज्यौ द्वै सपड़या मेरे सारेको विवाह है आजु पहुँचाना
देखै जो निहारि जानी के सरावगी बनिया है ३ ॥

गौड़देशबासीउभै विप्रताकी कथासुनों एकवैसवृद्ध
जातिवृद्धछोटोसंगहै । औरऔरठौरफिरिआयेफिरिवृन्दा
वनतनभयोदुखीकीनीटहलअभंगहै ॥ रीभयोबड़ोद्विज
निजसुतातोकोदई अहोरहोनहीं चाहौंमेरेलईबिनैरंगहै ।
साखीदैगुपालअवबातप्रतिपालकरो ठरोकुलग्रामभाम
पुंझौसोप्रसंगहै २३५ बोल्योछोटोविप्रक्षिप्रदीजियेकही
जोबाततियासुतकहैअहोसुतायाकेयोगहै । द्विजकहैना
हींकैसेकरौंमैंतौदेनकहींकहींकहींभूलिगयोबिथाको प्रयो
गहै ॥ भईसभाभारीपुंछेसाखीनरनारी श्रीगुपालवनवारी
औरकौनतुच्छलोगहै । लावोजलिवाइजोपैसाखीभरैआइ
तोपैब्याहिबेटीदीजैकरोसुखभोगहै २३६ ॥

फिरिआयेवन ॥ पद ॥ ब्रजभूमि मोहनी मैं जानी । मोहन
कुंजमोहन वृन्दावन मोहन यमुनापानी ॥ मोहननारि सकल
गोकुलकी बोलत अमृतवानी । जैश्रीभटकेप्रभु मोहन नागर
मोहन राधारानी ॥ ब्रज १ ॥ वृन्दावनरजोबन्दे यत्रास्तेकोटिवैष्ण
वः २ ॥ कवित्त ॥ कालिंदी के तीर ड्रुमडार भुकिनीरआई त्रि-
विध समीरबहै गहै मतिमनकी । कुंजकुंजकुंजनमें बोलत मधुप
माते आवत सरसगन्ध माधुरी सुमनकी ॥ राधेकृष्ण नाम धुनि
छाड़रही जहां तहां कही न परत शोभा पुलिन अवनकी । देखि
देखिरहे फूलि सुधिबुधि भूलि भूलि ठौरठौर राखे वृन्दावन वृन्दा-

वनकी ३ ॥ वन्दौ श्रीवृन्दावन धाम । ब्रह्मादिक दुर्लभ ति वही को
 देत तुच्छ जीवन विश्राम ॥ उद्धवसे हरि प्रीतम चाहत गुल्मजन्म
 लाग्यौ अभिराम । बलिबलिजाइ कृपानिधि मोको लाइ लड़ा-
 वत आठौयाम ॥ यही रीति रानी श्रीराधा नहीं विचार रूप गुण
 धाम । पाइ निलाल भालवेंदीवई भोडरपिय लखिरी कत रयाम ४ ॥
 श्लोक ॥ वाराणस्या विशालाक्षी विमला पुरुषोत्तने ॥ लक्ष्मिणी द्वा
 रकाथा तुराधा वृन्दावने वने ५ ॥ छप्पै ॥ सधन कुंज अलिबुंज पवन तई
 त्रिविध सुहाई । रतन जटित अचनी अनूप यमुना वहि आई ॥
 छरितुकोक संगीत रागरागिनि सखि रतिपति । सब सुखराज
 समाज सहज सेवत अति नितप्रति ॥ शृंगारहास्य रसप्रसहै काल
 कर्मगुन कलु न डर । दंपति बिहार गोविंद सरस जै जै वृन्दाविपिन
 वर ६ ॥ कवित्त ॥ ब्रह्माके कसंडलते गिरिजा प्रचंडनते शिवजटा
 मंडनते धारा यों वहति है । तीनों लोक पावनको आपदा नशा-
 वनको जाके गुणगावनको वाणी यों चहति है ॥ कहै कविराइ सुर
 असुरहु पूजै जाहि सुरधुनी कहे दुःख पाप न रहत है । यमुनाजी
 की महिमा याते नहीं कही परै गंगापगपानी ताकी पटरानी कहत
 है ७ ॥ कवित्त ॥ रसिबो बसिबो वृन्दावन को हंसिबो मिलि
 संतन में रहिये । पढ़िबो गुनिबो नित राम तदा सुख सों लहि
 जो जितनौ चहिये ॥ जहि योगी यती हिय ध्यान धरै जगजीवनि
 भाग बढ़ौ लहिये । अमुना मिटिजाइ सदै जियकी यमुना यमुना
 यमुना कहिये ८ ॥ कवित्त ॥ यमुना सुभगतीर कुंजसुखपुंजभीर
 मोर पिक कीर धुनि भांति भांति हेरी है । फूली हुम डारै गुंज
 मधुप बिहारै प्यारी प्रीतम निहारै अखिं चहुंदिशि हेरी है ॥
 पुलिन प्रकाश रास विविध त्रिलास जहां बढ़त हुलाल बात बीते
 होति भेरी है । कैसो यहधाम अभिराम वृन्दावन नाम ऐसी
 छवि हेरीपरी रोमरोम भेरी है ९ ॥ दोहा ॥ उपमा वृन्दाविपिन
 की कहिंघौं दीजै काहि ॥ कोटि कोटि बैकुण्ठ रतिहि सम कहे
 न जाहि १० ॥

आयोवृन्दावनवनवासीश्रीगुपालजूसों बोल्योचलो
साखीदेवलईहै लिखाइकै । बतिकैऊयामतवकह्योश्याम
सुंदरजुप्रतिमानचलैतौपैबोल्योक्योंजुभाइकै ॥ लागेजब
संगयुगसेरभोगधखोरंग आधेआधपावैचल्यो नपुरब
जाइकै । धुनितरेकानपरैपाखेजनिडीठिकरै करैरहौवाही
ठौरकहीभैसुनायकै ॥ गयेढिगग्रामकही नेकुतौचित्ताउर
हैचितयेतेठाढेदियोमृदुमुसुकाइकै । लावौजाबुलाइकही
आइदेखौआयेआपसुनतही चोँकिसबग्रामआयोधाइकै ॥
बोलिकैसुनाईसाखपूजीहियेअभिलाख लाखलाखभांति
रंगभख्योउरभाइकै । आयोनसरूपफेरिबिनैकरिराख्यो
घेरिभूपसुखढेरिदियो अवलौबजाइकै २३७ ॥

सुखढेरिदियो ॥ कवित्ता ॥ लागीजबआश तबउतरयो अकाशहूँते
सिंधुजलयंत्र रसचीन्होपानकीन्होहै । देख्यो हितसार वाकोउदर
विदारि कढ़यो चढ़यो मोलभारी वाससंपुटनिलीन्होहै ॥ चाहत
किशोरभ्रम्यो दशदिशिओर लग्यो ब्रजचितचोर जियवारि फेरि
दीन्होहै । उरके सुलाक मोती नासिका बुलाकभयोवडोई चलाक
मोहिं लाकमन कीन्होहै १ वदनसुराही में छबीलो छविछातौमद
अधरपियालाक्षणक्षणमें गहतुहै । अलसाइकै पौढत कपोलपर्यंक
पर कवहंगजकजानि भषनचहतुहै ॥ प्रेमनगसाथी येतौ सदाई
अशंकभरि छोडैरहत कोऊकछुन कहतुहै । भुकि परै वातके
कहेते अनखातन्यारो बेसरिको मोती मतवारोई रहतुहै २ दृष्टांत
सिद्धिको चौबेने तमाचोदियो ३ ॥

रामदासकीटीका ॥ द्वारकाकेढिगहीडांकोरएकगांवर
हैरैरामदासभक्तभक्तिजाकोप्यारिये । जागरणएकादशी
करैरणद्वोरजूकेभयोतनवृद्धआज्ञादईनहींधारिये ॥ बोले

भरमाइतेरोआइबोसह्योनजाइ चलोघरधाइतेरे लावो
गाडीमारिये । खिरकीजुमंदिरकेपाछेतहांठाढीकरोभरो
अकवारभोकोबेगिहीपधारिये २३८ करीवाहीभांतिआ
योजागरणगाडीचढि जानीसववृद्धभयोथकीपांवगतिहै।
द्वादशीकीआधीरतलकैचलेसोदगात भषणउतारिधरे
जाके सांचीरतिहै ॥ मंदिरउघारिदेखेपख्योहैउजारितहां
दौरेपाछेजानिदेखिकहीकौनमतिहै। वापीपधराइहांकिजा
निसुखपाइरहौगहोचलौजाति आनिसाख्योघावअतिहै
२३९ देखेचहुंदिशिगाडीकहुंपैनपायेहरिपछितावौ करि
कहैभक्तिकेलगाई है । बोलिउठ्यो एकअहिओरअहगयो
हतो देखेजाइबावरीकोलोहूलपटाईहै ॥ दासकोजुडारी
चोटओटलई अंगमेंहीनहींमेंतोजाहुंबिजैभूरतिबताईहै ।
भेरीसरसोनोंलेहुकहीजनतोलिदेहु मेरेकहाबोल्योवारी
तियाकेजताई है २४० लगेजबतोलिबेकोवारीपाछेडारि
दर्शनईगतिभईपलाउठेनहींवारीको । तबतौखिसानेभये
सबैउठिघरगये कैसेसुखपावैफिरौमतिहीभुरारीको ॥ घर
में बिराजैआप कहेभक्तिकोप्रतापजाइकरैजोपैफुरै रूप
लालप्यारीको । बलबंधनामप्रभुवांधेबलिभयोतब आ
युधकोक्षतसुनिआयेचोटमारीको २४१ ॥

द्वारकासे दोसो कोस काहू मंडलमें डांकोर गांव है खिरकी
की गैलबताई जैसे रुक्मिणी श्रीकृष्णले हरीही भगवान् अपनेगुण
अपने भक्तनको सिखावै सांचीरति तापै दृष्टांत एकडोकरी ठा-
कुरकी सेत्रा अहंतको देतिही सो उनकही दर्शन करि लेहिगे
अंगमेंही ओटलई तुम अपराधी भक्तमारैउ मरैगे महाप्रलय करौ
हत्यानहीं मरी सर सोनों अब अपनोवहीं बलबंधन नाम इहां

घावप्रति छवौना है रहे या प्रकारको नमतिहै महबूबा देश हर
विचिकोईआनि तमासा जो वैदीनक ॥

मूल ॥ वरवच्छहरणपीछेविदित सुनोंसंतअचरज
भयो ॥ जसुस्वामिकेरुषभचोरित्रजबासीलाये । तैसेईदिये
इयामवरपदिनखेतजुताये ॥ नामाज्योनंददासमुईइक
वाछिजिवाई । अस्वअल्हकौनयेप्रकटजगगाथागाई ॥
श्रीदारमुखीकेमुकुटको रंगनाथकोशिरनयो । वरवच्छ
हरणपीछेविदितसुनोंसंतअचरजभयो ५४ जसस्वामी
कीटीका ॥ जसुनामस्वामीगंगायमुनाकेमध्यरहै गहै
साधुसेवाताकोखेतीउपजावहीं । चोरीगयेबैलताकीइन
कोनसुधिकछूतैसेदियेरयाम हलजुतेमनभावहीं ॥ आये
त्रजवासीवई रुषभनिहारि कही इहैकौनलायो घरजाइ
देखिआवहीं । ऐसेवारदोइचारि फिरेऊनठीकहोत पूछी
पुनिल्यायेआयेइन्हैषै नपावहीं २४२ बडोईप्रभावदे
ख्येतैसेप्रभुवैलदिये भयोहियेभावआइ पाइनमेपरे है ।
निपटअधीनदीन भाषिअभिलाषजानि दयाकेनिधान
स्वामीशिष्यलैकेकरे है ॥ चोरीत्यागिदईअतिसुधिवुधि
भईनईरीतिगहिलईसाधुपथअनुसरेहै । अन्नपहुंचावैदूध
दहीदौलडावैआवैसंतगुणगविवेअनंतसुखभरेहै २४३ ॥

साधुसेवारागी है हरिको सांचो सनेहती तवहीं जानिये जब
हरिके प्यारेन में सनेह होइ १ संतसे बाहिरि प्रसन्न मजनु को
तो सलामकरी लैलै की गली में देखो करै द्विज दोष साधुसेवा
के प्रतापसों वडो वैभव भयो ताहि देखिके २ ॥ श्लोक ॥ काक
कुक्कुटकायस्थाः स्वजातिपरिपोषकाः ॥ स्वजातिपरिहन्तारःश्वान
सिंहगजद्विजाः ३ तापेदृष्टान्तराजामरुत्तको अरु उतथ्यको ॥

नन्ददासकीटीका । निकटबरेलीगांवतामेंसोहवेली
 रहै नन्ददासविप्रभक्तसाधुसेवारागी है । करैद्विजदोषता
 सोंमुईएकबखियाले डारिदईखतमांझगारीजकलागीहै ॥
 हत्याकोप्रसंगकरैसंतजनहूंसोंलरै हिन्दूसोंनमरैयहवडो
 ईअभागीहै । खेतपरजायवाहिलई है जिवाइदेखिपर
 दोषीपाईभक्तिभावमतिपागी है २४४ अल्हकीटीका ॥
 चलेजातअल्हमगलगे बागदीठिपखो करिअनुरागहरि
 सेवाबिसतारिये । पकिरहेआंबमांगैमालीपास भोगलिये
 कहोलीजैकहीभुकिआई सबडारिये ॥ चलयोदौरिराजा
 जहांजाइकेसुनाईबातगातभईप्रीति अलुटतपांवधारि
 ये । आवतहीलौटिगयोमेंतोजूसनाथभयो दयोलैप्रसा
 दभक्तिभावईसंभारिये २४५ ॥ बारमुखीकीटीका ॥ वेश्या
 कोप्रसंगसुनों अतिरसरङ्गमख्यो भख्योघरधनअहो ऐपै
 कौनकामको । चलेमगयाचनकोठौरस्वच्छआईमन छाई
 भमिआसनसोंलोभनहींदामको ॥ निकसीझमकिद्वारहंस
 सैनिहारिसबकौनभागजागेभेदनहींमेरेनामको । मोहर
 निपात्रभरिलैमहंतआगेधख्यो ढख्योजलनैनकहीभोग
 करोश्यामको २४६ पूछीतुमकौनकाकेभौनमेंजनमलियो
 कियोसुनिमौनमहाचिताजियधरी है । खोलिकैनिशंक
 कहोशंकाजिनिआनोमन कहीबारमुखीऐपैपाइआइपरी
 है ॥ भख्यो हैभंडारधनकरोअझीकारअजू करियेविचारजो
 पैकैसेजगतरी है । एकहैउपाइहाथरंगनाथजूकेअहोकी
 जियेसुकुटजामजातिमतिहरी २४७ ॥

कौनकामको ॥ धर्मशास्त्रे ॥ दशश्रवानसमग्रसुखीवचननि-

भोध्वजः ॥ दशध्वजसमावेश्यादशवेश्यासमोत्पः १ काकभ्रुण्ड
 पैनवैठेहंस सतद्रव्यपेसकोनभाग नारदपंचरात्रे ॥ त्रातृयत्स्याद्य
 मस्थानेस्वर्गिणामभयायतत् ॥ दानंभवतिगागेयकोनसेवेतवृद्धि
 मान् २ ॥ छप्पै ॥ ज्ञानवंत हठकरै निबल परिवार बढ़ावै । विधवा
 करै श्रृंगार धनीसेवाको धावै ॥ निर्धन समभै धर्म नारि भरता
 नहिं मानै । पंडित किरिया हीन राज दुर्लभ करिजानै ॥ कुलवंत
 पुरुष कुलविधि तजै बंधु न मानत बंधु हित । संन्यास धारिधन
 संग्रहै ये जगमें मरुख विदित ३ भेदनहीं नामको ॥ इलोक ॥ नद्य
 मयानितीर्थानिनदेवामृच्छिलामयाः ॥ जोपै ॥ दोहा ॥ सब सु-
 खपावै जासुते सो हरिजूको दास ॥ दुखपावै कोउ जासु ते सो
 न दासरे दास ॥ रंगनाथ को मुकुट ॥ तेजीयसानदोषायवहेस्स
 वंभुजोयथा ४ ॥

बिप्रहूनछुवैजाकोरंगनाथकैसेलेतदेतहमहाथतोकोर
 हैइहां कीजिये । कियोईबनाईसबघरकोलगाईधनबनिठ
 निचलीथारमध्यधरिदीजिये ॥ सन्तआज्ञापाइकेनिशंकग
 ईमन्दिरमेंफिरीयोसशङ्कधृगतियाधर्मभीजिये । बोलेआइ
 याकोलाइआइपहराइजाइ दियोपहराइनयोशीशमति
 भीजिये २४८ ॥ मूल ॥ औरैयुगनतेकमलनयनकलियुग
 बहुतकृपाकरी ॥ बीचदियेरघुनाथभक्तसंगठगियालागे ।
 निर्जनवनमेंजाइदुष्टक्रमकियेअभागे ॥ बीचदियेसोकहां
 रामकहिनारिषुकारी । आये शारंगपाणिशोकसागरते
 तारी ॥ द्रुतदुष्टकियेनिर्जीवसबदासप्राणसंज्ञाधरी । औरै
 युगनतेकमलनयनकलियुगबहुतकृपाकरी ५५ टीका ॥
 बिप्रहरिभक्तकरिगौनोचल्योतियासंग जाके दूनौरंगता
 कीबातलैजनाइये । मगठगमिलेद्विजपूछेअहोकहांजात
 जहांतुमजातयामेंमननपत्याइये ॥ पंथकोछुटायोचाहैवन

मेलियाइजाइ कहै अतिसूघोपैडोउरमैनआइये । बोलेबी
चरामतऊहियेनेकुधकधकी कहीउहीभामश्यामनामक
हांपाइये २४९ ॥

बिप्रहू न छुवै राजाने ऋषिन्यौते सो छोड़ि गयो जनमें कुत्ता
को खायो यों सबको खवायो लिंग गाजर सोय चार अण्डकोश
प्याजनख लहसन हाडमूरी झूड़ तरबूजसो ऐसो भेरो धान्यनि-
बिद्धहै १ नेकुधकधकी ॥ कुडलिया ॥ वैरी वंधुवा वावरो ज्वारी
चोरलवार । व्यभिचारी रोगी ऋणी नगर नारिको चार ॥ नगर
नारिको चार भलि परतीति न कीजै । सोहैसौसौ खाइ चित्त में
एक न लीजै ॥ कह गिरिधर कविराइ न्याइमें भायो ऐसे । मुख
सों हितको कहै पेटमें वैरी जैसे २ कमलनयन बहुत सूभै तीन
युग आयुर्दा बुद्धि बल धनरोग नहीं कर्म कर सोइबनै कलियुग
में कछु न वनै नामवतायो कृपाकरि ३ ॥

चलेलागिसंगअवरंगकोकुरंगकख्यो तियापररीझेभ
क्तिसांचीइनजानीहै । गयेबनमध्यठगलोभलगिमाख्यो
बिप्र क्षिप्रलैकैचलेबधुअतिबिलखानीहै ॥ देखैफिरिफि
रिपाऊकहैकहादेखोमाख्यो तबतोउचाख्योदेखोवाहीवीच
प्रानीहै । आयेरानप्यारेसबदुष्टमारिडारे साधुप्राणदैउ
बारेहितरीतेयोबखानीहै २५० ॥ मूल ॥ एकभूपभलेभा
गवतकीकथासुनतहरिहोइरति ॥ तिलकदामधरिक्कीइता
हिगुरुगोविंदजाने । षटदरशनीअभावसर्वथाछटकारिमा
ने ॥ भांडभक्तकोभेषहासहितभंडकुललाये । नरपतिकेह
ढनेमताहिपैपाइंधुवाये ॥ भरिभांडभेषगाढोकख्योदरशप
रशाउपजीभगति । एकभूपभलेभागवतकीकथासुनतहरि
होइरति ५६ ॥

चलेलागि संग ॥ कवित्त बिप्रसोईपढ़यो चारोवेदहूको भेद

जाने स्थिति षट् शास्त्रमतिन्याइसब रहयोहै । सोई पढ़यो भारत
पुराण पढ़यो पिंगलसो सबे कोश पढ़यो सोतौ काव्यकोषकहयो
है ॥ पढ़योपूरे आगम सो अगम बिचार चित्तसोई पढ़यो ज्योतिष
सो ज्योतिरस महयो है । सोईपढ़यो व्याकरण जानिलिये शब्द
दर्ण सोई सब पढ़यो जोई रामनाम पढ़यो है ॥ दोहा ॥ जो है
जाके आसरे ताहीको शिरभार ॥ करुईहरुई तोमरी खइलगात्रे
पार २ ॥ सवैया ॥ काससे रूप प्रतापदिनेशसे सोमसे शील
गणेशलेमाने । हरिचंदसे सांचे वडेबिधिले मघवासे महीपविषै
सुखसाने ॥ शुक्रसे मुनिशारद सेवकता चिरजीवन लोमशसे अ-
धिकाने । जग एसे भयेतौ कहा तुलसी जोपै राजिवलोचन राम
नजाने ३ तिलक दासधरि चारिआश्रम हरिके अगतेसंतशरीर ।
वैष्णवो ममदेहस्तु ॥ तुलसीमालिकाधारी वैष्णवो भक्तिवर्जितः ॥
पूजनीयोमहीपाल ॥ षट्दर्शनीषट्शास्त्रवक्ता दासनहीं संतवास
कहावै धनहरिको जैसे गुमास्ता दश रुपया महीना पावै ऐसे ४ ॥

टीका ॥ राजाभक्तराजडोमभांडकोनकाजहोइ भोइ
गईयाकेधनहरिकोनदीजिये । आयेभेषधारीलेपुजाइना
चेदैकैताल नृपतिनिहारिकहीयोनिहालकीजिये ॥ भोज
नकराइभरिमोहरनिथारलाये आगेधरिबिनैकरीअजूयह
लीजिये । भईभक्तिराशिबोलेआवैबासभावैनाहिं बांहग
हेरहेकैसेचलेमतिभीजिये २५१ ॥ मूल ॥ अतिअन्तर
निष्ठनृपालइकपरमधरमनाहिंनधुजी ॥ हरिसुमिरनहरि
ध्यानआनिकाहुनजनावै । अलगनइहिबिधिरहैअंगना
मरमनपावै ॥ निद्रावशसोभूपवदनतेनामउचाख्यो । रानी
पतिपररीझिबहुतवसुतापरवारयो ॥ ऋषिराजशोचिक
ह्योनारिसोआजभक्तिमेरीपुजी । अतिअंतरनिष्ठनृपालइ
कपरमधरमनाहिंनधुजी ५७ ॥

राजाभक्तराज ॥ श्लोक ॥ इदं तरनिबद्धमुष्टेः कोशनिषण्णस्य सहजमलिनस्य ॥ कृपणस्य कृपाणस्य च केवलमाकारतो भेदः १ भई भक्तराशि ॥ कवित्त ॥ जलके सनेही मीन विह्वुरत तजै प्राण मणि विन अहिजैसे जीवत न लहिये । स्वाति वूदके सनेही प्रकट जगतमांझ एकसीपि दूजैपुनि नातकहूं कहिये ॥ रवि के सनेही वसै कमल सरोवर में शशिके सनेही ये चकोर जैसे रहिये । तैसेही सुखद एकप्रभुसों सनेह जोरि और कल्लुदेखि काहू ओर नाहिं बहिये १ राजाने तब बांहगहो ॥ सबैया ॥ तजे पितुमात तिया सुत भ्रात क्रिये जगमात पितातव औरै । नंदकुमार भजै नहिं मूढ़ भजै जेहिसो ठहरात न ठौरै ॥ लेत न सीख सिखावत औरै सुदौरत भोग दिशाकर कौरै । भांडभयो विपयी न भयो सुकळ्या कळु और नच्यो कळु औरै २ ॥

टीका अंतरनिष्ठराजाकी ॥ तिया हरिभक्त कहै पतिपै न भक्तपाथोर है मुरभायो मनशोच बढ्यो भारी है । मरमन जान्यो निशि सोवत पिछान्यो भाव विरह प्रभावनाम निकस्यो बिहारी है ॥ सुनत हीरानी प्रेमसागर समानी भोरसं पतिलुटाई मानो नृपति जियारी है । देखि उतसाहू भूपपछो सुनिवाहिक ह्योर ह्योत न ठौरनाम जीवयो बिचारी है २५२ देखित न त्यागि पति भई और गतियाकी ऐसी रतिवानमैन भेद कळु पायो है । मयो दुख भारी सुधि बुधिस बढारी तब नेक न बिचारी भाव राशि हिये ब्रायो है ॥ निशि दिन ध्यान विरह प्रबल तजे प्रान भक्तरस खानरूप कापै जात गायो है । जाके यह होइ सोइ जानेर सभोइ यामें डारै मति खोइ सब प्रकट दिखायो है २५३ ॥

नाम निकस्यो बिहारी है ॥ कवित्त ॥ कुटिल अक्रूर कूर बैरी काह जनमकोहे चेटक सोडारि शिरलैके ब्रज भूरिगो । व्याकुल

विहालवाल वंशीधरलाल बिन मीनज्यों तरफितन प्रेमरस भू-
रिगो ॥ चरण उचाइ चितवत ऊंचेधाम चढ़ि चिंताके चकित
भईचैनसब चूरिगो । वारवारकहत बिसूरिजलनैनपूरि धूरि न
उड़ाति आली अबरथदूरिगो १ भ्रमैभौर ठौरठौर केतकी कुमुद
और तनक जो लाज करै पंकजके संगकी । चंचल चलाकचित
चोकरीकी भूलमति घायलज्यों घूम्योकरे लगनि कुरंगकी ॥ और
नहींस्वाद है विवाद काहु बातनिको मनमें न मनसा है औरके
प्रसंगकी । जगमें सराहिये सनेहकी नवलरीति विछुरनिमीन की
औ मिलनि पतंगकी २ ॥

मूल ॥ गुरुगदितवचनशिष्यसत्यअतिदृढप्रतीति
गाढोगह्यो ॥ अनुचरआज्ञामांगिकह्यो कारजकोजैहों ।
आचारजइकवाततोहिंआयेतेकैहों ॥ स्वामीरह्योसमाइ
दासदरशनकोआयो । गुरुकीगिराबिइवासफेरिसबघर
सैलायो ॥ निजपनसांचोकरनकोविभुसबैसुनतसोईकह्यो ।
गुरुगदितवचनशिष्यसत्य अतिदृढप्रतीतिगाढोगह्यो
५८ ॥ टीकागुरुनिष्ठकी ॥ बड़ोगुरुनिष्ठकछूघटिसाधु
इष्टमानेस्वामीसंतपजोमानेकैसेसमुभाइये । नितहीवि
चारैपुनिटारैयेउचारैनाहिं चलयोजबरामतिकोकहीफिरि
आइये ॥ शपथदिवाइनजराइबेकोदियोतन लायोयो
फिराइवहैवातजूजताइये । सांचोभावजानिप्राणआइसो
बखानकियो करैभक्तसेवाकरीबर्षलौदिखाइये २५४ ॥

दृढप्रतीति करिके मानों गुरुकेवचन को पर यामें गुरुको शि-
ष्यको भलो होइ ऐसी दृढ प्रतीति न करै तापै घोराको दृष्टांत ॥
बड़ोगुरुनिष्ठ नारदवाक्यम् ॥ यस्यसाक्षाद्भगवति ज्ञानदीपप्रदे
गुरौ ॥ मर्त्यबुद्धिःश्रुतं तस्य सर्वं कुंजरशौचवत् १ आचार्य मां वि
जानीयात् ॥ करीभक्तसेवा नाभाजूकही है भक्तभक्ति भगवंतगुरु

गहीन भक्तकासनहीं ॥ आदिपुराणे ॥ अस्माकंगुरवोभक्ता भक्ता
नांगुरवोवयम् । अस्माकंघान्धवाभक्ता भक्तानांघान्धवावयम् ॥
वैष्णवके अपराधोंको गुरु अरु हरि न वचावै २ दोउनके अपराधों
को साधु वचावै जैसे दुर्वासाको महादेव गुरु ब्रह्मा वादागुरु हरि
परम गुरु न वचावसके अम्बरीषने वचायो साधुही स्व अपराध
सों वचावै और की सामर्थ्य नहीं सो छोड़ावै याते साधु त्रैलो-
की में बड़े हैं ५ ॥

मूला ॥ संदेहग्रन्थिखंडननिपुणवाणिविमलरैदासकी ॥
सदाचारश्रुतिशास्त्रवचनअविरुद्धउचारयो । नीरक्षीर
विपरमपरमहंसनडरघाख्यो ॥ भगवतकृपाप्रसादपरमग
तिइहितनपाई । राजसिंहासनवैठिज्ञातिपरतीतिदिखा
ई ॥ बहुवर्णाश्रमअभिमानतजि पदरजवंदहिजासकी ।
संदेहग्रन्थिखंडननिपुणवाणिविमलरैदासकी ५६ टीका
रैदासजूकी ॥ रामानन्दजूकोशिष्यब्रह्मचारीरहैएक गहै
ब्रह्मचुटकीकोतासोकहैवानिये । करौअंगीकारसीधोकहो
दशवीसवार वरषैप्रदलधारातामैवापैआनिये ॥ भोगको
लगावैप्रभूध्याननाहिआवै अरेकैसेकरिलवैजाइपूछीनी
चमानिये । दियोज्ञापभारीवातसुनीनहमारी घटिकुलमें
उतारीदेहसोईयाकोजानिये २५५ ॥

वाणि विमलरैदासकी केवल भक्तिही गाई ॥ पद ॥ धन्य
हरिभक्ति त्रयलोक यश पावनी । करौ सतसंग इहि विमल यश
राचनी ॥ वेदतेपुराण पुराण ते भागवत भागवत ते भक्ति अकट
कीनी । भक्तिते प्रेम प्रेमतै लक्षणा विना सतसंग नहि जाति
चीनी ॥ गंगा पापहरै शशि ताप अरु कल्पतरु दीनता दूरिखोवै
पाप अरु ताप सब तुच्छमति दूरि करि अमी की दृष्टि जव सत
जोवै ॥ विष्णुभक्त जिते चित पर धरति ते मन वच करम करि

विश्वासा । सन्त धरणी धरी कीर्ति जग विस्तरी प्रणत जन
चरण रैदासदासा १ नीर क्षीर ॥ गीतार्या ॥ निर्मानमोहाजित
संगदोषा अध्यात्मनिष्ठाविनिवृत्तकामा ॥ द्वन्द्वैर्विसुक्ताःसुखदुःख
संगैर्गच्छन्त्यमूढाःपदमव्ययंतत् २ राजसिंहासन पै कहुँ चसारहू
वैठे हैं तब कही गुरुकी सन्तनकी कृपाते बैठि जातहैं कामनहीं
स्वरूप मुख्य है ३ ॥

मातदूधप्यावैयाकोछुयोहूनभावे सुधिआवैसबपछि
लीसोसेवाकोप्रतापहै । भईनभवानीरामानन्दमनजानी
बड़ो दण्डदियोमानीवेगिआयोचल्योआपहै ॥ दुखीपितु
मातुदेखिधाइलपटायेपांइ कीजियेउपाइकियेशिष्यगयो
पापहै । स्तनपानकियोजियोलियोउन्हैईशजान निपट
अजानफेरिभूलेपायोतापहै २५६ बड़ेईरैदासहरिदासनि
सोंप्रीतिबड़ी पितानसुहाइदईठौरपिबवारही । हुतौधन
मालकनदियोहूनिहालतिया पतिसुखजाळअहोकियेज
बन्यारही ॥ गाँठैपगदासीकाहूयतनप्रकासीलावैखालकरै
जूतीसाधुसंतकोसँभारही । डारिएकछानिकियोसेवाकोस
थानरहैचौंड़ौअपजानिबांटापवैयहैवारही २५७ ॥

पिता न सुहाई ॥ कवित्त ॥ पैसे विन बापकहै पूतता कपूत
भयो पैसेविन भाई कहै जीको दुखदाई है । पैसे विन चार कहै
मेरो यह चार नहीं पैसे विन सासुकहै कौनको जसाई है ॥ पैसे
विन वन्देकी प्रतीति नहीं पंचन में पैसे विन आइघर रोइ रोटी
खाई है । कहै अलमस्त सजे बजेसहौ आठोयाम आजुके जमाने
माहि पैसेकी वड़ाई है १ धर्मकर्म प्रीति रीति सजन सुहृदताई
सकल भलाइनिको पुंजसो बिलाइगो । अन्तर मलीन हैकै कलह
प्रवेश भयो नरन कलेश निशि दिन सरसाइगो ॥ नहीं रागरंग
नहीं चरचा चतुरताकी नहीं सुखसेज घन आनंद नशाइगो

देखिकै निराश जिय लहै न हुलासमन देखतही देखतही ऐसो
समो आइगो २ बड़ेई रैदास ॥ दोहा ॥ नंद नंदनकी भक्ति बिन
बड़ो कहावै सोइ ॥ जैसे दीपक बुझन को बड़ो कहै सबकोइ ३ ॥

सहैअतिकष्टअंगहियेसुखशीलरंग आयेहरिप्यारेलि
योभक्तिवेषधारिकै । कियोबहुमानखानपानसोप्रसन्नहै
कैदीनोकह्योपारसहैराखियोसँभारिकै ॥ मेरेधनरामकछू
पाथरनसरेकाम दाममैनचाहौँचाहौँडारोंतनवारिकै । राई
एकसोनौकियोदियोकरिकृपाराखो राख्योवहछानिमांभ
लेहुगोनिकारिकै २५८ आयेफिरिइयामसासतेरहव्यती
तभये प्रीतिकरिबोलेकहौपारसोकीरीतिको । वाहीठौर
लीजैमेरोमननपतीजैअब चाहौँसोईकीजैमैंतौपावतहौँभी
तिको ॥ लैकैउठिगयेनयेकौतुकसोसुनोपावै सेवतमुहरपां
चनितहीप्रतीतिको । सेवाहूकरतडरलाग्योनिशिकह्यो
हरि छांडौअरआपनीओराखोमेरीजीतिको २५९ ॥

याते हरिभक्तिही बड़ी है किये शिष्य ॥ श्लोक ॥ अन्त्यजा
अपितद्राष्ट्रे शङ्खचक्राङ्गधारिणः ॥ सुधिआवै राजाइन्द्रद्युम्न अग
स्त्यजीके शापसे गजभये कियो बहुमान ॥ पद ॥ आजुके योस-
की जाहु बलिहार । मेरेगृह आया राजा रामजीका प्यार ॥ करौं
दण्डवत चरणपखारों । तन मन धन सन्तनि पर दारों ॥ आंगन
भवन भयो अति पावन । हरिजन बैठे हरियश गावन ॥ कहें कथा
अरु अर्थ विचारें । आप तरें औरनिको तारें ॥ कहै रैदास मिले
हरिदासा । जनम जनमकी पूजी आसा १ पाथर न सरे काम
पारसतौ सोई जो पारउतारै सौतौ एक रामनामहै ३ डरलाग्यो ॥
श्लोक ॥ स्तेर्यहिसानृतदम्भः कामःक्रोधःस्मयोसदः । भेदोवैरम
विश्वासः संस्पृह्यव्यसनानिच ॥ एतेपञ्चदशानर्था ह्यर्थमलाम
तानृणाम् । तस्मादनर्थमथार्थंश्रेयोर्थादूरतस्त्यजेत् ५ ॥ चौपाई ॥

कै माया कै हरिगुण गाई । दोनों सेती दीनो जाई ६ ॥ श्लोक ॥
विषयाविष्टिचित्तानां विष्णवावेशः सुदूरतः ॥ वारुणीदिग्गतं वस्तु ब्रज
शैन्द्री किमाप्नुयात् ७ ॥

मानिलई बातन ई ठौर लै बनाइ चाइ संतनि बसाइ हरि
मन्दिर चिनायो है । विविध बितानतानगनों जो प्रमान होई
भोई भक्ति गई पुरी जगय श्रद्धायो है ॥ दर्शन आवै लोगनां
नाधिधिरागभोगं रोगभयो विप्रनकेतन सब छायो है । बड़े
ई खिलारी वेरहे ही छानि डारी करी घर पै अटारी फेरि द्विजन
सिखायो है २६० प्रीतिर सराशिसोरै दास हरि सेवत है घर
मेंदुराइ लोक रंजनादि टारी है । प्रेरि दिये हृदय जाइ द्विजन पु
कार करी भरी सभानृप आगे कह्यो मुखगारी है ॥ जनको बु
लाइ ससुभाइ न्याइ प्रभुसौं पि कोनो जगय रासाधुली लाम
नुहारी है । जिते प्रतिकूल मै तो माने अनुकूल याते सन्तन प्र
भाव मनको ठरी कीतारी है २६१ ॥

लोक रंजनादि टारिये ४ ॥ सवैया ॥ हमसों मनमोहन सों
हित है जुगली करि कोउ कहा करि है । अवतो बजिके बदनामी
भई गुरुलोगनिके जु कहा डरि है ॥ कविधीर कहे अटकी छवि
सों बजमें अटकी विसखो धरि है । तुमको यह बातसों कामकहा
अपने कोउ जान कुंवा परि है १ ॥ मुखगारी है ॥ पुष्करमाहात्म्ये ॥
अपूज्याय त्रपूज्यन्ते पूज्यपूजाव्यतिक्रमः ॥ त्रयस्तत्र प्रवर्तन्ते दारि
शंमरणं भयम् २ न्याइ प्रभुसौं पि ॥ अनङ्गशेखर छन्द ॥ सदा कृपा-
निधानहौ कहाकहौ सुजानहौ अमान हानमानहौ समान काहि
जीजिये । रसाल प्रीतिके भरे खरे प्रतीति के निकेत रीति नीति
के समुद्र देखि देखि जीजिये ॥ टकी लगी तिहारिये सुआइयो नि-
हारि लोक रञ्जनादि टारिये उमंग रंग भीजिये । पयोद सोद
शङ्खे विनोद को बढ़ाइये बिलम्ब छांड़ि आइये किधौं बुलाइ

लीजिये ३ ॥ तारी है ॥ दोहा ॥ ज्यों ज्यों आवै विघन डर
 त्योंत्यों प्रेम हुलास ॥ जैसे दीपक तम चहै सतगुन होतप्रकास ॥
 मन कोठरीकी तारी है हिरण्यकशिपु दुख दिधे तव प्रह्लाद गुण
 प्रकटे ऐसे ४ ॥

वसतचित्तौरमांभरानीएकभालीनाम नामविनकाम
 खालीशिष्यआनिभईहै।संगहुतेविप्रसुनिक्षिप्रतनआगि
 लागीभागीमतिनृपआगेभीरसबगईहै ॥ वैसेहीसिंहासन
 पैआइकैविराजेप्रभूपदेंवेदवाणीपैनआयेयहनईहै । पति
 तपावननामकीजियेप्रकटआज गायोपदगोदआइबैठे
 भक्तिलई है २६२ ॥

पद गायो ३ ॥ पद ॥ आयो आयो हौं देवाधिदेव तुम शरण
 आयो । सकल सुखकी मूल जाकी नाहिंसम तूल सो चरणमूल
 पायो ॥ लियो विविध योनि बास यमकी अगसत्रास तुम्हरे भजन
 बिन भ्रमत फिख्यो । माया मोह कोह काम विषय लंपट निकाम
 यह अतिदुस्तर दूर तरयो ॥ तुम्हरे नाम विश्वास छाड़िये आन
 आश संसारी धर्म मेरो मन न धीजै । रैदास दास की सेवा मानहुं
 देवा पतितपावन नाम आज प्रकट कीजै १ ॥ सवैया ॥ भृतको ठौर
 ठौवन कुल जाको हरि सूरति लो इनमें अरकी । सेवन लग्यो
 जग्यो जग ऊपर निंदक नर भूसन कूकरकी ॥ हरि प्रसन्न शिर
 चढ़ौ सिंहासन जैति जैति धुनि काशिनगर की । लाल कृपाल
 प्रेमरस बन्धन निर्भय भक्ति राधिकाबरकी ॥ जैमिनिपुराणे ॥
 मोरध्वजस्थाने ॥ अंत्यजाअपितद्रष्टिशङ्खचक्राङ्गधारिणः ॥ संप्राप्य
 वैष्णवीदीक्षादीक्षिताइवसंबभुः ३ ॥ सप्तमे ॥ विप्राद्विषड्गुण
 युतादरविन्दनाभपादारविन्दविमुखाच्छुपचंवरिष्ठस ॥ मन्येतदर्पि
 तमनोवचनेहितार्थप्राणपुनातिसकुलंनतुभूरिमानः ४ ॥

गईघरभालीपुनिबोलिकैपठायेअहो।जैसेप्रतिपाली

अबतैसेप्रतिपालिये । आपहूपधारेउनबहुधनपटवारेवि
 प्रसुनिपांवधारेसीधौदैनिकारिये ॥ करिकैरसोईद्विजभोज
 नकरनवैठेद्वैमधि एकसोरैदासकोनिहारिये । देखिभई
 आखैंदीनमाखैंशिष्यभयेलाखैं स्वर्णकोजनेऊकाढ्योत्व
 चाकीनोन्यारिये २६३ ॥ मूल ॥ कब्बीरकानिराखीनहींव
 र्णाश्रमषटदरशनी ॥ भक्तिबिमुखजोधर्मसोइअधरमकरि
 गायो । योगयज्ञव्रतदानभजनबिनतुच्छदिखायो ॥ हिंदू
 तुरकप्रमानरमैनीसबदीसाखी । पक्षपातनहिंबचनसबहि
 केहितकीभाखी ॥ आरूढदशाह्जगतपरमुखदेखीनाहिं
 नभनी । कब्बीरकानिराखीनहींवर्णाश्रमषटदरशनी६०॥

पतितपावन नामकीजिये प्रकटआजुगायो पदआपुवैठे भक्ति
 मनभाई है निहारिये ॥ भूतानदिवचरितं ॥ देखेतैज्ञान आयो ॥
 यस्यनास्तिस्वयंप्रज्ञा १ जानिगये ॥ एकते अनेकभये परम भाग-
 वतही हैं भृंगीभयतेभृंगहोत ॥ शुकोहंशुकोहं ॥ वृक्षनिमें दिखायो
 ऐसे इनको जीरयो तब सोनेको जनेऊ दिखायो भक्ति बिमुखजो
 धर्म सो अधर्म करि गायो २ ॥ गुरु वैष्णव गोविप्र हरि अर्थ
 सबको पूजे पै ग्रह व्यतीपात देखै सोइ अधर्म स्वर्गनरक संसार
 कारण धरसबहै जगछूटै ॥ सोहरिकी शरण जाय तब ऐसे ३
 तुच्छदिखायो ॥ दोहा ॥ रामनाम तौ अंक है अरु सब साधन
 शून्य ॥ अक्षरके सम्मुख रहै शून्य शून्यदशगुन्य ॥ पक्षपातनहीं
 छप्यै ॥ पाँडे भली कथा कहिजानै । औरनि परमारथ उपदेश
 आपु स्वार्थ लपटानै ॥ ज्यों दीपक घर करै उजारो निज तन तम
 सन ठानै । महिपी क्षीर खत्रे औरनिको आपु भुसाहि रुचि मानै ॥
 श्रोता गोता क्यों न खाइ आचारज फिरै भुलानै । यह कलि
 छल सब कीमति नाठी समझत लाभ न हानै ॥ हित की कहत
 लगत अनहित की रजराजस नै सानै । कहत कवीर बिना

रघुवीरहि यह पीरहि कोजानै ५ भजनबिन ॥ सकर्तासर्वधर्मा
जांभक्तोयस्तवकेशव ॥ सकर्तासर्वपापानांघोनभक्तस्तवाच्युत ६
यदिसधुमथनत्वदंघ्रिसेवांहृदिविदधातिजहातिवावितर्कम् ॥ तद
खिलमपिदुष्कृतंत्रिलोककृतमकृतंतुकृतंकृतंचसर्वम् १ ॥

टीका ॥ अतिहीगँभीरमतिसरसकबीरहियोलियोभ
क्तिभावजातिपांतिसबटारिये । भईनभवानीदेहतिलकर
वानीकरौकरौगुरुशमानंदगरेमालधारिये ॥ देखैनहींमुख
मेरोजानिकैमलेच्छमोको जातन्हानगंगाकहीमगतनडा
रिये । रजनीकेशवमेंआवेशसोंचलतआपपरैपगरामक
हैंमंत्रसोंबिचारिये २६४ कानीवहीवातमालातिलकवना
इगातमानिउतपातमातशोरकियोभारिये । पहुंथीपुकार
शमानंदजूकेपासआइ कहीकोऊपूछेंतुमनामलैउचारिये॥
लावोजूपकरिवाकोकब्रहमकियो शिष्यलायेकरिपरदामें
पूछीकहिडारिये । रामनामसंत्रयहीलिखयोसबतंत्रनिमें
खोलिपटमिलेसांचोमतउरधारिये २६५ ॥

सबतंत्रनिमें ॥ श्लोक ॥ श्रीरामेतिपरंजाप्यंतारकंब्रह्मसंज्ञ
कम् ॥ ब्रह्महत्यादिपापघ्नमितिवेदविदोविदुः १ ॥ कवित्त ॥ रहैगो
नराज रजधानीपै न पानीपुनि कहै बाक वानी जिमी आशमान
जाइगो । सातहू पाताल अरु सातद्वीप भाइ सात एक बेर चांदसूर्य
ज्योतिहू विलाइगो ॥ जो कछु सृष्टि रची करताकी वृष्टिही सो
एक बेर सृष्टिहूको करता समाइगो । कहै कवि काशीराम और
कछु थिर नाहि रहिवे को एक रामनाम रहिजाइगो २ छप्पै ॥
यत बिन योगी अफल अफल भोगी बिन माया । जलबिन सर-
वर अफल अफल तरुवर बिनछाया ॥ शशि बिन रजनी अफल
अफल दीपक बिन मंदिर । नर बिन नारी अफल अफल गुण
बिन सब सुन्दर ॥ श्रीनारायणकी भक्तिबिन राजा परजा सब

अफल । तत्त्ववेत्तातीनिहुंलोक में रामरटें ते नर सुफल ३ ॥

बुनैतानोबानोहियराममडरानो कहीकैसेकैबखानोव
हीरीतिकहुन्यारिये । उतनोहीकरैतामेतननिरबाहहोइ
भोइगईऔरैबातभक्किलागीप्यारिये ॥ ठाढ़ेसंडीमांझपंट
वेचनलैजनकोऊआयोमोकोदेहुदेहमेरीहै उधारिये । ल
ग्योदेनआधोफारिआधेसौनकामहोय दियोसबलैबोजो
पैयहीउरधारिये २६६ तियासुतमातमगदेखेभूखेआवै
कव दबिरहेहाटनमें लावैकहाधामको । सांचौभक्तिभाव
जानिनिपटसुजानवेतो कृपाकेनिधानगृहशोचपस्थोश्या
मको ॥ बालदलैधायेदिनतीनियोवितायेजब आयेधरि
डारिदईलह्योहैअरामको । माताकरैशोरकोऊहाकिमम
रोरिबांधै डारोबिनजानेसुतनहींलितदामको २६७ गये
जनदोइचारिदुंदिकेलिवाहलाये आयेधरसुनी बातजानी
प्रभूपीरको । रहेसुखपाइकृपाकरीरघुराइ दईक्षणमेंलुटाइ
सबबोलिभक्तभीरको ॥ दयोबोडितानोबानोसुखसरसा
नोहिये कियेरोसधायेसुनिविप्रतजिधीरको । क्योरैतेजु
लाहेधनपायेनाबुलायेहमें शूद्रनिकोदियोजावोकहैयोक
बीरको २६८ ॥

बुनैतानो बानो दोऊकरै सो दोऊकैसे बने मनतो एकही है
मनको अभ्यास भजनको इन्द्रियनको अभ्यास क्रिया को जैसे
जड़भरत शरीर त्यागतीबार १ देवानांगुणलिङ्गानां ॥ अथवा हरि
आपही मडराइ २ सुखसरसानो एक फकीर तापै फकीर आवै क-
हीगुजर कैसेहै तबकहीहमें साहिब देताहै जब खाते हैं संतसंतोष
सों परेरहेते दूसरो कही ऐसे हमारी गलीके कुत्ताहू करते हैं आप
कैसे देताहै तब बांटे खाते हैं तब तो आनन्द माने है ३ ॥

क्योंज उठिजाऊंकलूचोरीधनलाऊं नितहरिगुणमाऊं
 कोऊराहमैनमारीहै । उनकोलैमानकियोयाहीमैअमान
 भयो दयोजोपैजाइहमैतौहीतौजियारीहै ॥ घरमेंतोनाहीं
 मंडीजाउंतुमरहोबैठे नीठिकेलुड़ायोपैडोछिपैव्याधितारी
 है । आयैप्रभआपद्रव्यलायेसमाधानकियो लियोसुख
 होयभक्तिकीरतिउजारीहै २६९ ब्राह्मणकोरूपधरिआये
 छिपिबैठेजहांकाहेकोमरतभूखोजावोजू कवीरके । कोऊ
 जाइद्वारताहिदेतहै अढाईसेरवेरजिनिलानोचखेजावोयो
 बहीरके ॥ आयेघरमांभदेखिनिपटमगनभये नयेनये
 कौतुकसोकैसेरहैधीरके । वारमुखीलईसंगमानोवाहीरङ्ग
 रंगेजानोयहबातकरीउरअतिभीरके २७० संतदेखिदुरे
 सुखभयोईअसंतनिके तवतोबिचारिमनमांझऔरआयो
 है । बैठीनृपसभातहांगयेपैनमानकियो कियोएकचीज
 उठिजलठरकायोहै ॥ राजाजियशोचपखोकखोकहाकह्यो
 तबजगन्नाथपंडापांवजरतबचायोहै । सुनिअचरजभरि
 पनेपठायेनरलायेसुधिकहीअजूसांचहीसुनायोहै २७१ ॥

नये नये ॥ दोहा ॥ व्यास बड़ाई जगतकी कूकरकी पहिचानि ॥
 प्रीति किये मुख चाटिहै बैरकिये तनुहानि १ हाथ कलू न लगै
 भजन गांठिको जाइ ऐसे विप्रयिनको संगहै जैसे सेमरके सुत्रा
 को कलू हाथ न लगै देखतही में सुन्दर सेवत विचारी बड़ाई
 खोई आपही आवैगे २ वारमुखीलई संग या कुसंगसों कवीर
 परस रांधु ताकी महिमा घटी विषै कहनलगे ॥ दोहा ॥ संगति
 खोटी नीचकी देखो करिकै व्यास ॥ महिमा घटी समुद्रकी ब-
 स्थो जु रावण पास ३ जल ठरकायो ऋषभदेव यथेष्ट कृपा देखि
 जगत बुरो होय ॥

कहीराजाराजीसोंजुवातवहसांचभई आंचलागीहिये
 अबकहौकहाकीजिये । चलेहीबनतिचलेशीशतृणबोभ
 भारीगरेसोंकुलहारीबाधितियासंगभीजिये ॥ निकसेबजा
 रद्वैकैडारिदईलोकलाज कियोमेंअकाजछिनछिनतनछी
 जिये । दूरितेकबीरदेखिहैगयोअधीरमहाआयोउठि
 आगेकह्योडारिमतिरीझिये २७२ देखिकेप्रभावफेरि
 उपज्योअभावद्विज आयोबादशाहजूसिकंदरसोनामहै ।
 विमुखसमूहसंगमातहूमिलाइलई जाइकैपुकारेजूदुखा
 योसबगोंवहै ॥ लावोरेपकरिवाकोदेखोरेमकरकैसोअक
 रमिटाउंगाडेजकरतनावहै । आनिठादेकियेकाजीकहत
 सलामकरोजानैनसलामजामेंरामगाढेपावहै २७३ बां
 धिकैजंजीरगङ्गातीरसांझघोरिदियो जियोतीरठाढोकहैयं
 त्रमंत्रआवहीं । लकरीनसांझडारिअग्निप्रजारिदई न
 ईमानोंभईदेहकंचनलजावहीं ॥ विफलउपाइभयेतऊन
 हींआइनये तवमतवारोहाथीआनिकेझुकावहीं । आव
 तनदिगओचिघारिहारिभाजिजाइ आगेआपसिंहरूपवै
 ठेसोभगावहीं २७४ ॥

भाजिजाइ भगवान् सिंहरूप हाथी के पास सम्मुख आइ
 ठाढ़े भये हाथी चिघारि के भाज्यौ वादशाह ने कहीं हाथी क्यों
 नहीं पेले कही महाराज सम्मुख सिंह है तौ मोहिं क्यों नहीं देखै
 सम्मुख आवै तब देखो जब आयो तब देखतही बड़ो डर कियो
 यह वही नृसिंह है जो प्रह्लादकी रक्षाको प्रकटयो है याते संतनि
 के सम्मुख तब हरि देखै १ भगावही ॥ दोहा ॥ बधिक बाज
 अरु दुष्ट नर जो इन चीत्यौ होइ ॥ तुलसी या संसारमें साधु न
 जीवैकोइ २ राजा स्त्रीसों पूछै कृष्ण सान्दीपनके पढ़े दक्षिणा

सांगो सो कही स्त्रीसों पूछे तब प्रभास में बूड़िगयो पुत्र सो ल्याइ
 देव ऐसे पंडित पूछे विफल उपाव ॥ जलेविष्णुःस्थलेविष्णुर्विष्णुः
 पर्वतमस्तके ॥ ज्वालामालाकुलेविष्णुःसर्वविष्णुमयंजगत् ३ ॥

देख्यो बादशाहभावकूदिपरेगहेपाव देखीकरामाति
 मातभयेसबलोकहैं । प्रभुपैवचाइलीजैहमेंनगजवकीजै
 लीजैसोईभावैगांवदेशानानाभोग हैं ॥ चाहैंएकरामजाको
 जपैआठौयाम औरदामसोनकामजामभरेकोटिरोगहैं ।
 आधेघरजीतिसाधुमिलेकरिप्रीति जिन्हैंहरिकीप्रतीतिवै
 ईगायवेकेयोगहैं २७५ होइकैखिसानेद्विजनिजचारिवि
 प्रनके मूढ़निमुड़ाइवेषसुंदरबनायेहैं । दूरिदूरिगांवनमें
 नामनिकोपूछिपूछि नामजोकबीरजूकोभूठैन्योतिआये
 हैं ॥ आयेसवसाधुसुनियेतौदुरिगयेकहूंचहूंदिशिसंतनि
 केफिरैहरिधाये हैं । इनहींकोरूपधरिन्यारिन्यारेठौरवैठे
 एकमिलिगयेनीकेपोषिकैरिभ्राये हैं २७६ ॥

गहेपाव ॥ पद ॥ कलिमें सांचो भक्त कधीर । जवते हरिचर-
 णन रुचि उपजी तबते बुन्यो न चीर ॥ दीनो लेहि न यांचे काहू
 ऐसो भनको धीर । योगी यती तपी संन्यासी इनकी सिटी न
 पीर ॥ पांच तत्वते जनम न पायो काल न अत्यो शरीर । व्यास
 भक्तको खेत जुलायो हरि करुणामय नीर १ भेरो मन अनतही
 सन्नुपावै । जैसे उड़त जहाजको पक्षी फिरि जहाज पै आवै ॥ जो
 नर कमलनैनको तजिकै आन देवको ध्यावै । विद्यमान गंगातट
 प्यासो दुर्मति कूप खनावै ॥ जिनमधुकर अंबुजरसचाखौ ताहि
 करील न भावै । सूरदासप्रभु कामधेनु तजि छेरी कौन दुहावै २
 दोहा ॥ कहाकरै रसखानिको कोऊ दुष्ट लचार ॥ जो पाति राखन
 हारहै साखन चाखनहार ३ हरिको निश्चय मानिके बनिजकरै

मोकोइ ॥ तुलसी मन विद्वान् सों दाम चौगुना होइ ४ मछरी
मीनखाई कुत्ता विलाईते वचै ॥

आई अपसरा छलिके लिये वैस किये हिये देखिगाढो
फिरि गई नही लागी है । चतुर्भुजरूप प्रभु आनिकै प्रकट
कियो लियो फल नैननिको बड़ो बड़ भागी है ॥ शीश धरै हाथ
तन साथ मेरे धाय आवौ गावौ गुण रहौ जौ लौं तेरी मति पागी
है । मग भै है जाइ भक्ति भावको दिखाइ बहु फूलनि मंगाइ
पौढि मिल्यो हरिरागी है २७७ ॥

आई अपसरा ताको देखिकै मोहित नहीं भये जैसे नारदजी
१ ॥ पद ॥ तुम घर जावौ मेरी बहिना यहां तिहारो लेना न देना ।
राम बिना गोविंद बिना विष लागै ये वैना ॥ जगमगात पट भू-
पण सारी उर मोतिनके हार । इन्द्रलोकते मोहन आई मोहि
करन भरतार ॥ इनवातनको छांडि देहुरी गोविंदके गुण गावो ।
तुलसी माला क्यों नहीं पहिरो वेगि परमपद पावो ॥ इन्द्रलोक
में टोटपरयो है हमसों और न कोई । तुम तो हमें डिगावन आई
जाहु दईकी खोई ॥ बहुते तपसी बांधि विगोथे कच्चे सूतके धागे ।
जो तुम घतन करो बहुतेरा जल में आगि न लागे ॥ हों तो केवल
हरिके शरणे तुम तो झूठी साया । गुरुपरताप साधुकी संगति में जु
परमपद पाया ॥ नाअ कवीरा जाति जुलाहा ग्रह बनरहौ उदासी ॥
जो तुम मान महत करि आई तो इकसाइ दुजे माली १ ॥ कविता ॥
वहमति कहां गई अब मति और भई ऐसी मतिकी जो मति
आपनी विचारोगे । सुधि कहूं सोइ गई बुद्धि कहूं बूढ़ि गई अब
क्यों न भई सो तो नई बाट पारोगे ॥ निपट निरंजन निहारिके
विचारि देखो एकही विचारि कहा दोसरी विचारोगे । तुमसों
न उजियारो मोसों न पतितभारो मोहि मति तारो वैकुण्ठ को
विचारोगे २ ॥

मूल ॥ पीपाप्रतापजगवासनानाहरको उपदेशदियो ॥
 प्रथमभवानीभक्तमुक्तिमांगनकोधायो । सत्यकह्योतिहि
 शक्ति सुदृढहरिशरणवतायो ॥ रामानंदपदपाइ भयेअति
 भक्तिकीसीवा । गुणअसंख्यनिरमोलसंतधरिराखतग्री
 वा ॥ प्रभुपरसप्रणालीसरसभइसकलविश्वमङ्गलक्रियो ।
 पीपाप्रतापजगवासना नाहरकोउपदेशदियो ६१ ॥ टी
 कापीपाकी ॥ गाङ्गरोलगढबढपीपानामराजाभयो लयो
 पनदेवीसेवारङ्गचढयोभारिये । आयेपुरसाधुसीधोदियो
 जोईसोईलियो कियोमनमांभप्रभुबुद्धिफेरिडारिये ॥ सो
 योनिशिरोयोदेखिसुपनोबिहालअतिप्रेतविकरालदेहधरि
 कैपछारिये । अबनसुहाइकलूबहुपाइपरिगई नईरीति
 भईयाहिभक्तिलागीप्यारिये २७८ ॥

आयेपुरसाधु ॥ पीपाकी दयारहै भक्ति अंग में ॥ कवित्त ॥ देवी
 सेठि शीतला बराही जा जगवैराति अऊत पितर पंचपीरको
 मनावै है । खेतखाल गंगारव भैरव भूपालादिक नाना देवता
 मनावै नग्रकोट जावै है ॥ व्याहकाज छौछिकपरोजन सराधजात
 कादिकै करज यों उदारता दिखावै है । केवल हराम जग सुमिरै
 न सीताराम कोपै जब धर्मराज नर्कको पठावै है १ पीपाजी भना
 नीको सेवै पै दया भक्ति अंगरहै याते साधुआये दियो सीधो
 जोई सोई लियो ॥ इलोक ॥ यदृच्छालाभसन्तुष्टो द्वन्द्वातीतोनि
 मत्सरः २ कियो मनमांझ साधुनिने भोग धरि कै हरिसे कही
 जेईके चुपकारि सति है रहियो राजाके भक्ति उपजाइयो ३
 भागवतेष्कादशे ॥ भूतानादेवचरित्तदुःखाय च सुखाय च ॥ सुखायै
 वहिसाधुनात्वाद्दृशामच्युतात्मनाम् ४ ॥

१ उपदेश शब्द में दे को लघुकरके पढ़नेसे पदमें मात्रा न अधिकहोनी अर्थात्
 दे के स्थानमें च कहना ॥

पूछीहरिपाइबेकोमगजबदेवीकही सहारामानंदगुरु
करिप्रभुपाइये । लोगजनैवैरोभयोगयोयहकाशीपुरी
फुरीमतिअतिआयेजहांहरिगाइये ॥ द्वारपैनजानदेत
आज्ञाईशलेतकहीराजश्रीनहेतसुनिसबहीलुटाइये।कही
कुंवागिरैचलेगिरनप्रसन्नहिये जियेसुखपायेलायेदरश
दिखाइये २७६ कियेशिष्यकृपाकरीधरीहरिभक्तिहिये
कहीअबजावोगेहसेवासाधुकीजिये । वितयेबरषजबसर
सटहलजानिसंतसुखमानिआवैधरमभ्यत्नीजिये ॥ आये
आज्ञापाइधामकीनीअभिरामरीति प्रीतिकोनपारावार
चीठीलिखिदीजिये । हूजियेकृपालवहीबातप्रतिपालकरै
चलेयुगवीसजनसंगमतिरीझिये २८० ॥

पूछोहरिपाइबोको मग जैसे राजा मुचुकुंदने देवतन पै मुक्ति
सांगी देवता बोले हमपै मुक्ति कहां होइ तौ हमहूँ मुक्त न होई
तापै दृष्टांत शीतलाको तब सोइबो सांग्यो मुक्तिही तुल्यहै देवी
ने रामानंद वताये धरी हरिभक्ति हिये उपदेशन करिधरि दियो
जैसे आधेको अपनो बड़ो अभ्यास जैसे अज्ञानी विषयी को तौ
विषयको स्वतःही सिद्ध ज्ञान॥सवैया॥ जघते तुम आवन आशदई
तबते तरफौं कर आइहौजू । मन आतुरता मनहीं में लखौं मन-
भावन जानसुनाइहौजू ॥ विधिके छिनलौं दिन बाटपरौ यह
जान वियोग विताइहौजू । सरसौ घन आनंद वारस सौं सुमहान-
रस को वरसाइहौजू १ ॥

कबीररैदासआदिदाससबसङ्गलिये आयेपुरपासपी
पापालकीलेआयोहै । करीसासटांगन्यारीन्यारीबिनैसाधु
निको धनकोलुटाइसोसमाजपधरायो है ॥ ऐसीकरीसेवा
बहुमेवानानारागभोगबाणीकेनयोगभागकापैजातगायो

है। जानी भक्तिरीति घर रहौ कै अतीति होहु करि कै प्रतीति
 गुरु पगलगि धायो है २८१ लागी संगरानी दिश दोष कही
 मानी नहीं कष्ट को बतवै डर पावै मन लावहीं। कामरीन फारि
 मधि मेखला पहिरि लेवो देवो डारि आभरण जो पै नहीं भाव
 हीं॥ काहू पै न होहि दियो रोइ भोइ भक्ति आइ छोटी नाम सीता
 गरीं डारीन लजावहीं। यह दूरि डारौ करौ तन को उधारो कि
 यो दयोरामानंद हियो पीपान सुहावहीं २८२ जो पै या पै कृपा
 करी दीजै काहू संग करि भेरे नहीं रंग यामें कही बार बार है। सों
 ह को दिवाय दई लई तब कर धरि चले डरि विप्र एक छोड़े न वि
 चार है ॥ खायो विष ज्यायो पुनि फेरि कै पठायो सब आयो सो
 समाज द्वारावती सुख सार है। रहे कोऊ दिन आज्ञा मांगी इन
 रहिबे की कूदे सिंधु मांझ चाह उपजी अपार है २८३ ॥

करी साष्टांग धनको लुटाय ॥ कवित्त ॥ जिन जिन करनाई
 तिन कर आई जिन करन न नाई तिन करन न आई है। कागर
 लिखाइ जिन कागरे लिखाई पाई धरामें धराई जिन धरा धुरि
 खाई है ॥ दैवै लवराई जिन लई है पराई अब ताहू पास नेक हूँ न
 रहति रहाई है। जिन जिन खाई तिन उदर समाती खाई जिन
 न खवाई तिन खाई बहुताई है १ ॥ श्लोक ॥ बोधयन्ति नयाचन्ते
 भिक्षुकाश्च गृहे गृहे ॥ दीयतां दीयतां नित्यमदातुः फलमीदृशम् २
 अहंता ममता बिनछूटे हरि प्राप्ति निश्चय न याते कुंवागिरौ
 प्रतीति गुरु पगलगि सूरदास ग्रामकी खबरि राखे परग्रामकी नहीं
 ऐसे जीव बिषे जाने हरिको नहीं सो इनकही गुरुआश्रय रहिये
 तो भलो होय सोंहको दिवाइ दई जैसे तेरी प्रतीति भुक्त वैराग्य
 बलखनुखारे को वादशाह फकीर एक संग स्त्री कही ऐसे आज्ञा ॥
 कवित्त ॥ सब सुख दैकै शरणागतको एकै बार भक्ति के दियेपे
 और ठाठ ठठवतहौ। पावन पतित यह विरद तिहारों ताके दोष

दुखपुंज पलहीमें मिटवतहौ ॥ सुरज कहत ताहि अपनोकै राखौ
द्वार मेरी बारहीको क्यों अवार हटवतहौ । देवकार काके वेद
दानतार काके मोहि नाथ द्वारकाके द्वारकाके पठवतहौ १ ॥

आयआगेलेनआपुदियेहैपठायजन देखीद्वारावती
कृष्णामिलेवहुभाइकै । महलमहलभांभचहलपहलल
खीरहेदिनसातसुखसकैकौनगाइकै ॥ आजादईजाइबेको
जाइबोनचाहैहियेपियेबहु रूपदेखौमोहिकोजुजाइकै । भ
क्तवृद्धिगयेयहबड़ोईकलंकभयो मेटौतमअंकशकगहीअ
कुलाइकै २८५ चलेपहुँचाइबेकोप्रीतिकेआधीनमहाबि
नजलमीनजैसेऐसेफिरआयेहै । देखिनईवातगातसूके
पटभीजेहियेलियेपहिचानिआनिपगलपटायेहै ॥ दईलैके
छापपापजगतकेदूरिकरो ढरोकाहूओरकहितीतासमभा
येहै । छठईमिलानवनमेंपठानभेंटभई लईछीनितियाकि
याचैनप्रमुधायेहै २८६ अमूलगिजावोघरकेसेकैसेआवे
डरबोलीहरिजानियेनभावपैनआयोहै । लेतहौपरिक्षामें
तौजानोतेरीशिचाऐपै सुनिदृढवातकानअतिसुखपायो
है ॥ चलेमगदोसरैसतामेंएकसिंहरहै आयोवासलेतकि
योशिष्यसमभायोहै । आयोऔरगांवशेषसाहीप्रभुनाव
रहैकरेवासहरेटरेचींघरसुहायोहै २८७ ॥

आयेआगे लैन ॥रलोक॥ क्षीरेणात्मगतोदकाय निखिलादत्ता
पुरास्वेगुणाः क्षीरेतापमवेक्ष्य तेन पयस्ता स्त्रात्मा कृशानौ हुतः ॥
गंतुं पावकमुन्मनास्तदभवत्त्रातुंचमित्रापदं युक्तं तेन जलेन शाम्य
तिसतां मैत्रीपुनस्त्वीदृशी १ ॥ दोहा ॥ सीतापतिरघुनाथजी तुम
लगि मेरीदौर ॥ जैसे काग जहाजको सूझत और न ठौर २ ॥

दोऊतियापतिदेखैआयेभागवतऐपैघरकीकुगतिरति

सांचीलैदिखाईहै । लहँगाउतारिबेचिदियोताकोसीधोलि
 योकरोअजूपाकबधुकीटमेंदुराईहै ॥ करिकैरसोईसोईभोग
 लगिबैठेकह्योआवौमिलिदोऊलेहुपाछेसीतभाईहै । वाहु
 कोबुलावौलावौआनिकौजमावोतव सीतागईवाहीठौर
 नगनलखाईहै २८८ पूछेकहौवातयेउघारेक्यों है गात
 कहीऐसेहीबिहातसाधुसेवामनभाईहै । आवैंजबसंतसु
 खहोतहैअनंततनढक्योंकैउघास्योकहाचरचाचलाई है ॥
 जानिगईरीतिप्रीतिदेखीएकइनहींमहमहूंकहावैं ऐपैछटा
 हूनपाई है । दियोपटआधोफारिगहिकैनिकारिलई भई
 सुखशैलपाछेपीपासो सुनाई है २८९ ॥

दोऊतियापति महाराज पीपा अरु सीता श्रीद्वारका हैं आये
 हैं वेई छाप लाये हैं श्रीकृष्णजने दई है १ तो इन्हें लगवैगो
 सो मोहींपै आवैगो लंबेसे गोरेसे पीपाजी हैं वर्षतीसमें अरु सी-
 ताजी वर्षपंद्रह मेंसर्वाङ्गसुन्दरी गौराङ्गी मानों सीताहीहै उनको
 दर्शन साक्षात् श्रीकृष्णही हैं याते नितकी जाट देखै २ ॥ दोहा ॥
 आज द्वैजतिथि है सखी शशिकुण्यो आकश ॥ भरे हग अरु पीव
 के हैं दोउ एके पास ३ रति सांची जैसे नटकीसी कलालै ऐसे
 पहले ४ ॥

करैवेइयाकर्मअबधर्महै हमारोयहीकहीजाइबैठीजहँ
 नाजनकीढेरीहै । धिरिआयेलोगजिन्हेंनैननकोरोगलाखि
 दूरिभयोशोगनेकुनीकेहूनहेरीहै ॥ कहैतुमकौनवरमुखी
 नहीभोनसंगभरुवासुगहैंमौनसुनिपरीबेरी है । करीअन्न
 शशिआगेमोहरेरुपैयापागे पठैदईचीधरकेतहीनिरबेरी
 है २९० आज्ञामागिढोड़ेआयेकभूमंखेकभंधाये औच
 कहीदामपायेगयोअसनानको । मुहरनिमांडोभूमिगाडो

देखिछोड़ि आयो कही निशितिया बोली जावो शर आनको ॥
 चोरचाहै चोरी करै ठरे सुनिवाही और देखै जो उधारि सांप
 डारे हते प्रानको । ऐसे आइ परी गनी सात सत बीस भई
 तोरे पांचवांट करे एकके प्रमानको २९१ जोई आवै द्वार
 ताहि देत है अहार और बोलिकै अनंत संत भोजन करायो है ।
 बीते दिन तीनि धन धाइप्याइ छीन कियो लियो सुनि नाम नृ
 पदेखि वेको आयो है ॥ देखिकै प्रसन्न भयो देवो दीक्षा
 मोहि दीक्षा है अनीतिकरै आपसो सुहायो है । चाहौ सोई
 करौ हूँ कृपालमोको ठरौ अजुधरौ आनि संपति औरानी ज्या
 इलायो है १९२ ॥

करै वेइया कर्म क्योंकि हमहुं देखा देखी आगेको वढ़ें वह तन
 कौन कामको है और तन सब काम आवे वैल भैस सुरहगऊ
 हाथी भेड़ पीपाजी बोले हमें कोऊलेइ तो हमहुं विकै सीता बोलीं
 हमारे पीछे लगिलेहु तुम कैसे विकौगे वारमुखी होहिंगी सो स-
 त्संगते रंगचढ़यो गहगह्यो तीनिवार पुटनि में गहगह्यो चढ़ा है
 एक पुट पीपाजी सो दूसरो चीधरजी सो तीसरो चीधररानी
 जीने गहगह्यो कह्यो ऐसे आनि परी पीपाजीने कही कहा करौगी
 कही अब बाधा न करौगी १ हते प्राण ॥ श्लोक ॥ लिखिता चित्र
 गुप्तेन ललाटे क्षरमालिका । न सापि चालितुं शक्या पंडितैस्त्रिद-
 शैरपि । लक्ष्मण दर्शन विभीषण आवै पड़ा फूल ढेरी लोह गु-
 झा मांगे ॥

करिकै परीक्षा दई दीक्षा संगरानी दई भई है हमारी करौ
 परदान संतसों । दियो धन घोरा कछराख्यो दैनि होरा भूप
 मानत न छोरा बड़ो मान्यो जीव जंतसों ॥ सुनि जरि बरि गये
 भाई सेनसूरजके ऊर जप्रताप कहा कहै सीता कंतसों । आयो

बनिजारोमोललियोचाहैखेलनको दियोबहकाइकहौपापा
 जअनंतसों २९३ बोल्योबनिजारोदामखोलिथैलादी
 जियेजूलीजियेजूआइग्रामचरणपठाये हैं । गयेउठिपाछे
 बोलिरंतनमहोच्छोकियो आयोत्राहीसमै कहीलेहुमन
 भाये हैं ॥ दरशनकरिदिये भक्तिभावभरयोआनिआनिकै
 बसनसवसाधुपहराये हैं । औरदिनन्हानगयेघोड़ाचढ़ि
 छौंढिदियोलियोवांध्योदुष्टनने आयोमानोलाये हैं २९४
 गयेहैंबुलायेआपपाछेघरसंतआयेअन्नकछुनाहिंकहूंजाइ
 करिलाइये । बिषयीबणिकएकदेखिकैबुलाइलईदईसबसों
 जकहीसहीनिशिआइये॥भोजनकरतमांझपीपजूपधारेपू
 लीवारेतनप्राणजबकहिकैजनाइये । करिकैशृंगारसीताच
 लीहुकिमेहआयोकांधेपैचढ़ाइबपुबनियारिझाइये २९५॥

दईदीक्षा ॥ श्लोक ॥ राज्ञश्चामात्यजादोषाः पत्नीपापंस्वभ
 र्त्तरि ॥ यथाशिष्यार्जितंपापंगुरुःप्राप्नोतिनिश्चितम् १ दईसबसों-
 ज ॥ कवित्त ॥ कागनि को मोतिया चुगावतहै रैनिदिन हंसनि
 को चुनीचूर कांकरी समेतहै । चैरीकाहिं चूड़ा अरु सुन्दर दुशा-
 लालाल शीलहूकी बात कभू हियेहू न लेतहै ॥ गुणीते गुमानता
 गुण की पहिंचानि नाहिं आवै जो अजान तासों निपट कै हेत
 है । कोऊ जोसी मागै सीधा सूधही जवाव देत कश्चनीको कश्चन
 उधार लै लै देत है २ ॥

हाटपैउतारिदई द्वारआपबैठिरहे चहेसूकेपगमाता
 कैसेकरिआईहै । स्वामीजुलिवाइलाये कहांहैनिहारोजाइ
 आइपाइपखोढस्योराखौसुखदाईहै ॥ मानांजिनिशकका
 जकीजिये निशंकधनदियोबिनअंकजापैलरैमरैभाई है ।
 मखोलाजभारचाहैधखोभूमिफारिदूग बहैनीरधारदेखि

दईदीक्षापाई है २९६ चलतचलतवातनृपतिश्रवणपरी
 भरीसभाविप्रकहैबड़ीविपरीतिहै । भूपमनआईयहनिपट
 घटाईहोतिभक्तिसरसाई नहींजानैघटीप्रीतिहै ॥ चलै
 पीपाबोधदैनद्वारहीते सुधिदई लईसुनिकही आवौकरौ
 सेवारीतिहै।बड़ोमूढ़राजासोजगौठैबैव्योमोचीघरसुनीदौ
 रिआयो रहेठाढ़ेकौननीतिहै २९७ हुतीघरमांझबांभ
 रानीएकरूपवती मांगीवहीलावोबेगिचल्यो शोचभारी
 है । डगमगपांवधरै पीपासिंहरूपकरैठाढ़ादेखिडरैइत
 आवैआपखवारी है ॥ जाइतौबिलाइमयोतियाढिगसुतन
 योनयोभूपपरकलाजानी न तिहारी है । प्रकव्योस्वरूप
 निजखिचिकैप्रसंगकह्यो कहांवहरंगशिष्यभयो लाज
 टारी है २९८ ॥

माता कैसे ॥ सर्वैया ॥ प्रीतम प्यारो मिल्यो सपने में परी
 जय नैसुक नींद निहारे । कंतको आइघो त्योंही जगाइ कह्यो सखि
 वैन पियूप निचेरे ॥ घों मतिराम गयो हियमें तब बालके बालम
 सों दृगजोरे । ज्यों पटमें अतिही चटकीलो चढ़ै रंग तीसरी धार
 के धोरे १ याको शुद्धहृदय अवही कैसे हैगयो सीताजीके दर्शन
 ते सीधकी बेर क्यों न भयो तीनपुट में रंग है द्वै विधि दर्शन एक
 विधि भोजन विप्रकहै यहां राजा के ब्राह्मणको पीपाजीको बोध
 क्यों न भयो वास सीप केलासी पतवा सो पात्र भेद है २ ॥

कियोउपदेशनृपहृदमेंप्रवेशक्रियोलियोवहीप्रणआप
 आयेनिजधामहै । बोल्योएकनामसाधुएकनिशिदेहुतिया
 लेहुकहीभागोसंगभागीसीतावामहै ॥ प्रातभयेचलेनाहिं
 रैनहीकीआज्ञाप्रभुचल्योहारि आगेघरघरदेस्त्रीग्रामहै ।
 आयोवाहीठौरचलौमातापहूँचाहआऊं आयगहेपांवभाव

भयोगयोकामहै २६६ विषयीकुटिलचारिसाधुवेषलियो
 धारिकीनीमनुहारिकही तियनिजदीजिये । करिकैशृंगार
 सीताकोठेमांझबैठीजाइ चाहैमगआतुरहैअजूजाहुली
 जिये ॥ गयेजबद्वारउठीनाहरीसुफारिवेको फारेनहींवानो
 जानिआइअतिखीजिये । अपनोबिचारोहियोकियोभोग
 भावनाको मानिसांचभयो शिष्यप्रभुमतिधीजिये ३०६
 गूजरीकोधनदियो पियोदहीसंतननेब्राह्मणकोभक्तकियो
 देवीदीनिकारिकै । तेलीकोजिवायो भैसिचोरनपै फेरि
 लायोगाड़ीभरिगेहूं तनपांचठौरजारिकै ॥ कागदलैकोरो
 करबनियांकोशोकहस्यो भस्योघरत्यागिडारी हत्याहूउता
 रिकै । राजाकोऔसेरभईसंतकोजोविभौदईलईचीठीसा
 निगयेश्रीरंगउदारिकै ३०१ ॥

गयो कामहै ॥ दोहा ॥ मन पक्षी जवलग उडै त्रिषै-त्रासना
 माहिं ॥ प्रेम वाजकी झपट में जवलगि आयो नाहिं १ विषयी
 कुटिल ॥ चरण रंगे लोचन रंगे चले मराली चाल ॥ नीर क्षीर
 विवरण समयवक उघरयो त्यहिकाल २ गूजरीको धनदियो साधु
 बोले ठाकुरजी को मन दही पै चल्यो है ठाकुर क्यों कहै अपनो
 ही क्यों न कहै ३ ब्राह्मणको भक्त कियो ॥ श्लोक ॥ वाउञ्चाक
 ल्पतरुभ्यश्चकृपासिंधुभ्यश्च ॥ पतितानांपावनेभ्योवैष्णवेभ्यो
 नमोनमः ४ ॥

श्रीरंगकेचेतधरेतियहियभावभरे ब्राह्मणकोशोकहरे
 राजापुजाइके । चंदवाबुझाइलियोतेलीकोलैबैलदियो
 दियोपुनिघरमांझभयोसुखआइके ॥ बडोईअकालपरयो
 जीवदुखदूरिकरयो परयोभूमिगर्भधनपायोदैलुटाइके ।
 अतिविसतारलिये कियोहैबिचार यह सुने एकवारफिरि

भूलेनहींगाइके ३०२ ॥ मूल ॥ धनिधन्यधनाकेभजनको
 विनाबीजअंकुरभयो ॥ घरआयेहरिदासतिनहिंगोधूम
 खवाये । तातमातडरथोधखेतलंगूरबवाये ॥ आसपास
 कृषिकारखेतकीकरतबड़ाई । भक्तभजेकीरीतिप्रकटपर
 तीतिजुपाई ॥ अतिअचरजमानतजगतमें कहँनिपज्यो
 कहँउनबयो । धनिधन्यधनाकेभजनको विनहिबीजअं
 कुरभयो ६२ ॥ टीका ॥ खेतकीतोवातकहीप्रकटकबित्त
 सांझ औरएकसुनौभईप्रथमजुरीतिहै । आयोसाधुविप्र
 धामसेवाअभिरामकरैटरोढिगआइकही मोहिदीजैप्रीति
 है ॥ पाथरलैदियोअतिसावधानकियोयहब्रतीलाइजियो
 सेवैजैसीनेहनीति है । रोटीधरिआगेआखिमूंदिलियोपर
 दाकेछिपोनहींटूकदेखि भईबड़ीभीतिहै ३०३ ॥

चित्तधरयो तियाहिये भावभरयो ऐसी स्त्री जाती कैसे भाव
 भरयो सत्संगते एकादशे ॥ सत्संगेनहिदेतेयायातुधानाःखगा
 मृगाः ॥ गंधर्वाप्सरसोनागाःसिद्धाश्चारुगणह्यकाः १ ॥ विद्याधर
 मनुष्येपुवैश्याश्शूद्रास्त्रियोत्यजाः २ ॥ घरआये हरिदास ॥ कुंडलि-
 या ॥ अगर भूख भागे नहीं सपने सो मनखाइ । आये नाग न
 पूजई बांवी पूजन जाइ ॥ बांवी पूजन जाइ भटकिभ्रम सबरै आ-
 वै । हरिजन हरहर हँसे तिनहिं तजि अंतहिधावै ॥ नकटी भषण
 कोटि करै शोभा नहिंपावै । घरमें फजिहत होइ बहिर परिवार
 जनवैप्रप्रीतिहै ॥ श्रवणादर्शनाद्भयानान्मयिभावोनुकीर्तनात् ४ ॥

वारवारपांवपरैऔरभूखप्यासतजी धरैहियेसांचौमा
 वपाईप्रभुप्यारिये । छाकनित्तआवैनीकेभोगको लगावै
 जोईछोड़ोसोईपावै प्रीतिरीतिकहुन्यारिये ॥ जाकोकोऊ
 खाइताकीटहलबनाइकरैलावतचराइगाइहरिउरधारिये ।

आयोफिरिबिप्रनेहखोजहूनपायोकिहूं सरसायोवातैलैदि
खायोश्यामजारिये ३०४ द्विजलखिगाइनभंगातनिस
मातनाहिंभाइनकीचीटदृगलागीनीरझरी है। जायकेभव
नसीतारवनप्रसन्नकरै बड़ेभागमानिप्रीतिदेखीजैसीकरी
है ॥ घनाकोदयालह्नेकेआज्ञाप्रभुदर्ईठरौकरौगुरु रामानं
दभक्तमतिहरी है । भयेशिष्यजाइआयझातीसौलगाइ
लियेकियेगृहकाजसबैसुनीजैसीधरी है ३०५ ॥

द्विजलखि गाइन भें ॥ कवित्त ॥ गोरज विराजै भाल लह-
लही वनमाल आगे गैया पाछे ग्वालगावै मृदु वानिरी । जैसी
धुनि बांसुरीकी मधुर मधुर तैसी वंक्र चितवनि मन्द मन्द मुसु-
कानिरी ॥ कदम बिटपके निकट तटनीके तट अटाचढ़ि चाहि
पीतपट फहरानिरी । रसवरसावै तन तपनिबुझावै नैन वैननि रि-
भावै बहुआवै रसखानिरी १ ॥ भूपके तेल लगायो यहतौ बड़ो
आश्चर्य है वैष्णवकी तौ टहलकरै पै अभक्त राजा तांके तेल
लगायो तहां टीकाकारने कहो है वही भगवन्त सन्त प्रीति को
विचारकरै धरै दूर ईशताई पाण्डवनिसों करी है २ ॥

मूल॥विदितवातजगजानियेहरिभयेसहायकसेनके ॥
प्रभूदामकेकाजरूपनापितकोकीनो । क्षिप्रखुरहरीगही
पानदर्पणतहँलीनो ॥ तादृशहैतिहिकालभूपकेतेललगा
यो । उलटिरावभयोशिष्यप्रकटपरचौजबपायो ॥ श्रीइया
मरहतसम्मुखसदाज्योबच्छाहितधेनके । विदितवातज
गजानियेहरिभयेसहायकसेनके ६३ टीका ॥ बांधोगढ़
बासहरिसाधुसेवाआशुगीपगीमतिअति प्रभुपरचौदि
खायोहै । करिनितनेमचलेभूपकेलगाऊंतेलभयोमगमे
लसंतफिरिघरआयोहै ॥ टहलबनाइकरीनृप्रकीनशंकधरी

धराउरश्यामजाइभूपतिरिभायोहै । पात्रेसेनगयोपंथपत्रे
हियेरंगल्योभयोअचरजराजावचनसुनायोहै ३०६ फेरि
कैसेआयेतुनिअतिहीलजायेकही सदनपधारेसंतभईयो
अवारहै । आवननपायोवाहीसेवाअरुभायोराजादौरिशि
रनायोदेखीमहिमाअपारहै ॥ भीजिगयोहियोदासभावद
दलियोपियोभक्तरसशिष्यहैकैजान्योसोईसारहै । अ
वलोंहूंप्रीतिसुतनातीभईशीतिचलै होइजोप्रतीतिप्रभुपा
वैनिरधारहै ३०७ ॥

नापित ॥ दशमे ॥ अनुग्रहायभक्तानां मानुषदेहमास्थितः ॥
भजतेतादृशीःक्रीडायाःश्रुत्वात्तत्परोभवेत् १ ऐसे तुमने नाऊ रूप
धरयो तौ हम नाऊके शिष्य ॥ सारसमुच्चये ॥ नशूद्राभगवद्भक्ता
स्तेपिभागवतोत्तमाः ॥ सर्ववर्णेषुतेशूद्रा येन भक्ता जनार्दने २ पद
रचना ॥ मधुपुरी क्यों न चलो हरिश्याम । बलिजाऊं रजधानी
कैसे छांडि गोकुलसों ग्राम ॥ नन्दयशोदाकी रट भेटौ बेगिचलो
उठिधाम । निशिवासर कहूँ कल न परतिहै सुमिरत तेरो नाम ॥
तव तुम वेनु वजाइ बुलाई कालिंदीके तीर । अब वै वातैं क्यों बि-
सरैंगी हरि हलधर दोउवीर ॥ गोपवधू ब्रजमंडल मंडन सब मिलि
जोरैहाथ । सुखानंद स्वामी सुखसागर बेगि चलो उठि साथ ३ ॥

मूल ॥ भुविभक्तिदानभयहरणभुजसुखानंदपारसपर
स ॥ सुखसागरकीछापरायगौरीरुचिन्यारी । पदरचना
गुरुमंत्रमनोआगमउत्तहारी ॥ निशिदिनप्रेमप्रवाहद्रवत
भूधरत्यौंनिर्झर । हरिगुणकथाअगाधभालराजतलीलाभ
र ॥ सुठिसंतकंजपोषणविमलअतिपियूषसरसीसरस ।
भुविभक्तदानभयहरणभुजसुखानंदपारसपरस ६४ ॥
सहिमामहाप्रसादकीसुरसुरानंदसांचीकरी ॥ एकसमयअ

ध्वचलतवरावाँकाछलपाये । देखादेखीशिष्यतिनहुँपीबैते
 खये ॥ तिनपरस्वामीखिजेबमनकरिबिनविश्वासी । तिन
 तैसेप्रत्यक्षभूमिपरकीनीरासी ॥ सुरसुरीसुधरपुनिउदकलै
 पुहपरेणुतुलसीहरी । महिमामहाप्रसादकीसुरसुरानद
 साँचीकरी ६५ ॥ महासतीसतऊपमा त्योंसत्तसुरसुरी
 कोरह्यो ॥ अतिउदारदंपत्यत्यागिगृहवनकोगमने । अ
 चरजभयोतहँएकसंतसुनिजिनहोबिमने ॥ बैठेहुतेएका
 तआइअसुरनदुखदीयो । सुमिरेशारंगपाणिरूपनरहरिको
 कीयो ॥ सुरसुरानदकीघरनिकोसतराख्योनरसिंहचहयो ॥
 महासतीसतऊपमात्योंसत्तसुरसुरीकोरह्यो ६६ ॥

तब प्रतिमा रनछोर बहुतदिन वसे गोमतीतीर । ब्रजवासी
 दरशनको तरसें परशत श्यामशरीर ॥ प्रेम तीन प्रकारको तापै
 कबूतरको दृष्टांत ॥ दोहा ॥ हितकरि तुम पठयो लगी वा व्यजना
 की वाइ ॥ गई तपनि तनकी तऊ उठी पसीना न्हाइ १ महिमा
 प्रसाद ॥ पावै ॥ प्रसादंजगदीशस्याप्यन्नपानादिकञ्चयत् । ब्रह्म
 चन्निर्विकारंहियथाविष्णुस्तथैवतत् ॥ त्रिचारयेचकुर्वतितेनश्रयंति
 नराधमाः २ ॥ खिजे ॥ गुरोराज्ञासदाकुर्यान्नतदाचरणंकचित् ॥
 महादेवजीने विषपियो और कोऊ कैसे पीवैगो गुरुको गुरु न
 होइजाइ तापै रोटीको दृष्टांत ॥ दोहा ॥ गौने व्याह उछाह को
 संतअन्न नहिं खाय ॥ जहाँ तहाँके पायवे भजन तेज घटिजाय ३ ॥

मूल ॥ निपटैनरहरियानन्दकोकरदातादुरगाभई ॥
 झरघरलकरीनाहिंशक्तिकोसदनउदारै । शक्तिभक्तसोंबो
 लिदिनहिंप्रतिवरहीडारै ॥ लगीपरोसनिहोसभवानीभय
 सोमाख्यो । बदलेकीबेगारिबेगिवाकेशिरडाख्यो ॥ भयोभ
 रतप्रसंगज्योंकालिकालडूदेखितनमेतई । निपटैनरहरि

यानन्दकेकरदातादुरगाभई ६७ कब्बीरकृपातेपरमतत्त्व
पद्मनामपरचोलह्यो ॥ नाममहानिधिमंत्रनामहीसेवापू
जा । जपतपतीरथनामनामबिनऔरनदूजा ॥ नामप्रीति
नामबैरनामकहिनामीबोलै । नामअजामिलसाखिनाम
बंधनतेखोलै ॥ नितनामअधिकरघुनाथतेरामनिकटहनु
मतकह्यो । कब्बीरकृपातेपरमतत्त्वपद्मनामपरचोलह्यो
६८ ॥ टीका ॥ काशीबासीसाहभयोकोठीसोंनिबाहकैसे
परिगयेकृमिचल्योबूडिवेकोभीरहै । निकसेपदमआइपू
छीढिगजाइकही गहीदेहखोलौगुणन्हाइगंगानीरहै ॥ रा
मनामकरैबैरतीनिमैनवीनहोत भयोईनवीनकियोभक्तम
तिधीरहै । गयेगुरुपासतुममहिमानजानीअहो नामाभा
सकामकरैकहीयोकबीरहै ३०८ ॥

कबीर ॥ दोहा ॥ समभिपदे कै पदि समझि अहो कहो द्विज-
राय ॥ सुनि यह वात कबीरकी पण्डित रह्यो हिराय १ तप जप
तीरथनाम ॥ नाम लियो जिन सब कियो योग यज्ञ आचार ॥ जप
तप तीरथ परशुराम सब नामकी लार २ ॥ नामबैर ॥ कवित्त ॥
कोऊ एक यवन जरठ सङ्ग जात कहूं सूकरके शावक ने मारयो
ताहि धायकै । जोरसों पुकारयो मोहि मारयो है हरामजाति ऐसे
कहि वेगि प्राणगये अकुलायकै ॥ गोपदसमान भवसागरसों पार
गयो नामके प्रताप ऐसो पद कहो गायकै । प्रेमसों कहैगो कोऊ
नाम कृपा राम कौन अचरज रामधाम देतहैं जु चायकै ३ ॥

मूल ॥ तत्त्वार्जीवादक्षिणदिशांबशोधरराजतविदित ॥
भक्तिसुधाजलसमुद्रभयेबलाबलिगाढी । पूरबजान्योरी
तिप्रीतिउतरोत्तरबाढी ॥ रघुकुलसदृशसुभावसृष्टिगुणस

दाधर्मरत । शूरधीरऊदारदयापरदक्षअनन्यव्रत ॥ जनुप
दमखण्डपदमापधतिप्रफुलितकरसविताउदित । तत्त्वा
जीवाक्षिणदिशाबंशोधरराजतत्रिदित ६९ ॥ टीका ॥
तत्त्वाजीवाकी ॥ तत्त्वाजीवाभाईउभैविप्रसाधुसेवापन म
नअसेबाततातेशिष्यनहींभयेहैं । गाड़ेएकठूठद्वारहोइअ
होहरीडार संतचरणामृतकोलैकैडारिनयेहैं ॥ जवहींहरि
तदेखैंताकोगुरुकारिलेखैं आयेश्रीकवीरपूजीआशपावल
येहैं । नीठिनीठिनामदियोदियोपरचाइधाम कामकोइहो
इजोपैआवोकहिगयेहैं ३०९ कानाकानीभईद्विजजानी
जातिगईपांति न्यारीकरिदईकोउवेटीनहींलेतहै । चलयो
एककाशीजहांवसतकवीरधीर जाइकहींपीरजवपूछेकौन
हेतहै ॥ दोऊतुमभाईकरोआपुमेंसगाईहोइ भक्तिसरसाई
नघटाईचितचेतहै । आइवहैकरीपरीजातिखरभरीकहै
कहाउरधरीकळूमतिहूअचेतहै ३१० ॥

भक्तिसुधाअमृतमय हैगुण मादकता मिष्टभक्तिरूपी अमृतहू
सादक अतिमिष्टपै वह नश्वर अरु यह स्वमुखकर्त्ता यह सम्मुख
कर्त्ता बेलबेलघाटहै १ ॥ मनधरी ॥ दोहा ॥ तोलोवरोवरिगोंगची
मोलवरोवरि नाहिं ॥ वेषवरोवरि परशुराम भेद वरोवरि नाहिं २
नामदियो ॥ याते परीक्षालई सबतीरथ करत कवीरजी आये ३
चितचेतहै ॥ चितमें बिचारी सम्बन्ध तो सबसोहै वेतो अभक्त
तुम भक्त सो सम्बन्ध कामको नहींपर परायो देखयो स्वयंभूमुनि
कर्मसञ्चषि ४ वंशीधर प्रह्लाद कही पिता उच्चार इकीस कुली
ब्रह्मा मारीच कश्यप हिरण्यकशिपु नाना फूफा सामा मौसी
पूरव जान्यो ॥ आरम्भगुर्वीक्षयिणीक्रमेण लघ्वीपुरावृद्धिमतीच
पश्चात् । दिनस्यपूर्वाद्धिपराद्धिभिन्नाज्ञायेवभैत्रीखलसज्जनानाम् ॥
दोऊ तुम भाईकरी ब्रह्माके अंगते स्वयंभूमनु ज्ञतरूपा तिनते

देवहूती आकूती प्रसूती सृष्टि थोड़ी तब ब्रह्माके बेटा कर्दम
आदि दई ५ ॥

करैयहीवातहमै औरनासुहातआये सबैहाहाखातयह
छांड़िहठदीजिये । पूंछिवेकोफेरिगयेकरौब्याहजोपैनये
दण्डकरिनानाभांतिभक्तिदृढ़कीजिये ॥ तबदईसुतालई
यातनप्रसन्नहैकै पांतिहरिभक्तनसोसदामतिभीजिये ।
त्रिमुखसमूहदेखिसमुखबड़ाईकरै धरौहियमांभकहैपनप
ररीभिये ३११ ॥ मल ॥ वरविनयव्यासमनोप्रकटहैज
गकोहितमाधवकियो ॥ पहलेवेदविभागकथितपुराणअ
ष्टादश । भारतादिभागवतमथितउद्दारेउहरियश ॥ अब
शोधेसवग्रन्थअर्थभाषाविस्तारेउ । लीलाजयजयजयति
गाइभवपारउतारेउ ॥ जगनाथइष्टवैरागशिवकरुणार
सभीज्योहियो । वरविनयव्यासमनोप्रकटहैजगकोहित
माधवकियो ७० ॥

भाषा विस्तारयो ॥ पद ॥ हरिहरिनाम उचारिये हरियश सुनि
ये काना । हरिको मस्तक नाइये हरिहैं सकल गुणके निधाना ॥
हाथन हरिके कर्मकरि पावन परिकर्मा दीजै । नैन निरखि श्री
जगन्नाथ आत्मा ससर्पण कीजै ॥ कोटि अर्थको अर्थ यह श्रीभाग-
वत विचारा । वासुदेवकी भक्तिविन नहीं नरको निस्तारा १ ॥
श्लोक ॥ स्त्रीशूद्रद्विजब्रधूनां त्रयीनश्रुतिगोचरा ॥ कर्मश्रेयसिसूदा
नांश्रेयएवंभवेदिह २ इति भारतमाख्यानं कृपयामुनिनाकृतम्
३ ॥ स्मृतौ ॥ आदौत्रयोद्विजाःप्रोक्तास्तेषांविमंत्रसत्क्रियाः ४
एसे व्यासने जगत्को हित कियो तैसेही माधवदासजीने ॥ मृषा
गिरस्ताह्यसतीरसकथाः ॥ तापै भट्टजी अरु कूबाको वृष्टांत ५॥

टीकामाधवदासजीकी ॥ माधोदासद्विजनिजतियात

नत्यागकिया लियाइनजानजगएसोईव्योहारहै । सुतकी
 बदनयोगलियेनितचाहतहौ भईयह औरलैदिखाईकरता
 रहै ॥ तातेतजिदियोगेहवेईअबपालैदेह करैअभिमानसो
 ईजानियेगैरारहै । आयेनीलगिरिधामरहेगिरिसिंधुतीर
 अतिमतिधीरभूखप्यासनविचारहै ३१२ भयेदिनतीनिये
 तौभूखकेअधीननहिं रहेहरिलीनप्रभुशोचपख्योभारिये ।
 दियोशैनयोगआपलक्ष्मीजलैपधारी हाटककीथारीझन
 झनपात्रधारिये ॥ बैठेहैंकुटीमेंपीठिदियेहियेरूपरंगे विजु
 रीसीकौधिगईनीकेननिहारिये । देखिसोप्रसादवडोगनअ
 हलादभयो लयोभागमानिपात्रधरयोईविचारिये ३१३॥

साधवदासजी कनौजिया ब्राह्मणरहै यह विचारैहैं लरिका
 स्याने होहिं तौ माता स्त्रीको टहलको छोड़िकै बैरागलोहिं तौलौ
 स्त्री समाइगई उलटीटहल लरिकनकी आइपरीजैसेकोई सवारी
 चाहैहो उलटौ शिरपै घोड़ा को बोझा धरयो १ दिखाई पालन
 सबको हरिही करैहैं अब जो लरिकनको बढिवो विचारौ फिरि
 सगाई व्याह फेरि छूळक इतने में शरीरकी छुछि है गई यह
 कारज तौ बट्टीनाथके पहाड़ है कब छूटैगे सह दिवाइके निकारयो
 जैसे बलख के बादशाहको २ हिये रूपरंग साधु द्वै जातिके एक
 भगवत्कामी एक स्थानी एक गमनी गमनीद्वै जाति के एकपर
 उपकारी एक अन्त कामी स्थिरी द्वै जातिके एक भगवत्कामी
 एक अर्थकामी शोभादेशचारी धामचारी आसचारीके तीनभेद
 एक हटानबती एक स्थानबती एक घानक साधवदास हरिकामी
 हैं सो साधुनके भेद हैं ॥

खोलैजोकिवारथारदेखियेनशोचपख्यो कखोलैयतन
 बूढिवाहीठौरपायोहै । लायेबाधिमात्रीबैनधारीजगन्नाथ

देवभेदजबजान्योपीठिचिह्नदरशायो है ॥ कहीतबआप
 मेंहीदियोजबलियोयाने मानैअपराधपांवगहिकैक्षमायो
 है । भईयोप्रसिद्धवातकीरतिनमातकहूं सुनिकैलजात
 साधुशीलयहगायो है ३१४ देखतस्वरूपसुधितनकीबि
 सरिजातिरहिजातिमंदिरमेंजानेनहीं कोई है । लग्योशीत
 गातसुनोवातप्रभुकांपिउठे दईसकलातआनिप्रीतिहिये
 भोई है ॥ लगेजबवेगवेगीजाइपरेसिंधुतीर चाहैजबनीर
 लियेठाढेदेहधोई है । करिकैविचारयोनिहारिकहीजानेमें
 तौदेतहोअपारहुखईशतालै खोई है ३१५ कहाकरोंअहो
 मोपैरहोनहींजातनेकुमेठौ व्यथागातमोको व्यथाब भा
 रीहै । रहैभोगशेषऔरतनमेंप्रवेशकरै तातेनहींकरोदूरि
 ईशतालैटारीहै ॥ बहुवातसांचयाकीगांसएकअरिसुनो
 साधुकोनहैसेकोऊयहमैबिचारीहै । देखतहीदेखतमेंखीड़ा
 सीबिलाइगई नईनईकथाकहिभक्तिबिसतारीहै ३१६ ॥

भई यों प्रसिद्ध वात ॥ सो ज्यों ज्यों सुने जगन्नाथने साधव-
 दास ने लिये आप वेंतपाये त्यों त्यों ये लजात अरु कहैं हमारा
 कुनाम भयोहै जिनको पुष्पादि सो पूजिये तिन्होंने वेंतपाये सा-
 धुनके लक्षण हैं जैसे सुदामा कही मेरो दरिद्रगयो मेरेदरिद्रको
 ख्यातकियोहै सबकहैंहैं सुदामा गरीब भक्तहै १ देहधोइये ॥श्लोक॥
 यद्यद्वाञ्छतिमद्भक्तस्तत्तत्कुर्यामतन्द्रितः ॥ रह्योनहींजात सब जग
 जगन्नाथकी सेवा करैहै । जगन्नाथजी साधवदासकी सेवाकरै है ॥

कीरतिअभंगदेखिभिक्षाकोअरंभकियो दियोकाहूबा
 ईपोताखीजतचलाइकै । देवोगुणलियोनीकेजलसोंप्रछा
 लिकरि करीदिव्यवातीदईदियेभंगराइकै ॥ मंदिरउजासो

भयोहियेकोअंध्यारोगयो गयोफेरिदेखिवेकोपरीपाईआ
इकै । ऐसेहैदयालदुखदेतमेंनिहालकरै करैलैजेसेवाता
कोसकैकौनगाइकै ३१७ पंडितप्रबलदिगविजैकरिआयो
आपबचनसुनायोजूविचारमोसोंकीजिये । दर्इलिखिहार
काशीजाइकैनिहारपत्र भयोअतिद्वारलिखीजीतिवाकी
खीजिये॥फेरिमिलिमाधौजकोवैसेईहरायोएकखरकोबुला
योकहीचढीजीउधीजिये । बोर्योजूतीबांधीकानगयोसुनि
न्हानआनजगन्नाथजीतेलैचढायोवाक्रीभिये ३१८ ॥

भिक्षाको आरंभ ॥ दोहा ॥ धरती तौ खूंदन सहै काठसहैवन
राइ ॥ कुबचनतौ साधू सहै और पै सहो न जाइ १ हार ॥ कवित्त ॥
दूनों भलो सुपथपै न कुपथ उनो भलो सुनो भलो गेह पै न बल
साथ करिये । अनलकी लपट औ कपट भली नाहरकी कपटी
के कपटसों दूरिपरिहरिये ॥ यहै जगजीवन परम पुरुषारथहै पर
घर जाइ फेरि रससो निकरिये । हारिमानि लीजिये न कीजै
बाद नीचनसों सब रसदीजै पै न परबश परिये २ ॥ दोहा ॥ हारे
तौ हरिजन भले जीतनदौ संसार ॥ हारे हरिपै जाहिंगे जीते
यमके द्वार ३ जगन्नाथजीते तब जगन्नाथकही गदहापै चढी तरे
मुख न्याय है जैसे वाने कही काजी के मुख न्यायहै ४ ॥

ब्रजहीकीलीलासबगावैं नीलाचलमांझमनभई चाह
जाइनैनननिहारिये । चलेवृन्दावनमगलगिएकगांवज
हांबाईभक्तिभोजनकोलाईचावभारिये ॥ बैठेयेप्रसादलेत
लेतदृगभरिअहोकहौकहाबातदुखहियेकोउघारिये । मांवर
रोकुंवरयहकौनकोभुराइलायेमाइकैसेजीवै सुनिमति लैवि
सारिये ३१९ चलेऔरगांवजहांमहाजनभक्तरहैगहैमन
मांभ्रआगेविनतीहूकरिहै । गयेवाकेघरवहगयोकाहऔर

घरभावभरितिया आयपाँयनमेंपरीहै ॥ ऊपरमहंतकहींअ
बएकसतआयोयहांतौसमाइनाहिआईअरवरीहौ। कीजि
येरसोइजोइसिद्धिसोइलावोदूधनीकेकेपियावोनाममाधौ
आशभरीहै ३२० ॥ गयेउठिपात्रेभक्तआयोसोसुनायोनाम
सुनिअभिसामदोरेसगहीमहंतहै । लियेजाइपाइँलपटाये
सुखपायमिलेभिलेघरमांझतियाधन्यतोसोकंतहै ॥ संत
पतिबोलैमैंअनंतअपराधकिये जियेअबकहींभेवोसीतमा
निजंतहै । आवतमिलापहोइयहीराखीबातगोइआयेवृ
न्दावनजहांसदाईवसंतहै ३२१ ॥

सवैया ॥ भूने भूगामें दगाही भरी ओ लगाही लगा सँग
डोलतहै । देखे प्रगा न जगा जगमें सुभगा कुलकानि के गोलत
है ॥ नैनलगा सो लगाही गया सुभगा उर बान बिलोलत है ।
लरिकानि में डोलत है जगनाथ रुरु कुरुकुरि बोलत है । धूरि
में धुरिभरे सवगात मुजात पुकारत डोलत है । अलकावलि रा-
जति है बियुरी सुथरी वरगोल कलोलत है ॥ अम्नुज लोचन-चारु
चितौनि सुभाल विशाल बिलोलत है । लरिकानि में डोलत है
जगनाथ रुरु कुरुकुरि बोलतहै ॥ १ साधवदास पंडित सो बोले
आप बड़े उतावले इतने में आऊ तोलों आपही चढ़ि बैठे जब
लोज़ लें दबिगयो तब साधवदासजी जगन्नाथजी से बोले यह
दिग्बिजय करि आयोहौ सो सब खवारकरी मरेहु बुरोभयो यह
आछो न कियो मेरे बदले चढ़ायो मैंतौ अपने बदले चढ़ायो है तब
अपने हाथसो अपराध क्षमा करायो ये साधुता के लक्षण है ३ ॥
न्याय ॥ त्रिद्याविवादायधनमदाय शक्तिःपरेषांपरिपीडनाय ॥ ख
लस्यसाधोर्विपरीतमेतज्ज्ञानायदानायचरत्तणाय ४ पठकाःपाठका
इचेवयचान्येशास्त्रचिन्तकाः ॥ सर्वेव्यसनिनोमूढायः क्रियावान्स
पण्डितः ५ ॥ दोहा ॥ भक्तिबिना श्रीभागवत कहै सनें जे अंध ॥

त्यों दूरी व्यंजनति में स्वाद न जाने मंध ६ ॥ छप्पै ॥ पंडितपदि
 भागवतभक्ति भक्तनि जु सिखावत । महिषी ज्यों पय स्रवत आप
 सो स्वाद न पावत ॥ घृगजुनाभि नहिं लखै लेततृण-शिलमधि
 प्राने । कटआगर करपरेवहै ये मरम न जाने ॥ जस दवी न्या-
 यो चतुरभुज भक्ति विना मंडक धुनि । दर्पण दियो जुनेनविन
 त्यों अंधअंधेरा डोरिपुनि ७ ॥ सतमे ॥ यथाखरश्चन्दनभरवा
 हीभारस्यवेत्तानतुचन्दनस्य ॥ तथाचत्रिप्राःश्रुतिशास्त्रयुक्तामत्र
 क्तिहीनाःखरवद्बहन्ति-तापिंगलातेलीको दृष्टांत और पंडितको
 दृष्टांत ६ संतपति ॥ दोहा ॥ नैन निकट काजर बसै पै दर्पणदर-
 शाइ ॥ ज्यों साधुनके संगविन हरि मुख छवि न लखाय ५ ॥
 कवित्त ॥ वेदहूकी निंदाकरै साधुहूकी निंदाकरै गुरुकी अज्ञा
 विष्णु शिवभेदमानिये । नामहीके आसरेसे आइ बहुपाप औ
 अश्रद्धवानही सों उपदेशलेखानिये ॥ एक अर्थ वाद अरु व्या-
 ख्याकुतरक करै साहिसा सुनत हिये श्रद्धा नहिं आनिये । नाम
 की समान सब धरस समान कहै नामन अफल अपराध दश
 जानिये ॥

देखिदेखिहृन्दावनमनसमगनभयेगयेश्रीविहारीजके
 नाचतहीप्रायेहै । कहिरह्योद्वारपालनेकमैप्रतादलालयमु
 नारसालततभोगकोलगायेहै ॥ नानाविधिपाकधरैस्वामी
 आपध्यालकरैबोलेहरिभावैनाहिवेईलेखवायेहै । पूछ्योसो
 जनयोदूढिलयो आगेमायोसबतुमतौ उदासहासरससम
 द्वायेहै ३२ ५ गयेब्रजदेखिबको भांडीरभैप्रेमरहेनिशिकोदु
 राइपाइक्रमलेदिखायेहै । लीलासुनिबकोहरियानेगांधरहै
 जाइ गोबरहूपाथिपुनिलीलाचलघायेहै ॥ घरहूकोआये
 सुतसुखीसुनिमाताबाणी मारगमेस्वप्रदकैबाणिकामलाये
 है । याहीविधिनानाभातिचरितअपारजानों जितेकछुजा

नेतितेगाइकेसुनायेहैं ३३२ ॥ मूल ॥ रघुनाथगुसाईं गुरु
 डज्योसिहपौरिठाढेरहैं ॥ शीतलगतसकलातबिदितपुरु
 पोत्तमदीनी । शोचगयेहरिसंगकृत्यसेवककीनी ॥ जग
 नाथपदप्रीतिनिरंतरकरतखवासी । भगवतधर्मप्रधानप्र
 सननीलाचलबासी ॥ उत्कलदेशउडीसानगरबैनतेय
 सब कोउ कहै । रघुनाथगुसाईं गुरु डज्योसिहपौरिठाढे
 रहैं ७१ ॥

बिसारिये ॥ दोहा ॥ जो मोसों मोसों करौ तौर न है कहूं ठौर ॥
 तुमहो जैसी कीजियो अहो रसिक शिरमौर ॥ तुमहो उदास
 हास रस समभायो तुम जगतसों विरक्तभये सोतौ आछो पै
 हरिसों विरक्त भये सो आछो नहीं माधवदास कही मैं तुम्हारे
 ठाकुरकी सचिक्रणता देखी सो प्रसंग अनिशिको बुराइखाइ कस
 सी दिखाई है जब डरे तब कही मथुरा विश्रामघाट झारो संत
 चरणोदक शीत सचनकरो सोई कियो सुलभ नाभाजीने धर है
 खेम गुसाईं खेमकर लीला सुनिबेको हरियानेगोली गांवरहे
 गोबरपाथो सो प्रसंग ॥

टीका ॥ अतिअनुरागघरसंपतिसोरिह्योपागि ताहिक
 रित्यागनीलाचलकियोबासहै । धनकोपठावैपिताएपैन
 हीभावैकछूदेखिवोसुहावैमहाप्रभुजकोपासहै ॥ मन्दिरके
 द्वाररूपसुंदरनिहारोकरै लग्योशीतगातसकलातदईदा
 सहै । शौचसंगजाइबेकीरीतिकोप्रमानवहै बसेसबजानो
 माधोदाससुखरासहै ३२४ श्रीमहाप्रभुजुषणवैतन्यजूकी
 आज्ञापाइ आश्रित्यन्दावनराधाकुंडबासकियोहै । रहनिक
 हनिरूपचहनिकहविसकै धकेसुनितनभावरूपकरिलियो
 है ॥ मानसीमेंपायोदूधभातसरसातहिये लियेरसनारीदे

खिवैदकहिदियोहै । कहांलौंप्रतापकहौंआपहीसमझिले
हुदेहुवहीरीद्विजासौंआगेप्रायजियोहै ३२५ ॥

भावरूप ॥ दोहा ॥ चढ़िकर मैन तुरंग पर चलितो पावक
माहिं ॥ प्रेमपंथ ऐसो कठिन सब कोउ निवहत नाहि १ यह
स्वरूप सोमरूपी भवना हरिकी अग्निरूप सो कैसे निवहे या
शरीरको सखी भावरूप अष्टधातुको कियो अग्निरूप रस तामे
प्रवेश कियो ॥ दोहा ॥ भजनरसिक रघुनाथजी राधाकुंड नि-
वास ॥ लोन तक ब्रजको लियो आशुनहीं कहुआस २ राधाकु-
ण्डनास ॥ यथाराधातथाविष्णुर्थथाकुण्डंप्रियंतथा ॥ सर्वगोपसुसे
व्यैका विष्णोरत्यन्तवल्लभा ३ ॥ रोला ॥ रतन जड़ित नगखचित
घाट सिद्धियनकी शोभा । गुंजत मोर मरालभरे आनंद की
गोभा ॥ साधव काज तमाल वृक्ष सबही भुक भूमै । छवि की
उठति तरंग निरखि नंदलाल जु घूमै ॥ दोहा ॥ श्री महरानी
राधिका अष्टसखिनके भुण्ड ॥ डगर वहारै सांवरो जय जय
राधाकुण्ड ॥

मूल ॥ नित्यानन्दकृष्णचैतन्यकी भक्तिदशोदिशि
विस्तरी ॥ गौड़देशपाखंडमेंटिकियोभजनपरायन । करु
णासिंधुकृतज्ञभयेअगतिनगतिदायन ॥ दशधरसआक्रां
तिमहतजनचरणउपासे । नामलेतनिष्पापदुरिततिहि
नरकेनासे ॥ अवतारविदितपूरवमही उभयमहतदेही
धरी । नित्यानन्दकृष्णचैतन्यकी भक्तिदशोदिशिविस्त
री ७२ ॥ नित्यानन्दकीटीका ॥ आपबलदेवसदावारुणी
सोमत्तरहे चहेमनमान्योप्रेममत्तताईचाखिये । सोईनि
त्यानंदप्रभुमहतकीदेहीधरी भरी । सबआनितऊपुनिअ
भिलाखिये ॥ भयोबोझभारीकिहूंजातनसंभारीअतठौर

ठौरपारषदमांभ्रधरिराखिये ॥ कहत कहत अरु सुनत सु
नत वाके भये मतवारे बहु ग्रथता की साखिये ३२६ ॥

देही धरी ॥ पद ॥ अब तो हरी नाम लौ लागी । सब जग को यह
माखन चोरा नाम धरयो बेरागी ॥ कहा छोड़ि वह साहन मुरली
कहँ छोड़ी सब गोपी । मूँडमुड़ाइ डोरि कटि बांधी माथे मोहन
टोपी ॥ मात यशोमति माखन कारण बाधे जाको पात्र । श्याम
किशोर भये नवगोरा चेतन्य जाको नात्र ॥ पीताम्बर को भाव
दिखावे कटिकोपीन कस । दासभक्तकी दासीमोरा रसना कृष्ण
घस १ ॥ दशमे ॥ असन्वर्णास्त्रियो ह्यस्य गृह्णतोऽनुयुगतनः ॥ शुक्रो
रक्तस्थापी तद्दानी कृष्णतागतः २ ॥ एकादशे ॥ कृष्णवर्णत्विषा
कृष्णसागोपार्गास्त्रपार्षदाम् ॥ यज्ञः संकीर्तनप्रायं यजन्ति हि सुमेध
सः ३ चाखिये ॥ दोहा ॥ भतलगे मदिरापिये सबकाहू सुधिहोइ ॥
प्रेमसुधारस जिनपियो तिहि न रहे सुधिकोइ ४ जैसे गंगा यमुना
सरस्वती महिमा गौर नाम गोरतन अन्तर कृष्ण स्वरूप ५ ॥

टीका श्रीकृष्णचैतन्यमहाप्रभुकी ॥ गोपिनके अनुराग
आगे आपहारे श्याम जान्यो यह लाल रंग कैसे आवैतनमें ।
येतौ सब गौरतनी नखशिखवनी ठनी खुल्यो यो सुरंग रंग अं
गरगेवनमें ॥ श्यामताइ माझ सोललाइ हू समाइ जाइ ताते
मेरे जान फिरि आइ यह मनमें । यशोमति सुत सोई शची सुत
गौरभये नये नयेनेह चो जनाचेनि जगत्तमें ३२७ ॥

हारे श्याम ॥ पंचाध्यायी ॥ भगवानपितारात्रीः शरदोत्फुल्ल
मल्लिकाः ॥ वीक्ष्यरन्तुं मनश्चक्रे योगमायासुपाश्रितः २ ॥ कवित्त ॥
पाग जिमिराग गही भरयो हे या बांसुरीमें ताकी तानेशिखा सुनि
गोपी कांतचतिहे । कानमध्य तूलदिये दिये जैसी बाती बरे नाहिं
नेउपाइ कोऊ वाद जो पचति हे ॥ धनके पखेरू उठि पाखन
बयारि करे गोकुलकी कुलबधू कैसेके बचतिहे । जरिगई अति

ताती-ताते तकिनेही कान्हें फूंकि फूंकि गहें तऊ आगरी त्रचतिहै
 २ एक ओर बीजना दुरावति चतुरनारि एकओर भारीलिये करज-
 लपानकी । पाछते खवासिनी खवावै पान खोलि खोलि राधे मुख
 लाली मानै तम करतानकी ॥ ताही छिन वांसुरी वजाई न-
 दनन्दन जू आई सुधि वाही व्रज कुजकी लतान की । वायगिरि
 नीरवारी दाहिने समीर वारी पाछे पानदान वारी आगे वृषभान
 की ३ ॥ सबैया ॥ वेमगदापग-अधनिको इन चालिवा आछि-
 निहें की निवारयो । सरति थाह दिखावत वे इन प्रेम अथाह के
 वारिधि डारयो ॥ वेवशास वसावत है इनवास छड़ाइ उज्या-
 रनियारयो । देखो अहाँ हरि की वसुरी इन कैसे सुवंशको नाम
 बिगारयो ४ दियाके उज्यार तिय दूधसीरो करतिही संग वाके
 आसपास भावजन भीरकी । लानहू ते सुलखसलानी साठि
 सोनेकीसी गौनकीसी आई किधौ आई सुनासोर की ॥ काशी
 राम रूपभरी रतिहूते अति खरी कहवाके कान परी वशी बल
 वीरकी । सानोलागी तीरकी यापरी है अहीरकी सभार न शरीर
 की न ओरकी न छीरकी ५ भूलीसी ज्यों फिरति फिरतिकुंजकुंज
 निमें कैतौ सखझाई रही बैठारहाँ गेहमें । तवतो न मानी कान्ह
 सुनिबेको जातितान मानी नहीं कान्ह तरुणाई हीके तेहमें ॥ अथतौ
 प्रह्लाद डसी विरह भुअंगमने अग रोमरोम विष रमिगयो देहमें ।
 सांसुरी भरन लागी आंसुरी टरन लागी पांसुरी निकसि आई
 वांसुरीके नेहमें ३ इन जेत सुरलीने तेते वेधउर कीने जेतरण
 तेते दाग रोम रोम छीजिये । अन्तरकी सूनीघर करेसुने औरनि के
 शेषसुनि श्रवण बसेरो वनकीजिये ॥ ताननकी तीखी उर वानन
 चलाये देती चीरि चीरि अंगनि तुणीन तनकीजिये । वांसुरी
 बसयो जो तौ हस न बसेगी क्यास वांसुरीवसाइ कान्ह हमें
 विदा कीजिये १ वाजी उठिधाई वाजी देखिबेको वारी आई
 वाजी सुनि आई पौरि वंशी गिरिधरकी । वाजी हंसि धोलै वाजी
 संग लगी डोलै वाजी भई वीरी वाजिन बिसारी सुधिघरकी ॥

बाजी न भरतधीर बाजी न संभरे चीर बाजी न ली छाती पर
 पीर दावानलकी । बाजी कहै बाजी पुनि बाजी कहै कहां बाजी
 बाजी कहै बाजीवंशी चंचलचतुरकी ३ ॥ श्लोक ॥ तासांतसौभ
 गमदंतीक्ष्यमानंचकेशवः ॥ प्रशमायप्रसादायतत्रैवान्तरधीयत ४ ॥
 कवित्त ॥ जाही कुंज पुंजतर गुंजत भंवर भीर ताही तरुवर तर
 शीश धुनियत है । जाही रसनाते कहीं रसकी रसीलीवात ताही
 रसनासां आप गुण गुनियत है ॥ आलम बिहारी लाल हियेते
 अचेत भये येहो दई हेत खेत कैसे लुनियत है । जेइ कान्ह आं
 खिनिके तारे हुते निशि दिन तेई कान्ह काननि कहानी सुनि-
 यत है ५ ॥ मंजु रची रससां रुचिके सुगुमानकी मेड़ खसाइ ग-
 योरी । आह वताइहमै सजनी मंभधारमें छांड़िनशाइगयोरी ॥
 खेल संयोगका नकादिखाइ बियोग फनीये कटाइ गयोरी । प्रेम
 के फदफताइगयो ब्रजमेंघर कान्ह घसाइगयोरी २ कदमकरील
 तीर पंछति अधीरगोपी आनन रुखेहोगरी खरोइ भरोहोसां ।
 चारहो हमारी प्रेम चोतरानि सारयो गदरानिकसि भाज्यो हूँके
 करिलरि जोहोसां ॥ ऐसेरूपेसमेप्र मेहको दिखयोअति देखतही
 रसखानि नयनचुभोहोसां । मुकुटभुकोहोहियहारहै हरोहो कटि-
 फटापियरोहो अंगरंगसवरहोसां ३ श्लोक ॥ चतप्रियालपनसा
 सनकाविदारजम्बवकीचरुवकुलाप्रकदम्बनीपाः ॥ यन्यपराथभ
 वकायमुनापकलशसन्तुकृष्णपदवीरहितसुनानः ४ पचाध्यायी ॥
 यमुनाकेविटपपूखिभईतिपटउदासी । क्योंकहिहै सखिमहाकठिन
 चतारथत्रासी ॥ श्लोक ॥ पुनःपुलिनमागत्य कालिद्याःकृष्णभा
 वनाः ॥ समवेताजगुःकृष्ण तदागमनकाक्षया ५ तवगोपीअधीनहै
 वृक्षनसां बेलिनसां पंछतभई महाविह्वल शरीरहैगये सो कहै है
 तुमकहंश्रीकृष्ण देखे है ॥ श्लोक ॥ भजतोपिनवेकेचिरुजन्त्यभज
 तःकुतः ॥ आत्मारामाद्यातकामाअकृतज्ञागुरुदुहः ६ नपारयेहंनिर
 पयसंयुजांश्विसाधुकरुमिविबुधायुषापिवः ॥ यामाभजनदुर्जरगेह
 श्रृङ्खलासिंघुरच्यतइःप्रतियातुसाधुनः ७ ॥ दोहा ॥ कसतकसोटी

हेमको लोकरीति यह नेम ॥ प्रेम नगर की पैठमें भयो कसीटी
हेम ८ बातें श्रीकृष्णजी गोपिकानिके आगेहारे इनके प्रेमको
देखिके महा प्रफुल्लित हैं के हाथजोरिके आइमिले ६ ॥

आवैकम प्रेमहेमपिडवततनहोइकमूसंधिसधिछूटिअ
गबटिजातहै । और एकन्यारीरीतिआसूपिचकारामानो
उमैलालप्यारीभावसागरसमातहै ॥ ईशतावखानिकहा
करोसोप्रमाणयाको जगन्नाथक्षेत्रनेत्रनिरखिसाक्षातहै ।
चतुर्भुजषट्भुजरूपलैदिखाइदियो । दियोजोअनूपहित
बातपातपातहै ३२८ श्रीकृष्णचैतन्यनामजगतप्रकटभ
योअतिअभिरामलैमहतदेहीधरीहै । जितोगौडदेशभक्ति
लेशहूनजानेकोऊ सोऊप्रेमसागरमेंबोस्योकहिहरीहै ॥ भ
येशिरमोरएकएकजगतारित्रिको धारित्रिकोकौनसाखिपो
थिनमेधरीहै । कोटिकोटिअजामीलवारिडारेदुष्टतापैएसे
हूमगनकियेभक्तिभूमिभरीहै ३२९ ॥

आवै कभप्रेम ॥ पद ॥ रासमंडल बने नृत्यनीकीवनी । गौर
गोविंदके नयन अरविदसो छटत आनंद मकरद चहुदिशिघनी ॥
तालबस मृदु चरण धरत धरणी हुलसि बिलस हस्तक भेदच
लन लायनअनी । पुलकाआयाद घन कंपभरि थरहरनि परसव
प्रस्वेद सुरभदभारी वनी ॥ अहितसित आरकत धरत जडता ज
बाहि बहिठाढ़ रहत गहत वानक फनी । निपट अवसन्न जब तवीहि
क्षिति धुकिपरत अंगनहि हलत गतद्रवासको तिगमनी ॥ तसमय
जगतमें जीवजोतिक बसत प्रेमआनंदके हीतसत्रेधनी । चकृतसव
पारषदशब्द मुखमें मिलत लगी टकटकी यह सुखमनोहरभनी ॥

मूल ॥ श्रीसूरकवितसुनिकौनकविजोनहिंशिरचालन
करे ॥ उक्तिचौजअनुप्रासचरनअस्थितिअतिभारी । बच

न प्रीतिनिर्वाह अर्थ अद्भुततुकधारी ॥ प्रतिविंबितदिव्यदृष्टि
हृदैहरिलीलाभासी । जन्मकर्मगुणरूपसवैरसनापरका
सी ॥ बहुभिन्नलबुद्धिगुणि औरकीजोयहगुणश्रवणनिधरै
श्रीसूरकवितसुनिकौनकविजोनहिंशिरचालनकरै ७३ ॥

शिरचालनकरै ॥ श्लोक ॥ किंकवेस्तस्यकाव्येन किंकाण्डेन
धनुष्मतः ॥ परस्यहृदयेलग्नं यन्नघूर्णयतेशिरः २ दोहा ॥ किधौ
सूरको शरलग्नयो किधौ सूरकी पीर ॥ किधौ सूरको पदसुन्यो यो
शिर धुनत अधीर २ ॥ कवित ॥ जासों मनहोत तासों तन मन
दीजियत जासों मनभंग तासों कलू न विशेखिये । बोलै तासों
बोलि अनबोलै तासों अनबोलि प्रेमरस चाहे तासों प्रेमरस पे-
खिये ॥ प्रीतिरीति चाहे तासों प्रीतिरीति जानियत नातरु अनेक
रूप सबही अलेखिये । नर कहा नारी कहा खूबी महाबूबी कहा
आपको न चाहे ताहि आपहू न देखिये ३ कहावतऐसेत्यागीदानि ।
चारिपदारथ दिये सुदामा गुरुकेसुत दिये आनि ॥ विभीषणौनिज
लंकादीनी प्रेमप्रीति पहिंचानि । रावणके दश मस्तकछेदे हृदगहि
शारंगपानि ॥ ग्रहलादकी जिन रक्षाकीनी सुरपति कियो निधानि ।
सूरदासपर बहुत निठुरता नैननहूँ की आनि ४ ॥ बचन प्रीति ॥
ऊधो यह निश्चय हम जानी । खोयो गयो नेह न गुनहै प्रीति
कोठरी भई पुरानी ॥ यह लै अबर सुधारस सींची कियो पोष
बहु लाड़ लड़ानी । बहुरौ कियो खेल शिशुको यह रचना ज्यों
चलति विजानी ॥ ऐसी हितकी रीति दिखीहै पन्नग कांचुरीज्यों
लयटानी । फिरिहूँ सुरति करत नहीं ऐसे त्यागत अंबर लता
कुम्हिलानी ॥ बहुरंगी जित जाति तिते सुख एक रंगी दुख देह
दहानी । सूरदास पशुवनी चोरकी खायो चाहेँ दाना पानी ५ ॥

मूल ॥ व्रजबधूरीतिकलियुगविषेपरमानंदभयोप्रेम
केत ॥ पौगंडवाककिशोरगोपलीलासबगाई । अचरजक

हइहिवातहुतौयहतौजुसखाई ॥ नयननिनीरप्रवाहरहत
 रोमांचरैनिदिन । गदगदगिराउदारश्यामशोभाभीजेउत
 न ॥ शारंगछापताकीभईश्रवणसुनतअवेसदेत् । ब्रजष
 धूरीति कलियुगविषेपरमानंदभयोप्रेमकेत् ७४ श्रीकेश
 वभटनरमुकुटमणिजिनकीप्रभुताविस्तरा ॥ काशमीरकी
 छापपापतापनजगमंडन । दृढ़हरिभक्तिकुठारधर्मपरविट
 पबिहंडन ॥ मथुरामध्यमलेच्छवादकरिवरवटजीते । का
 जीअजितअनेकदेखिपरचेभयभीते ॥ हैत्रिदितवातसंसार
 सबसंतसाखिनाहिंदुरी । श्रीकेशवभटनरमुकुटमणि
 जिनकीप्रभुताविस्तरा ७५ टीकाश्रीकेशवभट्टकी ॥ आप
 काशमीरसुनीषसतविश्रामतीर तुरकससूहद्वारयंत्रइकधा
 रिये । सहजसुभायकोऊनिकसतआइताको पकरतधाइ
 ताकेसुन्नतनिहारिये ॥ संगलैहजारशिष्यभरेभक्तिरंगमहा
 अरेवाहीठौरबोलेनीचपट्टारिये । क्रोधभरि भारेआय
 सूवापैपुकारेवेतो देखिसबैहारेमारेजलवोरिडारिये ३३०
 गयेसबदौरि जहांकाजीकीजुपौरियति कियोतिनसोई
 अजूकीजियेपुकारहै ॥ आजुकोऊऐसोएकआयोहैजुमथुरा
 में संगहैहजारशिष्यतेजकानपारहै ॥ लैकैझरकारेधर
 कारेमतिभांतिकह्यो क्यारेअधरमीहिंदूधर्मकियोख्वारहै ।
 होहुतुमरांइकियो पुरुषार्थभांडजोई हरिसोबिमुखताको
 नहींपारावारहै ३३१ काजीअतिडख्योहियेपरचोखरभख्यो
 यहकौमआईअख्यो अबकरोकाउपायमें । रचेभूतवयताल
 मूठिदीठिमायाजाल सुदर्शनकियेख्याल सहजसुभाइमें ॥
 असुरकेतनमेंसोअगिनिलगाइदई दईकहोदईकहा कहा

कियोहाइमैं । येतौहैंबड़ेप्रतापी मैतौरहौंमहापापी अहो
 मतिथापीआवैपरोभेदपाइमैं ३३२ आयपाइँपस्योनीर
 नैननितेढरयोबैन कहैमरयोमरयोप्रभु मेरीरक्षाकीजिये ।
 तबस्वामीकह्योतोहिलैहौंमैंबचायपुनि एकहैउपायसीख
 सुनिमेरीलीजिये ॥ फेरिजोअधर्मऐसोकरोगे नकर्मआव
 मेठौसबगर्भसदाशीतलह्लैजीजिये । औरजितेवादीहरि
 बिमुखप्रसादीतिन्हैं लीयेसतमारगमें नौधारसपीजिये
 ३३३ जितेहिंदूतुरुकनिसैकरानि मारिहारेभरेदुखभारे
 वेतोस्वामीजूपैआयेहैं । प्रभुकह्योआवोअबदुखजनिपावो
 कैसोराइगुणगावो जलयमुनाकेन्हाये हैं ॥ महीनएकब
 खलाये तिनकोलैपहराये हिंदूकेरचिह्नपायेजगयशगाये
 हैं । तुर्कतियाकान्हधरीआइसबपाइँपरी करीप्रभुदया
 नरनारीदरशाये हैं ३३४ ॥

पौगंडवालकिशोर ॥ रसाभृते ॥ कौमारंपञ्चमादातं पौगण्डं
 दशमावधि ॥ आषोडशंचकैशोरं यौवनंस्यात्ततःपरम १ ॥ हरि
 कुवार ॥ दोहा ॥ व्यासविषय जल वटिरह्यो नीचसंग जलधार ॥
 हरिकुठारसों प्रीतिकरि कष्टत न लागेबार २ ॥ बाराहे ॥ अहो
 मधुपुरीधन्यात्रैकुण्ठाञ्चगरीयसी ॥ विनाकृष्णप्रसादेन क्षणभेकंन
 तिष्ठति २ जाके सुनत निहारिये ॥ इलोक मणिमंत्रमहौषधी
 नामचित्यशक्तिः ४ ॥

मूल ॥ श्रीभट्टसुभटप्रकटयोअघटरसरसिकनमनमो
 दघन ॥ मधुरभावसंमिलितललितलीलासुबलितछवि ।
 निरषतहरषतहृदैप्रमबरषतसुकलितकवि ॥ भवनिस्ता
 रनहेतदेत दृढभक्तिसवननित । जासुसुयशशिशिउदैहर
 तअतितमभ्रमश्रमचित ॥ आनंदकंदश्रीनंदसुतश्रीरुष

भानुसुताभजन । श्रीभट्टसुभटप्रकटघोषघटरसरसिकन
मनमोदघन ७६ हरिव्यासतेजहरिभजनबलदेवीकोदी
क्षादर्ह ॥ खेचरनरकीशिष्यनिपटअचरजयहआवै । वि-
दितवातसंसार संतमुखकीरतिगावै ॥ वैरागिनिकेवृन्द
रहतसंगश्यामसनेही । ज्योयोगेश्वरमध्यमनोशोभितवै
देही ॥ श्रीभट्टचरणरजपरसिकै सकलसृष्टिजाकीनई । ह
रिव्यासतेजहरिभजनबलदेवीकोदीक्षादर्ह ७७ ॥

मधुर कहिये माधुर्य शृंगाररस ॥ पद ॥ राधिका आजु आनन्द
में डोलै । सांघरे चन्दगोविन्द के रस भरी दूसरी कोकिला मधुर
सुरबोलै ॥ पहर पट नील तन कनक हीरावली हाथलै आरसी
रूप को तोलै । जै श्री भट्ट आजु नागरि नीकी बनी कृष्णके शील
की अंथको खोलै २ सन्तो सेव्य हमारे श्रीप्रियप्यारे वृन्दाविपिन
धिलासी । नंद नंदन वृषभान नंदनी चरण अनन्य उपासी ॥
मत्तप्रणय बस सदा एक रस विविध निकुंज निवासी । जै श्री
भट्ट युगल बंशीवट सेवत मूरति सब सुखरासी २ तौ नंद वृष-
भान कहै इनके उपासिक श्रीराधाकृष्ण के संतहैं ३ ॥ दोहा ॥
साधु सराहैं सो सती यती योषिता जानि । रजवसांचे शूरको
वैरीकरै बखान ॥

टीकाश्रीहरिव्यासदेवकी ॥ चट्थावर्णाववागदेखि
अनुरागभयो लयोनितनेमकरिचाहैपाककीजिये । देवी
कोअधानकाहूवकरालैनारोआनि देखतगिलानिइहांपा
नीनहींपीजिये ॥ भूखेनिशिभईभक्तितेजनिटिगईनई देह
धरिलईआइलखिमतिभीजिये । करौजरसोईकौनकरैक
कूऔरैभोई सोईभोकोदीजैदानशिष्यकरिलीजिये ३३५
करीदेवीशिष्यसुनिनगरकोसटकीयां पटकीलैसाटजाकी

बड़ो सरदार है । बड़ी मुखबोलें हैं तो भई हरिदासदासीजो
नदासहो हुतौ पै अभी डारै मार है ॥ आये सब मृत्यु भये मानों
तन नये लये गये दुख पायता पक्रिये भय पार है । कोऊ दिन रहे
नाना भोग सुख लहे एक अर्द्धा कै इव पच आयो पायो भक्ति-
सार है ३३६ ॥

पायो भक्तिसार है ॥ श्लोक ॥ अश्वत्थः काकविष्टायां सञ्जातो
प्युच्यते बुधैः ॥ देवानामपि नृणां त्रैपुञ्ज्य एव न संशयः २ ॥ पद जाति
भेद जो करै भक्त सो तौ बड़ो अतिपापी । ताते भलो अधिक पर
निंदक गुरुता लप सदरापी ॥ बायसकी विष्टासों उपजै पीपर नाम
कहावै । परिकर्मा डंडवत करै द्विज सब जग पूजन आवै ॥ तु-
लसी जो घोरपै उपजै दोष न कोई धरई । तातुलसी के पातफूल
दल हरि पूजन को रहई ॥ कूकरमरै गोमती संगम अश्व चक्र है
रहही । तिन चक्रनको सब जग बन्दै दोष न कोऊ कहही ॥ ज्यों
जल वरषै पुरवीथिन में गंगामें वहि आवै । सो तिहि परशिमहा
अपराधी कलमष सबै नशावै ॥ लेन धना रैदास कबीरा और
किते परवाना । इनको दरशन दीनो है हरि प्रकट सबै जग जाना ॥
योग यज्ञ जप तप व्रत संयम इनमें तौ हरि नार्हीं । गंगाराम हित
नवल युगुलधर बसत भक्त उरमार्हीं २ ॥

मूल ॥ अज्ञानध्वांत अंतःकरणद्वितिय दिवाकर अव-
तत्यो ॥ उपदेशे नृपसिंहरहतनिल आज्ञाकारी । पक्कबृक्षज्यों
नायसंतपोषक उपकारी ॥ बानीभोलारामसुहृदसबहिनप
रछाया । भक्तचरणरज्यांचि विशदराघवगुणगाया ॥ क-
लिकरमचंद्रकश्यपसदनबहुरि आइसनोंबपुधरयो । अज्ञा-
नध्वांत अंतःकरणद्वितिय दिवाकर अवतत्यो ७८ श्रीवि-
ठलनाथप्रजराजज्यों लाललड़ाइके सुखलियो ॥ रागभोग

नितविविधरहतपरिचर्याततपर । शय्याभूषणवसनरु
 चिररचनाअपनेकर ॥ वहगोकुलवहनंदसदनदीखतकै
 सोहै । प्रकटविभवजहँघोषदेखिसुरपतिमनमोहै ॥ श्रीवल्ल
 भसुतबलभजनकेकलियुगमेंद्वारकियो । श्रीविठलनाथ
 ब्रजराजज्यों लाललड़ाइकेसुखलियो ७६ ॥ टीका ॥ का
 यथत्रिपुरदासभक्तिसुखरासभयो कख्योऐसेपनशीतदग
 लापठाइये । निपटअमोलपटहियेहितजटिआवैतातेअति
 भावैनाथअंगपहिराइये ॥ आथोकोऊकालनरपतितेवि
 हालकियोभयोईशव्यालनेकुघरमेंनखाइये । वहीऋतुआ
 ईसुधिआईआंखिपानीभरिआईएकखातिदीठिआईवेलि
 लाइये ३३७ ॥

घरणरज यांचि देव प्रसन्न कियो वरमांगौ वह चतुर अधवंश
 धन नहीं पुत्रको सोनाके कटोरा में दूधप्यावते देखो ऐसे आत्म
 हरि ज्ञान १ ब्रजराजज्यों ॥ पद ॥ जे वसुदेव किये पूरण तप
 तेइ फल फलत श्री बल्लभ देह । जे गोपाल हुते गोकुल में तेइ
 अब आनि वसे करि गेह ॥ जे वे गोपवधू हुती ब्रजमें अवतेइ वेद
 ऋचाभइ येह । छीतस्वामी गिरिधरन श्री विठल वेईवेषपैई कछु
 न संदेह २ भेदिथाकी प्रेरणा दई आये इनवे ३ ॥

बोचिकेब्रजारयोरुपैयाएकपायो ताकोलायोमोटोथान
 मात्ररंगलालगाइये । भीज्योअनुरागपुनिनैनजलधार
 भीज्यो भीज्योदीनताईधरिराखो औरैआइये ॥ कोऊप्रभु
 जनआइसहजदिखाईदई भईमनदियोलेभंडारीपकराइ
 ये । काहूदासदासीके नकामकोपैजाउलैकै बिनतीहमारी
 जूगुसाईनसुनाइये ३३८ दियोलेभंडारीकरराखेधरिपट
 वायेनिपटसनेहीमाथबोलेअकुलाइके । भयेहेजड़ायेको

ऊबेगिहीउपायकरै विविधउठायेअंगवसनसुहाइके ॥
 आज्ञापुनिदईयोअंगीठीवारिदईफेरि वहीभईसुनिरहेअ
 तिहीलजाइके । सेवकबुलाइकहीकौनकीकबाइआई सबै
 सोसुनाईएकवहलीबचाइके ३३९ सुनीनत्रिपुरदासबो
 ल्योधननाशभयो मोटोएकथानआयोराख्योहैबिछाइ
 के । लाबेगियाहीक्षणमनकीप्रवीनजानि लायोदुखसा
 निव्योतिलईसोसिमाइके ॥ अंगपहराईसुखदाई कापैगा
 ईजात कहीजबघातजाड़ोगयोभरिभाइके । नेहसर
 साईलैदिखाईउरआईसबै ऐसीरसिकाईहदैराखीहैबसा
 इके ३४० ॥

नेहसरसाई ॥ दोहा ॥ हरिरहीम ऐसी करी ज्यों कमान शर
 पूर ॥ खैचि आपनी ओरको डारि दियो अति दूर १ यह कहिके
 मन्दिर के द्वारपै गोविन्दकुण्डकी तत्री पै जाय बैठे गुसाई के टह-
 लुवा प्रसाद लाये सो न लियो तब नाथजी आपही लाये ॥
 दोहा ॥ खैचि चढ़नि टीली ढरनि कहो कौन यह प्रीति । आज
 कालिह मोहन गही वंश दियाकी रीति ॥ कवित्त ॥ जबलौ न
 कोऊ पीर लागतिहै आप उर तबलौ पराई पीर कैसे पहिंचानिहौं ।
 आजुलौ न जानतहौं लग्योनेह काहूसौं है जवनेह लागिहै तौ हित
 उनमानिहौं ॥ कहत चतुरकवि मेरे कहिबे की तौ एकौ न रहेगी
 तव समाझि जी आनिहौं । जैसे नीके मोहिं तुम लागतहो प्यारे
 लाल तैसो नीको तुम्हें कोऊ लागिहै तौ जानिहौं १ तब रहीम
 पीठि फेरिलई नाथजी थार धरिके अंतरधान होतभये तब यह
 पद गायो ॥ पद ॥ छवि आवन मोहनलालकी । लाल कालनी
 काछे कर मुरली पीत पिछौरो सालकी ॥ बंक तिलक केसरिको
 किये झुति मानों विधुवालकी । विसरत नाहिं सखी मोमनते
 चितवनि नयन बिजालकी ॥ नीकी हंसनि अधरसधरनिकी छवि

छीनी सुमन गुलालकी । जलसों डारि दियो पुर इनपर डोल-
 नि मुक्तमालकी ॥ आपमोलबिन मोलनि डोलनि बोलनि मदन
 गोपालकी । यह स्वरूप निरखै सोइ जानै इस रहीमके हालकी २
 कमलदल नैननिकी उनमानि । बिलरत नाहिं सखी मोमन ते
 मन्द मन्द मुसकानि ॥ यह दशननि धुति चपलाहू ते महा चपल
 चमकानि । बसुधाकी बशकरी मधुरता सुधापगी बतरानि ॥
 चही रहे चितउर विशालकी मुक्तमाल थहरानि । नृत्य समय
 पीताम्बरहूकी फहर फहर फहरानि ॥ अनुदिन श्रीवृंदावन व्रज ते
 आवन आवन जानि । छविरहीम चितते न टरतिहै सकल श्याम
 की बानि ३ ॥ दोहा ॥ मोहन छवि नैननिबसी परछवि दृगनि
 सुहाइ ॥ भरी सराइ रहीम ज्यों पथिकआइ फिरिजाइ ४ अन्तर
 दाव लगीरहै धुवां न प्रकटै सोइ ॥ कै जियजानै आपनो कै जा
 शिर बीती होय ५ तिहि रहीम तनमन दियो कियोहिये में भौन ॥
 तासों दुख सुख कहन की बात रही अब कौन ६ स्त्री की चूरी
 को दृष्टान्त ७

मूल ॥ श्रीबिडलेशसुतसुहृदश्रीगोवर्द्धनधरध्याइये ॥
 श्रीगिरिधरजूसरसशीलगोविन्दजुसाथहि । बालकृष्ण
 यशबीरधीरश्रीगोकुलनाथहि ॥ श्रीरघुनाथजुमहाराज
 श्रीयदुनाथहिभजि । श्रीघनश्यामजुपगेप्रभूअनुरागी
 सुधिसजि ॥ येसातप्रकटविभुभजनजगतारततसयशगा
 इये । श्रीबिडलेशसुतसुहृदश्रीगोवर्द्धनधरध्याइये ८०
 गिरिधरनरीभिकृष्णदासकोनाममांभसाभोदियो ॥ श्रीब
 ल्लभगुरुदत्तभजनसागरगुणआगर । कवितनोषनिदोष
 नाथसेवामेनागर ॥ वाणीबन्दिताविदुषसुयशगोपालअलं

१ कृष्णदास इस पदमें, ण, के पूर्व ककार, को गुंठ उच्चारण न करनेसे मात्राएं
 अधिक न होंगी पन्द्रह मात्रा का पद पूर्ये ॥

कृत । प्रजरज अतिश्रीलघ्यवहै धारी सर्वसुचित ॥ साञ्जि
ध्यसदाहरिदासवरगौरश्यामदृढव्रतलियो । गिरिधरनरी
भिकृष्णदासको नाममांभसाभोदियो ॥ ८१ ॥

यदुनाथ ॥ सवैया ॥ शीश दिनेय तैपे जिहि बार सुवारहि
वार विहारीको पैवो । बाल में बैरिनि आरज लाज सुएकहुवार
वनै न चितैवो ॥ शोच यहै सजनी रजनी दिन कौनसे औसर
औसर पैवो । जानतहौं यदुनाथ यहै कवहुं कमहौंसनिही भरि
जैवो २ ॥ पद ॥ घातनहीं हौ पतितपावन । मोले काम परे
जानोगे दिन रणशूर कहावन ॥ सत्युग त्रेता द्वापरहुके पतितन
की गति अपी । हसै उन्हें बहुतै अंतरहै हम कलियुगके पापी ॥
कोऊ टांकइ टांक प्रौक्षरा बडी बडाई सेर । हौं पूरन पतिताई
ऐसो त्यों आननि में भरे ॥ हौं दिनमणि खद्योत आनखल अ-
विद्याको जु उजामर । शोषइ पावनके न सरवरै हौं दुर्मति जल
सागर ॥ पतितपावनहै विरद तिहारो सोइ करौ परवान । पाहन
नाव पार करौ लभाको केहर प्रकरौ कान २ ॥

टीका ॥ प्रसरसरासिकृष्णदासजू प्रकाशकियो लियो
नाथमानिसो प्रमाणजगगाइये । दिह्यीकेवजारमेंजलेवी
सोनिहारिनैन भोगलेलगाईलगीविद्यमानखाइये ॥ राम
मुनिभक्तनकोभयोअनुरागबसि शशिमुखलालजूकोजा
इकैसुनाइये । देखिरिभवाररीक्षिनिकटबुलाइलये लई
संगचलेजगलालकोबहाइये ३४१ नीकेअन्हवाइपटआ
भरणपहिराइ सुगन्धहूलगाइहरिमन्दिरमेंलायेहैं । देखि
भईमर्तवारीकीनीलेअलापचारी कह्योलालदेखिबोलीदे
खेमोहभायेहैं ॥ नृत्यगानतानभावमुरिमुसुकानिदृग रूप
लपटानीनाथनिपटरेभायेहैं । ह्यैकैतदाकारतनलूव्योअं

गीकारकरी धरीउरप्रीतिमनसवकेभिजायेहैं ३४२ आये
 सूरसागरसोकहीबडेनागरहौ कोऊपदगावोमेरीछायान
 मिलाइये । गायेपांचसातसुनिजातमुसुक्रातकही भलेजू
 प्रभातआनिकरिकैसुनाइये ॥ परेशोचभारीगिरिधारीउ
 रधारीवात सुन्दरबनाइसेजधरेयोँलखाइये । आइकेसुना
 योमुखपायोपक्षपातलेँ बतायोहूमनायोरेंगछायोअभुंगा
 इये ३४३ ॥

दिह्ली के सेवकनको प्रसाद दियो काहूने तौ लियो कही अधि-
 कारी भ्रष्टभयो है काहू लयो पै पायो नहीं विचार्यो बडेन की
 क्रियामें मन दीजे कौन भावसों भोग लगाइये तापै दृष्टांत नारद
 जी को नृत्यगान ॥ पद ॥ मोमन गिरिधर छविपर अटक्यो ।
 ललित त्रिभंगी अंगनपर चलिगयो तहांहीं ठटक्यो ॥ सजलश्याम
 घन वरण नीलहै फिरि चित अंत न भटक्यो । कृष्णदासकी प्राण
 निछावरि यह तन जग शिर पटक्यो ॥ २ ॥ दोहा ॥ सखिया
 कखिया हाथदे तन राख्यो ठहराइ ॥ मनहरि मदिरा छविद्वक्यो
 दर्शनारि लटकाइ २ अभुंलगि गाइये ॥ पद ॥ आवत वनकान्ह
 गोप बालक संग नेचुकी खुररेणु छुरित अलकावली । भौह म-
 न्मथ चाप वक्र लोचन बाण शीश शोभित मत्तमोर चन्द्रावली ॥
 उदित उडुराज सुंदर शिरोमणि वदन निरखि फूली नवल यु-
 वति कुमुदावली । अरुण स्रुचत अधर विवफल उपहसत क-
 छुक्र प्रकटे होत कुमुद दशनावली ॥ श्रवण कुण्डल तिलक भाल
 वेसरि नाक कंठ कौस्तुभमणि सुभग त्रिवलीवली । रत्न हाटक
 खचित उरति पद कनक पांति बीच राजत शुभ झलक मुका-
 वली ॥ बलय कंकण बाजुचंद आजानुभुज मुद्रिका करतल विरा-
 जत नखावली । कुणित कर मुरलिका अखिल मोहित विश्व
 गोपिका जन मन ग्रन्थित प्रेमावली ॥ कटि शुद्रघंटिका कनक

हीरामई नाम अंबुज बलित शृंगार रोमावली । धाइ कबहुंक
चलत भक्त हित जानि पिय गंड मंडल रचित श्रम जल करुणा-
वली ॥ पीतकौशेय प्रधान सुंदर अंग वजत नूपुर गीत भरत सदा-
वली । हृदय कृष्णदास बलि गिरिधरनलालकी चरणनख चंद्रि-
का हरत तिमिरावली २ ॥ यहपद गावल सुनत प्रभु हर्षित हियसुख
पाइ । छवि निरखत हरि आपनी मनहीं मन मुसक्याइ ॥

कूवामैखिसिलदेहछुटिगईनईमई भयोईअशंकाकळू
औरैउरआइये । रसिकनिमणिदुखजानिसोसुजाननाथ
दियोदरशाइतनगवालसुखदाइये ॥ गोवर्द्धनतीरकहीआ
गेवलवीरगये श्रीगुसाईधीरसोप्रमाणयोजनाइये । धन
हुबतायोखोदिपायोविशवासआयो हियेसुखछायोशंकर
कलैबहाइये ३४४ मूल ॥ श्रीवर्द्धमानगंगलगौमीरउमै
थंमहरिभगतिके ॥ श्रीभागवतबखानिअमृतमयनदीब
हाई । अमलकरीसबअवनितापहारकसुखदाई ॥ भक्त
नसोअनुरागदीनसोपरमदयाकर । भजनयशोदानन्दसं
तसंघटकेआकर ॥ भीषमभट्टअंगजउदारकलियुगदाता
सुगतिके । श्रीवर्द्धमानगंगलगौमीरउमैथंमहरिभगति
के ८२ श्रीरामनामपरतापतेखेमगुसाईखेमकर ॥ रघुन
न्दनकोदासप्रकटभूमंडलजान्यो । सर्वसुसीतारामऔरु
कुछुउरनहिआन्यो ॥ धनुषबाणसोप्रीतिस्वामिकेआयुध
प्यारे । निकटनिरंतररहतहोतकबहुनहिंन्यारे ॥ सुठिशूर
वीरहनुमंतसदृशपरमउपासकप्रेसभर । श्रीरामनामपर
तापतेखेमगुसाईखेमकर ८३ ॥

माथुर बाराहपुराण में लिख्यो है सब ब्राह्मणन के मुकुट

जाथुर सो मधुरियनि के मुकुटमणि विड्डलदास ॥ श्लोक ॥ श्री
 लक्षणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रो वा यदि चैतरः ॥ विष्णुपतिस्तनायुक्तो यः
 तस्योत्तमो ज्ञानः २ मानदद ॥ तृणादिस्त्रुनीचनः तरोरिवसहि
 प्लुक्ता ॥ अनानिनां मानदेन, कीर्त्तनीयः सदा हरिः २ गुणहि गुणअं-
 तरधारयो, संतानिको स्वभाव रूपको जो है, तारही लहि असार
 फटाकि डारे असंतको स्वभाव चालिनी कोसो ३ । ४ । ५ । ६ ॥

भयेविठलदासमाथुरमुकुटमणिसेअमानीमानप्रद ॥
 तिलकदाससोप्रीतिगुणहिगुणअंतरधारेउ । भक्तनकोउ
 त्कर्षजन्मभरिसनउचारेउ ॥ सरलहृदसंतोषजहांतहंपर
 उपकारी । उत्सवमेंसुतदानकर्मक्रियोहुषकृतभारी ॥ हरि
 गोविंदजयजयगोविंदगिरासुहृदआनंददद । विड्डलदास
 नाथुरमुकुटमणिसेअमानीमानप्रद २४ टीका ॥ भाईउ
 भैमाथुरसोरानाकेपुरोहितहैलरिसरे आपसमेंजियोएक
 जानैहै । ताकोसुतविड्डलदासहुसाराशिहियेउयेवैत
 थोरैअथोवडोसेवैरयामेहै ॥ बोलबोलपरभातव्यआवतन
 विमलतद्विभलैकेआवोकहीकहोपूजेकामेहै । फिरिकैबुला
 योकरैजाथुरएयाहीठौर काहुसमस्तयोगावैनाचैप्रसवा
 येहै ३४५ गयेसंगसाधुनलैविनैरंगरैगोसवरानाउठिआद
 रदेनीकेपधरायेहै । कियेजाविछौजातीनिछातिनके लपर
 लेनादिगाईआयेप्रमगिरैतीचेआयेहै ॥ राजानुत्सवयोउवे
 तहुष्टनकोमारीदेत संतभरिअंकलेतधरमधिलायैहै । भ
 पबहुमेंदकरैदेहयाहीभातिपरी पाछेसुधिमईदिनातीसरे
 जगयिहै ३४६ उठेजवमायनेजनायसववांतकही कही
 नहींजातिनिशिनि कसेविचारिकै । आयेचोछटीकरामें ग
 रुडगोविंदसेवाकरतमगनहियेरहतनिहारिकै ॥ राजाके

जोलोगसुतौंढंकिंकररहेवैठि तियामातुअइकिंकरुदनपुकारि
रि कै । कियेलेउपाइरहीकितौहीहाखाइयेतौ । रहेमइराय
तभवसीमनहारिकै ३४७ ॥

विनय रंगरंगे ॥ कवित्त ॥ कविता रसिकतादि गुन सब लख
वसे नम्रता सुजनता न रीझि आप पास में । वाते गहि
छोलि कहैं पोलिको न पारावार रीके नचि चारु बतवासी के
विलासमें ॥ इनके जे गुण तिनहैं उषसा न भाई कहूं चहुं दिशि
हेरि हेरि कियो लै प्रकाशमें । काहू न सुहाय तजिजाय सो भवन
बैठे जैसे चांदनी सरस आइ पूस मास में २ छाये कछु ॥ बलोक ॥
रपडे मन्यस्वमन्यस्व दुर्भगेदुःखकारिणि ॥ परादेदुर्लभलोके वेहो
बंचपुनः पुनः १ ॥ दोहा ॥ तुरसी कुरसी सों कलों चहई हरि के
अंग ॥ पीवतही वैकुण्ठ को लियो जातिहै अंग २ ॥

देख्यो जवकष्टतनप्रभुजीस्वपनदियो जायो मधुपुरीरे
लेतीनचारभाखिये । आयेजहांजातिपातिआयेकछुऔरै
रंगदेख्योएकलातीसाधुसंगअभिलाखिये ॥ तियारहेगर्व
पतीसतीमतिशोचरती खोदेभूमिपाई प्रतिमासोधनरा
खिये । खातीकोबुलाइकही लहीयहलेहुतुम उनपाइपरि
कहोरूपसुखचाखिये ३४८ करसेवापूजाअरुकासनहीं
दूजाजगजागिगई भक्तिभयेशिष्यबहुभाइकै । बड़ोईसमा
जहोतमानोसिधुसोतआये विविधवधायेगुणीजनउठेगा
इकै ॥ बफैआईएकनटीरूपगुणधनजटीवहगावै । तानक
टीचटपटीसीलगाइकै । दियेपटभूषणलैभषणभिटतिक्हुं
चहुंदिशिहेरिपुत्रदियोअकुलाइके ३४९ रंगीसइनाम
तानीशिष्यएकरानासुता भयोदुखभारीभिकुजलहुनपी
जिये । कहिकैपठाईवासोबाहोसोईलीजै धनमेरोप्रभुरूप

मेरेनैनकोदीजिये ॥ द्रव्यतौनचाहौरीझिचाहौ तनमन
दियोफेरिकैसमाजकियोबिनतीकोकीजिये । जितेगुणीज
नतिन्हैदियेअनगनदान पाछेनृतकख्योआपदेतसोनली
जिये ३५०

भूषण मित्त ॥ कवित्त ॥ हाथिनको अंकुश घनाये पुनि घोरन
को लाहेकी लगाम मुखे दशन चवातकी । योगिनको पुरी राज्य
रोगिनको पथपुरी जाते ज्वर जात है विषम उर पातकी ॥ सां-
पनको मन्त्र भूत प्रेतनको यन्त्र रचि पानी पढ़ि दिये तेन व्यथा
रहै गातकी । अघनी में आय विधि रचे हैं उपायऐपै तासों न द-
साय जे पचावैं रीझ वातकी ॥ दोहा ॥ रूप चोचकी घात पुनि
और कटीली तान ॥ रसिक प्रशीणन के हिये छेदनको ये वान २ ॥

ल्याईएकडोलामेंबैठारिरंगीराइजूको सुंदरशृंगारक
हीवारतेरीआइये । कियोनृत्यभारीजोबिभूतिसोतोवारी
लियेभरीअंकवारीभेटकियेद्वारगाइये ॥ मोहननिछावरि
मेंभयोमोहिलेहुमतिलियोउन शिष्यतनतज्योकहांपाइ
ये । कह्योजचरित्रबड़ेरसिकविचित्रनिको जोपैलालमित्र
कियोचाहौहियेलाइये ३५१ ॥ मूल ॥ हरिरामहठीलेभज
नबलरानाकोउत्तरदियो ॥ उग्रतेजउद्धारसुधरसुधराईसी
वा । प्रेमपंजरसराशिसदागदगदसुरघीवा ॥ भक्तनको
अपराधकरैताकोफलगायो । हिरण्यकशिपुप्रह्लादप्रकट
दृष्टांतदिखायो ॥ सतिसंस्फुटवक्ताजगतमेंराजसभानिधर
कहियो ॥ हरिरामहठीलेभजनबलरानाकोउत्तरदियो ८५
टीका ॥ रातासोंसनेहसदाचौपरिकोखेलोकरे ऐसोसोसं-
न्यासीभूमिसंतकीछिनाईहै । जाइकेपुकाख्योसाधुभिरकि
त्रिडाख्योपख्योविमुखकेब्रशवातसांचीलैभुठाईहै ॥ आये

हरिरामजुपैसबहीजनाईरीति प्रीतिकरिबोलेचलौआगे
आवोभाईहै । गयेबैठेआयोजनमनमैनलायोतत्र नृपस
मझायोभाख्योफेरिभूदिवाईहै ३५२ ॥

राना सौं सनेह ॥ दोहा ॥ विषय विषम जे भरि रहे
राजा मद्र रंग भोइ ॥ तिनके द्वारे रहत जे विषयी जानो सोइ २
भाई हैं हमारो दिनिपाल कहिके नातेमाने हमारो तौ नातो कंठी
कोहै ॥ अस्माकंबदरीचक्रयुस्माकंबदरीतरुः ६ अथवा भाई है
साधुनकी सेवा जहां निमित्त रजोगुण नृपतिके रहे हैं नहीं तौ
महाअपराध लगेहै तौ तिहारो काम न होइ तौ काहेको रहेंगे ॥
दोहा ॥ धनुष बाण धारेहैं अग्रदासके काज ॥ भीरपरे हरि भक्त
पै सावधान तव राज ३ ॥ ।

मूल ॥ श्रीकमलाकरभटजगतमैतत्त्ववादरोपीधुजा ॥
पंडितकलाप्रवीणअधिक आदरदेआरज । संप्रदायशिर
छत्रद्वितियमनोमध्वाचारज ॥ जेतिकहरिअवतारसबैपूर
णकरिजाने । परिपाटीध्वजविजै सदृशभागवतबखाने ॥
श्रुतिस्मृतिसम्मतपुराणमततप्तमुद्रांधारीभुजा ॥ श्रीकमला
करभटजगतमैतत्त्ववादरोपीधुजा ८६ ब्रजभूमिउपासक
भट्टसोरचिपचिहरि एकैकियो ॥ गुपथलमथुरामंडलजिते
बाराहबखाने । कियेनारायणप्रकटप्रसिध्पृथ्वीमेंजाने ॥
भक्तिसुधाकोसिंधुसदासतसंगसमाजन । परमरसज्ञअ
नन्यकृष्णलीलाकोभाजन ॥ गहिज्ञानस्मार्तकपक्षकोना
हिंनकोउखंडनत्रियो । ब्रजभूमिउपासकभट्टसो रचिपचि
हरि एकैकियो ८७ टीका ॥ भट्ट श्रीनारायणजभयेब्रजपरा
यणजायताईग्रामतहां व्रतकरिध्याये हैं । बौलिकैसुनावैं

इहांअमुकोसरूपहैजू लीलाकुंडधामश्याम प्रकटदिखाये
हैं ॥ ठौरठौररासकेबिलासलै प्रकानाकिये जियेयोरसिक
जनकोटिसुखपायेहैं । मथुरालेकहीचलौवैनीपूलेवैनीकि
होऊंवेगाव्रआइखोदसोतलैदिखाये हैं ३५३ ॥

ब्रजभूमि ॥ कवित्त ॥ ब्रजनाम व्यापक अखंड प्रेम ब्रह्म जैसे
सञ्चित अनंद माया त्रिगुणते न्यारो है । जाके वन उपवन वान
नदी परबत हरिरूप रचे हरि खेलेखिलख्यारो है ॥ रत्नमय भूमि
अरु अमृतमें जल ताको आरुत सुगंधनि लों भख्यो हरियारो है ।
ब्रह्मा शिव नारद सुनींद्रकहैं वेद चारो खेद लितिजाइ जाके
सुमिसो उचारो है २ ॥ दोहा ॥ ब्रजहृन्दावन अघटरस राधा
कृष्णस्वरूप ॥ नामलेत पातक कटैं ज्यों हरिनाम अनूप २ ज्ञान
कृष्णरत सो ज्ञान अद्वैत वेदांत सो सुखी रहत है ३ ॥

सूल ॥ श्रीमद्ब्रजवल्लभवल्लभ सुदुर्लभसुखनयनन
दिये ॥ नृत्यगानगुनिनिपुणारासमें रसवरषावत । अब
लीलाललितादिवलितिदंपतिहिरिभ्रावत ॥ अतिउदार
निस्तारसुयशब्रजमण्डलराजत । महानहोत्सवकरतत्र
हुतसबहीसुखसाजत ॥ श्रीनारायणभटभक्तप्रभु परम
प्रीतिरसवशकिये । श्रीमद्ब्रजवल्लभवल्लभसुदुर्लभ
सुखनयननदिये ८८ संसारस्वादसुखवातज्यों दुहु
श्रीरूपसनातनत्यागदिय ॥ गौड़देशवंगालहुतेसबही
अधिकारी । हयगयभवनभंडारविभवभूभुजअनुहारी ॥
यहसुखअनित्यविचारबासवृन्दावनकीनो । यथालाभ
संतोषकुंजकरबावनदीनो ॥ ब्रजभूमिरहसिराधाकृष्णन
भक्ततोषउद्धारकिये । संसारस्वादसुखवातज्यों दुहुश्रीरूप
सनातनत्यागदिय ८९ ॥

संसारस्वाद ॥ भागवते ॥ जहोयुवैवमलवदुत्तमश्लोकलाल
सः ॥ भर्तृहरिशतके ॥ यांचिन्तयामिसततंमयिसाविरकासाप्यन्य
मिच्छतिजनंसजनोन्यसक्तः ॥ अस्मत्कृतेचपरितुष्यतिकाचिदन्या
धिकृतांचतंचमदनंचइमांचमांच २ ॥ कवित्त ॥ जितेमणिमणि-
रुहै जोरै मणिमणिकरुहै धरामहैधरा धन धरही मिलाइवी। देइ
देह देहफेर पाइहै न ऐनी देह कौन जाने कौन देह कौन योनि
जाइवी ॥ भूखएक राखै मतिराखै भूख भूषणकी भूषणकी भूषण
ते भूषण न पाइवी । गगनके जगमग गनन न देहघाते नगन च-
लैगसाथ नगन चलाइवी ॥ भुवन अनुहारि वादशाही की उन-
हारि तापै इष्टांत गुलामको अनित्य विचार ॥ श्लोक ॥ धनंहिपु
रूपीलोके पुरुषोधनमेवच ॥ अवश्यमेकत्यजतितस्मात्किंधनतस्त्व
या ४ ॥ बिना परमेश्वर निर्वाह काहूको नहीं ५ ॥

टीका ॥ कहतवैरागगयेपागिनाभास्वामीजूने गईयो
निवरतुकपांचलागीआंचहै । रहीएकमांझधख्यो कोटिक
कवित्तअर्थ याहीठौरलैदिखायो कविताकोसांचहै ॥ राधा
कृष्णरसकी आचारजताकहीयामे सोईजीवनाथभटन्नपै
बानीनांचहै । बड़ेअनुरागीयेतो कहिबोबड़ाई कहाअहो
जिनकृपाहृष्टप्रेमपोथीवांचहै ३५४ वृंदावनब्रजभमिजा
नतनकोऊप्रायदईदरशाईजैसीशुकमुखगाई है । रीतिहू
उपासनाकीभागवतअनुसार लियोरससारसोरसिकसुख
दाई है ॥ आज्ञाप्रभुपाइपुनिगोपेश्वरलगेआइ कियेग्रंथ
भाइभक्तिभांतिसबपाईहै । एकएकवातमेंसमातमनबुद्धि
जब पुलकितगातदृगझरीसी लगाईहै ३५५ रहैनंदगांव
रूपआयेश्रीसनातनजू महासुखरूपभोगखीरकी लगा
इये । नेकुमनआइसुखदा प्रियालाडिलीत मानोकोऊ
बालकीसुसौजसबलाइये ॥ करिकैरसोईसोईलैप्रसादपा

योभायो अमलसों आयो चदि पूछी सो जनाइये । फेरि जिन
ऐसी करौ यही दृढ़ हिये धरौ ठरोनि जचालि कहि आखिं भरि
आइये ३५६ ॥

सांच है ॥ दोहा ॥ थोड़े अक्षर रससहित कहें सुनै रससार
ताहि मनोहर जानियो रसिकचतुर निरधार ॥ कवित्त ॥ भक्तर-
सरूप राधाकृष्णरसरूप पद रचनाकेरूप याते रूपनाम भाखिये ।
त्यागरूप भागरूप सेवा सुखसाजरूप रूपही की भावना औरूप
सुखचाखिये ॥ कृपारूप भावरूप रसिक प्रभावरूप गावत जोरूप
लखि मन अभिलाखिये । महाप्रभु कृष्ण चैतन्यजूके हृदयरूप
श्रीगुसाई रूप सदा नैननिमें राखिये २ शुक्मुखसों रज यमुना
गाई रत्नादिक न गाये ३ ॥

रूपगुणगानहोतकानसुनिसभासव अतिअकुलान
प्राणभुरछासी आई है । बड़े आपधीर रहे ठाढ़े नशरीर सुधि
बुधिमेंन आवै ऐसा वातलौ दिखाई है ॥ श्रीगुसाई कर्णपुरी
पाछे आइ देखे आछे नेकुटिगभये उवास लाग्यो तव पाई है ।
मानों आग आंच लागी ऐसो तनचिह्न भयो नयो यह प्रेमरी
तिका पै जाति गाई है ३५७ श्रीगोविंदचंद आइ निशिको
सुपनदियो दियो कहि भेद सब जासों पहिचानिये । रहाँ में
खरि कमांझ खोखै निशिभोरसांझ सीचै दूधधार गाई जाइ
देखि जानिये ॥ प्रकटलै कियोरूप अतिही अन्नपलवि कवि
कैसे कहै थकि रहे लखि मानिये । कहां लौ बखानां भरे सागर
नगागरमें नागररसिक हिये निशिदिन आनिये ३५८ ॥

ऐसी वाता दोहा ॥ हृदय सरोवर छलछलहि दंत गयंद भक्कोर ॥
महासमुद्रहि परै जब पावत ओर न छोर २ ॥ कवित्त ॥ पावक
प्रचंडहूके पुंजते अधिकतातो वज्रसों विचारौ कहाताकी समतूल
है । कोटिक कटककी मुकुटताके आगे कहा महादुख दारुण के

डरहूको मूलहै ॥ जाके डरभीचहूनआवे पानकेत और सोई रैनि
दिनमोही शिरहूको शूलहै। मरयोहूनजायकितौ जियोहाइहाइ यह
नेह किधौ बैरी देवताही मति भलहै २ कौने कद्यो बधिरे अवधि
के करैया लागि घेरोबिनकहै ऐसो काम करियतु है । जासो भजे
घूटियेन डरेहू अहंठिये जू टूटिये पतंगलौं पुकारे परियतुहै ॥ नंद
न अचम्भौ और गोकुल के चंद कीसो हरिहरि हाइहाइ बरै
मरियतुहै । कहाकहि कासो तोसो बाघरे विरंचि ऐसो पावकको
नाम कहूं प्रेम धरियतुहै ॥

रहै श्रीसनातनजूनदंगांवपावनपै आवनदिवसतीनि
दूधलैकेप्यारिये । सांवरोकिशोरआपपूछैकिहिओररही
कहै चारिभाईपितारोतिहूउचारिये ॥ गयेग्रामबूझिघर
हरिपैनपायेकहूं चहूंदिशिहेरिहेरिनैनभरिडारिये । अब
कैजोआवैफेरिजाननहिंपावैशीश लालपागभावैनिशिदि
नउरधारिये ३५९ कहीव्यालीरूपवेनीनिरखिस्वरूपनै
न जानीश्रीसनातनजूकाव्यअनुसारिये । राधासरतीर
द्रुमडारगहिमूलेफूले देखतसफलफनिगतिमतिवारिये ॥
आयेयोअनुजपासफिरेआसपासदेखि भयोअतित्रासग
हेपांवउरधारिये । चरितअपारउभैभाईहितसारपगे जगे
जगसाहिमतिमनमैउचारिये ३६० ॥

शीशलालपाग ॥ सबैया ॥ वरषा उघरै ऋतु सावनकी निक-
स्यौ वह छैल महाछल डारै । फूल अनार के रंग रंगी पगियाखि-
रकी न वनाय सवारै ॥ तादिन तें रंग और कहै हो सखी सुन
श्यामा सुने झिझकारै । भुके दृग बाल लखे तबलाल सुभाल पै
लाउही पाग निहारै १ ॥ व्याली रूपदेखत सफल फनि ॥ कविता ॥
पीतपटनाक तही दीठि डसिलेते फिरि फैलिकै विरहविष रोम
रोम छावतो । होतौ जब ऐसो हाल केते ब्रजवासिन को ऐसो

कोक गाडरू कहाते ढूँडिलावतो ॥ ईश्वर दुहाई जोपे होतो
 ऐसी नागिन तो कालीको नथैया कान्ह काहेको कहावतो । मुरि
 मुसकानि मंत्र जानति नराधेजीतो बेनीकि डसनि ब्रजवसन
 न पावतो १ बेणीव्यालांगनाफणी २ ॥

मूल ॥ हरिवंशगुसाईभजनकीरीतिसुकृतकोईजानि
 है ॥ राधाचरणप्रधानहृदयअतिसुदृढउपासी । कुंजके
 लिदंपतीतहांकीकरतखवासी ॥ सर्वसुमहाप्रसादप्रसिध
 ताके अधिकारी । विधिनिषेधनहिंदास अनन्यउतकटव्रत
 धारी ॥ श्रीव्याससुवनपथअनुसरैसोईभलेपहिंचानिहै ।
 हरिवंशगुसाईभजनकीरीतिसुकृतकोईजानिहै ११ ॥

हरिवंशगुसाई ॥ पद ॥ बंदों राधिका पदपदम । परम कोमल
 शुभगशीतल कृपायुत सुख कदम ॥ चरणचितत अमल उरसिज
 जगत सबही छदम । भालपर अक्षर अनयास सोहै होतपरसत
 रदम ॥ कृष्ण अलंकृत स्वहस्तपूजन निगम नूपुर रदम । रसिक
 जनजीवन समूली अचर वसुसदम ॥ रीति सुकृत ॥ कवित्त ॥
 जाके हितहेत धनधाम तजिदेत पुनि बनवाल्लेत मुनि क्लेशन
 करत हैं । तारीलै लगावै देहमुधि बिसरावैत ऊ उरभे न आवै तव
 दुखमें जरत हैं ॥ बहुत उपाय करै मरिवेते नाही डरै गिरिहूते
 गिरै नदीभाहिन परत हैं । ऐसे नदनंदन महावर सुजाके देत
 ताको व्यासनंदन जू ध्यानही धरत हैं ॥ सुधानिधौ ॥ यस्याःकदा
 पिबसनांचलखेलनोत्थधन्यातिधन्यपवनेनकृतार्थमानी ॥ योगी
 न्द्रदुर्गमगतिर्भुसूदनोपि तस्यैनमोस्तुवृषभानुभुवोदिशेपि २ ब्र-
 ह्मवैवर्ते ॥ राशब्दकुर्वते राधा प्रदत्ते भक्तिमत्तमाय ॥ धाशब्दकुर्वते
 पश्चाद्यामिश्रवणलोभितः ३ राधाचरण प्रधान ॥ दोहा ॥ कुंवरि
 चरण अंकित धराणि देखत जिहि जिहि ठौर ॥ प्रियाचरण रजजा-
 निकै लुटत रसिक शिरसौर ५ जिहिउरसर राधाकमल बसौ-
 लसौ बहुभाय ॥ मोहन भौररैनिदिन रहै तहां मडराय ६ ॥

चौपाई ॥ जाके हिबेसरहितजलनाहीं । राधापदकलताननमाहीं ॥
 चरणकमल उदै होइ न जौलौ । मोहन भँवर न आवै तौलौ २ ॥
 कवित्त ॥ ब्रह्ममें ढूँहो पुराणनमें बहु वेदकृचापद्विचौगुने चाइन ।
 जान्यो नहीं कबहुं वह कैसोहै कैसे स्वरूप है कैसे सुभाइन ॥
 हेरत हेरत हारपरयो रसखानि बतायो न लोग लुभाइन । देखौ
 कहां दुरयो कुंज कुटीर में बैठो पलोटत राधाके पाइन २ कहां
 जानौ कौने बीच देखो उन प्राणप्यारी तादिनते मिलिबे के
 यतन करतहैं । पानी पान भोजन भुलानो भौन सोजनसनि-
 दक बनाइ कन धीरज धरतहैं ॥ दैगई महावर तिहारे तरवानि
 मांस ताके करपल्लवकी पौरै पकरतहैं । नैननसौं लाइ उरलाइ
 कहे हाइहाइ बारबार नाइन के पाइन परतहैं ३ ॥ पद ॥ भज
 मन राधिका के चरण । सुभग शीतल परम कोमल कमल केसे
 वरण ॥ कण्ठितनूपुर शब्द उचरत विरहसागर तरण । बलिताहि
 परमानंद बलिबसि श्याम जाकी शरण ४ राधेजूके चरण पलो-
 टत मोहन । नीलकमलके दलन लपेटे अरुण कमलदल सोहन ॥
 कबहुँक लैलै नयनन लावत अलिधावत ज्यों गोहन । जै श्रीभट्ट
 छबीली राधे होत जगते छोहन ५ ॥ राधासुधानिधौ ॥ योब्रह्म
 रुद्रशुकनारदभीष्ममुख्यैरालक्षितो न सहसा पुरुषस्यतस्य ॥ सद्यो
 वशीकरणचूर्णमनन्तशक्तितं राधिकाचरणरेणुमनुस्मरामि ६ ॥
 आगमे ॥ ब्रह्मानन्दरसादिनन्तगुणतोरम्योरसोवैष्णवस्तस्मात्को
 टिगुणोज्ज्वलश्चमधुरः श्रीगोकुलेन्द्रोरसः ॥ तच्चानन्तचमत्कृति
 प्रतिमहःसद्ब्रह्मवीनांपरःश्रीराधापदपद्ममेवपरमंसर्वस्वभूतंमम ७ ॥
 दशमे ॥ नैसंविंरच्योनभवो न श्रीरप्यंगसंश्रया ॥ प्रसादंलेभिरे
 गोपी यत्तत्प्रापविमुक्तिदात् ८ ॥ ब्रह्माण्डे ॥ शृणुगुह्यतमंतात
 नारायणमुखाच्छ्रुतम् ॥ सर्वैश्चपूजितादेवी राधा वृन्दावनेवने २
 माधुर्यमधुराराधा सहस्रेराधिकागुरुः । सौन्दर्यसुन्दरीराधा
 राधेवाराध्यतेमया ॥ प्रधानको अर्थ ॥ कवित्त ॥ भूपति के
 सम्पत्तिसौं भरे हैं त्रिविधि कोश दीनी तहां छाप कहौ रंक पावै

कसे है । बिना रीम्न रावरी निहारि सके राजकौन पांगुलौ सुमेरु
 चहिसके नहीं जैसे है ॥ राजाहूकी दई एपे मिलैगी प्रधान हाथ
 नीतिमें प्रसाण बात कहियेजु ऐसे है । राधिकाचरण रति पावै
 हित कृपाही सों नाभाजी प्रधानता दिखाई यह ऐसे है ३ ॥ दृढ़
 उपासी सुधानियो ॥ धर्माद्यर्थचतुष्टयंविजयता किंतद्वृथावात्तया
 सैकान्तेश्वरिभक्तियोगपदवी त्वारोपितामूर्धनि ॥ थावृन्दावनसी
 भिनकाचनघनाश्चर्य्यकिशोरीसाणस्तत्कैकर्यसाश्रुतादिहपरंचि
 तेनमरोचते ४ ॥ करतखवासी ॥ ताम्बूलकाचिदर्पयामिचरणौ
 संवाहयामिकचिन्मालाद्यैः परिमण्डयेकचिदहो संवीजयामिक
 चित् ॥ कर्पूरदिसुवासितंकचपुनः सुस्त्रादुराम्भोभृतं पायाम्येवचृहे
 कदाखलुभजे श्रीराधिकामाधवौ ५ ॥ कवित्त ॥ जहां नव नागरी
 रसिक नागर दोऊ प्रेमसों विवश है करत हांसी । हुलस हुल-
 सात लपटात तन सुधिजात परस्पर बात रसके विलासी ॥ इतै
 अनखात उत वाना पगपरनिकी है चरणकी छवि हिये हरि प्रका-
 सी । जहां दृगसैनकी बात समझन हेत हितभरी खरी हरिवंश
 दासी ६ ॥ परस्पर बात ॥ दोहा ॥ वतरस लालच लालकी सु-
 रती लई लुकाय ॥ सोहकरै भौहन हसै देनकहै नटजाइ ७ ॥
 सर्वसुमहाप्रसाद ॥ सबैया ॥ काहूलियो जप काहूलियो तप काहू
 महाव्रत साधि कियो है । काहू लियो गुण काहू लियो धन काहू
 महाउनसाद हियो है ॥ रंचक चारु चकोरनि दम्पति सम्पति
 प्रेमपियूष पियो है । राधिकावल्लभलालके थारको श्रीहरिवंश प्र-
 साद लियो है ८ ॥ कवित्त ॥ आदरयो प्रसाद औनिरादरी जगत
 रीति इष्टही की मिष्टबात सब मनभाई है । सुहथ जिमाये गौर
 श्यामरस रीति प्रीति अर्थो भयो गुणातीत नेमको जताई है ॥
 परम धर्म वण्यो चरणोदक प्रसादमुख सर्वसु सो मान्यो भक्ति
 बेलिही बढ़ाई है । बुद्ध रस मारग चलायो लोक शंके नाहि गु-
 गुल उच्छिष्ट अधिकारता यो पाई है २ ॥ आदिपुराणे ॥ एकादशी
 सहस्राणि द्वादशीचाशतानिच ॥ राधिकायाः प्रसादस्य कलानाहै

न्तिषोडशीम् ३ ॥ गरुडपुराणे ॥ आकण्ठभक्षितो नित्यं पुनाति सक-
लां हसः ॥ सर्वरोगोपशमनं पुत्रपौत्रादिवर्द्धनम् ४ ॥ विधि निषेध ॥
स्मर्तव्यः सततं विष्णुर्विस्मर्तव्यो न जातु चित् ॥ सर्वविधिनिषे-
धाः स्युरेतयोरेव किंकराः ५ अनुसरै ॥ कवित्त ॥ हित हरिवंश
बिन हितकी न रीति जानै कैसे वृषभाननंदनी सों प्रीति करि-
ये । कौन सोहै धर्म जासों कर्मनिको भर्मजाय सुत वित् राज-
प्राय कैसे ध्यान धरिये ॥ रसिकनरसनिकी राह औ कुराहकोन
कौन की उपासना सों आशु सिंधु तरिये । जोपै नंद नंदन को
चहै जगबदनको तोपै व्यासनंदनके नामको उचरिये ६ ॥ दोहा ॥
रेमन श्री हरिवंश भज जो चाहत विश्राम ॥ जिहि रस सबब्रज
सुन्दरी छाँड़िदिये सुख धाम ७ जय जय श्री हरिवंश सदाहंसनि
लीलारति । जय जय श्री हरिवंश भक्ति में जाकी वृद्ध मति ॥
जय जय श्री हरिवंश रटन श्रीराधा राधा । जयजय श्री हरिवंश
सुमिरि नाशै भव बाधा ॥ कहि व्यास आश हरिवंशकी जयजय
श्री हरिवंशजी । सुठि सरहिसकै को कवि सुयश पुरोप्रकट प्रशं-
सजी ॥ कवित्त ॥ तूही हरिवंशी हरिकरसो प्रशंशी रहै राधा
गुण गान हेत अधर पै बसना । नई नई तानन सैं काननमें पैठि
पैठि दंपतिके आनन में तेरी ये विलसना ॥ प्यारेहूके हियेलागि
प्यारीजीके अनुराग उत और प्रेम इत रूपहै बरसना ॥ हियेमाहिं
हित भई चित्तमेंहै चौपनई नैननिमें नेह नई रसरसरसना ८ ॥

टीका श्रीहरिवंशगुसाई ॥ हितजूकीरीतिकोईलाखन
में एकजानेराधाईप्रधानमाने पीछेकृष्णध्याइये । निकट
विकटभावहोतनसुभावऐसो उनहींकीकृपादृष्टिनेकुकराहै
पाइये ॥ विधिऔनिषेधछेदडारेप्राणप्यारेहियेजिये निज
दासनिशिदिनवहैगाइये । सुखदचरित्ररसरसिकविचित्र
नकेजानतप्रसिद्धकहाकहिकेसुनाइये ३६१ आये घर
त्यागरागबन्धोप्रियाप्रीतमसों विप्रबड़भागहरिआज्ञाद

ईजानिये । तेरीउभैसुताव्याहिदेबोलेवोनाममेरोउनको
 जोबेशसोप्रशंसजगमानिये ॥ ताहीद्वारसेवाबिसतारनिज
 भक्तनिकीआगतकीगतिसोप्रसिद्धप्रहिनिये । मानिप्रि
 यवातगृहगयोसुखलह्योतबकह्योकैसेजातयहमनमनआ
 निये ३६२ राधिकाबल्लभलालआज्ञासोरसालदईसेवासो
 प्रकाशऔबिलासकुंजधामको । सोइबिसतारसुखसारदृ
 गरूपपियोहियोरसिकनिजिनलियोपक्षवामको ॥ निशि
 दिनगानरसमाधुरीको पानउरअन्तरसिहातएककामश्या
 माश्यामको । गुणसोंअनूपकहिकैसेकरूपकहैलहैमन
 मोहजैसेऔरतहीनामको ३६३ ॥

मानि प्रियवात ॥ दोहा ॥ टोना टामन सहस विधि करि
 देखौ सबकोय ॥ पीवकहै सो कीजिये आपुनहीं बस होय २ ॥
 पद ॥ प्रीतम प्रीति सों बस होइ । मंत्र चंत्र अरु टोना टामन
 काम न आवत कोइ ॥ जो अपने प्रीतम प्यारे सों रहिये प्राण
 समोइ । तौ काहे को और ठौर वह जात प्रीति पतिखोइ ॥ हितकै
 गुणमें प्रीतम को मन मानिक लीजै खोइ । सुर विहसति राखै
 अपने मन तन मँजुष में गोइ ॥ गरि गवौ भार गरव को संजनी
 अबतो तू जिहि ठौरहि जोइ । उठि चलि मिलो किशोरी पतिसों
 केलि कल्पतरु वोइ ॥

मूल ॥ असआशधीरउद्योतकररसिकछापहरिदास
 की ॥ युगुलनामसोंनेमजपतनितकुंजविहारी । अवलोक
 तरहैकेलिसखीसुखकेअधिकारी ॥ गानकलागंधर्वश्याम
 श्यामाकोतोषे । उत्तमभोगलगाइमोरमर्कटतिमिपोषे ॥
 नितनृपतिद्वारठाढेरहेदर्शनआशाजासकी । असआश
 धीरउद्योतकररसिकछापहरिदासकी ९२ ॥

रसिक छाप हरिदासजी रसिक हरिदास ॥ दोहा ॥ श्री
 स्वामी हरिदास को यश त्रिलोक विस्तार ॥ आप पियो प्र्यायो
 रसिक नवल निकुंज विहार ॥ कवित्त ॥ रतन सुदेशमई अवति
 निकुंज धाम अति अभिराम पियप्यारी केलिरास है । रमत
 रमत दोऊ सुमति सुगति सेज अमित कटावन के हाव भाव
 हासै है ॥ भावक प्रवीण सुपुनीत गुणगान रटै वाते लोक लोकन
 में सुयश सुवास है । सखी रूपवने घने रासरस गानकर रसिक
 शिरोमणि श्री स्वामी हरिदास है २ ॥ स० ॥ जा पथको पथलेत
 महामुनि मूढति नेन गहे नितनाको । जापथको पछतात है वेद
 लहै नहि भेद रहै जकजाको ॥ सो पथ श्रीहरिदास लह्यो रस-
 रीतिकी प्रातिचलाय निशाको । भावत गावत गोविंदको रसिकी
 यों अनन्यनको पथ वाँको ३ ॥ युगुलनामसो तेम ॥ दोहा ॥ तु-
 लसी जनककुमारि विन जे सेवत रघुवीर ॥ जेसे तंदो रैनि विन
 सवै न अमृत सीर ४ ॥ कवित्त ॥ वृहै है शरदचंद्र दिनमें उदोत
 देख्यो ज्योतिको न लेशलागै थारी के अकार है । रैनि रस देन
 मांभ चैनके समूह होत सो तज्यो प्रकाश रास ताको यों विचार
 है ॥ शब्द सुधाकर और पात्र निशि वासर है तासर न कोऊ जामे
 सार निरधार है । रसिक प्रवीणहू चक्रोर रजनीशहीसों युगुल
 स्वरूप गुण नामही अधार है ५ ॥ समोहनीतन्त्रे ॥ गौरतेजोत्रि
 नायस्तु श्यामतेजःसमर्चयेत् ॥ जपेद्राध्यायतेवापिस भवेत्पातकी
 शिवे २ ॥ सखीसुख ॥ कवित्त ॥ बिपित्त विहार फूलफूलेहें अपार
 लाल लाडिली निहार मन आई यों श्रृंगारिये । बीनि बीनि फूल
 मृदुअगकी सुसम लैलै भूषणरचत सीरि नीके कै सवारिये ॥ स-
 न्मुखही मोहन हियेमें लख्यो प्रतिबिंब सोहन सतेह मोह भरी
 अंकुवारिये । यहै जानि श्यामा पीठि दई अतिवामा येहो जीती
 चतुराई यों भुराई परवारिये ३ ॥ पद ॥ होडपरी मोरहि अरु
 श्यामहि । आधोचलो मधि सबकी गति लीजै रंगधौ कामहि ॥
 हमारे तिहार मध्यस्थ राधे और जाहि बंदो पूछ देख्यो नृप दे

कहा है यामहिं । श्रीहरिदास के स्वामी श्यामा को चौपरिकोसो खेल एकगुण द्विगुण त्रिगुण चतुरगुण दीजे री जाके नामहिं ४ पियको नचावन सिखवती प्यारी । वृन्दावन में रास रच्यो है शरद रौनि उजियारी ॥ रूपभरी गुणहाथ छरी लिये डरपत कुंज बिहारी । व्यास स्वामिनी निरखि नट श्यामहिं रीझदेत करता-री ५ महाराज कौन आछो नृत्य करैहैं तृणदेके पूछे द्वे बेर मोरी कह्यो तीजे लालजीको अकमें भरिलयो कही तो समान को नृत्य करैहैं जैसी चौपरि की नरद एकवेर कच्ची होय फेरि पके सोई चौपरिको खेलकहिये जय लाड़िली लाल मिले तब प्रियाजीने रीझिकै रसिक छापदई ॥ ६ ॥ कवित्त ॥ चहुंओर बैठे मोर दा-विचारो ओरनते जोत्यो मनमथ राख्यो मनहिं दुहाई में । कस्तूरी अरगजा को तिलक विराजै भाल माँगभरे यौवनकी जंग मग जाई में ॥ अलक चमर घनश्याम बाजे नूपुरादि हँसनि वि-लोकनि सो घटति बधाई में । धिरचर ऐसी राज देखौ देखौ सखी आज दुहुनि रजाई पाई एकही रजाई में २ सवेया ॥ जैसे अनखानि सतरानि लपटानि पुनि अति इतरानि सुसकानि रंग चरषे । जैसे किरजान अति दीनता निदान पान आपने प्रमान डहि मिसिपानकरषे ॥ भटक रिसान भुवतान त्यों त्यों प्राणनाथ प्राणन सिहान मान मनमेंही हरषे । ऐसीकुंजकेलिरसबेलि सुख झेलिरही बिना हरिदासदासी ताहि कौन निरषे २ पद ॥ प्यारी तेरी पुतरी काजरहूते कारी ॥ मानों द्वे भवर उड़े हैं चरावर । चंपकी डारबैठे कुंद अलि लागी है जैव अराअर ॥ जव आइ घे-रत कटक कामको तब जियहोत दरादर । हरिदासके स्वामी श्यामाकुंजबिहारी दोऊमिल खरत भराझर ॥ अनन्य नृपति श्री स्वामी हरिदास । श्री कुंजबिहारी सेये बिन छिन नकरी काहु की आस ॥ सेवा सावधान करिजाने सुघर गावत दिनरसरस । देहनिदेहभये जीवतही बिसरे विश्वविलास ॥ श्रीवृन्दावन रज तनमन भज तजि लोकवेदकी आस । प्रीति रीति कीनी सबहिन

सों किये नखासखवास ॥ यह अपनो व्रत और निवाहो जबलग
कंठ उसास । सुरपति भूपति कंचनि कामन तिनके भावे धास ॥
अब के रसिक व्यास हम ऐसे जगत करत उपहास ३ ऐसो
ऋतु सदा सर्वदा जो रहै बोलत नित मोरनि । नीके बादर
नीके धनक चहुँदिशि नीको वृन्दावन आछी नीकी मेघन की
घोरनि ॥ आछी नीकी भूमि हरीहरी आछी नीकी रगनि काम
की रोरनि । श्रीहरिदास के स्वामी श्यामाको मिलगावत बन्यो
राग मलार किशोर किशोरनि ४ ॥

टीका ॥ स्वामीहरिदासरसराशिको बखानिसकैरसि
कताछापजोईजायमध्यपाइये । लायोकोऊचोवावाकोअ
तिमनभोवावामें डाख्यौलैपुलिनयहैखोवाहियेआइये ॥
जानिकैसुजानकहींलैदिखावोलालप्यारे नेसुकुउघारेपट
सुगंधउडाइये । पारसपषानकरिजलडरवाइदियोकियो
तबशिष्यऐसेनानाविधिपाइये ३६४ मूल ॥ उत्कर्षतिल
कअरुदामक्रोभक्तइष्टअतिव्यासके ॥ काहूकेआराध्यम
च्छकच्छककरनरहरि । वावनपरसाधरनसेतुबंधनहुशै
लकरि ॥ एकनकेयहरीतिनेमनवधासौल्याये । सुकुल
समोखनसुवनअच्युतगोत्रीजुलडाये ॥ नौगुनोतीरि
नूपुरगुह्योमहतसभामधिरासके । उत्कर्षतिलकअरुदास
कोभक्तइष्टअतिव्यासके ६३ ॥

लायोकोऊ चोवा ॥ दोहा ॥ कै सुगंध सौंधो सरस कै उत्तम
कलगान ॥ इनहीं के कर मीचहे मेरी मेरे जान २ दुखाइ दियो
कुण्डलिया ॥ नेगन लाग्यो रामके अगर बड़ो यहखोट । रानी
राज सिंगार पट धोवी को धुवरोट ॥ धोवी को धुवरोट कियो
दुर्लभ मानुष तन । सुलभ विषय सब जोर ब्रह्मआधीन जगत
जन ॥ कौड़ी कामिनि कुटुंब तिनहिं हित हीराहारयो । ज्यों बनि

जारो बैल थक्यो तब मगमें डारयो ॥ चाक चौर हाजिर कुवर
 अग्र इते पर आस । गाडर आनी ऊनको बांधी चौर कपास ॥
 बांधीचौर कपास विमुख हरि लों न हरासी । प्रभुप्रतापकी देह
 कुलित सुखसोई कामी ॥ जठर यातना अधिक भजन वदिवाहर
 आयो । पवन लगत संसार कृतघ्नी नाथ भुलायो ॥ उत्कर्ष तिलक
 अरु ॥ पद ॥ मेरेभक्त हैं देवा देऊ । भक्तनि जानौ भक्तनि मानौ
 निजजनमो जिव तेऊ ॥ मातपिता भक्के मममइया भक्त दमाद
 सजनवसनेऊ । सुत संपति परमेश्वर मेरे हरिजन जाति जनेऊ ॥
 भवसागर को बेरोभक्तहै हरिखेवट कुरखेऊ । वृद्धत बहुत उबारै
 भक्तन लिये उबारि जरेऊ ॥ तिनकी महिमा व्यास कपिल कहि हारे
 सबपर वेऊ । व्यासदासकी प्राणजिवन धन हरि परिवार वड़ेऊ ॥
 रासकेलि ॥ कवित्त ॥ शरद उज्यारी फुलवारी में विहारी प्यारी
 श्रीगोविंद तैसी वाणी मंडली सखीन की । प्रेम को प्रकाश रास
 रस को बिलास तामें राग रागिनी है सुरसात ग्राम तीनकी ॥
 उरपतिरपके संगीतनि के भेद भाव नीकीधुनि नूपुरकी किंकिणी
 चुरीन की । लीन भई मुरली मृदंगकी नवीन गति वीनकी वजनि
 औ वजावनि प्रवीन की २ ॥ उचकि उचकि पग धरत धरणिपर
 भिझकि झिझकि कर करन उचतहै । ललक ललक गति लेतहै
 सुवह पुनि झपक झपक दग पलन सुचतहै ॥ ठुमुक ठुमुक पग
 बजत घुघुरु धुनि मधुर मधुर सुरतानन खचतहै । मुलक मुलक
 मन हरत सकल जन आज राज ब्रजराज रास में नचत है ३ ॥
 ऐसे रासमें जनेऊ तोरिकै श्री प्रियाजू को नूपुर गुह्यो तब यह पद
 गायो ॥ पद ॥ रसिक अनन्य हमारो जाति । कुलदेवी राधावर-
 सानो खेरो ब्रज वासिन की पाति ॥ गोत गोपाल जनेऊमाला
 शिखा शिखंडी हरिमंदिर भाल । हरिगुणगान वेदधुनि सुनियत
 मजु पखावज कुशकरताल ॥ शाखा यमुना हरिलीलां षट्कर्म
 प्रसाद प्राणधनरास । सेवा विधि निषेध सतसंसत वसत सदा
 हृन्दावनवास ॥ स्मृति भागवत कृष्ण ध्यान गायत्री जाप ।

बंशी ऋषि निजमान कल्पतरु व्यास अशीशानदेत शिराप ॥

टीका ॥ आयेगृहत्यागिवृन्दावन अनुरागकरिगयोहि
योपागिहोइन्यारोतासोखीजिये । राजालेन आयोऐपैजाइ
बोनभायो श्रीकिशोरअरुझायोमनसेवामतिभीजिये ॥
चीराजरकसीशीशचिकनोखिसिलजाइ लेहुजबंघायनहीं
आपवांधिलीजिये । गयेउठिकुंजसधिआइसुखपुंजआये
देख्योबंघ्योमंजुकहि कैसेमोपैरीझिये ३६५ संतसुखदेन
बैठेसंगही प्रसादलेतपरोसततियासबभातिनप्रबनहैं ।
दूधवरताईलेमलाईछिटकाईनिज खिजउठेजानिपतिषो
पतनवीनहैं ॥ सेवासोखुडायदईअतिअनसनीभईगई
भूखवीतेदिनतीनितनक्षीनहैं । सबसमुझावैतबदंडको
मनावैं अंगआभरणवेचिसाधजेवैयोअधीनहैं ३६६ सु
ताकोविवाहभयोबडउतसाहकियो नानापकधानसबनीके
बनिआयेहैं । भक्तनिकीसुधिकरीखरीअरवरीमतिभावना
करतभोगसुखदलगायेहैं ॥ आइगयेसाधुसोबुलाइकहीपा
योजाइपोटनिबंधायचाइकुजनपठायेहैं । बंशीपहराईद्विज
भक्तिलेदृढ़ाईसंतसंपुटमैचिरियादेहितसोवसायेहैं ३६७ ॥

आयेवृन्दावन ॥ सबैया ॥ भूमिहरी द्रुमभूमिरहे लखि ठोररहे
दृगठोर सुहाते । न्यारे से लोग रंगीले तहांके मिलेहैंसिप्रेमहिषे
सरसाते ॥ नाम न आवै औ आवै गरोभरि नामलियो नहिजात
है याते । सांवरी एक नदीपैवसे सो कहौ किमिकौउ या गांवकी
वाते २ ॥ खीजिये ॥ पद ॥ सुधारोहरि मेरो परलोक । वृन्दावन
में कीनोदीनो हरि अपनो निजओक ॥ माताको सो हितकियो
हरिजानिआपने तोक । चरणधूरि मेरे शिरभेली और सबनिद्वे

लोक ॥ जैनर राकस कूकर गदहा ऊंट वृषभ गज वोक । वृन्दा-
 वन तजि बाहर भटकत तो शिर पनहीं टोक २ ॥ जाइवो न
 भावै ॥ वृन्दावन के रूप हमारे मात पिता सुतबंध । गुरुगोविंद
 साधुगति भतिफल अरु फूलनको गंध ॥ इन्है पीठिदै अनत दीठि
 करि सो अंधनमें अंध । व्यास इन्है छोड़ैरुछड़वै ताको परियो
 कंध ३ ॥ दोहा ॥ वृन्दावनको छाड़िकै और तीर्थ को जात ॥ छाड़ि
 विमल चिंतामणी कौड़ी को ललचात ४ ॥ राधा बल्लभ कारणे
 सही जगत उपहास ॥ वृन्दावनके श्रवणकी जूठनि खाई व्यास
 १ ॥ वृन्दावन छाड़िये नहीं ६ ॥ खिजउठे ॥ पद ॥ तिया जो न
 होई हरिदासी । सोदासी गणिका सम जानो दृष्टराइ मसवासी ॥
 निशिदिन अपनो अंजन मंजन करत विषयकी रासी । परमारथ
 कबहुं नहिं जाने आनि परे यमफांसी ॥ कहाभयो स्वरूप गुण
 सुंदर नाहिं श्याम उपासी । ताके संग न पतिगति जैहै याते
 भली उदासी ॥ साकतनारि जुघरमें राखै निश्चय नरक निवासी ॥
 व्यासदास यह संगति तजिये मिटै जगतकी हांसी २ अंग आभ-
 रण वैचि धीस हजार रुपैया के वैचिकै वैष्णव जिमाये तव तिया
 रसाई में लई में श्वेत बल्ल पहिराइ के सेवामे आवै २ ॥ पद ॥
 बिनती सुनिये वैष्णवदासी । जा शरीरमें बसत निरंतर नरक
 बात पितखांसी ॥ ताहि भुलाइ हरिहि यो गहिये हंसै संग सुख
 वासी ॥ बड़े स्वहाग ताहि मनदीजे श्रीरु बरांक विश्वासी ॥ ताहि
 छाड़ि हित करै और सो गरेपरै यम फांसी । दीपक हाथपरै कूवां
 में जगतकरै सबहोसी ॥ सबोपरि राधापतिसो रति करत अनन्य
 धिलासी ॥ तिनकी पदरज शरण व्यासको गति वृन्दावन
 वासी २ ॥ पोटन ॥ पद ॥ हरिभक्तनते समधीप्यारे । आये भक्त
 दूरि बैठारो फोरत कानहमारि ॥ दूर देशते समधी आये ते घर में
 बैठारे । उत्तम पलिका सौरसपेदी भोजन बहुत सँवारे ॥ भक्तन
 को देखन चनाको इनको सिलवट न्यारे ॥ व्यासदास ऐसे विमु-
 खनको यमसदा टेरत हारे ॥ तापर दृष्टांत उगली सो राहवताई २ ॥

पाटवँघाइके मिठाई साधुन को दई तब पुत्र खिन्ने यह कहा
करतहो २ ॥

शरदउज्यारी रासरच्योपियप्यारीतामैरंगबढोभारी
कैसेकहि कसुनाइये । प्रियाअतिगतिलईबिजुरीसीकौधि
गईचकचौध्रीभईछविमंडलमेछाइये ॥ नूपुरसोट्टिट्टिप
ख्योअरवख्योमनतोरिकेजनेऊकख्योवाहीभांतिभाइये । स
कलसमाजमेयोक्क्योआजकामआयो ढौयोहैजनमताकी
वातजियआइये ३६८ गायोभक्तइष्टअतिसुनिकैमहत
एकलेनकोपरीक्षानायोसंतसंगभीरहै । भुखकोजतावे
वाणीव्यासकोसुनावैसुनिकहौभोगआवै यहाँमानेहरिधी
रहै ॥ तबनप्रमाणकरीशकधरीलैप्रमादग्रासदोइचारिउ
ठैमानोभईपीरहै । पातरिसमेटिलईसतकरिमोकोदईपा
वोतुमऔरपावलियेदगनीरहै ३६९ ॥

तोरिके जनऊ ॥ पद ॥ इतनो है सब कुटुंब हमारो । सेन
धनानाभा अरु पीपा अरु कबीर रंदास चमारो ॥ रूप सनातन
हरिको सेवक गंगल भट्ट सुटारो । सुरदास परमानंद मेहा मीरा
भक्त विचारो ॥ ब्राह्मण राजपूज्य कुलउत्तम करत जातिको गारो ।
आदिअंतःकृतनको सर्वस राधावल्लभ प्यारो ॥ इहि पथचलत
इयाम इयामके व्यासहि चारो भावैतारो ३ ॥

भयेसुततीनबांटनिपटनवीनकिये एकऔरसेवाएक
अोरधनधख्येहै । तीसरीजुठौरइयामबंदनीओछापधरी
करीऐसीसीतिदेखिवडोशोचपख्यो है ॥ एकनेरुपैयालये
एकनेकिशोरजूको श्रीकिशोरदासमालतिलकलैकख्योहै ।
छोयेदियेस्वामीहरिदासदिशिराशिकियो वहीराशिललि
तादिगायोमनहख्योहै ३७० ॥

पारभावभक्तिकोनपारावार कियोहंवैरागसारकहैकौन
छोरते ३७१ ॥

भक्त जलपद जयजय मेरे प्राण सनातनरूप । अगतिनकी
गतिदोज भैया योग यज्ञके जूप ॥ श्रीवृन्दावन की सहज माधुरी
प्रेम सुधा के कूप । करुणासिंधु अनाथ बंधुजय भक्तसभाके
भूप ॥ भक्त भागवत मत आचारज चतुर कुल चतुरभूप ।
भुवन चतुरदश विदित त्रिमलयश रसनाके रसतूप ॥ चरण
कमल कोमलरज छापा भेटत कलरजधूप । व्यास उपासक
सदा उपासी श्रीराधाचरण अनूप ॥ बोले कवित्त ॥ सीखे व्याक-
रणकोष काव्य औ पुराण सीखे सीखे वेद पढ़िवो जो धर्मनकु
मूरिहै । न्याय वेदान्त आदि सीखे षटशास्त्र वर पंडिताई चतुराई
जाने भरिपूरि है ॥ सीखे घटपट सांप जेवरी वखानिवे को माया
भ्रम जाकी अतिजीवनिकी मूरिहै । भक्तकी सभाबीच प्रेम
रस सींचि सींचि बोलिवो न सीखयो सब सीखिवेमें धूरिहै २ ॥
प्रसंगमजरंपाशमात्मनःकवयोविदुः ॥ सएवसाधुषुक्कतोमोक्षदा
रमपावृतम् १ ॥

मूल ॥ श्रीवृन्दावनकीमाधुरीइनमिलिआस्वादनकि
यो ॥ सर्वसुराधारवनभट्टगोपालउजागर । हषीकेशभग
वानविपुलविट्ठलरससागर ॥ थानेश्वरजगनाथलोकम
हमुनिमधुश्रीरंग । कृष्णदासपंडितउभैअधिकारीहरिअं
ग ॥ जनघमण्डीयुगलकिशोरभूगर्भजीवददव्रतलियो ।
श्रीवृन्दावनकीमाधुरी इनमिलिआस्वादनकियो ९५ ॥

इनमिल विषयरस स्वादीको मिलवो कहाराजा को दूसरो न
रुचे अरु दत्तात्रेयहने कारीकन्याकी चूरी दूसरीहू दूरिकरी पैकैसे
मिलै दत्तात्रेयजी ने ब्रह्मज्ञानीन को संग निषेध कियो उपास-

कनको नहीं ब्रह्मज्ञानी विधवातुल्य हैं उपासक सुहागवती ति-
नको संगचूरी चाहिये जैसे चूरी को शब्द पतिको प्यारो लगै
ऐसे संगरूप चूरी को शब्द कृष्णपति को प्यारो लगै याते ब्रह्म-
ज्ञानी के कृष्णपति नहीं तिनहीं को संग चूरी त्यागहै याते इन्हें
नेमिलिके रूप माधुरीको स्वादलिये ॥ पद ॥ जो कोऊ वृन्दावन
रसचाखैं । खारी लगत खांड अरु खारक आन देशकी दाखैं ॥
प्राणसमान तजै नहिं सीवा लोभ दिखावत लाखैं । भूखे रहि
कै पावे भाजी निरखि रहै तरुसाखैं ॥ परे रहे कुंजनि के कोने
कृष्ण राधिका भाखैं । जनगोविंद बलवीर कृपाते पटरानी जू
राखैं २ क्योंकि राधे को वृन्दावन वेदन में गायो है ॥ सवैया ॥
पौरिके पौरिया द्वारके द्वारिया पाहरुवा घर के धनदयाम हैं ।
दासी के दास सखीन के सेवक पार परोसिन के धनधाम हैं ॥
श्रीधर कान्हभरे हित भामर मानभरी सतभामासी वाम हैं ।
एक वही विसरामथली वृषभानलली की गली के गुलाम हैं २ ॥
टीकागोपालभट्टकी ॥ श्रीगोपालभट्टजूकेहियेवेर
सालबसेलसेयोप्रकटराधारवनस्वरूपहैं । नानाभोगरा
गकरैंअतिअनुरागपगे जगेजगमाहिंहितकौतुकअनूप
हैं ॥ वृन्दावनमाधुरीअगाधकोसवादलियो जियोजिन
पायोसीतभधेरसरूपहैं । गुणहीकोलेतजीवअगुणको
त्यागदेत करुणानिकेतधर्मसेतुभक्तभूपहैं ३७२ ॥ टीका
अलिभगवान्की ॥ अलिभगवानरामसेवासावधानमन
वृन्दावनआइकछूऔरैरीतिभईहै । देखेरासमंडलमेंविह
रतरसरसबाढीद्विप्यासदृगसुधिवुधिगईहै ॥ नामधरि
रासऔविहारीसेवाप्यारीलली खगीहियमांझगुरुसुनी
बातनई है । विपिनपधारेआपजाइपगधारेशीश ईशभरे
तुमसुखपायोकाहिदईहै ३७३ ॥

बाढ़ीछवि पद ॥ रहौ कोउ काहू मनहिं दिये । मेरे प्राणनाथ
श्रीश्यामा ससकरौ तृणलिये ॥ जे अवतार कदम्ब भजत हैं धरि
दृढ़व्रत जुहिये । तेऊ उमंगि तजत मर्यादा वनविहार स्सपिये ॥
खोये रतन फिरत जे घर घर कौनकाज अपजिये । जय श्रीहित
हरिवंश अनन्त सच नाहींबिन धारत ताहि लिये २ आनिदेशकी
गैलहरिति श्रीकृष्ण दौरि मेवाती लूटलै हैं जो रावरी । सोईअलि
भगवानको लूटिलियो जो जोरावर रामहोतौ बचायलेतो श्री
शुकदेवजी ने ब्रह्मनेष्ठको लूटिलियो ॥ दोहा ॥ अनब्याही हौसे
करै ब्याही लेल उसास । गौनेकी मौने रहीं देख राम मृदुहास ॥

टीकाविट्टलविपुलकी ॥ स्वामीहरिदासजूकेदासना
मविट्टलहैं गुरुकेवियोगदाहउपज्योअपारहै । रास के
समाजमेविराजसबभक्तराज बोलिकैपठायेआयेआज्ञाब
डोभारहै ॥ युगलस्वरूपअवलोकनानाभेद नृत्यगानता
नकानसुनिरहीनसंभारहै । मिलिगयेवाहीठौरपायोभाव
तनऔर कहैरससागरसोताकोयोविचारहै ३७४ ॥ टीका
लोकनाथकी ॥ महाप्रभुश्रीकृष्णचैतन्यजूके पारषदलोक
नाथनामअभिरामसबरीतिहै । राधाकृष्णलीलासौरंगीन
मेंनवीनमन जलमीनजैसेतैसेनिशिदिनप्रीतिहै ॥ भाग
वतगानरसखानसोतौप्राणतुल्य अतिसुखमानिकहैगा
वैजोईनीतिहै । रसिकप्रवीणमगचलतचरणलागि कृपा
कैजताइदईजैसीनेहरीतिहै ३७५ ॥ टीका ॥ मधुगुसाई
की ॥ श्रीमधुगुसाईआयेवृन्दावनचाहबढ़ी देखोइननेन
नसोकैसोधौस्वरूपहै । ढुंढतफिरतवनवनकुंजलताडुम
मिटीभूखप्यासनहींजानेछाँहधूपहै ॥ यमुनाचढ़तिकाटि
करतकरारेजहांवंशीबटतटदीठिपरवेअनूपहै । अंकभरि

लियोदौरिअजहूँ लौं शिरमौर चहै भागभालसाधगोपीना
थरूपहै ३७६ ॥

पायो भावतन ॥ पद ॥ प्यारी नेकु निरखौ नवरँग लालै ।
तुवपदपंकज तलरजघंदत तिलक बनावत भालै ॥ तेरेवरण
वसन आभूषण उरधरि चंपकमालै । बीठल विपुल विनोद करो
बल भुजभरि बाहु विशालै ॥ जलमीन जैसे ॥ दोहा ॥ मीनमारि
जलधोइये खाये अधिक पियास ॥ बलिहारी वा चित्तकी मुये मि-
त्तकी आस २ परसा हरिसौ प्रीतिकरि मछरी कीसी न्याइ ॥
जीवत भरत न छाड़हीं जल बिन रह्यो न जाइ ३ ॥

गुसाईश्रीसनातनमदनमोहनरूपमाथेपधरायकही
सेवानीकेकीजिये । जानोकृष्णदासब्रह्मचारीअधिकारी
भयेभटश्रीनारायणजशिष्यकियेरीझिये ॥ करिकेशूङ्गार
चारुआपहीनिहारिहे गहेनहींचितभावमांभमतिभीजि
ये । कहांलौबखानकरैरागभोगरीतिभाति अवलौविराज
मानदेखिदेखिजीजिये ३७७ श्रीगोविंदचंद्ररूपराशि
सुखराशिदासकृष्णदासपंडितयेदूसरेयोजानिले । सेवा
अनुरागअंगअंगमतिपागिरहीपागिरहीमतिजोपैतोपैया
हिमानिले ॥ प्रीतिहरिदासनसोविविधप्रसाददेतहियेल्या
इलेतदेखपद्वतिप्रमानिले । सहजकीरीतिमेंप्रतीतिसोवि
नीतकरैटेरेवाहीओरमनअनुभवआनिले ३७८ ॥

मतिपागिरही ॥ कवित्त ॥ गोविंद रंगिले रंगरंगनि शृंगार
कियो लिये करछरी हिये सवके बिलोयेहैं । इत इतरात जात धरे
पगधरणी पै यौवन उमंग आप अंगअंग भोयेहैं ॥ चितवनिमें न
सनी सैननसो वातैकरै हरैमनलाइ भरे नेहसो समोयेहैं । एसो
कवि कौन सकै नैनन स्वरूप कहि लाल लाल कौयनमें केते घर
खोयेहैं २ प्रसाद देत ॥ कुंडलिया ॥ भत्रभोरै सेवा खड्ग लै का-

टयो निजमाथ । राइनिभाइनि जासुको खंडाबरादै हाथ ॥ खंडा
बरादै हाथ देत प्रभुको तुलसीदल । कैदोनाभरि फूल कितौ क-
रवा भरिकै जल ॥ भोजनगटकत आप रजोगुणदै पुनि हरषै । या-
बारूथल माफ दयानिधि को लै वरषै ५ अलोनी रोटी गले में
अटकै कही कहा गीता विस्तार करोगे ॥

गुसाई भूगर्भवृन्दावनदृढवासकियो लियोसुखबैठिकुं
जगोविंदअनुपहैं । बड़ेईविरक्तअनुरक्तरूपमाधुरीमेंताही
कोसवादलेतमिलेभक्तभूपहैं ॥ मानसीविचारहीअहारसों
निहाररहेगहेमनवृत्तिवेईयुगलस्वरूपहैं । बुद्धिकेप्रमाण
उनमानिमेंबखानकियो भख्योबहुरंगजाहिजानेरसरूप
हैं ३७९ सूल ॥ श्रीरसिकमुरारिउदारअतिमत्तगजहिउ
पदेशदिय ॥ तनमनधनपरिवारसाहितसेवतसंतनकहि ।
दिव्यभोगआरतीअधिकहरिहूतेहियमहि ॥ श्रीवृन्दावन
चंद्रश्यामश्यामारंगभीने । मगनसुप्रेमपियूषपयधपरचे
बहुदीने ॥ श्रीहरि प्रियश्यामानन्दवरभजनभूमिउच्चारकि
य । श्रीरसिकमुरारिउदारअतिमत्तगजहिउपदेशदिय ९५
टीका ॥ श्रीरसिकमुरारिसाधुसेवाविस्तारकियोपावैकौन
पाररीतिभांतिकलुन्यारिये । संतचरणामृतकेमाठगृहभरे
रहेताहिकोप्रणामपूजाकरिउरधारिये ॥ आवैहरिदासति
न्हैदेतसुखराशिजीभएकनप्रकाशसकैथकैसोविचारिये ।
करंगुरुउत्सवलैदिनमानसबैकोई द्वादशदिवसजनघटा
लगीप्यारिये ३८० संतचरणामृतकोलावोजायनीकी
भांतिजीकीभांतिजानिबेकोदासलपटायोहै । आनिकैब
खानकियोलियोसबसाधुनको पानकरिबोलेभोसवादन्हीं
आयोहै ॥ जितेसभाजनकहीचाखौदेवौमनकोजमहिमान

जानेकनजानीछेडिआयोहै । पूछीकह्योकोदीएकरह्योआ
नौलायोपियोदियोसुखपासनैननीरठरकायोहै ३८१ ॥

आनौ ॥ चैतन्यचरितामृते ॥ दृष्टैःस्वभावनिरतैर्वपुपस्तुदापै
नप्राकृतत्वमिहभक्तजनस्यपश्येत् ॥ गंगार्वसानखलवुद्धिजफेणु
पंकैर्ब्रह्मद्रवत्वमुपगच्छतिनार्यधर्म १ ॥ सौप्याईन एक तिसाई
जैसे प्रीतिकरि शालिग्रामसों पूजे ॥

नृपतिसमाजमेंविराजभक्तराजकहैं गहैवेविवेककोऊ
कहनप्रभावहै । तहांएकठौरसाधुभोजनकरतरौरदेवोदू
जीसोंटासंगकैसेआवेभावहै ॥ पातरिउठाइश्रीगुसाईपर
डारिदईदईगारिसुनीआपत्रोलेदेखौदावहै । सीतसोंविमु
खमेंतौआनिमुखमध्यदियो कियोदासदूरिसेतसेवामेंन
चावहै ३८२ वागमेंसमाजसंतआपचलेदेखिवेकोदेख
तदुरायोजनहूंकोशोचपख्योहै । बड़ोअपराधमानिसाधुस
नमानचाहैंधूमितनत्रैठिकहीदेख्योकहूंघस्योहै ॥ जाइकैमु
नाईदामकादूकेतमाखूपास सुनिकैहुलासबढ्योआगेआ
निकख्योहै । भूठहीउसासभरिसांचेभ्रमपाइलियेकियेमन
भायेऐसेशंकादुखहख्योहै ३८३ उपजतअन्नगांवआवैसा
धुसेवाठांवनयोनृपदुष्टआयकावाकावकियोहै । ग्रामसोंज
बतकरौकख्योलैविचारआपश्यामानन्दजूसुरारिपत्रलिखि
दियोहै ॥ जाहीभांतिहोहिताहीभांतिउठिआवौयहांआये
हाथबांधिकरिआचेहूंनलियोहै । पाछेसासटांगकरीकरीलै
निवेदनसोभोजनमेंकहीचलेआयेभीज्योहियोहै ३८४ ॥

सीत सों विमुख ॥ दोहा ॥ जानि अजानी है रहै तातलेइ
जो जानि । अगिलाहोवै अगन सम आपुन होवै पानि २ कियो
दास दूरि रसोई पावो ले महाराज लाज कैसे रहै सोंटा को

भागै है सोंटाहू खाइहै बावरे मनुष्य खाइसेर सोंटा खाइ चारि
सेर कैसे महाराज जब सोंटा सों भांग घोटिके पीवै तब चारि
पनवारे उड़ाइ जाइ सोंटाही तौ खाइहै दासको दूरि करि
दियो ३ शोच परयो सन्तके लक्षणहै कुछ न क्रियाकरै तौ लाज
करै नार्ही काहेको करे ३ । ४ । ५ । ६ ॥

आज्ञा पाइ अचयोलै दै पठायेवाही ठौर दुष्टशिरमौरज
हांतहां आपआये हैं । मिलेमुतसद्दीशिष्य आइकै सुनाई
बातजावोउठिप्रातयहनीचजैसेगाये हैं ॥ हमहींपठावैका
मकरिसमभावैसबमनमेंनआवैजानीनेहडरपाये है । चि
ताजनिकरौहियेधरौनिहचिंतताई भूपसुधिआइदिनाती
नकहांछाये हैं ३८५ सुनिआयेगुरुवरकलआवोमेरेघर
देखौकरामतिबातपहलैसुनाईहै । कह्यौआनिअभजावो
चलौउनमानदेखेंचलेसुखमानिआयोहाथीधूमझाईहै ॥
छोड़िकेकहारभागगयेननिहारिसके आपरससारबानी
बोलीजैसीगाईहै । बोलौहरिकृष्णकृष्णछांडौगजतमत
नसनिगयोहियेभावदेहसोनवाईहै ३८६ बहैदृगनीरदे
खिहैगयोअधीरआप कृपाकरिखीरकियोदियोभक्तभाव
है । कानमेंसुनायोनामनामदैगोपालदासमालापहिराय
गरेप्रकट्योप्रभावहै ॥ दुष्टशिरमौरभपलखिवहिठौरआ
योपाइलपटाइभयोहियेअतिचावहै । निपटअधीनग्रामके
तिकनवीनदियेलियेकरजोरिमेरोफलयोभागदावहै ३८७

आज्ञा पाइ अचयो लै गुरु में भाव भक्ति की नीम है जैसे
हवेली को नीम होइ तौ सतखण्डौ उठाइ लई नहीं तौ गिरि
परै ऐसेही गुरुमें भक्ति होइ तौ दशधा भक्ति दशखण्डी सिद्धहोइ
उनमान देखे हकीम प्रबल रोग सुनतही न भाजै रोग को उन

मान देखिये बोले हरे कृष्ण ॥ भागवते ॥ प्रविष्टः कर्णरन्ध्रेण
स्वानाभावसरोरुहे । धुनोतिसमलंकृष्णः सलिलस्ययथासरित् ॥
प्रभावहै ॥ शृण्वतां स्वकथां कृष्णः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥ हृद्यंत
स्थो ह्यभद्राणि विधुनोति सुहृत्सताम् ३ ॥

भयोगजराजभक्तराजसाधुसेवासाजसंतनसमाजदे
खकरतप्रणामहै । आनिडारैगौनबनिजारिनिकीवारिनि
सोंआयेईपुकारनवेजहांगुरुधामहै ॥ आवतमहोछौमध्य
पावतप्रसादसीतबोलेआपहाथीसोंयोनिन्दबहुकामहै ।
छोड़िदईरीतितबभक्तनिसोंप्रीतिबढी संगहीसमूहफिरै
फैलिगयोनामहै ३८८ संतसातपांचसातसंगजितजात
तितलोगउठिधावैलावैसीधैबहुभीरहै । चहुंओरपरीहई
सुवासुनिचाहतभईहाथपै न आवतसोआनैकोऊधीरहै ॥
साधुएकगयोगहिलयोभेषदासतन मनमेंप्रसादनेमप्रीवै
नहींनीरहै । बीतेदिनतीनिचारिजललैपिवावैधारिगंगा
जूनिहारिमध्यतज्योसोशरीरहै ३८९ मूल ॥ भवभयप्र
वाहनिस्तारहितअवलम्बनयेजनभये ॥ सोझासीवअधा
रधीरहरिनामत्रिलोचन । आशाधरदेवराजनरिसधनादु
खमोचन ॥ काशीश्वरअवधूतकृष्णकिंकरकटहरियो । सा
भूऊदारामनामडूगरव्रतधरियो ॥ श्रीपदमपदारथराम
दासविमलानन्दअमृतश्रये । भवभयप्रवाहनिस्तारहित
अवलम्बनयेजनभये ६६ ॥

निन्द बहुकाम है ॥ वैष्णवोबंधुसत्कृत्य २ महाराज बन्धुन के
लिये चोरी करै ठगाई करै आप बोले धन न होइ तौ करै ताते
यह काम छोड़ि दे भेट मुक्ती आइरहैगी बहुभीरहै पांचसौ सातसै
वैष्णवनकी भीरहै संग जहाँ चले गोपालदास हाथी सीधे चले

आवे और याते भीर बहुत रहै वैष्णवनकी गूदरी तो लादे लेहै
और हारौ नीरो साधुहु चढ़िलेहि ऐसे महंत कहा पाइये और
महंत तो वैष्णवनकंधे लादे यह वैष्णवनकी सब बोझलेचले २ ॥

टीका ॥ सदनाकसाईताकनीकीकसआईजैसे बारवा
नीसोनेकीकसौटीकसआईहै । जीवकोनवधकरैएषैकुला
चारढरैवैचैमांसलाइप्रीतिहरिसोलगाईहै ॥ गंडकीकोसु
तबिनजानेतासोतौल्योकरैभरैदृगसाधुआनिपुजेपैनभाई
है । कहीनिशिस्वपनमेंवाहीठौरमोकोदेवोसुनौगुणगानरी
झोहियेकीसचाईहै ३६० लैकेआयोसाधुमैतौवडोअप
राधकियोकियोअभिषेकसेवाकरौपैनभाईहै । येतौप्रभु
रीझैतौपैजोईचाहौसोईकरौ गरीभरिआयोसुनिमतिबिस
राईहै ॥ वेईहरिउरधारिडारिदियोकुलाचारि चलेजगन्ना
थदेवचाहउपजाईहै । मिल्योएकसंगसंगजातवेसुजात
सब तवआपदूरिदूरिरहेजानिपाईहै ३९१ ॥

सुनौ गुनगान ॥ पद ॥ मैतो अतिही दुखित सुरार । पांच आह
गीलत है मोको गज ज्यों करौ उधार ॥ नाम गरीबनिवाजउ-
जासो करन विषे हठतार । सदनाको प्रभु तारो ऐसे बहतहै
कारीधार १ ॥ कवित्त ॥ वह पद आषा के है एक करि गावतहै
हम तुम्हें गावतहै सदा वेद बानीसों । मांस भरे हाथनिसों आइ
तुम्हें छूवतहै हमें कैऊ मास बीते तुम्हरी कहानी सों ॥ लक्ष्मी-
नारायण जू बड़े रिक्कार तुम रीझनिकसतहै तुम्हारी रजधानी
सों । हम निरमल गंगाजलसों न्दवावै नित तुम रीझे सदना
के बधना के पानीसों २ डारिदियो ॥ पद ॥ तजौ मन हरिबिसु-
खनको संग । जिनके संग कुमति उपजतहै परत भजनमें भग ॥
कोगे कहा करपूर चुनावै मरकट भूषण अंग । खरको कहा अरग-
जालिपै श्वान अन्ह्राये गंग ॥ काह भयो पयपान कराये विषनाहि

तजतभुवंग। सुरदास कारी कामरि पर चढत न हूंजोरंग३। १५॥
 आयोमगग्रामभिक्षालेनइकठामगयो नयोरूपदेख
 कौऊतियारीझपरीहै । बैठोयाहीठौरकरीभोजननिहोरक
 ह्यो रह्योनिशिसोइआईमेरीमतिहरीहै ॥ लेबोमोकोसंग
 गरोकाटोतोनहोइरंग वभीऔरकाटीपतिप्रीवपैनडरीहै ।
 कहीअवपागोमोसोनातेकौनतोसोमोसो शोरकरिउठीइ
 नमारोभीरकरीहै ३९२ हाकिमपकरिपूलेकहैहंसिमाराह
 म डाखोशोचभारीकहीहाथकाटिडारिये । कट्योकरचले
 हरिरंगमाझभिलेमानी जानीकछूचूकमेरीपहैउरधारिये॥
 जगन्नाथदेवआगेपालकीपठाईलेन सदानासुभक्तकहांच
 हैनविचारिये । चढेआयेप्रभुपाससुपनोसोमित्योत्रास
 बोलेदेकसौटीहूपैभक्तिविसतारिये ३९३ ॥ काशीश्वरजी
 कीटीका ॥ गुसाई श्रीकाशीश्वरआगेअवभूतवर करप्री
 तिनीलाचलरहेलागेनीकोहै । महाप्रभुश्रीकृष्णचैतन्यज
 कीआज्ञापाइ आयेतुन्दावनदेखिभयोभायोहीकोहै ॥ स
 वाअधिकारपायोरसिकगोविन्दचन्द चाहतमुखारविन्द
 जीवनजोजीकोहै । नितहीलडवैभवसागरछुड़ावै कौन
 पारावारप्रावैसुनैलागैजगफीकोहै ३९४ ॥

चूक मेरी ॥ कुण्डलिया ॥ अगर कहे अपराध यह प्रभु है
 सदा अदोष । डाक चढत वारी गिरै करे रावसों रोष ॥ करे
 रावसों रोष दोष हरिको कहैं दीजे । आपुन कुमति कमाय
 परेखो काको कीजे ॥ तृषावतं है जीव सरोवर पै बलि आवै ।
 यह नहि देखी सुनी आइ सर तृषा बुझावै ४ पालकी पठाई ॥
 श्रीजगन्नाथ देव जी करई औषध है पिछले जन्मको अपराध
 खोयो चाहैं तत्र हुलावा ॥ दोहा ॥ दुर्जनको है तन भलो सजजन

को भला ब्राह्मण ॥ जो सूरज अधिकी तपे तो बरसनकी आस २
न्याय के कर्ता न्याय करतही है ॥

मूल ॥ करिकरुणाछायाभक्तिफलयेकलियुगपादपर
चे ॥ जतीरामरावल्यश्यामखोजीसतसीहा । दुलहापद्म
मनोधरकद्योगजपजीहा ॥ जाडाचाचागुरुसवाईचांदन
पापा । पुरुषोत्तमसोसांचचतुरमनमेठ्योआपा ॥ मति
सुंदरधीधोगैश्रमसंसारचालनाहिननचे । करिकरुणा
छायाभक्तिफलयेकलियुगपादपरचे १७ टीका ॥ खोजी
जूकेगुरुहरिभावनाप्रवीणमहा देहअन्तसमैबाधिघंटासो
प्रमानिये । पावैप्रभुजवतववाजिउठेजानोयहै पायेनहि
बाज्योवडीचिन्तामनआनिये ॥ तनत्यागबेरनहिहुतेफे
रिपाछेआये वाहीठौरपौढिदेख्योआँबपक्योमानिये । तो
रताकेटूकफियेओटोएकजन्तुमध्य गयोसोबिलाइबाजउ
ठेजगजानिये ३९५ शिष्यकीतौयोगताईनीकेमनआई
आजु गुरुकीप्रबलएपैनेकुघटिक्योभई । सुनोयहीबातम
नबातवतकहीकहीसही लैदिखाईऔरकथाअतिरसमई ॥
वेतोप्रभुपाइचुकेप्रथमप्रसिद्धपाछे आछेफलदेखिहरियो
गउपजीनई । इच्छासोसफलश्यामभक्तवशकरीवही रही
पूरपक्षसंबव्यथाउरकीगई ३९६ ॥

मति सुन्दर धीधोगै ॥ मृदंग कैसी मतिहीसों सुन्दर ठहराई
है पैहै झूठी ताकी चाल में सब संसार नचै है १ ॥ कवित्त ॥
आँवो सदा काल पै न पायो कहूँ सांचो सुख रूप सों विमुख
दुख कूप घास बसाहै । धर्म को संघाती है न महाही अफाती
पुनि ऐपै यह सन्निपात कैसी युत दशाहै ॥ माया कोऊ पटि गहै

काया लों लपटि रहै भूल्यो भ्रम भीर में वहीर को सों अशाहै ।
 ऐसो मन चंचल पताका कोसों अंचल सुज्ञानके जगत निरवाण
 पद धसाहै २ ऐसे श्रम करि के नहीं नचै संसार की चाल में
 रम्यो है ३ । ४ । ५ । ६ ॥

टीका राकावांकाकी ॥ राकाप्रतिवांकातियावसैपुरपं
 डुरमें उरमेंनचाहनेकुरीतिकुलुन्यारिये । लकरीनवीनिक
 रिजीविकानबीनैकरै धरैहरिरूपहियेतासोंयोजियारिये ॥
 विनतीकरतनामदेवकृष्णदेवजूसों कीजैदुखदूरिकहीमे
 रीमतिहारिये । चलोलेदिखाऊतबतेरेमनभाऊरहेवनत्रि
 पदोऊथैलीमगमांझडारिये ३६७ आयेदोऊतियापति
 पाछेबधआगेस्वामी श्रीचकहीमगमांभूसपतिनिहारियो
 जानीयौयुवतिजातकभसनचलिजात यातेवेगिसंभ्रमसों
 धूरिवापैडारिये ॥ पूछीअजूकहाकियोभूमिमेंनिहुरितुम
 कहीवहीबातबोलीधनहूविचारिये । कहैमोकोरोंकाएपै
 बांकाआजुदेखी तुही सुनिप्रभुबोले बात सांचीहै हमा
 रिये ३६८ ॥

जीविका नवीन करै ॥ उतनी ही लावै उतनी ही नृत्य
 करै अथवा साधुन को दैके बचै सो आप पात्रे यह नवीनता तो
 काहूपै न बने विनती करता नामदेव ॥ दोहा ॥ कहूं कहूं गोपाल
 की गई सिटह्यौ नाहिं ॥ काबुलमें मेवा करी ब्रजमें टटी खाहिं १-
 कहूं कहूं गोपालकी गई सिटह्यौ नाहिं ॥ विमुख लोग घोड़ा
 चढ़े काठबेंच जन खाहिं २ कहा भयो जल में जल वर्षत वर्षत
 नाहिं खेत जहं सूखा ॥ अघाये आगे बहुत परोसत परसत नाहिं
 मरत जहं भूखा ३ ॥ सवैया ॥ श्रीहरिदासके गर्भ भरे कमनेत
 अनन्य निहारिनि के । महामधुरे रस पान करै अवसान खता-
 सिल हारिनि के ॥ दियो तहिं लहन मांगत काहू पै जोरत नेह

तिहारिनिके । क्रिये रहे अंड विहारिय सों हम बेपरवाह विहा-
रिनिके ४ । ५ ॥

नामदेवहारेहरिदेवकही औरैबात जोपैदाहगातचलो
लकरीसकेलिये । आयेदोऊबीनिबेकोदेखीइकठौरीढेरी द्वै
हूमिलीपावेतेउहाथनहींछेरिये ॥ तबतौप्रकटश्यामलायो
यालेवाइघर देखिमूढफोरकह्योऐसेप्रभूफेरिये । बिनती
करतकरजोरिअंगपटधारो भारोबोझपरोलियोचीरमात्र
हेरिये ३६६ मूल ॥ परअर्थपरायणभक्तयेकामधेनुकलि
युगसजे ॥ लक्ष्मिनलफरालडूहिसतजोधैपुरत्यागी । सूर
जकुंभनदासबिमानीखेमबैरागी ॥ भावनविरहीभरतनफर
हरिकेशलटेरा ॥ हरीअयोध्याचक्रपाणिसरयूतटटेरा ॥ तिर
लोकपुषरदीबीजुरीउद्वबनचरवंशजे । परअर्थपराय
णभक्तयेकामधेनुकलियुगसजे ९८ टीका ॥ लडूनाम
भक्तजाइतिकसेबिमुखदेश लेशहूनसंतभावजानेपापपा
गेहैं । देवीकोप्रसन्नकरैमानुषकोमारिधरै । लैगयेपकरिज
हांमारिबेकोलागेहैं ॥ प्रतिमाकोफारिबिकरलिरूपधरिआ
ई लेकतरवारमूढकाटेभीजेवागेहैं । आगेनृत्यकरैदृगमरै
साधपांवरधरै ऐसरखवारेजानिजनअनुरागेहैं ४०० ॥

नहीं छेरिये ॥ कही कोऊ कंगला धरिगयो आगे ले लेहिगे
लकरी क्यों न मिले प्रातहि धनको मुहडो देख्यो हो ले जेतो न
जानिये कहाहै तौ ॥ अचाह सों कंगाल कह्यो ॥ दोहा ॥ घर घर
डोलत दीनहै जन जन घाचत जाइ ॥ दिये लोभ त्वशमा चखन
लघु पुनि बड़ो लखाइ १ जैसे लोभीको लघुबड़ो दीखे तैसे त्यागा
को बड़ है ते लघु दीखेहै । प्रयत धन मुक्ति स्वर्ग तुच्छ दीखे
अत्यन्त ॥ दोहा ॥ रामअमलतेतरहै पीवै प्रेमनिशंक ॥ आठ गांठ

कोपीतमें कहे इंद्र सो रक २ वी परवाही वैष्णव ऐसे ३ ॥

टीकासंतकी ॥ सदासाधुसेवाअनुरागरंगपागिरह्यो
गह्योनेमभिक्षात्रतगांवगांवजाइके । आयेघरसंतपछेति
यासोयोसंतकहा संतचलहेमाझकहीऐसेअलसाइके ॥ बा
नीसुनिजानीचलेमगसुखदानीभिलेकहोकिंतहुतसोवखा
नीउरआइके । बोलीवहसांचवोहीआंचहीकोध्यानमेरेआ
निगृहफिरिकियेमगनजिवाइके ४०१ टीका तिलोककी ॥
पूर्वमेंओकिसोतिलोकहोसुनारजाति पायोभक्तसारसाधु
सेवाउरधारिये । भूपकेबिवाहसुता जोराएकजहरिको ग
दिवेकोदियोकहयोनीकेकेसवारिये ॥ आवतअनंतसंतऔ
सरनपावैकिहूं रहेदिनदोयभूपसोपयोसंभारिये । लावैरे
पकरलाये छाडियेमकरकही नेकुरह्यो कामआवै नातैमा
रिडारिये ४०२ आयोवहीदिनकरछुयोहूनइननृपकरैप्रा
णविनबनसांझछिप्योजाइके । आयेनहींचारिपांचजानी
प्रभुआंचगदिलियोसोदिखायो सांचचलेभक्तभाइके ॥
भूपकोसलामकियो जहरिकोजोरादियो लियोकरदेख
नैनबोडैनअघाइके । भईरीभभारीसबचकमेटिडारीधन
पायोलैमुरारीऐसबैठेघरआइके ४०३ ॥

बोनी सुनिजानी चले ॥ सवैया ॥ होतही प्राण जो घात करे
नित पार परसोसित सो कलगाही । हाथ नचावति मंड खुजाव
ति पौरि खड़ी अति कोटिन बांड़ी ॥ ऐसी वनी नखते शिखलो
मनों क्रोधके कुंडमें चोरिके कांड़ी । ईट लिये पियको मुख जीवत
भूतसी भामिनि भौनमें ठाड़ी १ ऐसी कलहा को वचन सुनिके
साधु उठिचले क्रयोंकि जिनके वचनसुनिके भूतहू भाजिजाहि २
राजोके पुरोहित कुरला डारा अपनी स्त्री पतोह संपत्ति और

शरीर सुख विद्या श्रु चरनारि मांगे मिले न चारि विना पूरबके
पुण्य विन अनंत संत ॥ प्रथमे ॥ तुलयाम लवेनापि न स्वर्गनीपुन
भवम् ॥ भगवत्सङ्घिसङ्घस्य मर्यानां किमुताशिषः ३ संतसंग को
मार्ग आछो है ४ ॥

भोरहीमहोत्सौ कियो जोई मांगै सोई दियो नानापकवा
नरसखानस्वादलागे हैं । संतको स्वरूप धरिलै प्रसादगोद
भरिगये जहां पावौ जो तिलोक गृह प्रागे हैं ॥ कौनसो त्रिलो
क अजुदूसरो त्रिलोकीमें न वै न सुनिचैन भयो आयो निशि
रागे हैं । चहल प्रहल धन भयो घर देखि ठस्यो प्रभुपद कज
जानी मेरे भाग जागे हैं ४०४ ॥ मूल ॥ अभिलाष अधिक
पूरण करन ये चिंतामणि चतुरदास ॥ सो भुभीम सोमंताथ
विको विशखाल मध्याना ॥ महदा मुकुंद गये सत्रिविक्रम
रघुजगजाता ॥ बालमी किये धव्यास जगन भा भिठिल
अचारज । हरभुलाल हरिदास बाहुबल राघव आरज ॥
लाखा छीतर उद्वक परघाट मधुरा किये प्रकास । अभिला
ष अधिक पूरण करन ये चिंतामणि चतुरदास ६६ ॥ भुविभ
क्तपाल दिग्गज भगत येथाना पतिशूरधीर ॥ देव नृहरियानं
द मुकुंद संतराम तमोरी । खेमश्रीरंग नंद विष्णु वीदेवाज सु
तनोरी ॥ छितमद्वारका दास माधोमांडन दामोदर ॥ बाल
नरहरि भगवान कनहर केशव सोहे घर ॥ दास प्रयाग लोहंग
गुपाल नागु सुत गृह मङ्गभीर ॥ भुविभक्तपाल दिग्गज भग
त येथाना पतिशूरधीर १०० ॥

चहल प्रहल ॥ दोहा ॥ परमारथ अनुसरत ही बीचहि स्वारथ
होय । खेती कीजै नाजकी सहज घास तह होय १ ॥ घाटम पद ॥

जो नर रसना नाम उचारे । केतिक बात आप तरिबेकी कोटि
पतित निस्तारे ॥ काम क्रोध मद लोभ तजे जो जीवदशा प्रति-
पालै । तीरथ जेतिक ते वसुधापर तिनहूँ के अघटारे ॥ मेनाजाति
यद्यपि कुलनीचो सतगुरु शब्दविचारे । घाटमदास रामजो परचै
तीनलोक उद्धारे ॥ थानापति क्यों न भये ॥ क्षुधारूपिणी कूकरी
हरिने दईलगाई । परसा टूकाडारिके गोविंदके गुणगाई ३।४।५ ॥

मूल ॥ बद्रीनाथ उड़ीसाद्वारकासेवकयेहरिभजनपर ॥
केशोभीमहरिनाथखेतगोविंदब्रह्मचारी । बालकृष्णभल
भरतअच्युतआपाव्रतधारी ॥ पंडागोपीनाथसुकुन्दागजप
तिमहयसु । गुणनिधियशगोपालदेइभक्तनकोसर्वसु ॥
श्रीश्रंगसदासानिधिरहैपुण्यपुंजभलभागभर । बद्रीनाथ
उड़ीसाद्वारकासेवकयेहरिभजनपर ३०१ टीकाप्रतापरु
द्रराजाकी ॥ श्रीप्रतापरुद्रगजपतिकोवखानकियोलियो
भक्तिभावमहाप्रभुपैनदेखहीं । कियेहूउपायकोटिओटिलै
संन्यासलियो हियोअकुलायअहोकहूंमोकोपेखहीं ॥ ज
गन्नाथरथआगेनृत्यकरैमत्तभये नीलाचलनृपपाइपख्यो
भागलेखहीं । छातीसौलगायोप्रेमसागरबुड़ायोभयो अ
तिमनभायोदुखदेतयेनिमेखहीं ४०५ ॥ मूल ॥ हरिसुय
शप्रचुरकरिजगतमेंयेकविजनअतिशयउदार ॥ विद्याप
तिब्रह्मदासवहोरणचतुरबिहारी । गोविंदगंगारामलाल
बरसानियाभारी ॥ पियदयालप्रशुरामभक्तिभाईखाटीको ।
नंदसुवनकीछापकवितकेशवकोनीको ॥ असआशकरण
पूरणभिषमजनदयालमुणनाहिपार ॥ हरिसुयशप्रचुरक
रिजगतमेंयेकविजनअतिशयउदार ३०२ ॥

प्रेमसागर ॥ महाप्रभु जू प्रेम भक्ति देत भये ॥ इलोक ॥

ज्ञानतेःसुलभामुक्तिर्भुक्तिर्यज्ञादिपुण्यतः ॥ ज्ञानयज्ञसहस्रैस्तु
हरिभक्तिःसुदुर्लभा २ अर्जुनके रथकी रक्षाके निमित्त अनेक भूठ
सांच बोले एते भक्तन सौ बंधेहैं पै हरिके बंधेही से शोभा हे ॥
श्लोक ॥ तत्रकथामृततत्तज्जीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम् ॥ श्रव
णमङ्गलं श्रीमदातंतं भुवि गृणन्ति ये भूरिदाजनाः २ भूरिदा कहिये
बड़े दाता जन्म कर्म के दूरि करनेहारे सो इन कविन हरिके
गुण रूपही वर्णन करे हैं तिन गुणानुवादन को वाचिके जगत्
तरिजायगो विश्वास मानि ३ ॥

टीकागोविंदस्वामीकी ॥ गोबद्धननाथसाथखेलेसदा
झेलेरंग अंगसख्यभावहियेगोविंदसुनामहै । स्वामीकारि
रूयालताकीवातसुनिलीजेनीके सुनेसरसातनैनरीतिअ
भिरामहै ॥ खेलतहौलालसंगगयोउठिदांवलैकैमारीखेंच
गिलीदेखिमंदिरमेंश्यामहै । मानिअपराधसाधुधकादैन
कारिदियो मतिसोअगाधकैसेजानेवह्वामहै ४०६ बैठे
कुंडतीरजाइनिकसैगोआइवन दियोहैलगाइताकोफल
भुगताइये । लालहियेशोचपख्योकैसेजातभख्योवहअख्यो
मगमांभभोगधख्योपैनखाइये ॥ कहीश्रीगुसाईजीसोमो
पैकोनभायोकछुचाहौजोखवायोतौपैवाकोजामनाइये । वा
कोहुतोदांवमोपैसोतौभावजानौनाहिं कहैमोसोवातेशोक
मारैवेगिलाइये ४०७ बनबनखेलेबिनबनतनमोकोनेकु
भनतजगारीअनगनतलगाधैगो । सुधिबुधिमेरीगईभई
बड़ीचिंतामोहिलाइयेजूढंढिजबचैनढिगआधैगो ॥ भोग
जेलगायेमैतौ तनकनपायेरिसवाकीजबजाइ तबमोहिं
कछुभावैगो । चलेउठिधाइनीठिनीठिकेमनाइलायेमंदिर
मेंखाइमिलिकहीगरेलावैगो ४०८ ॥

सख्यभाव ॥ नवप्रकारकी भक्तिहै तामें सख्य बड़ीकठिन है
तामें ईद्वरताकी गंय न रहै दृष्टांत बादशाह के खिलवत बखाने
अरु दो मित्रनको २ ॥ विश्वासःसमतानित्यं सख्यत्वंभावउ
च्यते २ पन्हैयां एहराई नाथजी को खेलत पाषाण की मूरति
चैतन्य है कैसे खेलन लगी ३ यादशीभावना यस्य ४ गोविन्द
स्वामी के अचलों मनभावना रहै याते संगखेले एकगोपहों सो
गंदजीके मंदिर भें जाइकै पगड़ी उतारि लायो लालकी सगाई
मारि जाइ है ५ ॥

गयेहैबहरभूमितहांकृष्णभूमिआये करीबड़ीधूमआ
कवौडनिसौमारिकै । इनहूनिहारिउठिमारिदईवाहीसोजू
कौतुकअपारसख्यभावरससारिके ॥ मातामगचाहैबड़ीबि
रभईआईतहां कहीवारवारओटपाईउरधारिकै । आयो
योत्रिचारअनुसारसदाचारकियो लियोप्रेमढिगकभंकर
तसंभारिकै ४०९ आवतहौभोगमहासुंदरसोमंदिरको २
ह्योमगवैठिकह्योआगेमोहिंदीजिये । भयोकोपभारीथार
डारिकैपुकारकरी भरीनअनीतिजासिसेवायहलीजिये ॥
बोलिकैसुनाईअहोकहामनआईतब खोलिकैबताईअजु
बातकानकीजिये । पहिलेजुखाइवनमांझउठिजाइपाछे
पाऊंकहांधाइसुनिमतिरसभीजिये ४१० मूल ॥ जेवसेब
सतमथुरामंडलदयादृष्टिमोपरकरौ ॥ रघुनाथगोपीनाथरा
सभद्रदासस्वामी । गुंजमालिचितउतमविठलमरहटनि
ष्कामी ॥ यदुनंदुनगोविंदरामनंदमुरलीसोती । हरिदास
मिश्रभगवानमुकुंदकेशबडंडोती ॥ चतुरभुजचरित्रविष्णु
दासब्रैनीपदमोशिरधरौ । जेवसेवसतमथुरामंडलदयादृ
ष्टिमोपरकरौ १०३ ॥

आइतहां देखे तो धूममचाइ रह्योहै माताकहै ओटपाई धूम
हौन सों मचाइ रह्योहै इहां तौ कोई है नहीं माताको कृष्ण क्यों
न देखे गोविंदस्वामी को कैसेदीखे गोविंदस्वामी श्रीकृष्ण के
संगते अप्राकृतभयो यातेदीखे जैसे कच्चोआंब पालसों प्रकै खटाई
जातिरहै मिठाई हैजाइ जैसे ध्रुव भगवान्के संगते अप्राकृतभये
ऐसेही गोविंदस्वामी अप्राकृतभये सतिरसभीजिये चिद्वलनाथ
जी की सति रसमें भीजिगई सो सख्यभाव में भीजिगये हैं २॥

टीकागुंजामालीकी ॥ कहीनाभास्वामी आपगायोमें
प्रतापसंत वसेब्रजबसेसोतौमहिमात्रपारहै । भयेगुंजा
मालीगुंजहारधारुनामपख्यो कख्योबासलाहौरमेंआगेसु
नौसारहै ॥ सुतबधुविधवातोंबोलिकैसुनायोलेहु धनप
तिगेहुश्रीगुपालभरतारहै । देवोप्रभुमेवामांगेनारिवारि
वारयहै डारैसधवारियापैगनैजगन्नारहै ४११ दईसेवा
वाहिऔरघरधनतियादियो लियोब्रजवासवाकीप्रीतिसु
निलीजिये । ठाकुरविराजेंजहांखेलेंसुतऔरनके डारेईट
खोवारयोप्रभुपरखीजिये ॥ दियेवेविडारिधख्योभोगपैन
खातहरि पूछीकहीवेईआवैतवहींतौजीजिये । कख्योरिस
भरिधूरिनीकेभोरडारौभरि खावोहमहाहाकरीपायोलाइ
रीभिये ४१२ मूल ॥ कलियुगयुवतीजनभगततराज्म
हिमासवजानेजगत ॥ सीताभालीसुमतिशोभऊंभाम
टियानी । गंगागौरिउंबीठगुंपालिगणेशदेरानी ॥ कला
लखाकृतगदौमानमतिशुचिसतभामा । यमुनाकोलीर
मामृगाभक्तनविश्रामा ॥ युगजीवाकमलादेवकीहीराह

रिचेरीभगत । कलियुगयुवतीजनभक्तराजमहिमासत्रजा
नेजगत १०४ ॥

भक्तराज ॥ स्कान्दे ॥ स्त्रियोवायदिवा शत्रो ब्राह्मणःक्षत्रियोपि
वा ॥ पूजयित्वाशिलाचक्रं लभतेशाश्वतपदम् १ दोहा ॥ रामरंग
लाग्यो नहीं बिप्र जनेऊ ब्राह्म ॥ रज्जव लोना तागलागि चक्र
चूनरी चाह २ महिमा यह सब भक्त राज है जाति पांति की
गनती नहीं एक पंगति में राखी रानी ब्राह्मणी कोली भटियानी
रेदासिनी भक्तिही श्रेष्ठहै जहां भक्ति तहां भगवान् शवरीके गये
अभिमानी ऋषिनके न गये प्रीति की रीति सांची जानी ॥

टीकागणेशदेरानीकी ॥ मधुकरशाहभूपभयोदेशओ
डछेकौरानीसोगणेशदेसुकामवाकोकियोहै । आर्वैबहुसं
तसेवाकरतअनंतभांति रह्योएकसाधुखानपानसुखलियो
है ॥ निपटअकेलीदेखिबोल्योधनथैलीकहांहोइतौबताऊं
सबतुमजानौहियोहै । मारीजांघछूरीलखिलोदूव्रेगिभागि
गयो भयोशोचजनैजिनिराजाबंददियोहै ४१३ वांधि
नीकीभांतिपौढिरहीकहीकाहूसौन आयोढिगराजामति
आवोतियाधर्महै । बीतेदिनतीनजानीबेदननवीनकलू
कहियेप्रवीणभोसोखोलिसबमर्महै ॥ टारीबारदोइचारि
नृपकेबिचारपह्यो कह्योसावधानजिनिआनौजियभर्महै ।
फित्योआसप्रासभूमिपरितनरासकरी भक्तिकोप्रभाव छां
ड़ितियापतिशर्म है ४१४ ॥

आर्वै बहुसंत वह तरंगके पै सबही को सेवै कह्यो सावधान ॥
कवित्त ॥ संतहैं अनंत गुण अतको न पावै याको जाने रसवंत
कोई रीझे पहिचानि कै । औगुण न दीठिपरै देखतही नैन भरै
ढेर पर्यओर डर प्रेम भरि आनि कै ॥ जोपै कलू घाटि क्रिया देखि

पति इनमांझ करिलै विचार हरिहीकी इच्छा मानिकै । बालक
शृंगारके निहारि नेहवती माता देतिहै दिठौनाकारो दीठि दुर
जानिकै ॥ दोहा ॥ कामी साधु कृष्ण कहि लोभी बावन जानि ॥
क्रोधीको नरसिंहही नहीं भक्ति की हानि २ जाको जैसे सुभाव
जाय नहि जीवसों ॥ नीव न मीठी होइ सींचि गुड़ घीव सों ३
कोइला होइ न ऊजला नौमन साबुन लाइ ॥ मूरख को समझा-
वनो ज्ञान गांठिको जाइ ॥ काहू ने कही सुन्दर द्यो न भये तापै
दृष्टांत राजा आशकरनको और साहबजाद फकीरको प्रसंग १ ॥

मूल ॥ श्रीहरिकेसम्मतजेजगततेदासनकेदासजू ॥
नरबाहनवनवारिपूर्णमलराजविदावत । धाराजंगिजयंत
रुपाअनभइउदरावत ॥ गंभीरेअर्जुन्नजनार्दनगोविंदजी-
ता । दामोदरसांपिलेगदेश्वरहेमविदीता ॥ मयानंदम
हिमाअनंतगुडिलेतुलसीदासजू । श्रीहरिकेसम्मतजेम
गततेदासनकेदासजू १०५ टीकानरबाहनजीकी ॥ हैभै
गांवनांवनरबाहनसासाधुसेवी लटिलईनावजाकीवंदीखा
नेदियोहै । लौंडीआवैदेनकलुखाइवेकोआईदया अतिअ
कुलाइलेउपाइयहकियोहै ॥ वौलीराधावल्लभआलेबोह
रिवंशनामपूत्रेशिष्यनामकहौपूछीनामलियोहै । दईमै
गवायवस्तुराखियोदुराइवात आपुदासभयोकहीरीभिप
ददियोहै ४१५ मूल ॥ प्रभुश्रीमुखपूजासंतकीआपुनते
अधिकीकही ॥ यहैवचनपरिमानदास जढियानेभाऊ ।
वंदीबनियाराममडौतैमोहनदाऊ ॥ मांडौढीजगदीशल
षनचटथावरभारी । सुनपथमेभगवानसबैसलखानउ
धारी ॥ जगजोवनेरगोपालकेभक्तइष्टतानिर्मही । प्रभु
श्रीमुखपूजासंतकीआपुनतेअधिकीकही १०६ टी

वनेरगोपालकी ॥ जोवनेरवाससोंगुपालभक्तइष्टताको
 कियोनिरवाहवातमोकोलागीप्यारिये । भयोहौविरक्त
 कोऊकुलमेंप्रसंगसुनौ आयोयोंपरीक्षालेनद्वारपैविचारि
 ये ॥ आइपरयोपाइँपाइँधारोनिजमंदिरमेंसुंदरीनदेखौमु
 खपनकैसेटारिये । चलौजिनितारौतियारहैगीकिनारो
 करिचलेसबछिपीनेकुदेखियाकेमारिये ४३६ ॥

लूटिके सेवै तौ पापलगेगो जगतके पाप पुण्य मिथ्या जाने
 स्वप्नवत् ताकोफल दुःखःसुख कहा जैसे व्यभिचारिणी स्त्रीके स्वप्न
 को फलभूठो सेवामें सांचो॥यादृशीभावना यस्य १ दईऊंचे को
 देखि यामें मारिये ४१५ मँगवाई १ कामदार बोले तीन लाख
 तीस हजार को माल क्यों फेरि दियो नरवाहन बोले ॥ जो
 हरिवंशको नाम सुनावै तनमन धन तापै बलिहारी । जो हरि-
 वंश उपासक सेवै सदा सेऊँ तेहि चरण विचारी ॥ श्री हरिवंश
 गिरा यज्ञ गावै सर्वस देहौ तेहिपर वारी । जो हरिवंश को धर्म
 सिखावै सो मेरे प्रभुते प्रभु भारी ॥ पददियो ॥ पद ॥ मंजुल
 कल कुंज देश राधा हरि विशद वेश राका नभ कुमुद चंद शरद
 यामिनी । श्यामल द्युति कनक अंग विहरत मिलि एक संग
 नीरद मनो नीलमधि लसत दामिनी ॥ अरुण प्रीति नवदुकूल
 अनुपम अनुरागमूल सौरभयुत शीत अनिल मंदगामिनी । कि-
 सलय दल रचत सेन बोलत पिय चारुबैन मानस हित प्रति
 पद प्रतिकूल कामिनी ॥ मोहन मन मथत मार परसत क्लृवनी
 बिहार नेपथयुत नेति नेति बदाति भामिनी । नरवाहन प्रभु
 सकैलि बहु विधि भर भरति झेलि सो रति रस रूप नदी ज-
 गत पावनी २ चलि हे राधिके सुजान तेरे हित सुख निधान
 रास रच्यो श्याम तट कलिंदनंदनी । निरत युवतीसमूह राग
 रंग अति कुतूह वाजत तमूख मुरलिका अनंदनी ॥ वशीवट
 निकट जहां परम रवनि भूमि तहां सकलसुखद मलय बहै वायु

मंदनी । जाती ईषत् विकास कानन अतिशय सुवास राकानिशि
शरद मास विमल चंदनी ॥ नरवाहनप्रभु निहारि लोचनभरि
घोषनारि नख शिख सौंदर्य कामदुखनिकंदनी । बिलसौ भुज
प्रीवमेलि भामिनि सुखसिंधु भेलि नवनिकुंज इयामकेलि
जगत चंदनी ३ आपन ते अधिक पूजा अष्टप्रकार की ब्राह्मण
भोजन अग्नि होम जल मंत्र गोत्रन वैष्णव उदर और इत्यादि
४ आदिस्तुपरिचर्यायां सर्वाङ्गैरपिचन्दनम् ॥ मद्भक्तपूजाभ्यधिकस
र्वभूतेषुमन्मतिः ५ ॥

एकपैतमाचोदियोदूसरेनेरोषकियो देवोयाकपोलपै
योबाणीकहीप्यारिये । सुनिआंसभरिआये जाइलपटाये
पांयकैसेकहीजाइयहरीतिकळुन्यारिये ॥ भक्तइष्टसुनोमे
रेबडोअचरजभयोलाईमेंपरीक्षामोकोभईशिक्षाभारिये ।
बोलेअकुलाइअजुएपैकहांभायएपै साधुसुखपायकहेंय
हीमेरोज्यारिये ४१७ मूल ॥ वरपरमहंसवंशानमेंभयो
विभागीवानरो ॥ सुरधरिखंडनिवासभूपसबआज्ञाकारी ।
रामनामविश्वासभक्तपदरजत्रतधारी ॥ जगन्नाथकेद्वार
दंडवतप्रभुपरधायो । दईदासकोदौदिहुंडीकरिफेरिपठा
यो ॥ सुरधुनीओघसंसर्गतेनामबदलिकुत्सितनरो । वर
परमहंसवंशानमेंभयोविभागीवानरो १०७ टीकाला
खाभक्ती ॥ लाखानामभक्तताकोवानरोबखानकियो
कहेंजगडोमजासोमेरोशिरमौरहै । करैसाधुसेवाबहुपाक
डारिमेवासंतजेंवतअनंतसुखपावैकौरकौरहै ॥ ऐसेमेंअ
कालपख्योआमंघरमालजालकैसेप्रतिपालकरैं ताकीऔर
ठौरहै । प्रभुजीस्वपनदियोकियोमेंयतनएकगाड़ीभरिगे
हूँमेंसआवैकौरौगौरहै ४१८ ॥

विभागी वानरो ॥ भगवान्की भक्तिरूपी संपत्ति चारों वांटी
 पावें ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र काहूसों घटती नहीं जैसे काहू के
 चारि पुत्र पंडित मूर्ख निर्धन पंगुला सबही वांटी पावें कुरितत ॥
 नारदपञ्चरात्रे ॥ यस्माद्यस्मादपिस्थानाद्गङ्गायामम्भआपतत् ॥
 सर्वभवतिगाङ्गेयंकोनसेवेतवृद्धिमान् १ दोहा ॥ तुलसी नारो ज-
 गत को मिलै संग में गंग ॥ महानीचपन आदिको शुद्ध करै सत-
 संग २ नीर नगर को परशुराम ता समरत अज्ञान ॥ साधु समा-
 गम सुरसरी मिल इक होत समान ३ ॥

गेहूंकोठीडारिसुहुंमूदिनीचेदेखौखोलि निकसेअतो
 लिपीसिरोटीलैबनाइये । दूधजितोहोइसोजमाइकैबिलो
 ईलीजेदीजेयांचुपरिसंगछाछदैजिमाइये ॥ खुलिगईआखें
 भाखेंतियासोंजुआज्ञादई भईमनभाईआजुहरिगुणगाइ
 ये । भोरभयेगाड़ीभैसिआईबहीरीतिकरीकरीसाधुसेवाकी
 प्रतीतिप्रीतिगाइये ४१६ संतसेवारीतिप्रभुप्रीतिदूबखा
 नकीजेलीजेउरधारिसारभक्तिनिरधारहै । रहैदिगगांवत
 हांसभाएकठांवभईडाटिगयेभाईसोउगाहीकोविचारहै ॥
 बोलिउख्योकोऊयोव्योहारकोतौभारचुकयो लीजियेसंभा
 रिलाखासंतभवपारहै । लाजदबितिनदियेगेहूँलैपचास
 मन दईनिजभैससंगसबसरदारहै ४२० मारवाड़देशते
 चल्योईसासटांगकियेहियेजगन्नाथदेवयाहीपनजाइयेने
 हभरिभारीदेहवारिफारिडारीकैसे करैतनधारीनेकुश्रममु
 रभाइये ॥ पहुँच्योनिकटजाइपालकीपठाइदई कहैलाखा
 भक्तकौनवेगदेवताइये । काहूकहिदियोजाइकरगाहिलि
 योअजू चलोप्रभुपासइहिक्षणहींबुलाइये ४२१ कैसेच
 लौपालकीमेंप्रणप्रतिपालकीजे दीजेमोकोदानयाहिभां

तिजानिहारिये । बोलप्रभुकीयोसुभिरनीबनाइलायेअ
बपहराइमोहिंसुनिउरधारिये ॥ चढ़ेचढ़िबढ़कियोचाह्ये
हजानीमैतौ षडिपडिपोथाप्रेममोपैबिसतारिये । जाइ
केनिहारेतनमनप्राणवारे जगन्नाथजूकेप्यारेनेकढिगतैन
टारिये ४२२ ॥

बोलीदेवता पितृ अतिथि इनको ऋणियारहै न देइ तौ ताते
लाखाको दीजै १ एकोपिकृष्णस्यकृतःप्रणामोदशाश्वमेधाप्रभृथेन
तुल्यः ॥दशाश्वमेधीपुनरेतिजन्मकृष्णप्रणामीनपुनर्भवाय २॥ षडे
गहँ कर होत बड़ ज्यो वावनकरदंड । सौजी प्रभुको संग बड़ गयो
अखिलब्रह्मंड ३ ॥

बेटीएककारीब्याहिदेतनविचारीमनधनहरिसाधुनको
कैसेकैलगाइये । कीजैवाकोकार्यकहींजगन्नाथदेवजनेली
जैमोपैद्रव्यउरनेकहूनआइये ॥ निदापैनभयेचलेदृगसन
लयेगयेआगेनृपभक्तमगचौकीअटकाइये । दियौहैस्वप
नप्रभुजनिहठकरौअजू हुंडीलिलिखिदईलईबिनेकैजताइ
ये ४२३ हुंडीसोहजारकीलैगृहद्वारआयेजब तामेनल
गायेसौकबेटीब्याहकियोहै । औरुसबसंतनबुलाइकैख
वाइदियेलियेपगदाससुखराशिप्रणालियोहै ॥ ऐसेहीबहु
तदामवाहीकेनिमित्तलैलै साधुभुगतायेअतिहरषतहियो
है । चरितअपारकछूमतिअनुसारकह्योलह्योजिनस्त्राद
सोतौप्राइनिधिजियोहै ४२४ ॥

पद ॥ हरिके जनकी अतिठकुराई । सहाराज ऋषिराज देव
मुनि सकुचि रहत शिरनाई ॥ दृढ़ विश्वास दियो सिंहासन ता
पर बैठेभूप । हरि जस छत्र विमल शिरसाजत राजत परम अ-
नूप ॥ निशिप्रहदेश राजकरताको लोकन अति उत्साह । काम

क्रोध मद मोह लोभ ये भये चोरते शाह ॥ अर्थ कामकहुँ दूरिगये
दुरि धर्म मोक्ष शिरनायो । बुधि विवेक दोउ पँरि पँरिया समय
न कबहुँ पायो ॥ अष्टसिद्धि नवनिद्धि चातुरी करजोरे आधीनी ।
छरीदार वैराग विनोदी भरक बाहिरीकीनी ॥ हरिपद पंकज
प्रीति प्रियावर ताही सौ अनुराता । मंत्री ज्ञान न अवसर पावे
बातकहत सकुचाता ॥ माया मोह न ब्यापे कबहुँ जो यह भेदाहि
जाने । सूरदास पददरत न टारे गुरुप्रसाद पहिँचाने १ ॥ धन हम
तो गुमस्ता ऐसे ॥

मूल ॥ जगतविदितनरसीभगतजिनगुज्जरधरपाव
नकरी ॥ महास्मारतकलोगभक्तिलवलेशनजाने । माला
मुद्रादेखितासुकीनिंदाठाने ॥ ऐसेकुलउतपन्नभयोभागव
तशिरोमनि । ऊसरतेसरकियोषंडदोषहिखोयोजनि ॥ ब
हुतठौरपरचेदियेरसरीतिभक्तिहिरदैधरी । जगतविदित
नरसीभगतजिनगुज्जरधरपावनकरी १०८ टीकानरसी
महिताकी ॥ जनागढ़बासपितामाततननाशभयोरहैए
कभाईऔभाँजाईरिसिभरीहै । डोलतफिरतआइबोलत
पिवाबोनीरभाभीपैनजानीपीरबोलीजरीबरीहै ॥ आवतक
मायेजलप्यायेबिनसरैकैसे पियोयोंजुवाबदियोदेहधरह
रीहै । निकसेविचारकहुँदीजेतनडारमानों शिवपैपुकार
करीरहेचितवरीहै ४२५ बीतेदिनसातशिवधामतेनजा
तचारपरैकाहुतुच्छाद्वारसोऊसुधिलेतहै । इतनीविचारि
भखप्यासदईढारि लियोप्रकटस्वरूपधारिभयोहितहेत
है ॥ बोलेवरमांगिअजुमांगिभैनजानतुहौं तुम्हेंजोइप्या
रोसोइदेवोचितचेतहै । पख्योशोचभारीमेरीप्राणप्यारी
न्यारीतासोकहतडरतवेदकहैनेतिनेतहै ४२६

पावनकरी पहले अपावनता कैसी है जाहि पावनकियो जैसे
खाई गढ़ अरावो बड़ो होइ तो ताको सरकरे सो शूरमा कहावै अरु
शोभापावै ऐसे अपावन बड़ी होइ तब पावन की शोभा सो नर-
सी तो अभक्तदेश जीतिके भक्तिको राज्यकियो ? महास्मारतक
लोग स्मारतकतौ यह कर्म करिके नामलीजे के सरिजाइ ॥ अष्टमे ॥
मंत्रतस्तंत्रतश्छिद्रदेशकालार्हवस्तुतः ॥ सर्वकरोतिनिश्छिद्रनात्र
संकीर्तनंतव २ ऐसो क्यों बांकीगढ़ी सुरंगसो टूटे है ॥

दियोमेंवृकासुरकोबरडरभयोजहां जैसेबरकोटिकोटि
यापैवारिडारेहैं । बालकनहोइयहपालकहैलोकनकोमन
कोविचारकहादीजेप्राणप्यारेहैं ॥ जोपैनहींदेतमेरोबोली
बोअचेतहोतदियोनिजहेततनआलिनकेधारेहैं । लायेवृ
न्दावनरासमंडलजटितमणि प्रियाअनगतबीचलालजू
निहारेहैं ४२७ हीरनिखचितरासमंडलनचतदोऊरचत
अपारनृत्यगानतानन्यारिये । रूपउजियारीचंदचांदिनी
नसमतारीदेतकरतारीलालगतिलेतप्यारिये ॥ श्रीवकीदु
रनिकरअंगुरीमुरानिमुखमधुरसुरानिसुनि श्रवणतापारि
ये । बजतमृदंगमुरचंगसंगअंगअंग उठततरंगरंगछवि
जीकीप्यारिये ४२८ दईलैमशालहाथनिरखिनिहालभ
ईलालदीठिपरीकोऊनईयहआईहै । शिवसहचरीरंगम
रीअटकरीबातमृदुमुसुकातनैनकोरमेंजताईहै ॥ चाहैंया
हिटारयोयहचाहैप्राणवाख्योतब श्यामद्विगआइकहिनीके
समुझाईहै । जावोयहध्यानकरौ करौसुधिआऊँजहांआ
येनिजठोरचटपटीसोंलगाईहै ४२९ ॥

बजत मृदंग ॥ कवित्त ॥ पियप्यारी दोऊमिल रासको मचाइ
रहे देखे जो निहारि वाहि रही न सभारहै । तता थैईथैई कहि

करत हैं नृत्यगति रंग सौभरत पेखः संकुचत मारहै ॥ वाजत
 चृदंग सुरचंग उठतः उमंग गावतहै ताल संगलान्यो प्रेम लारहै ।
 शरद समाज बज वृन्दावत प्रकटभो कहै कवि कौन जाको पावै
 नहीं पारहै १ भागवते ॥ बलयातानूपुराणां किंकिणीनां च योपिताम् ॥
 सप्रिया कामभूच्छब्दस्तुमुलोरासंमपडले २ वकारते मानिये ३ ॥

कीनी ठौर न्यारी विप्रसुता भई न्यारी एक सुता उभै वारी
 जगभक्ति बिसतारी है । आवै बहु संत सुख देत है अनंत गुण
 गावत रीभा वत ऐसे वा विधि धारी है ॥ जिती द्विजजाति दुख
 भयो अति गात मानी बडो उत पात दोष करै न विचारी है । ये
 तो रूप सागर में नागर मगन महा सकै कहा करि चहुं ओर गि
 रि धारी है ४३० तीरथ करत साधु आये पुर पूछे काज हुंडी
 लिखि देहि हूँ मैं द्वार का सिधारिये । जेवर है दूषि कही जात ही
 भगवै भखन रसी विदित साह आगे दाम डारिये ॥ चरण प
 करि गिरि जावो सुलिखावौ अहौ कहौ वार वार सुनि बिनती न
 टारिये । दियो लै वताय घर जाय वही रीतिकरी भरी अङ्क वा
 रि मेरे भाग कहा वारिये ४३१ सात सैरु भैया गनि ठेरी करि
 दई आगे लगे पग देवो लिखि कहो वार वार है । जानी बहँ का
 ये प्रभु दाम दे पठाये लिखि क्रिये मन भाये साह सांवल उदार
 है ॥ वाही हाथ दी जे पैले क्रीजिये निशङ्क काज गये यदुराज
 धानी पूछो सो बजार है । हुँदि फिरि हारे भूखप्या समी डि डारे
 पुर तजि भये न्यारे दुख सागर अपार है ४३२ ॥

कीनी ठौर न्यारी ॥ सवैया ॥ देव औ दानव दोऊ छले बलिहू
 को छल्यो बलि दावन यातें । आनि छल्यो सिंगरो बजरी पुनि
 ऐसो छली नहीं और है तातें ॥ होहु छली छलसों कद्यो वेद हो
 जानि परी न किशोर की घातें । मोहि घरी कु जिवायो चहै तो

करो कि न बाही विश्वासी की बातें १ आवैं बहुसंत ॥ दोहा ॥
नागरसो हरिरूप पर सागर पग न रसाल ॥ मत आगर जागर
सदा सेवत संत मराल २ दोष ॥ मृदुसों मृदु अति कठिन है कठिन
मन्दमतुसार ॥ अलि अंबुज में दुरिरह्यो काँटै काठ अपार ३ ॥

शाहकोस्वरूपकरिआयेकाँधेथेलीधरि कोनपासहुँडी
दामलीजियेगिनाइकै । बोलिउठेढूँदहारेभलेजुनिहारआ
जुकहीलाजहमेंदेतमेंहूँपायेआइकै ॥ मेरोहैइकोसौवास
जानैकौऊहरिदास लेखोसुखराशिकरोचीठीदीजेजाइकै ।
धरेहैरुपैयाढेरलेखोकरोवेरवेर फेरिआइपातीदईलईगरे
छाइकै ४३३ देखिआयेशाहदौरिमिलेउतसाहअंगवेउरं
गवोरेसतसंगकोप्रभावहै । हुंडीलिखिदईदामलियेसोख
वाइदियेकियेप्रभुपूरेकामसंतनसोभावहै ॥ सुतासुसरारि
भयोछूछकविचारिसासुदेतवहुगारिजाकेनिपटअभावहै ।
पितासोपठाइकहीछातीलैजराईइन जोपैकछुदियोजाइ
आवोइहिदावहै ४३४ चलेगाड़ीटूटीसीलैबूढेउमैबैलजो
रिपहुँचेनगरछोरद्विजकहीजाइकै । सुनतहिआईदेखिमु
हँपियराईफिरीदामनहींएकतुमकियोकहाआइकै ॥ चिंता
जनिकरौजाइसासूढिगढरोलिखिकागदमेंधरौ अतिउत्त
मअघाइकै । कहीसमुभाइसुनिनिपटरिसाइउठी कियोप
रिहासलिरुयोगांखुनसाइकै ४३५ ॥

आये ॥ कवित्त ॥ बलिजूके नित्त जित्त रहतही मेरे हिये हरि
जू की भक्ति मेरे आईहै कि नाहिने । मारध्वज करत विचार यह
वारवार कबहुँक प्रभु अपनाइहै कि नाहिने ॥ पारषद दौऊ सोऊ
चहतहै मवका निवेश और देश हमें होइगो कि नाहिने । गुणगण

खानि भगवान जोई लीला करें साधुसुख इच्छा हेतु और हेतु नाहिंनै १ जानेहरिदास बोले हम हरिदास नहीं तुम दामदास हौ मिले कैसे नरसीजी के सङ्गते जो कछु नरसी को लिख्यो चिट्ठी में आयो सो सब देनौ २ ॥

कागदलैआईदेखिदोसरेफिराईपुनि भूलेपैनपाईजा तपाथरलिखाये हैं । रहिबेकोदईठोरफूटीदईपौरिजहांवेठे शिरमौरआपबहुसुखपायेहैं ॥ जलदेपठायोभलीभांतिके औटायोभई बरषासिरायोसोसमोइकेअन्हाये हैं । कोठरी सँभारिआगेपरिदासोदियोडारि लेवजायेतालब्रेसअग्नि नितआयेहैं ४३६ गांवपहरायोछबिछायोयशगायोअहो हाटकरजतउभैपाथरहूआयेहैं । रहिगईएकभूलेलिखन अनेकजहां लेहोताहीपासजापैसबमिलपायेहैं । बिनती करतिबेटीदीजियेजूरहैलाज दियोमँगवाइहरिफेरिकैबु लाये हैं । अंगनसमातिसुतातातकोनिरखिरंग संगचली आईपतिआदिबिसराये हैं ४३७ ॥

जलदे पठायो जल लावनवारे बोले मूंड तो ढकौ तब कही वावरे हौ मूंड उघारिके लज्जा छोड़िके हरिको भजन करिये ये अपनी ओर खेंचें वे अपनी ओर खेंचें जैसे निपट और वादशाह को प्रसंग १ ले वजायेताल ॥ कवित्त ॥ लयकरि ताल वानी बोले सो रसाल सुनियो नंदलाल मैं कहावत ब्रजराजको । गणिका सी नारी तारी प्रहलाद भीर टारी कुबिजासुधारी कान्ह द्रौपदी की लाज को ॥ चरणद्रोही बधिक तारयो गजने पुकारयो केवल रामआये सुदामा यहकाजको । नरसी की वार हरि क्यों अवार लागे आव आये ततकालरूप धरिके घजाजको २ रहैलाज नाहीं तौ नाककटगी तब नरसीजी बोले कै नाककटगी तौ कृष्णकी रहैगी तापे इष्टांत ब्रजोह लालखारी को सुतादोइ नरसी के कुँवर

सेना रतनसेना ये तौ बेटीनकेनामहैं आगे बिस्तार कह्योहै ३ ॥

सुताहुतीदोइभोइभक्तिरहीघरहीमें एकपतित्यागिए
 कपतिहूनकियोहै । भूमिमेंफिरतउभैगाइनिसोंचाइनिसों
 धनसौनभेटकाहूनामकहिदियोहै ॥ आइलागीगाइबेको
 कहीसमुझाइअहोपाइबेकोनहींकछुपावैदुखहियोहै । चा
 हैहरिभक्तितोमुड़ाइकैलड़ाइलीजै कीजैबारदूरिरहीप्रेमर
 सपियोहै ४३८ मिलीउभैसुतारगइलीसंसगाइनि बे
 चाइनिसोंनृत्यकरैभाइनिबताइकै । सालंगहैनाममामा
 मंडलीकमंत्रारहैकहैविपरीतिबड़ीराजासोंसुनाइकै ॥ ब
 डेबडेदंडीअरुपंडितसमाजकियो करौवाकीभंडीदेशदी
 जियेछुड़ाइकै । आयेचारिषोबदारचलौजबिचारकीजै
 भयोदरबारहमैदियोहैपठाइकै ४३९ चारौतुमजावोटू
 रिभयोहमैराजाडर सकैकहाकरिअजूचलैसंगसंगही ।
 नाचतबजावतयेचलीढिगगावतसुभावतमगनजानी भी
 जिगईरंगही ॥ अयेवाहीभातिसभाप्रबलबहुतभई तऊ
 बोलेरीतियहयुवतीप्रसंगही । कहीभक्तिगन्धदूरिपढ़ेपो
 थीपरीधूरिश्रीशुकसराहीतियामाथुरनभंगही ४४० ॥

पति त्यागि ॥ कुंडलिया ॥ नारी तजै न आपनो सपनेहू भर-
 तार । गुंग पंगु बहिरा बधिर अंध अनाथ अपार ॥ अंध अनाथ
 अपार वृद्धवाचन अतिरोगी । चालक षंड कुरूप सदा कुबचन
 जड़योगी ॥ कलही कोढ़ी भीरु चोर ज्वारी व्यभिचारी । अधम
 अभागी कुटिल कुमति पति तजै न नारी १ ॥ छप्ये ॥ पितावचन
 प्रह्लाद भेटि अपनो मतठान्यो । बलिराजा गुरु बचन नेकु हिरदे
 नहिं आन्यो ॥ दई स्वामिको पीठि विभीषण कुल भरवायो ।

गोपिन पतिव्रत त्यागि कियो अपनो मनभायो ॥ निगम निरूपहि
 मंद कर्मकी लगी नहीं प्रतिवाइहै । हरि धर्महिके साधे जगन्नाथ
 धरम है जाइहै २ ॥ पोथी ॥ दोहा ॥ पोथी तौ थोथी भई पण्डित
 भयो न कोइ ॥ एकै अक्षर प्रेमको पढ़ै सुपंडित होइ ३ शुक्र सरा-
 ही ॥ भागवते ॥ धिग्जन्मनख्रिष्ट्रिद्यां धिग्ब्रतंधिग्बहुज्ञताम् ॥
 धिक्कुलधिक्रियादाक्ष्यं विमुखायेत्वधोक्षजे ४ ॥ पद ॥ हम सबहि
 मन्दभाग भगवान सौं विमुखभये धन्य वे नारि गोविंद पूजे ॥
 मंदिरहे नैन हम सबे उलूक ज्यो भानु भगवान आये न सभे ५
 संग गोधन लगे खेल रसरंगमगे भोरके निकसि भूखे आइये ॥
 देहु तौ भात करजोर ग्वालन कह्यो अहो भूदेव तुमपै पठाये ६
 केवल करुणा टरनि प्रात भोजन करनि निगमहू अगम महिमा
 यतावै ॥ कहां प्रभुकी यचनि हमरे मंदकी मचनि देवकी रचि
 कछु कहि न जावै ७ शौच आचार गुरुकुलहि सेवा कछु कुटिल
 करकश हिये बुद्धिदीनी ॥ देखो इन तियनिको भांग या जगत में
 सच्चिदानन्द के रंगभीनी ८ उमँगि पहिले चली पार संसार के
 सावरो कुँवर हिय मांभ पोयो ॥ धरि रहे कूर सुरलोक आशा
 अलप पाइ अमी आशु अमृत निचोयो ९ तिया कौतुक मिली
 कछुक जानी चली कमलिनी हियो मनना मिलावै ॥ शप त्रिपु-
 रारि ब्रह्मादि सनकादि सुख चरणकी रेणु शिरपर चढ़ावै १० य-
 दपि नारायण अवतार यदुकुल विषे सुन्यो बहु भाति तौ मनन
 आये ॥ देखो या देवकी माया अतिमोहिनी दई दृग धूरि हम
 सब भुलाये ११ धिक् जन्म जाति कुल क्रिया स्वाहा स्वधा योग
 यज्ञ जप तप सकल धिक् हमारे ॥ ज्ञान विज्ञान धन धर्म कछु
 कर्म नहीं ईश पद विमुख आरंभन सारे १२ यह आगार संसार
 दुख सम्भवै मिथुन मृग निरसयो मन मिलावै ॥ सूरकी शोर
 हरि विमुख जगमें बड़े वृष्णि गयो दीप जत्र बड़ कहावै १३
 ऐसे संसारी जीव बड़े कहावै साधु उन्हें छोटे मानै ॥

बोलिउठोविप्रएककछुकप्रसंगदेख्यो कहोरसरंगभ

खोटेखोटेपपाइमें । कहींजूविराजोगाजोनितसुखसाजो
जाइकियेहरिराइवशभीजेरहोभाइमें ॥ धारोउरऔरशर
मौरप्रभुनन्दिरमें सुंदरकेदारोगगावैभरेचाइमें । इयामें
कंठमालटूटआवतरसालहिये देखिदुखपायेपरेबिमुखसु
भाइमें ४४१ नृपतिसिखायोजाइवृथायशछायोकाचे लू
तमेंपुहायोहारटूटख्यातकरीहै । माताहरिभक्तभूपकहो
जनिकरोकानतऊबाणि राजसकीमायामतिहरीहै ॥ गयो
ठिगमंदिरकेसुंदरभंगाइपाट तागोवटवाइकरिमालागुहि
धरीहै । प्रभुपहिराइकहेगाईअबजानिपरै भरेसुररागंओ
रगायोपैनपरीहै ४४२ विमुखप्रसन्नभयेतबतौउदारनैदे
नयेनयेचोजहरिसनमुखभाखिये । जानेगबालबालएकमा
लगहिरहेहिये जियेलग्योयहीरूपकह्योलाखलाखिये ॥
नारायणबड़ेमहाअहोमेरेभागलिख्यो करैकौनदूरिछवि
परिअभिलाखिये । मरौकहाजाइआपपरसैकलंकलुहै
राखियेनिशंकहारभक्तिमारिनाखिये ४४३ ॥

नयेनये चोज ॥ सवैया ॥ अति सुखो सनेह को भार गहै जहँ
नेरु सयानप बांक नहीं । तहँ सांचे चले तजि आपनपौ भि-
भक्तके कपटी जुनिसांक नहीं ॥ घन आनंद प्यारे सुजान सुनौ
इत एकते दूसरो आंक नहीं । तुम कौन धौ पाटी पड़ेहौ लला
मन लेत पै देत छटांक नहीं १ ॥ प्रण राखि लियो तुम भीषणको
क्षणमें गजराजके काजको धायो । देत बिलंब न लायो सुनामहि
पावक ते प्रहलाद बचायो ॥ दीनदयाल सुने मनीराम सुखही
ते मैं चित दे गुण गायो । से तौ गरीब गरीब रह्यो तुम कैले
गरीबनिवाज कहायो ॥ बडी गरीबी गोविंदा जो पै होइ ग-
रीब २ ॥ भरे भाग लिख्यो ॥ इलोक ॥ लिखिता चित्रगुप्तन

ललाटेक्षरमालिका ॥ नसापिचालितुंशक्या पण्डितेस्त्रिदशैरपि ३
 क्वचित् ॥ दीननके पाल ब्रजपाल हौ अवधपाल गाइनके पाल
 नेकु इतैहू निहारिये । वैकुण्ठकेपाल हरि चौदहभुवनपाल विरद
 के पाल निज विरद सँभारिये ॥ भक्तपाल धर्मपाल सृष्टिपाल हे
 कृपाल हृजिये दयाल और भांति न विचारिये । सुरन के पाल
 कहौ सुरति विहाल अथ येहो जू गोपाल लाल मोहि ना बिसा-
 रिये ४ ॥ पद ॥ वधिरभयेलौदेवा वधिरभये लौ । अपनो विरद
 क्यों बिसरै लौ ॥ कोपियो मडनी कम्हाने मारिसी । मुह डीक
 धूलिदावि थापसी भक्तिकरौ तो नरसी ॥ योमारि थो तो भक्त-
 वल्ल तारौ विरद जाइसी । मलेछनी जाति कधीर उधारो ना
 माना छाप ॥ राग पौछाई ॥ जेदेव नैपद मापती आपी भाला ने
 अवमूक भाई । जाइ न फूल सूतनो धांगो दोइदमड़ी ने मोल
 पावी ॥ नरसी ने एकहार ले आपतांता रावापनावा परेस्योजावी
 ५ ॥ दोहा ॥ आशिक शिर अपना अरे धरदे पैरो लाइ ॥ वे निशाफ
 महवूवके करै दूर अनखाइ ६ ॥ भूलना ॥ जिस वै परै न परीया
 कंडा सो घाव दरद क्या जाने । वे दरदान इश्क सुहेला इश्क-
 जना वे भाने ॥ शिर लाहु लटू वेसके सो कलु इश्क सयाने ।
 कहै भगवान हित रामराइ प्रभु हार न विल विच माने ७ ॥

रहैतहाँसाहकियेउभैलै विवाहजानैतियाएकभक्तकहे
 हरिकोदिखाइये । नरसीकहीहीभलैसोईप्रभुवाणीलईसां
 चकरिदईगयेरागलुटवाइये ॥ बोलैपटखोलिदियेकियेद
 रशनताने तानेपटसोवैवहकहीदेवोभाइये । लियेदामका
 मकियोकागदगहापदियो दियोकलुखाइवेकोपायोलैभि
 जाइये ४४४ गहनेधस्योहौरागकेदारोकोसाहघरधरिरू
 पनरसीकोजाइकैलुड़ायोहै । कागदलैडास्योगोदमोदम
 रिगाइउठे आयेभनभनश्यामहारपहिरायोहै ॥ भयोजे

जैकारनृपपाइलपटाइगयो गह्योहियेभावसोप्रभावदर
 शायोहै । विमुखखिसानेभयेगयेउठिनयेमाहिं बिनाहरि
 कृपाभक्तिपथजातपायोहै ४४५ करनसगाईआयोपायो
 बरभायोनाहिंघरघर फिरघोद्विजनरसीबतायोहै । आइ
 सुखपाइपूछ्योसुतसोदिखाइदिया कियोलैतिलकमनदे
 खतचुरायोहै ॥ अजहमलायकनतुमसबलायकहौशाय
 कसोछुटोजाइनामलैसुनायोहै । सुनतहीमाथोठोकि कहै
 तालकूटावहबालबोरिआयोजावोफेरिदुखछायोहै ४४६ ॥

गाइ उठे ॥ पद ॥ द्यौजीद्यौजी राज थारागलनी मालम्हाने
 द्यौजी राज । कृपाजुकीजे विमुखपतीजे मुखसों तो बचन कहौ
 जी राज ॥ केशवरणी कुँवरि राधिका कस्तूरी वरणा छोजी
 राज । सांवरी सूरति माधुरी मूरति यह छवि हियरे रहौजी राज ॥
 अनाथन नाथ बधूनावाला सुषमासागर छोजीराज । पैठि पताल
 कालीनाग जु नाथ्यो म्हारी करुणा ल्योजी राज ॥ जुहीना फूल
 सूतनोधागो सो काहे गाइ गहौजी राज । रिमिझिमि करतौ
 सांवलियो आयो नरसी महिता तुम ल्योजी राज १ ॥ चौपाई ॥
 अहो यकी दुष्टाने प्यायो । मारत ताहि कुचन विषलायो ॥ दई
 धायकी गति पुनि ताही । ता दयालु बिनु सुभिरों काही ॥

कादिकैअँगूठाडारौ तबसोउचारौदातमनमेंविचारौ
 कियोतिलकबनाइकै । जानेसुताभागऐसेरहेसोचपागि
 सबआवैजवव्याहिवेक्रोधनद्वैअघाइकै ॥ लगनहूँलिखि
 दियोदियोद्विजआनलियोडारिराख्योकरूँ गावैतालयेब
 जाइकै । रहेदिनचारियेविचारिनहींनेकुमन आयेकृष्णरु
 किमणीजूझूमिमिलेघाइकै ४४७ ठौरठौरपकवानहोतति
 यगानकरैघरतनिशानकानसुनियेनबातहै । चित्रमुखकि

यो लौकिकि त्रपटशनी आपधोरी रंगवोरी पै चढायो सुतरात
 है ॥ करीसो ज्यौ नारतामै मानुष अपार आये द्विजन विचा
 र पीठ पांघी पै नमात है । अपिमय साजवाजि गजरथ लंड
 कोर जमके किशोर आजस जीयो वरात है ४४८ नरसीसो
 कहै गहै हाथ तुम साथ चलो अंतरि चमै हूं चलो येती वातमा
 निये । कही अजू जानौ तुम भैंतौ हिये आनो यहै लहै सुखम
 नमरो फेंटताल आनिये ॥ आपही विचार सबभार सो उठाय
 द्विचोदियो डेरापुरी सबधी कीपहँ चानिये । मानुष पठायो
 दिन आये पै न आये अहो देखि लवि छाये नरपूछै जो वखानि
 ये ४४९ ॥

आये कृष्ण ॥ पंचाध्यायी ॥ अनुग्रहाय भक्तानां मानुष देहमा
 भित्तः ॥ भजते तां हरिं क्रीडायां श्रुत्वा तत्परो भवेत् ? ॥ मिले घाड़
 कै ॥ कोऊ कहै नरसीने कृष्णको साक्षात् टाकुर जाने होहिगे
 कै राजा कै साहूकार जाने होहिगे सो नहीं पुर के न जाने नरसी
 ने हरिही जाने २ ॥ दशमे ॥ नखानामशनिर्गुणानरवरः श्चीणांस्म
 रोभूर्तिमान् गोपानां स्वजनोसतां क्षितिभुजांशास्ता स्वपित्रोः शि-
 शुः ॥ नृत्यभोजपतेर्विराड्विदुषांतत्त्वंपरयोगिनां वृष्णीनां परदेव
 ततिविदितो रङ्गलः साग्रजः ३ ॥

नरसी वरात भति जानो यह नरसीकी नरसीन पावै ऐसो
 समरु अपार है । आइके सुनाई सुधिबुधि विसराई अहो कर
 तहँ साई वात भाषो निरधार है ॥ गयो जो सगाई करि दरवर
 आयो द्विज अंग भैनमात कै से रंग विसतार है । कही एकघा
 सयनरास सोन पूजै किहू चहुँ दिशि पूरि रही देख्यो भक्ति सा
 र है ४५० चले अचरज मानि देखि अभिमान गयो लयो पा
 यो भाव प्रकोह भैं साखिली जिये । जाइ गहि पांहर ह्यो भाइ भ

रिदयाकरो गये हृगभरे पांइ परे कृपाकी जिये ॥ मिले भरि अं
कलै दिखायो सो भयं क मुख हूजिये निशंकइ न्है भोर सुतादी
जिये । ब्याह करि आये भक्तिभाव लपटाये सब गये गुणजा
नै जितै सुनि सुनिर्जा जिये ४५१ ॥ मूल ॥ दिवदासवंश
जसो धरसदन भई भक्तिअनपायिनी ॥ सुतकलत्रसंमतस
बैगो विदपरायन । सेवत हरि हरिदास द्रवत मुखरामरसा
यन ॥ सीतापतिको सुयशप्रथम ही गमन बखान्यो । द्वै सुत
दीजे मोहिं कवितसब ही जग जान्यो ॥ गुनिगिरागदितली
लामधुरसंतन आनंददायिनी । दिवदासवंशजसो धरस
दन भई भक्तिअनपायिनी १०९ ॥

नरसीबरात दृष्टिकूट ॥ वृक्षाग्रवासीनचपाक्षिराजो दुग्धं स्रव
न्ती नच कामधेनुः ॥ त्रिनेत्रधारीनचशूलपाणिर्नारीचनामानचरा
जकन्या १ ॥ हमैराखिलीजे हमतौ तरेराखेरहेहैं नहीतौ धनहूं
जाइगो अरु अयश होहिगो ब्याह करि आये कोऊकहै नरसीकी
ऐसीसहायकी यह तौ बड़ो अचरजहै कवित्त सबही जग है ॥
दोहा ॥ रामराम सब कोऊकहै दशरथकहै न कोइ । एकवार दश-
रथकहै कोटियज्ञ फलहोइ ॥ दशरथतौ बड़ेई सामर्थ्यवानहैं जिन
के नामसों आठौसिद्धिनवैनिधिआगरहैं ३ ॥

श्रीनंददास आनंदनिधिरसिकसुप्रभुहितरंगमगे ॥ ली
लापदरसरीतिग्रन्थरचनामेंनागर । सरसउक्तियुतयुक्ति
भक्तिरसगानउजागर ॥ प्रचुरयपधिलौ सुयशरामपुरग्राम
निवासी । सकलसुकलसंबलितभक्तपदरेणुउपासी ॥ च
लिचन्द्रहासअग्रजसुहृदपरमप्रेमपयमेंपगे ॥ श्रीनंददा
सआनंदनिधिरसिकसुप्रभुहितरंगमगे ११० ॥

रसिक ॥ दोहा ॥ घरको परनो परिहरयो कहौ कौन उपदेश ॥
 तुलसी यासौ जानिये नहीं धर्म को लेश ॥ १ ॥ हम चाकर रघु-
 नाथ के जन्म जन्मके दास ॥ रूपमाधुरी मनहरयो डारिप्रेमकी
 फांस २ ॥ कवित्त ॥ अधर बंधूक औ वदन अधिकाई छवि मानों
 विधि कीनी यह रूपको उदधिकै । कान्ह देखी आवत अचानक
 मुरछिगिरे घूंघुट उधारि राख्यो सखिनके मधिकै ॥ गंगगई मारि
 सर मृग गिरधर वेधे अधिक अधीनभई चितवनि तधिकै । वाण
 वेधे अधिक बधेको फेरि खोजलेत बधिक बधून खोजलिये वाण
 बधिकै ३ ॥ लीलापद ॥ पहिले तौ देखोआइ माननी की शोभा
 लाल तापाछे लीलिये मनाइ प्यारेहो गोविंद । करपैदिये कपोल
 रही है नयन मूँदि कमल बिछाय मानों सोयो अहै पूर्णचंद्र ॥
 रिसभरी भौहैं मानो भौर बैठे अर्धरात इन्दुतरे आयो मकरन्द
 भरयो अरविंद । नन्ददास प्रभु ऐसी प्यारी को रुसैये बलि जाके
 मुख दीखेते मिटत सबै दुखद्वंद ४ ॥ दोहा ॥ जिहिघट विरहा
 अँ अग्नि पर यकभये सुभाइ ॥ ताही घटमें नन्दहो प्रेम अमी
 ठहराइ ५ ॥ कुञ्ज कुञ्ज प्रतिपुञ्ज अलि गुञ्जत इमि परभात ॥
 रविडर तम सब भजिगयो रोवत ताको तात ६ अवला नि-
 सरी तीर जब नीरचुवत वरचीर ॥ जनु अँसुवनि लागीं भरी तन
 बिछुरन की पीर ७ ॥

मूल ॥ संसारसकलव्यापकभईजकड़ीजनगोपाल
 की ॥ भक्तिजेजअतिभालसंतमंडलकोमंडन । बुधिप्रवे
 शभागवतग्रंथसंशयकोखंडन ॥ नरहरिग्रामनिवासदेश
 वागडनिस्तारयो । नवधामजनप्रबोधिअनन्यदासनव्रत
 धारयो ॥ हरिभक्तिरूपाबांब्रीसदापदरजराधालालकी ।
 संसारसकलव्यापकभईजकड़ीजनगोपालकी १११ सा
 धवदढमहिऊपरैअतिप्रचुरकरीलोटाभगति ॥ प्रसिधप्रेम

कीराशिगढ़ागढ़परचोदीयौ । उंचेतेभयोपातश्यामसां
चोप्रणकीयौ ॥ सुतनातीपुनिसदृशचलतऊहीपरिपाटी ।
भक्तनसोंअतिप्रेमनेमनहिकहुअंगघाटी ॥ नृत्यकरतन
हितनसँभारसमसरजनकनकीसकति । माधवदहमहिऊ
परैअतिप्रचुरकरीलोटाभगति ११२ ॥

जकड़ी साखी ॥ अरीसुनि आतमप्यारी लाल मनाइले । प-
हिले पहरै रैनिके तनवसन सजाइले ॥ यह प्रीतम मन भावतो
तेरेनिकट विराजे । मान न कीजे पीयसों अरी तेरो यौवन लाजे ॥
दूजेरी पहरै रैनिके तँ मरम न जान्यो । यह यौवन बहु मोलको
ले विषमें सान्यो ॥ तीजेरी पहरै रैनिके तू अजहुन चेतो । अंगन
दियो सुजानके में वकीजुकेती ॥ फिरि पाछे पछिताइगी मिलि
साहब सेती । चौथेरी पहरै रैनिके शशि ज्योतिहुमानी । मैतो
तोहिं बहुतैकही तँ चितनहिं आनी ॥ ये देखौ पहु पीरी भई टरै
सरवरपानी । खेम रसिक भये भोरके सुन्दरि पछितानी १ ॥
अतिप्रेम ॥ दोहा ॥ प्रेमभक्ति एकौ पलक कोटिवरषको योग ॥
प्रेमभक्ति सब योगहै योग प्रेमविन रोग २ ॥

माधवदासजीकीटीका ॥ गढ़ागढ़पुरनाममाधोबदि
प्रेमभूमिलोटैजवनृत्यकरैमूलैसुधिअंगकी । भूपतिबिमु
खभूठजानिकैपरीक्षालई आनरीतिद्वानिपरदेखीगतिरं
गकी । नूपरनिबांधिनाचिसांचसोदिखायदियो गिरेहूक
राहिमध्यजियोमतिपगकी । बड़ोत्रासभयोत्पदासवि
श्वासबढोमदेउरभावरीतिन्यारीहीप्रसंगकी ४५२ ॥
मल ॥ अभिलाषाअंगदभक्तिकीपुरुषोत्तमपूरणकियो ॥
नैगअमोलइकताहिसबैभूपतिमिलियाचै । श्यामदास

बहुकरैदासनाहिंनममकाचै ॥ एकसमयसंकष्टलेवंपानी
 मेंडारयो । प्रभतिहारीवस्तुबदनतेवचनउच्चारयो ॥ प्र
 भुपांचदोइशतकौसतैहरिहीरालैउरधरयो । अभिलाषा
 अंगदभक्तकीपुरुषोत्तमपूरणक्रियो ११३ ॥ टीकाअंगद
 भक्तकी ॥ राइसेनगढ़वासनृपसोसलाहदीनताकोयह
 काकारहैअंगदविमुखहै । ताकीनारीप्यारीप्रभुसाधुसेवा
 धारीउर आयेगुरुघरकहैकृष्णकथासुखहै ॥ बैठेभौनदे
 खिकौनकैसेमौनरहौ जातबोल्पोतियाजाति कहाकरौनर
 रुखहै । सुनिउठिगयेबधुअन्नजलत्यागिदियेलियेपांवजा
 इविषैवशभयोदुखहै ४५३ ॥

गढ़ागढ़ ॥ भागवते ॥ ज्ञानतः सुलभामुक्तिर्भुक्तिर्यज्ञादिपुण्य
 तः ॥ सेयंसाधनसाहस्रैर्हरैर्भक्तिःसुदुर्लभा १ ॥ कृष्णकथा कहै सो
 गुरुसों पूछै एक नित्यमुक्ततेनपूछै निरवधिविषयीते न पूछै मुमुक्षु
 ते पूछै जिज्ञासू २ ॥ छप्पै ॥ तात मात सुत भ्रात आपको बंध-
 नमाने । छुटेकर्म नहिलेश यहै उर अंतर जाने ॥ जन्म मरण की
 शंकरहै निशिदिन मनमाहीं । चौरासीके दुःख नेकु नहिं वरणे
 जाहीं ॥ इहिभाति सदा शोचतरहै संतन सां पूछत फिरै । हे कोऊ
 सतगुरु ऐसई सो मेरो कारज करै ३ ॥

मुखनदिखावेयाहिदेख्योई सुहावैकही भावैसोईकरौ
 नेकुबदनदिखाइये । मैंहूजलत्यागिदियोअन्नजातकापै
 लियोजियोजबनीकेतबआपकछूखाइये ॥ बोलीबोसोंबो
 लोजिनबाँडोतनयाहीछिन प्रणसांचोहोतौतौपैसुनतस
 माइये । कहौअबकीजैसोईमेरीमतिगईखोई भोईउरद
 यावातकहिसमभाइये ४५४ ॥ त्रैगुरुकरौजाइपाइनिभै
 परिगयो चाइनिलिवायलायोभयोसिखदीनहै । धारीउ

रमालभालतिलकवनइक्रियो लियोशीतप्रीतिकोऊउप
जीनत्रीनहै ॥ चढिफौजसंगचढयोवैरीपुरमारिबढ्योक
ढयोटोपीलैकहीरासतएकपीनहै । डारैसबबेचिपागपेच
मध्यराख्योमुख्य भाख्योसोअमोलकख्यो जगन्नाथली
नहै ४५५ कानाकानीभईनृपबातनमेंसुतिलईकहीहीरादे
यतौपैऔरमाफकियेहै । आपसमझावैबहुयुगतिबतावै
याकेमनमेंनआवैजाइसबैकहिदियेहै ॥ अंगदबहनिलागै
वाकीभूवापागैतासों देवोविषमारोफेरितूहीपगलिये हैं ।
करतरसोईघरगरलमिलायपाक भोगहूळगायोअजूजैबो
बोलिलियेहै ४५६ ॥

वेई ॥ दोहा ॥ डरबारस डर परमगुरु डर करनी में सार ॥
खोजी डरै सुऊबरै गाफिल पावै सार १ प्रीति ॥ भागवते ॥ यस्य
देवपराभक्तिरथादेवतथागुरौ ॥ तस्यैतैकथिताह्यर्थाः प्रकाशन्तेमहा
त्मनः २ बहुयुगति बताके साम दाम दंड भेद सनेह धनभेद ३
भवासों बोलयो तेशे भाई अंगद बड़ो दुष्टहै तरे निमित्त गाँव बहुत
दियेहै सो तोको न दिये अब ग्राहि मारि सबदेश को पहा तोहीं
को करिदेहिगे ४ ॥

वाकाएकसुतासंगलैकेबैठेजैवनको आइसोछिपाइक
हीजैवोंकहूंगईहै । जैवतनबोधहारीतबसोबिचारीप्रीति
भीतरोइमिलीगुरैरीतिकहिदईहै ॥ प्रभुलैजिमायेरांडभां
डकैनिकासद्वारदेकरिकिवाररसपायोओपनईहै । बड़ोदु
खहिपेरह्योकह्योकैसेजातकाहू बातसुननृपहूनेजैसीभां
तिभईहै ४५७ चलेनीलाचलहीराजाइपहिराइआवैआ
इघेरिलीनेनृपनरनिखिसाइके । कहीडारिदेवोकैलराइस
नमुखलेहुबसनहमारोभूषआज्ञाआयेघाइके ॥ बोलैनेकु

रहोमेंअन्हाइपकराइदेत हेतमन और जलडाखोलैदि
खाइके । वस्तुहेतिहारीप्रभुलीजिये उवारीयहवाणीला
गीप्यारीउरधारीसुखपायके ४५८ एतौघरआयेवेतौज
लमधिकूदिघाये अतिअकुलायेनेकुखोजहूनपायोहै । रा
जाचलिआयोसबनीरकढवायोकीच देखिमुरभायोदुख
सागरबुड़ायोहै ॥ जगन्नाथदेवआज्ञादईमुधिदेवोजाय
आयकैसुनाई नरतनविसरायोहै । गयोजाइदेख्योउर
परजगमगरहयो लहयो सुखनैननिको कापै जात गायो
है ४५९ ॥

वैठे जेवनको अंगद जेवनको वहिनिकी कन्याको संग लै वैठ
तौ कन्यासोइ तौ सनेह सो सनेहमें भक्ति कैसी यह साक्षात्
लाड़िली लालकी सखी प्रकट भई है यह स्वरूप सखा विना और
कहाँ अरु हमारे भक्तनके घरमें जन्मै सो सामान्य जीव है सो
नहीं परकर की जीति को भावकियो भावही सों प्रीति है है हेत
मन और अब मेरो बल नहीं पहुँचै तब विचारि कही हरि सर्वज्ञ
हैं सो जलमें डारिदियो सो भगवान्ने अलगही लियो १ सर्व
तःपाणिपादमिति ॥

राजाहियेतापभयोदयोअन्नत्यागिकख्यो आवैजोपैभा
गमेरेब्राह्मणपठायेहैं । धरनोदौरहेकहेनृपकेबचनसबतब
हैदयालनिजपुरठिगआयेहैं ॥ भूपसुनिआगेआइपाइलप
टायगयो लयोउरलाइहगनीरलैभिजायेहैं । राजासरवसु
दियोजियोहरिभक्तिकियो हियोसरसायोगुणजानेजिते
गायेहैं ४६० ॥ मूल ॥ चतुरभुजनृपतिकीभगतिकोकौन
भूपसरवरकरै ॥ भक्तआगमनसुनतसँमुखजोजनइक
जाई । सदनआनिसतकारसदृशगोविन्दबड़ाई ॥ पादप्र

छालनसुहृथराइरानीमनसांचे । धूपदीपनैवेद्यबहुरितिन
 आगेनाचे । यहरीतिकरौलाधीशकीतनमनधनआगेधरौ
 चतुरभुजनृपतिकीभगतिकोकौनभूपसरवरकरै ११४ ॥
 टीका ॥ पुरढिगचाख्योओरचौकीराखीयोजनपैयोजनहीं
 आवैतिन्हैलावतलिवाइके । मालाधारीप्रभुसनमानिआ
 वैकोऊद्वारकरैवहीरीतिसोसुनाईछप्पैगाइके ॥ सुनीएक
 भूपभक्तिनिपटअनूपकथासबको भंडाराखोलिदेतबोल्यो
 धाइके । पात्रऔअपात्रमोबिचारहीजोनहींतौपैकहाऐसी
 वातदईनेकुमेंउड़ाइके ४६१ ॥

जग मग रह्यो ॥ कवित्त ॥ तरवाललाई नख चन्द्रिका सु-
 छवि छाई हियमें समाई वह कैसे कहिजात है । नूपुरादि चूरा
 पग धोती पग रही लगी क्षुद्रघंटिका अनूप ज्योति जगमगात
 है ॥ झंग्गा वूटेदार वनमाल मोती हीराकान्ति कौन कवि उपमा
 को कह न सकात है । तिलक विशाल माथे चीरा छबि जाल
 जापै कलंगी रसाल देखि अंगदसिहातहै १ ॥ राजाके हिये तापा
 दोहा ॥ विषयिन के शिरपर रहै साधु फूलके गुच्छ ॥ केवल तन
 बस भूमिमें परे रहे मन सुच्छ २ ॥

भागवतगावैभक्तभूपएकविप्रतहां बोलिकैसुनावैए
 सीमनजिनलाइये । पावैआशैकौनहृदभौनमेंप्रवेशकरि
 भरिअनुरागकहाउरमधिआइये ॥ करीलैपरीक्षाभाटभि
 क्षुकपठाइदियोदियोमालालिलकसोदासयोसुनाइये । ग
 यो गयोभूलिफूलकुलबिसतारकियो लियोपहिंचानिअब
 जानकैसेपाइये ४६२ बीतेदिनतीनिबीसआईबससीख
 सुधिकहीहरिदासकोऊआयोयोसुनाईहै । बोलेजनिशाक
 जावोगावोगुणगोविंदके आधेघरमध्यभूपकरीजैसीभाई

है ॥ भक्तिके प्रसंगको नरंग कहूँने कुजान्यो जान्यो उनमान
सोपरी चामँगवाई है । दियो लै मंडारखोलिलियो मनमान्यो
दईसंपुटमें कौड़ी डारि जरीलपटाई है ४६३ आयो वहीरा
जापाससभामें प्रकाशकियो लियो धनदियो पाछे सोई लै
दिखायो है । खोलिकेलपेटामध्यसंपुटनिहारिकौड़ीसमुझि
बिचारे हारै मनमें न आयो है ॥ बड़ा भागवतविप्रपंडिते प्रवी
णमहानि शिरसलीनजानि आनि कैवतायो है । क्यो
उनमान भक्त मानको प्रमानजरी मुंदिकै पठायो ताहि गुण
समुझायो है ४६४ ॥

उड़ायकै ॥ कवित्त ॥ सरल सों शठ कहैं वकतासों ढीठ कहैं
विनै करे तासों कहैं धनको अधीन है । क्षमीसों निबल कहैं दसी
सों अदत्ती कहैं सधुर वचन कहैं तासों कहैं दीन है ॥ दातासों ई
दंभी कहैं निरनेही सों गुमानी कहैं तृषणा घटावे तासों कहैं भाग
हीन है । साधु गुण देखे अहो तहां ही लगावे दोष ऐसो कल दुर्जन
को हृदोई मलीन है १ भगत भूप है ॥ श्लोक ॥ पुण्याणां स्तव
कस्येव द्वधीरीर्त्तिर्मनीषिणाम् ॥ सर्वलोकस्य मूर्धन्यास्ते विशीर्ये तवने
पिवा २ ॥

राजारीभिपां वगहे कहे जब चननीके ऐपैने कआपजाइ
तत्त्वयाको लाइये । आये दौरिपां इलपटायें संपभावभरे परे
प्रेमसागरमें चरवाचलाइये ॥ चलिवैनदेतसुखदेतचले
लोलमनखोलिके मंडारदियो लियो नरिभाइये । उभै सुवा
सारो कही एक करधारो मेरे दई अकुलाइ लईमानो निधिपा
इये ४६५ आयो राजसभावहुवातनि अखारो जहां विली उ
ठी सारो कृष्ण कहो झारि डारे है । पूछै नृपकहो अहो लहो सब
याही सों जुपंछीवासमाजरहे हरि प्राणप्यारे है ॥ कोटिको

टिरसनाबखानोपैनपाऊंपार सारमुनिभक्तिआपशीशपां
वधारे हैं । राखौयहखगतनमनपगिरह्योश्याम अतिअ
भिरानरीतिमिलेऔपधारेहैं ४६६ ॥

उभय सुवासारो ॥ अरिह ॥ शिरपै ठाढ़ो काल ये बड़ी देहि
है । भयो धुंध में अंध कहा करि लेहि है ॥ राम कृष्ण कहहु मूढ़
फेरि पछिताइहै । दुनियाँ दौलत छाँड़ि अकेला जाइहै १ भाग्यो
है सुटमर्दसबासी कैव ते । बली न जीत्यो जाय हजारन जैदते ॥
सहाराज मैं अर्ज करों सुनु कानदे । अरिहा मारि बांधि कै छाँड़ि
याहि जिन जानदे २ पद ॥ कोई सुनियो संत सुजान दियो हरि
लारे । जो तू कहै मेरे द्रव्य बहुत है संग न चलै अधे लारे ॥ जो
तू कहै मेरे कुटुम्ब बहुतहै यमलै चले अकेलारे । कहत कबीर
सुनौ भाईसाधो मनका करिले चलारे ३ कृष्ण कहहु कृष्ण कहहु
कृष्ण कहहु भाई । हाँइगी वही जो प्रभु ने बनाई ॥ राखौ ॥ तापै
बेलमा फकीर को दृष्टांत हमारोही घर जाहिगी ॥

मूल ॥ तजिलोकलाजकुलशृङ्खला श्रीमीरागिरिधर
भजी ॥ सदृशगोपिकाप्रेमप्रकटकलियुगहिदिखायो ।
निरञ्जकुशअतिनिडररसिकयशरसनागायो ॥ दुष्टनदो
षविचारिमृत्युकोउद्यमकीयो । बारनबांकोभयोगरल
अमृतज्योंपीयो ॥ भलभक्तिनिशानबजायकेकाहूतेनाहिं
नलजी । तजिलोकलाजकुलशृङ्खला श्रीमीरागिरिधर
भजी ११५ ॥

लोकलाज ॥ कवित्त ॥ क्षीर में यों नीर ज्यों समानी बूद सागर
में तनमें सुमन वास भोइगी सुभोइगी । तेरी देखिबे की बानि
नैननि में परी आनि आनि कुलकानि अब खोइगी सुखोइगी ॥
लोक परलोकहू की भूली सुधि ऊधो राम यहै बात मन माँझ मो-
इगी सुभोइगी । रूप उजियारे गुण भारे लाल प्यारे आँखें ताहीं

सों लगी हैं होनी होइगी सुहोइगी १ गिरिधर भजी गिरिधरने
मीराबाई भजी अथवा मीराबाई जीने गिरिधर को भज्यो याते
सनेहीही नेह की मूर्ति है २ ॥ कवित्त ॥ नेहराज रूप राज रसिक
रसालराज नैन सुखराज लै उठायो गिरिराज है । छोटे से हैं
करवर अंगुरी पै धरयो गिरि खुभी कोसो छत्र वह लिये गज-
राज है ॥ हाथनि ललाई तामें पहुँचनि छविछाई ऊंचो कियो
हाथ सब छवि को समाज है । नैननि की सैननि सों कहैं अल-
बेली सखी चोरि चोरि खायो दधि काम आयो आज है ३ नेकु
जो निहारो पिया प्राणनिकी प्यारी अति पंकज से हाथनि लै
धारयो गिरिभारो है । प्रेमसों लपेटी कहैं नेह भरी बात आली
लेहुरी लकुट नेकु देहरी संहारो है ॥ कहैं हँसि आली मिलि काम
आयो आजु बल खायो दधिमाखन जो चोरिकै हमारो है । नेह भरी
बातसुनि हियहुलसात मंद मंद सुसुकात मुख रूपको उज्यारो
है ४ सबही के ग्वाल बाल गोधन हैं सबही के सबहीको आनि
परी प्राणन की भीरहै । सबही पै मेघ वर्षत हैं सुगोलाधार
सबही की छेद छाती करत समीरहै ॥ किधौ यह मेरोई अनोखो
ढोटा मांगि आन्यौ बोझिल पहाड़ तर कोमल शरीर है । नेकु
याके हाथतेलै गिरिलेहु क्यों न कोऊ जाति के अहीर पै न काहू
हिय पीरहै ५ सदृश गोपिका प्रेम ॥ कवित्त ॥ पीरी परिगई अरु-
णई गई आननते कानन गईही सो सयान मुख भाग्यो है । चलि
चलि कहैं बैन फिरि फिरि जात नैन भई बिन चैन नैन अङ्गअङ्ग
राग्यो है ॥ काशीराम औरको यतनुकोन गिनतीमें क्षण क्षण छीजें
देहनेह रंगपाग्यो है । हरि अवधूत और हेत सों न नीकी होति
भूत नहि लाग्यो याहि नंदपूत लाग्यो है ६ ॥ पद ॥ अब जो
यातनको फेरि बनावैं । तऊ नदनंदन बिन ऊधो और न मन में
आवैं ॥ जो यातनकी त्रचा उचेलै लैकरि दुन्दुभि सजई । मधुर
उतंग शब्द सुरसुनियत लाल लालई बजई ॥ छूटैं प्राण मिलै
तनमाटी द्रुमलागै तिहि ठाम । सुनि अब सूर फूल फल शाखा

लेत उठे हरिनाम ७ भक्ति निशान बजायके ॥ भाइ ॥ जिन दां-
वनि हम सहलीहूये तिन दांवनिते नहिं जाने । पायंदाज न अं-
दर पहुंचे निंदा करत खिसाने ॥ कुंजमहल वासिंदा हम निंदा अ-
हिसानेमाने । बल्लभ रसिक चुनिन्दाहूये बजि निंदा सहदाने ८ ॥

टीकामीराबाईजीकी ॥ मेरतौजनमभूमिझूमिहितनेम
लगेपगेगिरिधारीलालपिताहीकेधाममें । रानाकैसगाई
भईकरीब्याहसामानईगईमतिबूडिवा रंगीलेघनश्याम
में ॥ भाँवरेपरतमनसाँवरेस्वरूपमांभतामरेसीआवैं च
लिबेकोपतिग्राममें । पूछैपितुमातुपटआभरणलीजियेजू
लोचनभरतनीरकहाकामदाममें ४६७ देवोगिरिधारी
लालजोनिहालकियो चाहौऔरुघनमालसबराखियेउठा
इकै । बटीअतिप्यारीप्रीतिरंगचढ्योभारीरोइमिलीमहता
रीकहीलीजियेलड़ाइकै ॥ डोलापधराइदृगदृगसॉलगा
इचलीसुखनसमाइचाइप्राणपतिपाइकै । पहुँची भवनसा
सुदेवीपै गमनकियोतियाअरुअरमठि जोरो कह्यो भाइ
कै ४६८ देवीकेपुजाइबेको कियोलैउपाइसासुअरपैपुजा
इपुनि बधूपूजिभाखिये । बोलीजुबिकायोमाथोलालगि
रिधारीहाथऔरकोननवैएकवहीअभिलाखिये ॥ बढत
सुहागयाकेपूजेतातेपूजाकरो मतहठकरोशीशपाइनिमें
राखिये । कहीबारबारतुमयहीनिरधारजानौ वहीसुकुमार
जापैवारिकेरिनाखिये ४८६ ॥

बिकायो माथो ॥ सवैया ॥ काटों न क्योँ इन नैननके गिरि-
धारी बिना पल अंत निहारै । जीभ कटै न भजे नंदनंदन बुद्धि
कटै हरिनाम बितारै ॥ मीरा कहै जरिजाहु हियो पद पंकज
बिना मन अंत न धारै । शीशनवै ब्रजराज बिना वह शीशहि

काटि कुंवा कि न डारै १ ॥ दोहा ॥ रसनकटै आनहिं रटे फुटै
 आन लखिनैन ॥ श्रवणफुटैते सुने विन श्रीराधा यश बेन २ कही
 बारवार ॥ पद ॥ यंशुदा बारवार यो आखै ॥ है कोऊ ऐसो हित
 हमारी चलत गोपालै राखै ३ ॥

तबतौखिसानीभईअतिजरिबरि गईगईपतिपासयह
 बधूनहींकामकी । अबहींजवावदियोकियोअप्रमानसेरो
 आगेदियोप्रमाणकरै भरेखासचामकी ॥ रानासुनिकोप
 कस्योधस्योहियेमारिवोई दईठौरन्यारीदेखिरीकमतिवा
 मकी । लालनलडवैगुणगाइकैमरहावैसाधु संगहीसुहा
 वैजिन्हैलागीचाहइयामकी ४७० आइकैननंदकहैगहै
 किनचेतभाभीसाधुनसोहेतभैकलंकलमैभारिये । राना
 देशपतीलाजै बापुकुलरतीजातिमानिलीजेवातबेगिसंग
 निरवारिये ॥ लागेप्राणसाथसंतपावतअनंतसुख जाको
 दुखहोयताकोनीकेकरिठारिये । सुनिकैकटोराभरिगरल
 पठायदियोलियोकरिपानरंगचढयोयोनिहारिये ४७१ ॥

लागे प्राणसाथ ॥ कोऊ कही कुलटा कुलीन अकुलीन कही
 कोऊकहै अंकन कलंकनि कुनारी हौं । कैसे सुरलोक नरलोक
 परलोक सब कीन मैं अलोक लोक लोकनते न्यारी हौं ॥ तन
 जाहु मनजाहु देव गुरुजनजाहु जीभ क्यों न जाहु टेक टरत न
 टारी हौं । वृन्दाबनवारी गिरिधारी के मुकुटपर पीतपटवारे की
 मैं मरति पै वारीहौं ? ॥ तारे क्यों न तजौं रैन नैन शीश क्यों न
 तजौं जीव क्यों न जाहु सोउ अबहीं या तनते । तन क्यों न ज-
 रिजाहु जरि क्यों न क्षारहोहु जार क्यों न उड़िजाहु विरह पवन
 ते ॥ सैन वहै चलनि चितौनि बनि मनबसी जबते वै आये बन-
 वारी बने बनते । जानो है सुजाहु अरु रहै सो तो रहो आली
 माधवजी की प्रीति जनि जाहु मेरे मनते २ ॥

गरलपठायोसोतौशीशपैचढायोसंग त्यागविषभारी
ताकीझारनसम्हारीहै । सानानेलगायोचरवैठैमाधुढिमढ
रितवहींखबरिकरिमारोअहधारीहै ॥ राजैगिरिधारीलाल
तिनहींसौरंगजाल बोलतसहतख्यालकानपरोप्यारीहै ।
जाइकैसुनाईभई अतिचपलाईआधोलिपेतरवारिदैकिवा
इखोलिन्यारीहै ४७२ ॥

गरल ॥ पद ॥ रानाजी जहर दियो हमजानी । जिन हरि
मेरो न्याव निबेरो छान्यो दूध अरु पानी ॥ जवलगि कञ्चन
कसियत नाही होत न बारहवानी । अपने कुलको परदा कैलहो
अबला वह रानी ॥ इवपच भक्तपर वारो विमुख सब ही हरि
हाथ विकानी । मीराप्रभु गिरिधर भजिबे को सन्तचरण लप-
टानी १ ॥ दोहा ॥ बड़ी भक्ति मीरा गही सनाके बड़ि भूल ॥
चरणामृत कहि विष दियो भयो सजीवनमूल २ ॥ चपलाई ॥
चौपरि खेलौ पीवसों वाजी लावों जीव ॥ जो हारों तो पीवकी
जो जीतों तो पीव ३ ॥ वेगिदे बताइये तरवारि हाथमें नांगीहै
के वह विषयी नर कहा गयो ४ ॥ दोहा ॥ निकट वस्तु दीख
नहीं धृग जीवन हैं जिंद ॥ तुलसी ऐसे जगतकी भयो मोतिया-
विंद ५ ॥ सबे चतुर अरु बड़े हैं अपने अपने ठौर ॥ सब तजिकै
हरिको भजे सोइ चतुर शिरमौर ६ ॥

जाकेसंगरंगभीजकरतप्रसंगनाना कहाँवहनरगया
वेगिदेवताइये । आगेहीबिराजेकछूतोसों नहींलाजेअभू
देखिसुखसाजेआखिखोलिदरशाइये ॥ भयोईखिसानोर
नालिख्योचित्रभीतिमानोउलटिपयानोकियोनेकुमनआ
इये । देख्योहूप्रभावपैभावभैनभिज्योजाइबिनहरिकृपा
कहौकैसेकरिपाइये ४७३ विषयीकुटिलएकभेषधरिसाधू

लियो कह्यो प्रसंग मोसों अंग संग कीजिये । आज्ञामोको
 द्वैत्रापलालगिरिधारी अहो शीशधरिलेई कछु भोजन हू
 कीजिये ॥ संतन समाजमें बिछाई सेजबोलिलियो शंक अब
 कौनकी निशंकरसपीजिये । इवेत मुखभयो विषे भाव सब
 गयो नयो पांयनमें जाइमोको भक्तिदानदीजिये ४७४ रूप
 कीनिकाई भूपत्रकवरभाईहिये लिये संगतानसेन देखि
 बेको आयोहै । निरखिनिहाल भयो छविगिरिधारी लाल
 पदसुखजाल एकतबहीं चढ़ायोहै ॥ वृन्दावन आइजीव
 मुसाईसो मिलिझिली तियामुखदेखिबेकोपनलै छुड़ायो
 है । देखीकुंजकुंजलालप्यारीसुखपुंजभरी धरीउरमांझ
 आइदेश बनगायोहै ४७५ ॥

भाई अकबरने तानसेनसों पूछो सांवेरे पै सब रीके हैं तबहीं
 भीरावाई पै सब दर्शन को आयो १ ॥ पदसुखजाल ॥ पद ॥
 प्यारीके कच विथरे मानों धाराधरकी श्यामघटा उनही तामधि
 पुहुप छटिपरे जैसे बड़ीबड़ी बूंदें । तामधि मुक्ता वगपांति तरौना
 अलक बीच विजुलतासी कौंधनि नेत्र खञ्जनी पिकबोलनि
 बोलें हूंदें ॥ लालसारी पहरे हरीकोर मधवा धनुसी घूबट करि
 चली पीठ पाछे तेतरके लाल मुनियांसी कञ्चुकी तनीकी फूंदें ।
 भेहदी सों आरक्त नख बीरवहुटी ऐसी पावस चनिता मिली
 भीरा गिरिधर खुले काम प्रीति काम हारगूंदें २ ॥

रानाकीमलीनमतिदेखिवसीद्वारावति रतिगिरिधारी
 लालनिस्पहीलड़ाइये । लागी चटपटी भूपभक्तिको स्वरूप
 जानिअतिदुखमानि विप्रश्रेणीलेपठाइये ॥ बेगिलेके आवो
 मोको प्राणदे जिवावो अहो गयेद्वारधरनोदो बिनतीसुनाइ
 ये । सुनिबिदाहोनगईराइरनछोरजूपे छांडोराखोहीनली

नभईनहींपाइये ४७६ ॥ मूल ॥ आवेरेअच्छितकूर्मको
द्वारकेशदर्शनदियो ॥ कृष्णदास उपदेश परम तत्र पर
चोपायो । निर्गुणसगुणस्वरूपतिमिरअज्ञाननशायो ॥
काछबाछनिकलकमनोगागेययुधिष्ठिर । हरिपूजाप्रह्लाद
धर्मध्वजधारीजगपर ॥ पृथ्वीराजपरचौप्रगटतनशखच
क्रमंडितकियो । आवेरेअच्छितकूर्मको द्वारकेशदर्शन
दियो ११६ पृथ्वीराजराजाकीटीका ॥ पृथ्वीराजराजा
चल्योद्वारकाश्रीस्वामीसंग अतिरसरंगमखोआज्ञाप्रभु
पाइयो । सुनिकौदिवानदुखमानिनिशिकानलग्योकहीप
ग्योसाधसेवाभक्तिपुरछाइये ॥ देखियेनिहारिकैबिचारकी
जेइच्छाजोईलीजेनहींसाथजावोबातलैदुराइये । आयो
भोरभपहाथजेरिकरिठादोरह्यो कहोरहोदेशसोनिदेशन
सुहाइये ४७७ ॥

बिदाहोन गई ॥ पद ॥ हरि हरो जनकी भीर । द्रौपदी की
लाज राखी तुम बढ़ायो चीर ॥ भक्त कारण रूप नरहरि धरयो
आप शरीर । हिरण्यकश्यप मारि लीनो धरयो नाहिन धीर ॥
बूढ़ते गजराज तारयो कियो बाहर नीर । दास मीरालाल गिरि-
धर जहाँ दुख तहँ पीर १ ॥ सजन सुधि ज्यो जानौं त्यो लीजे ।
तुम बिन मेरो और न कोई कृपा रावरी कीजे ॥ द्योस न भूख
रेनि सहि निद्रा यह तन पल पल लीजे । मीरा प्रभु गिरिधर
नागर अब मिलि बिलुरन नहि कीजे २ ॥

द्वारावतिनाथदेखोगोमतीसतानकरोधरोभुजछापआ
यमनअभिलाखिये । चिन्ताजिनिकीजैतीनाबातइहाली
जैअजदीजैजोईआज्ञासोईशिरधरिराखिये ॥ आयेपहुंचा
इदूरिनैनजलपूरिवहै दहैउरभारीकहाँसंगरसचाखिये ।

बीतेदिनदोइनिशिरहेहुतेसोइभोइ गईभक्तिगिराआइवा
 णीमध्यमाखिये ४७८ अहोपृथ्वीराजकहींस्वामीहीसोंबा
 णीलही आयोउठिदौरिवाहीठौरप्रभुदेखेहैं । घम्योकह्यो
 कानधरोगोमतीसनानकरो सुनिकैअन्हायोपुनिवेनकहूंपे
 खेहैं ॥ शंखचक्रआदिछापतनसबव्यापिगई भईयोअबार
 रानीआइअवरेखेहैं । बोलेरह्योनीरमेंशरीरलैसनाथकी
 जैलीजैनाथहियेनिजभागकरिलेखेहैं ४७९ भयोजबभोर
 पुरबडोभक्तशोरपखोकख्योआनिदरशनभईभीरभारीहै ।
 आयेबहुसंतओमहंतबडेबडेधाये अतिसुखपायेदेहरच
 नानिहारीहै ॥ नानाभेदआवैहितमहिमासुनावैराजा सु
 नतलजावैजानीकृपावनचारीहै । मंदिरकरायोप्रभुरूपपध
 रायोसबजगयशगायोकथामोकोलागीप्यारीहै ४८० वि
 भ्रम्रगहीनसोअनाथवैजनाथद्वारपख्योचषचाहैमासकेति
 कबिहानेहैं । आज्ञाबारदोइचारभईइहैफेरिहौहियाकोहठ
 सारदेखिशिवपिघलानेहैं ॥ पृथ्वीराजअंगकेअंगोछासों
 अंगोछोजाइआइकेसुनाईद्विजगौरबडरानेहैं । नयोमंग
 वायोतनछाइदियोछायोनैन खुलेचैनभयोजनलखिसर
 सानेहैं ४८१ ॥

मधु भाखिये भगवान्ने बिचारी कृष्णदासजी तीन बातें देनी
 कहि गये हैं सो देखुको पाछे कृष्णदास द्वारका आवेंगे उनकी
 मनुहारि करनी होयगी स्वामी कीसी बाणी कही क्योंकि राजा
 को कृष्णदासजी की बाणी में प्रीति बहुत रही है ॥

मूल ॥ हरिभक्तनकोआदरअधिकराजवंशमेंइतकियो ॥
 लघुमथुरामेरताभक्तअतिजैमलपोषे ॥ टोडेभजननिधा

नरामचंद्रहरिजनतोषे ॥ अभैरामरसएकनेमनीमाकेभा
री । करमशीलसुरतान वीरभूपतिव्रतधारी ॥ ईश्वरअ
च्छैराजराइमलमधुकरनृपसर्वसदियो ॥ हरिभक्तनकी
आदरअधिकराजवंशमेंइतकियो ११७ टीका ॥ मेरते
बसतभूपभक्तिकोस्वरूपजानै जैमलअनूपताकीकथाक
हिआयेहैं । करीसाधुसेवारीतिप्रीतिकीप्रतीतिभई नई
एकसुनोहरिकैसेकैलड़ायेहैं ॥ नाचेमानमन्दिरसोंसुन्दर
त्रिचारीबातछातपरबँगलाकेचित्रले बनायेहैं । विविध
विछौनासेजराजतउठौनापानदानधरिसोनाजरीपरदासि
वायेहैं ४८२ ॥

नाचे मानमन्दिर ॥ कवित्त ॥ सीरे तहिलाने तामें खासे
खसखाने सींचे अतर गुलाबन सों व्याल रपटति है । भूधर
सुधारे हौद छुटत फुहारे अरु भारे भरतावदान धूप दपटति है ॥
येसे में गवन कहि कैसे करि कीजे बलि सौंध की तरंग आनि
अंग लपटति है । चन्दन किंवार घनसार के पगार चारु तऊ
आनि प्रीषम की झार भपटति है १ बिले हैं विछौना घनसार
के नथीने तामें कीने छिरकाव तर अतर गँभीरके । गुरुवे गुलाब
के फुहारे छूटै ठौर ठौर उठत झकोर तामें त्रिविध समीर के ॥
सेज अरविन्दनकी चन्दन की चोली चारु श्रीगोविंद सुमन श्रृं-
गारहैं शरीरके । इनक मनक सों बनिक बनि वैठीआजु राधिका
रवन संग भवन उसीर के २ ॥

ताकीदारुसीठीकररचनाउतारिधरेभरे दूरिचोकीआ
यभावस्वच्छताइये । मानसीविचारैलालसेजपगधारे
पानखातलैउगारडारेपाँढेसुखदाइये ॥ तियाहनभेदजानै
सोनसेनीधरीवानेदेखिकैकिशोरसोयोफिरीभौरआइये ।

प्रतिको सुनाई भई अति मन भाई वाको खिजि डर पाई जानी
 भाग अधिकाइये ४८३ टीकामधुकरशाहकी ॥ मधुकर
 शाहनाम कियोलै सफल याते । वेषगुणसारग्राह तजत अ
 सार है । ओं डले को भूप भक्त भूप सुखरूप भयो लयो पन भारी
 जाके और न विचार है ॥ कंठी धरि आवै को ऊधो इपगपी वैस
 दा भाई दुग्धघर घर डाखो भाल भार है । पाई परछालिक ही
 आजु जूनि हाल किये हिये द्रये दुष्ट प्रावंग हे दग धार है ४८४ ॥
 मूल ॥ खेमालरतन राठौरके अटल भक्ति आई सदन ॥ रैनो
 परगुण राम भजन भागवत उजागर । प्रेमी प्रेम किशोर उद
 र राजारतनाकर ॥ हरिदासनिके दास दशा ऊंची ध्वज धारी
 निर्भय अनन्य उदार रसिक यशरसना भारी ॥ रतिदशधा
 संपति संत बल सदार हत प्रफुलित बदन । खेमालरतन रा
 ठौरके अटल भक्ति आई सदन ११८ ॥

वेष गुणसारग्राही भँवरवत् सारग्राही मत्तिकावत् असार
 ग्राही दोषी भाइनि ने खरको माला तिलक दैके राजा के भेज्यो
 राजा ने बाहीको चरणोदक लियो राजाके गुरु व्यासदेव जू वहाँ
 रहे हैं यत्र पद बनाय ॥ पद ॥ भक्त विन किन अपराध सख्यो ।
 कहा कहानि असाधनि कीनी हरि बलधर्म रह्यो ॥ अधम राज
 मदमाते लैरथ सो जड़ भरत नह्यो । पट भूपटत द्रौपदी न मटकी
 हरिको शरण चह्यो ॥ मत्तसभा कौरवम विदुर ज्यों कहा कहा न
 कह्यो । शरणागत आरत गजपति की आपन चक्र गह्यो ॥ हा
 हरिनाथ पुकारत आरत कौन ओर निबह्यो । व्यास वचन सुनि
 मधुकरशाह भक्ति पथ सदा गह्यो ॥ करि मनसा कत को मुहु
 कारो । साकत मोहि न देखे भावत कह बूढो कह वारो ॥ साकत
 देखत डर लागत है नाहरहूते भारो । भक्तनसो कुबचन बोलत है
 ने कुडरेन लवारो ॥ आठे चौदशिकडो पूजत आगे अजान अ-

ध्यारो । ब्यासदास यह संगति तजिये भजिये श्याम सबारो १ ॥
 पद ॥ जो सुख होत भक्त घर आये । सो सुख होत नहीं बहु संपति
 चांझहि बेटा जाये ॥ जो सुख भक्तनिको चरणोदक गातहि गात
 लगाये । सो सुख सपनेहु नहि पइयत कोटिक तीरथ न्हाये ॥
 जो सुख भक्तनिको सुख देखत उपजत दुख बिसराये । सो सुख
 कबहुँ होत नहि कामी कामिनि उर लपटाये ॥ जो सुख होत
 भक्त वचनन सुनि नैननि नीर बहाये । सो सुख कबहुँ नपइयतु
 है घर पूतको पूत खिलाये ॥ जो सुख होत मिलत साधुनके जग
 क्षण रंग बढ़ाये । सो सुख होत न रंक ब्यासको लंक सुमेरहि
 पाये ३ असारको लेहि नहीं सारको संगहै साधुगुण हंसके ४
 जैसे मधुकरशाह कामी कृष्ण कोधी नृसिंह लोभी बामन मोही
 रामचन्द्र ऐसे अवगुणमें गुणलेहि हरिहीकी इच्छामानै नार
 दजी भक्तराज हैं पै उनहीं ने शाप दियो सनकादिक भगवान्
 रूपहैं उनहुँ ने शाप दियो पै भलोही करयो ऐसे साधु जो करै
 सो भलोही करै यह सार लै लेहि ५ ॥ कबित्त ॥ काठकी कठारी
 कै तपसी भरिवारि लेत काठको सँवारि धाम श्यामको बैठा
 चहीं । काठकी कमान शर काठके बनाइ लेत काठी काठ चढ़ि
 शूर रणजीति आवहीं ॥ काठकी सुमिरनीके साधु राम नामलेत
 काठको पपाण घिसि देवको चढ़ावहीं । काठकी अवज्ञाको कहत
 घनिअवै नाहि नात्र चढ़ि काठकीधौ तबै पार पावहीं ६ काठकी
 वस्तु महा अमोल गनिये काठ तरणतारण है ॥

मूल ॥ कलियुग भक्ति करी कमान रामरेणु कै ऋजु करी ॥
 अजर घुरय आचख्यो लोकहित मनो नीलकंठ । निंदक जग
 अनिराइ कहा महिमा जाने शठ ॥ विदित गंधर्वा ब्याह कियो
 दुःकुंत प्रमाने । भरतपुत्र भागवत सुमुख शुक देव बखाने ॥
 अस और भूपको उछै सकै दृष्टि जाहि नाहि न धरी । कलियुग
 भक्ति करी कमान रामरेणु कै ऋजु करी ११९ टीका ॥ पूर्णो

मैं प्रकाश भयो शरद समाजरास विविध विलास नृत्य राग
रंग भारी है । बैठे स भी जिदो ऊबो ल्यो रामराजारी भिभेटक
हाकीजे बिप्रकही जोई प्यारी है ॥ प्यारको विचारै न निहारे
कहुँ न कुछटा सुतारूप घटा आनरूप सेवा ज्यारी है । रही
सभाशोच आपजाइ कैलि वायलाये वेषसों दिवाये फेरै संप
तिलै वारी है ४८५ ॥

श्रुजु करी नरम करी ॥ कवित्त ॥ पनच पुरानी वहि पानी यों
धनुष आयो छुवत छैटूक भयो ताको कहा करिये । आलम अलप
अपराध साधु जिय जानि क्षमाकीजे क्षीणकीजे कित क्रोध
भरिये ॥ ससूत्रत तौ द्विजधर पूजिये न जूठवर कठिन कुठार आनि
कण्ठपर धरिये । गुरुमति लोपिये न पूजे परकोपिये न तासों
पांय रोपिये न जाके पाइँ परिये १ प्रकाश भयो ॥ रूपकी रीझसों
प्रेमपग्यो किधों प्रेमकी रीतिहि रूपसों पागी । मनसा वश में
न जगी कवि मंडन के मनसा वश मैं नके जागी ॥ लाजहि लै
कुलकान भगी औ किधों कुलकानि लै लाजहि भागी । नैनलगे
वहि मूरतिसोंरी किधों वहि मूरति नैननलागी २ ॥ नृत्य अरु
गान बतरान मुसुकान देखि विहल विकल हूँके सकल विकै
चुके । बड़े बड़े धर्मदास तेऊ लये नारिसों सँभारिहूनसकै हरि
सर्वसहू देखुके ॥ नीरभरी अँखियन अँखियन भीर अति ऊरध
अधीर गति मति बिसरै चुके । ऐसो ऐस देखिके न और ऐस
देखे अब मनके श्रवण नैन यहै पन लै चुके ३ ॥

मूल ॥ हरिगुरुहरिदासानसों रामघरनिसांचीरही ॥
आरजकोउपदेश सुतौ उरनीके धाख्यो । नवधादशधाप्री
तिआनसबधर्मविसारयो ॥ अच्युतकुलअनुरागप्रकटपु
रुषारथजान्यो । सारासारबिबेकवाततीनोंमनमान्यो ॥
दासत्वअनन्यउदारता संतनमुखराजाकही । हरिगुरुह

रिदासानसौरामघरनिसांचीरही १२० टीका ॥ आयेम
धुपुरीराजारामअभिरामदोल दामपैनराख्यो साधुविप्रभू
गतायेहैं । ऐसेयेउदारराहखरचसंभारनाहिं चलिबोवि
चारभयोचूरादीठआयेहैं ॥ मुद्राशतपांचमोलखोलिति
याआगेधरेदीजेबेचिगयेनाभाकरपहिराये हैं । पतिकोबु
लाइकहीनकिदेखिरीझेभीजे काढिकैकरजपुरआयेदपठा
येहैं ४८६ ॥ मूल ॥ अभिलाषउभैखेमालकेते किशोरपूरा
किया ॥ पांयननूपुरबांधिनृत्यनगधरहितनाच्यो । रामक
लशमनरलीशीततातेमहिंवांच्यो ॥ बाणीविमलउदारभ
क्तिमहिमाविस्तारी । प्रेमपुंजसुठिशीलविनयसंतनरुचि
कारी ॥ सबसृष्टिसराहैरामसुतलघुबैसलछनआरजलि
या । अभिलाषउभैखेमालकेतेकिशोरपूराकिया १२१ ॥

हरि गुप्त दासन सों सांचो होइ भक्ति तबहीं सांची जैसे प्रवा-
हनोतौ सांची भक्तिमें तौ सबही कहै हैं आप बहुमोल बख्र पहिरै
हरिको थोड़े सोल लालजूको अथवा भजन करिकै फल चाहै
सो सांचो नहीं और भजन करते कछु विघन होइ तब हरिको
देइ तौ सांचोही भजन करिकै भक्तही चाहै सांचो किशोर १ ॥
कुण्डलिया ॥ जो पीसंती फाकियो अगर सुउत्तम चालि । मारि
वफाती खीचरी यह घर आज न कालि ॥ यह घर आज न कालि
धौलधर धूवां कैसो । तन तुपार को तार ताहि तर थिर कर
वैसो ॥ स्वपने सोना पाइ कृपणता कर धन जोरयो । पुनि जागे
ते कहौ प्रात काको ऋण तोरयो २ ॥

टीका ॥ खेमालरतनतनत्यागसमैअश्रुपात बातसुत
पूछेअजनीकेखोलिदीजिये । कीजेपुण्यदानबहुसंपतिअ
मानभरीधरीहियेदोईसोई कहीसुनिलीजिये ॥ विविधव

डाईमेंसमाईमतिभईयेन नितहीबिचारअबमनपरखीजि
ये । नीरभरिघटशीशधरिकेनलायोऔरुनूपुरनिबांधिनृ
त्यकियोनाहिंछीजिये ४८७ रहेचुपचापसबैजानीकामआ
पहीकोबोल्थोयोकेशोरनातीआज्ञामोकोदीजिये । यही
नितकरोनहिंठरौंजौलौंजीवैतन मनमैहुलासउठिझाती
लाइलीजिये ॥ बहुसुखपायोपाये वैसेहीनिबाहेपनगायेगु
णलालप्यारीअतिमतिभीजिये । भक्तिबिसतारकियोबैस
लघुभीज्योहियो दियोसनमानसंतसभासवरीभिये ४८८
मूल ॥ खेमालरतनराठौरकीसुफलबेलिमीठीफली ॥ हरी
दासहरिभक्तिभक्तमंदिरकोकलसो । भजनभावपरिपकह
दयभागीरथिजलसो ॥ त्रिधाभांतिअतिअनन्यरामकीरी
तिनिबाही । हरिगुरुहरिबलभांतितिनहिंसेबाहदगाही ॥
पूर्णइंदुप्रसुदितउदधित्योदासदेखिबाढैरली । खेमालर
तनराठौरकीसुफलबेलिमीठीफली १२२ ॥

खीजिये ॥ दोहा ॥ जबलगि रँगहो बिन रँगयो हरि रँग-साहिं
मँजीठ ॥ अब मूरखमाथोधुने जबरँगदीनीपीठ १ ॥ मनवरूद त-
नजालगी तुलसी बरकन्दोज ॥ प्रेमपलीती दगगई निकसी आहि
अवाज २ ॥ प्रेमविना हरि नामिलै कोटि यतनकरि कोइ ॥ जैसे
गुण बिन रूपजल आवै हाथ न सोइ ३ ॥

मूल ॥ हरिवंशचरणबलचतुरभुजगौडदेशतीरथकि
यो ॥ गायोभक्तिप्रतापसबहिदासत्वददायो । राधाबल
भभजनअनन्यतागरबवदायो ॥ मुरलीधरकीछापकवित
अतिहीनिरदूषण । भक्तनकीअंधिरेणुवहैधारीशिरभष
ण ॥ सतसंगमहाआनंदमैप्रेमरहितभीज्योहियो । हरि

वंशचरणबलचतुर्भुज गौड़देशतीरथकियो १२३ ॥

गायोभक्ति प्रताप दिखायो जैसे निपटने ॥ छप्यो इवपंच प-
हिरि यज्ञोपवीत करि कशन गहत जब । करम करै अघपरै डरै
पुनि विश्व द्रास तब ॥ पुनि ललाट पट तिलकदेह अरु तुलसि
मालधरि । हरिके गुणउच्चरै पाय कुलकर्महि परिहरि ॥ चतुर्भुज
पुनित अंत्यजभयो मुरलीधर शरणौ लियो । तिहि पाछे किनि
लागिये जिन लोह पलटि कंचन कियो १ ॥

टीकास्वामीचतुर्भुजकी ॥ गौड़वानदेशभक्तिलेशहून
देख्योकहूंमानुषकोमारिइष्टदेवकोचढ़ायोहै । तहांजाय
देवताकोमंत्रलैसुनायोकान लियोउनमानिगांवसुपनसु
नायोहै ॥ स्वामीचतुर्भुजजूकेवगितुमदासहोहुनातोहोहि
नाशसबगांवभज्योआयोहै । ऐसेशिष्यकियेमालाकंठी
पाइजियेपांवलियेमनदियेआँअनंतसुखपायोहै ४८९ ॥

जहां जाय देवताको मंत्रलै सुनायो ॥ कवित्त ॥ छलकति
छलतजि गोकुलकी गैलभजी कुबिजा चुरैलपगी मनबचकायहै ।
आप हैं सुखारी हमैकरत भिखारी प्रीति पाछिली बितारी येहो
यह कछू न्यायहै ॥ अहो घनश्याम यह जीति ब्रज वास मनलहै
न विश्राम मरिही कौन ज्याय है । मरण उपाय यहै देखे सुख
पाई जोई काहू कलपायहै सो कैसे कल पायहै १ ॥

भोगलैलगविंनानासंतनिलडविं कथाभागवतगावैभा
वभक्तिबिसतारिये । भज्योघनलैकैकोऊधनीपाछेपह्योसो
ऊआनिकैदबायोबैठिरह्योननिहारिये ॥ निकसीपुराणवा
तकरैनयोगातदिक्षाशिक्षासुनिशिष्यभयोगयोयोपुकारि
ये । कह्योयाजनममेंनलियोकछुदियोफारो हाथलैउबारो
प्रभुरीतिलागीप्यारिये ४९० राजारूठमानिकह्योकरोबि

नप्राणयाक्रोसाधुयेविराजमानलैकलंकदियोहै । चलेठौर
मारिबेकोधारिबेकोसकैसे नैनभरिआयेनीरवोल्योधन
लियोहै ॥ कह्योनुपसांचोहैकैभूठोजिनिहूजैसंत महिमा
अनंतकहीस्वामीऐसोकियोहै । भपसुनिआयोउपदेशम
नभायोशिष्यभयोनयोतनपायोभीजगयोहियोहै ४९१प
किरह्योखेतसंतआयेकरितोरिलेत जितेरखवारैमुखसेत
शोरकियोहै । कह्योस्वामीनामसुन्योकहीबडोकामभयोय
हतोहमारोसोईआपसुनिलियोहै ॥लैकैमिसटान्नआपसुमु
खबखानकियोलियोअपनाइआजभीज्योमेरोहियोहै । लै
गथोलिवाइनानाभोजनकराइभक्ति चरचाचलाइचाइहि
तरसपियोहै ४९२ मूल ॥ चालककीचरचरीचहुँदिशि
उदधिअंतलोंअनुसरी ॥ शक्रकोपिसुठिचरितप्रसिधपु
निपंचाध्याई । कृष्णरुक्मिणीकेलिरुचिरभोजनविधि
गाई ॥ गिरिधारणकीछापगिराजलधरज्योगाजै । संतशि
खंडीखंडहृदयआनंदकेकाजै ॥ जाड़ाहरणेजगिजाड़िता
कृष्णदासदेहीधरी । चालककीचरचरीचहुँदिशिउदधि
अंतलोंअनुसरी १२४ ॥

निकसी पुराण वात ॥ भागवते ॥ शृण्वतांस्वकथांकृष्णःपुण्य
श्रवणकीर्तनः ॥ हृद्यन्तःस्थोह्यभद्राणिविधुनोतिसुहृत्सताम् १ ॥
दूसरो जन्म कैसे भयो ॥ आगले ॥ कृष्णमन्त्रोपदेशेनमायादूरमु-
पागता ॥ कृपयागुरुदेवस्यद्वितीयजन्मकथ्यते २ नारदपञ्चरात्रे ॥
श्लोकः ॥ पितृगोत्रायथाकन्यास्त्रामिगोत्रेणगोत्रिका ॥ श्रीकृष्ण
भक्तिमात्रेणाऽच्युतगोत्रेणगोत्रिकः ३ दियोफारो ॥ दोहा ॥ सा-
दनहूँ धनसार है जेठ मास धनसार ॥ वनहूँ में धनसार है भूठे
कन धनसार १ ॥

विमलानंदप्रबोधावंशमैसंतदाससीवांधरम ॥ गोपि
नाथपदरागभोगछपनभुजाये । पृथुपद्धतिअनुसारदेव
दंपतिदुलराये ॥ भगवतभक्तसमानठौरद्वैकोबलगायो ।
कवितशूरसोमिलतभेदकछुजातनपायो ॥ जसजनमकर
मलीलायुगतिरहसिभक्तिभेदीमरम । विमलानंदप्रबो
धावंशमैसंतदाससीवांधरम १२५ टीका ॥ बसतनिमा
ईग्रामश्यामसोलगाईमतिऐसीमनआई भोगछपनलगा
येहैं । प्रीतिकीसचाईयहजगमेंदिखाईसेवें जगन्नाथदेव
आपरुचिसोंजिमायेहैं ॥ राजाकोस्वपनदियोनामलैप्र
कटकियोसंतहीकेगृहमेंतेजैवोंयोंरिभायेहैं । भक्तिकेअ
धीनसबजानतप्रवीनजनऐसेहैं रंगीनलालठौरठौरगाये
हैं ४९३ ॥

युगत तापै चना गेहूं के न्याय को दृष्टांत ॥ प्रीतिके सचान
जगन्नाथ को छप्पनलगा हैं अपने ठाकुर को गोपीनाथ को मैं
हूं लगाऊं घरको धनसबलगायो कर्जहूकाढ़यो तब बिचारो कैतो
छप्पनहीं भोग लगाऊं नहीं तो सबही उड़ाऊं सो भगवान् ने
चोप करिकै राजा को स्वप्न दिखायो नाम ख्यात कियो भूँठो
पन होतो छप्पन भोगकी नाई चनाहू न मिलते १ भक्ति दियो
प्रावै उद्यम क्यों कियो सो वृत्तान्त हमने न जान्यो ५ ॥

मूल ॥ श्रीमदनमोहनसूदासकीनामशृंगलाजुरिअ
टल ॥ गानकाव्यगुणराशिसुहृदसहचरिअवतारी । राधा
कृष्णउपासिरहसिसुखकेअधिकारी ॥ नवरसमुख्यशृंगार
विविधभांतिनकरिगायो । वदनउच्चरतबेरसहसपायँनहै

धायो ॥ अंगीकारहि की अवधियह ज्यों आख्या भ्राताज
 मल । श्रीमदनमोहनसूरदासकी नामश्रृंखलाजुरि अटल
 १२६ टीकासूरदासमदनमोहनजूकी ॥ सूरदासनामनेन
 कंज अभिरामफूले भूले रंगपीकेनीके जीके और ज्याये हैं । भ
 येसो अमीनयोंसंडीलेकेनवीनरीति प्रीतिगुरुदेखिदाम
 बीसगुणेलाये हैं ॥ कहीपूत्रापवै आपमदनगुपाललालप
 रेप्रेमख्याललादिझकरापठाये हैं । आयोनिशिभयोइवाम
 क्रियोअज्ञायोगलैके अबहींलगावोभोगजरिफिरिपाये हैं
 ४९४ पदलैवनायोभक्तिरूपदरशायोदूरि संतनकीपन
 हींकोरत्नकहाऊंमें । काहूसीखिलयोसाधुलियोचाहैपर
 चेकोआयेद्वारमन्दिरकेखोलिकहीआऊंमें ॥ रह्योवैठिजा
 इजतीहाथमेंउठायलीनी पूरीआशमेरीप्रभुनिशिदिनगा
 ऊंमें । भीतरबुलावैश्रीगुसाईंबारदोईचारिसेवासौंपीसा
 रिक्छोजनपदध्याऊंमें ४९५ ॥

शृंगार ॥ कवित्त ॥ लाल भये लटू भट्ट ठाढ़े हैं अटाके नीचे
 लालची रह्यो लुभाइ टकीसी लगाइकै । गोकुल की बधू विधु
 मुख के बिलोकिये को नीकी एक तान उठ्यो वांसुरी बजाइकै ॥
 सुनि धुनि वाके श्रवणनिपरी काशीराम अति अकुलाइकै करेखे
 भांकी आइकै । खोलिकै किंवारी ब्रजनारी तहां देखै भांकि
 गिरि परयो है गोपाल फिरिकीसी खाइकै १ ॥ पथिकनिहेरि
 पिय पाली रूप धारि दृग उरध के चारी पान करै लखे वनको ।
 बिरल सुधार करि अँगुरिन धारि पल गतिहि निवारि भावै अं
 तरन छनको ॥ त्योंही वह नारि प्रीति रीति उर धारि छाड़ि
 असुन तवारि देखी प्रेम दुहुमनको । सुरति निहारि यह कीनों
 निरधारि छाड़ै तन तरवारि देखो प्रेम दुहुयनको २ ॥ पद ॥ सखी

के पाछे ठाढ़ी वदन नीको लागत मानो कंचन गिरिते उदय राशि नवसित किये । सोहतरी साथे विंदुला कुमकुम को दिये कर दीप लिये ॥ नीलांबर सजनी रजनी राजत कुरंग नयनी राकारी संगलिये । सूरदास भदनमोहनके लोचन आतुर चकोर न तृप्तहोत नाहिं मधु पान किये ३ ॥ कवित्त ॥ चरण चिताय नख चंद्रिका पै आइ परे उछरि निहारि नाभि त्रिबली झकोर है । उरज उतंग पुनि पुनि पुनि रंग करि ढरि काटि ओर मुख छत्रां वैनी छोरहै ॥ पाइ रंगभूमि रस भूमि रीभ खलरच्यो मच्यो छवि पाइ मन डारत सरोर है । लाड़िली को रूप अति लाड़िलो में देख्यो आली लाल दृग गेदन सों खेलै निशि भोरहै ४ दृष्टांत पोस्ती की रेवरी को पदलै बनायो ॥ पद ॥ मेरे गति तूही अनेक तोष पाऊं । चरण कमल नख मणि परि विषय सुख बहाऊं ॥ घर घर जोड़ी लै हरि तौ तुम्हें लजाऊं । तुम्हरो कहाइ कहाँ कौनको कहाऊं ॥ तुमसे प्रभु छांड़ि काहि दीननको धाऊं । शीश तुम्हें नाइकै अब कौनको नवाऊं ॥ कंचन उर हार छांड़ि कांच को बनाऊं । शोभा सब हानि करौं जगत को हँसाऊं ॥ हाथी ते उतरि कहा गदहा चढ़ि धाऊं । कुमकुमको लेपछांड़ि काजर मुँह लाऊं ॥ कामधेनु घरमें तजि अजाको दुहाऊं । कनक महल छांड़ि क्यों परनकुटी छाऊं ॥ पाइँनि जोपै लौ प्रभु तौ अनत जाऊं । सूरदास भदनमोहनलाल गुण गाऊं ॥ संतन की पानहीं को रक्षक कहाऊं ५ ॥

पृथ्वीपतिसंपतिलैसाधुनखवाइदईभईनहींशंकर्योनि शंकरंगपागे हैं । अयेसोखजानोलेनमानोयहबातअहो पाथरलैभरेआपआधीनिशिभागे हैं ॥ रुक्मालिखिडारेह मगटकेयेसंतननेयातेहमसटकेहैचलेजबजागे हैं । पहुँचे हुजूंभूपखालिकैसँदूखदेखे पेखेआंककागदभैरीझेअनु रागे हैं ४६६ लेनकोपठायेकहीनिपटरिझायेहमेंमनमेंन

लायेलिखीवनतनडाख्यो है । टोडरदिवानकह्योधनकोवि
 रानकियोलावो रेपकरिमूढफेरिकैसेभाख्यो है ॥ लैगयेहुजर
 नृपबोल्योमोसोंदूरिराखो ऐसोमहाक्रूरसोंपिदुष्टकष्टधा
 ख्यो है । दोवैलिखिदीनोंअकबरदेखिरीझिलीनोजावोवा
 हीठौरतोपैद्रव्यसबवाख्यो है ४९७ ॥

रुक्मा ॥ दोवैछंद ॥ तेरह लाख संडीलै उपजे सब साधन
 ॥ मालि गटके ॥ सूरदास मदनमोहनोजी आधिराति को सटके १ ॥
 वनत न डारख्यो है बड़े बड़ेही की चाकरी करें तब बादशाह की
 करें अब कृष्णकी करें तापै चोरको दृष्टांत ॥ दोहा ॥ इक तम
 अधियारो करै शून्य दई पुनि ताहि ॥ दश तमते रक्षाकरौ दिन-
 मणि अकबर शाहि १ ॥ जावो वाही ठौर ॥ कवित्त ॥ सेइ देखे
 साहब सँभारि देखे बाम लोनी सोइ देखे भोरलौं सुगंध भूरि
 सों भरे । खाइ देखे पान पकवान पुंज बार बार पौढ़ि देखे
 तिया संग निशि खलिका परे ॥ चढ़ि देखे हाथी ह्य हीरा उर
 धारि देखे भूषण विविध भांति क्रीट मणि सों जरे । मन न
 सिरानो किते बिषै रस लानो मंद ताते बार बार क्यों न बोल
 तू हरे हरे २ ॥

आयेवृन्दावनमनमाधुरीमेंभीजिरह्योकह्योसोईपदसु
 नोरूपरसरासहै । जादिनप्रकटभयोगयोशतयोजनपै
 जनपैसुनतभेदबाटीजगप्यासहै ॥ सूरद्विजद्विजतिजमह
 लटहलपायचहलपहलहियेयुगलप्रकासहै । मदनमोह
 नजूहेइष्टदृष्टमहाप्रभुअचरजकहाकृपादृष्टि अनायासहै
 ४९८ मूल ॥ कहुकात्यायनिकेप्रेमकीबातजातकापैकही ॥
 मारगजातअकेलगानरसनाजूउचारौ । तालमृदंगीवृक्ष
 रीभिअम्बरतहँडारौ ॥ गोपनारिअनुसारिगिरागदगद

श्रीवैसी । जगप्रभवतेदूरिअजापरसेनहिंलेसी ॥ भगवा
नरीतिअनुरागकीसंतसाखिमेलीसही ॥ कहुकात्यायनि
केप्रेमकीघातजातकापैकही १२७ ॥

उरझो है नीकी नकवेसरि सों पीतपट वनमाल बीच आइ
उरभे हे दोऊ जन । नैननसों नैन बैन बैनन उरभिरहे चटकीली
छवि देखे लपटात श्याम घन ॥ होड़ाहोड़ी नृत्य करै रीभ रीभ
अकभरै ततथेई ततथेई कहत भगनमन । सरदास मदनमोहन
रास मंडल में प्यारी केर अचल ले पोंछत है श्रम कन १ ॥ का-
त्यायनी गौड़देश की राजकन्या ॥ दशमे ॥ कस्यांचितस्वभुज
न्यस्वचलत्याहापराननु ॥ कृष्णोहंपश्यतगतिखलितामितितन्म
नाः २ सवैया ॥ खोइ गई बुधि सोइ गई बुधि रोइ हँसे उन-
मान जग्यो है । मौन यहै चक चौकि रहे चलि वात कहै तन
दाह दग्यो है ॥ जानि परे नहिं जानि तुम्हें लखि ताहि कहा
कछु आहि पग्यो है । शोचतही पगिये घन आनंद हेत लग्यो कि
धौं प्रेत लग्यो है ३ ॥ पात्र जोई ॥ श्लोक ॥ यानैर्वापादुकाभिर्वा
गमनंभगवदृष्टे ॥ देवोत्सवाद्यसेवाचअप्रणामस्तदप्रतः १ ॥

श्रीकृष्णविरहकुंतीशरीरित्योमुरारितनत्यागियो ॥ विदि
तबिलोदागांवदेशमुरधरसबजाने । महामहोखौमध्यसं
नपरिषदपरवाने ॥ पगनघूंघूरुबांधिरामकोचरितदिखा
यो । देशीशारंगपाणिहंसतासंगपठायो ॥ इतउपमाऔर
नजगतमेंपृथाविनानाहिंनवियो ॥ श्रीकृष्णविरहकुंतीश
रीरित्योमुरारितनत्यागियो १२८ टीका श्रीमुरारिदास
जीकी ॥ श्रीमुरारिदासरहेराजगुरुभक्तदास आवतसना
नकियेकानधुनिकीजिये । जातिकोचमारकरैसेवासोंउचा
रकहेप्रभुचरणामृतकोपात्रजोईलीजिये ॥ गयेधरमांभ

वाकेदेखिउरकांपिउठोलायोदेवौहमें अहोपानकरिजीजि
ये । कहीमेंतोनूनतुच्छबोलेहमहूँतेसुच्छ जानेकोऊनाहि
तुम्हेंमेरीमतिभीजिये ४६९ बहैदृगनीरकहैमेरीवड़ीपीर
भई तुममतिधीरनहींमेरेयोगताई है । लियोईनिपटहठ
बड़ेपटसाधुतामेंश्यामैप्यारीभक्तिजातिपांतिलैवहाई है ॥
फैलगईगांववाकोनामलैचवावकरै भरैनृपकान सुनिवा
हूनसुहाई है । आयोप्रभुदेखिवेकोगयोवहरंगउड़ि जा
न्यासोप्रसंगसुनो वहैवातझाई है ५०० ॥

सन्निक्दासतिनामवैभवकथाश्रीशेषयोभिन्नधीरश्रद्धाश्रुतिशाल
देशिकगिरांनामन्यर्थवादभ्रमः ॥ नामन्यस्तीतिनिषिद्धवृत्तिविहित
स्यागौचधर्मान्तरैस्साम्यनामनिशंकरस्यचहरेर्नामापराधादश
काशेखंडे ॥ ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रोवायदित्तेतरः ॥ विष्णुभ
क्तिसमायुक्तोक्षेत्रस्त्वोत्तमोत्तमः २ ॥

गयसबत्यागिप्रभुसेवाहीसौरागजिन्हें नृपदुखपाणि
गयोसुनीयहवातहै । होतहोसमाजसदाभूपकेवरषमांझ
दरशनकाहूहोतमानोउतपातहै ॥ चलैहलिवाइबेको
जहांश्रीमुरारिदासकरीसासटांगराशि नैनअश्रुपात है ।
सुखहूनदेखेयाकोबिसुखकेलेखेअहो पेखेलोगकहैयहैग
रुशिष्यख्यातहै ५०१ ठाढ़ोहाथजोरिमतिदीनतामेंवो
रिकीजेदंडमोपैकोरियोबहोरिमुखभाखिये । घटतीनमेरी
आपकृपाहीकीघटतीहै बढ़तीसीकरीतातेनूनतांईराखि
ये ॥ सुनकेप्रसन्नभयेकहैलैप्रसंगनयेवालमीकिआदिदैदै
नानाविधिसाखिये । आयेनिजग्रामनामसुनिसबसाधुआ
येभयोईसमाजवैसोदेखिअभिलाखिये ५०२ आयेबहग

एीजननृत्यगानछाईधुनि ऐपैसंतसभामनस्वामीगुणदे
खिये । जानिकैप्रब्रीनउठेनूपुरनवीनवांधिसप्तसुरतीनग्रा
मलीनभयेपेखिये ॥ गायोरधुनाथजूकोधनकोगननसभै
तासंगगमनप्राणचित्रसमलेखिये । भयोदुखराशिकहापै
येश्रीसुरारिदासगयेशमप्रासयेतौहियेअवरेखिये ५०३ ॥

गये सब त्यागि दोहा ॥ साधक सिद्धको एकमत जित चालै
तित सिद्धि ॥ हरिजन चिंता ना करै सुख आगे नवनिद्धि १ गुरु
शिष्यख्यातहै ॥ गुरु निर्मोही चाहिये शिष्य न छांडे प्रीति ॥ स्वार-
थ छोड़ै हरि मिलै यहै भजनकी रीति २ फल टूटयो जल भें
परयो खोजीमिटी न प्यास ॥ गुरुतजिकै गोविंद अजे निश्चय
नरक निवास ३ ॥ सतस्वर ॥ कवित्त ॥ केकीकीकुहक सों खरिज
सुरजानि लीजे चातक के बोलसोंअपभसुरलेखिये ॥ उचरतछा
गजानि लीजे गंधारसुर ऊरजके बोलसुर मध्यमही पेखिये ॥ को
किलाके बैन सुर पंचमलखीजे योहीहीसत तुरंग सुर धैवल विशेष
खिये । धनकी गरजसों निषाद सुरजानि लीजे कहै शिरदार सुर
कस्यो विशेषखिये ४ ॥

मल ॥ कलिकुटिलजीवनिस्तारहितवालमीकितुल
सीभयो ॥ त्रेताकाव्यनिबन्धकरीशतकोटिरमायन । इक
अक्षरउद्धरैब्रह्महत्यादिपरायन ॥ अबभक्तनसुखदेनब
दुरिलीलविस्तारी । रामचरणरसमत्तरहतअहनिशि
अतधारी ॥ संसारअपारकेपारकोसुगमरूपनौकालयो ।
कलिकुटिलजीवनिस्तारहितवालमीकितुलसीभयो १२९

एकअक्षर ॥ रामायणे ॥ चरितरघुनाथस्व शतकोटिप्रविस्तर
म् ॥ एकैकमक्षरपुंसांमहापातकनाशनम् ॥ १ रामचरण दोहा ॥ पल
कनिमगनाधिध्यानधारेवरुणीजटावनाय । नैनदिगन्धरद्वैहेरूपवि
भूतिजगय ॥

टीकातुलसीदासजूकी ॥ तियासोंसनेहबिनपूछेपिता
गेहगईभूलीतुधिदेहभजेवाहीठौरआयेहैं । बधूअतिलाज
भईरिससोंनिकसगई प्रीतिरामनईतनहाड़चामछायेहैं ॥
सुनीजबवातमानोह्वैगयोप्रभातवह पाछेपछितायतजि
काशीपुरीघायेहैं । कियोतहांवासप्रभुसेवालैप्रकाशकीनों
लीनोंदृढभावनेमरूपकेतिसायेहैं ५०४ ॥

तियासोंसनेह ॥ दोहा ॥ सकल लोकअपवशकिये अपनेही
बलवान ॥ सबलासोंअबलाकहैं मूरखलोग न जान ३ वाहीठौर
आयेहैं ॥ दोहा ॥ तरसतहैं तुवमिलनबिन दर्शनबिनयेनैन ॥
श्रुतितरसैतुववचनबिन सुनितरुणीरसपैन ४ बढेनेहतुमसोंल-
ग्याऔरनकलसुहाइ ॥ तुलसीचन्दचकोरज्योंतरफतरैनिविहाइ ५
कहांगयोमनभावतो सदाःरहैमनमाहि ॥ देख्योचाहैनेनभरिवात
निदयोपतियाहि ६ सेवा ॥ श्लोक ॥ गोप्यःकृष्णवर्नयातेतमनुद्भुत
चेतसः ॥ कृष्णलीलांप्रगायन्त्योनिन्युर्दुःखेनवासरान् ७ ॥

शौचजलशेषपाइभूतहुबिशेषकोलु बोल्योसुखमानि
हनूमानजूबतायेहैं । रामायणकथासोरसायनहैकाननको
आवतप्रथमपाछेजातघृणाछायेहैं ॥ जाइपहिंचानिसंगच
लेउरआनिआये बनमध्यजानिघाइपाइलपटायैहैं । करै
सीतकारकहीसकोगेनटारिमैतो जानेरससाररूपधत्यो
जैभेगायेहैं ५०५ ॥ मांगिलीजैबरकहीदीजैरामभूपरूप
अतिहीअनुपनिबनैनअभिलाखिये । कियोलैसकेतवाही
दिनहींसोंलाग्योहैलआईसोईसमैचेतकविद्वविचाखिये ॥
आयैरघनाथसाथलक्ष्मणचदेघोड़े पटरंगबारेहरेकैसे म
नशाखिये । पाछेहनूमानआयेबोलेदेखप्राणप्रयारेनेकुननि
हारेमैतोभलेफेरिभाखिये ५०६ ॥

शौचजल ॥ श्रुती ॥ शौचान्तेचपदान्तेचतर्पणान्तेतथैवच ॥ ह
स्ताद्धस्तेह्यधोहस्तेपञ्चतोयंनुरासमम् १ भूतविशेषदेवतनमेंनीच
हैं २ निहारिसेतो ॥ पद ॥ लौचन रहेवरीसोइ । जानिबुझिअकाज
कीनोंदयोभुवमेंगोइ ॥ अन्नगतिजुतेरीगतिनजानोरह्योयुगमेंसोइ ।
सवैरूपकीअन्नधिमेरेनिकसिगचीढिगहोइ ॥ कर्महीनहिपाइहीरा
दयोपलमेंखोइ । तुलसीदासजुरामबिहुरैकहोकैसीहोइ ३ ॥

हत्याकरिबिप्रएकतीरथकरतआयो कहैमुखरामभि
क्षाडारियेहत्यारेको । सुनिअभिरामनामधाममें बुलाइ
लियोदियोलैप्रसादकियोशुद्धगायोप्यारेको ॥ भईद्विजस
भाकहिबोलिकैपठायोआप कैसेगयोपापसंगलैकैजैयन्या
रेको । पोथीतुमबांचोहियेभावनहींसांचोअजुतातेमति
कांचोदूरिकरैनअंध्यारेको ५०७ देखीपोथीबांचनामम
हिमाहूकहींसांच ऐपैहत्याकरैकैसेतरैकहिदीजिये । आवै
जोप्रतीतिकहीयाकेहाथजैवैजब शिवजकोबैलतबपंगति
मेंलीजिये ॥ थारमेंप्रसाददियोचलेजहांपानकियो बोलेआ
पनामकेप्रतापमतिभीजिये । जैसीतुमजानोतैसीकैसेकै
बखानोअहो सुनिकैप्रसन्नपायोजैजैध्वनिरीझिये ५०८ ॥

सुनिअभिराम नाम ॥ इलोक ॥ रामरामेतिरामेतिरमेरामे
मनोरमे ॥ सहस्रनामतातुल्यरामनामवरानने ४ अंध्यारेको ॥
पद ॥ पढ़त पढ़ावतसामनमान्यो । कौन काज गोविंद भक्ति
बिन जो पुराणकहि जान्यो ॥ घरघर भटकि फिरे कामिनि लगे
गालफटक धन आन्यो । निशिदिन विषय स्वाद रस लंपट तजि
पांचनि को कान्यो ॥ स्वपनेहू हरि किये न अपने हित हरिबश
बखान्यो । सुने न वचन साधुके मुखते चरण पखारि न अचया
पान्यो ॥ सारासार त्रिवेक न जान्यो मनसंदेह न मान्यो । दया
हीनता दासभाव बिन द्यास नहीं पहिचान्यो १ ॥ न्याये ॥ य-

स्यनास्तिस्वयंप्रज्ञाशास्त्रंतस्यकरोतिक्रिय ॥ नयनाभ्यांदिहीनस्यद
र्पणःकिंकरिष्यति २ नाजकेप्रताप ॥ एव ॥ अद्भुतरामनामद्वैअंक ।
धर्मिकुर के पावन द्वै-दल मुक्ति वधूताटक ॥ सुनिसनवरके पंग
उभय वर जपउड़ि ऊरयजात जनम सरण काटनको कांती
क्षण में वितव्रतपात ॥ अंधकार अज्ञान हरणको रवि राशि युगल
प्रभात । भक्तिज्ञान वीरजवर बोये प्रेम निरंतरभात ३ ॥

आयेनिशिचोरचोरीकरनहरनघन देखेइयामघनदा
थचापशरलिये हैं । जबजबआवेनापलायडरपावेरतोअ
तिमडरारैपैवलीदूरिकिये हैं ॥ भोरआयपुछेअजूसांय
रोकिशोरकौनसुनिकरिभौनरहेआंसडारिदियेहैं । दईसो
लुटाइजानीचौकीरामगइदई लईउन्होंदिक्षाशिक्षायुद्ध
भयेहिये हैं ५०९ किशोतनविप्रत्यागलागचलीसंगति
यादूरिहीतेदेखिक्रियाचरणप्रणामहैं । बोलैयोंसुहागवती
मख्योपतिहोहुसतीअवतोनिकसिगईजाहुसेचोरामहै ॥ वो
लिकैहुटुम्भकहीजांपैभक्तिकरोसही गहीतवधातजीवदि
योअभिरामहै । भयेसवसाधुव्याधिमेटीलैविमुखताकी
जाकीवासरहैतौनसूभेइयामधामहै ५१० ॥

डरपावै मारे क्यों नहीं सद्गति कस्यो चाहै ॥ श्लोक ॥ येये
हताशचक्रधरेणराजंश्लोक्यनाथेनजनाईनेन ॥ तेतेगतादिष्णुपुरी
नरेन्द्राःक्रोधोपिदेवस्यवरेणतुल्यम् १ ॥ गतिहोइजैसेचनाचाविके
पेटभरै एक मोहनभोग खाइके सो तुलसीदास को उपदेश मो-
हनभोग भगवान्के वाण असोव भूठो क्यों परयो समुद्रहू पे
वाण भूठो न परयो मारवाइ में डारयो फेरि कैसो इहां चारन
की अविद्या को मारयो २ लुटाइये ॥ कुंडलिया ॥ सुखसोवै नींद
कुम्हारिया चार न मटियालैहि । चोरन मटियालैहि भजन सध

हाथहोय मन ॥ लगेनअहडोतहां रहै सुसदीसंततजन । इंद्रिआ-
राम न होइ सकल मिथ्या करि जानै । हरि लीला रसपान मत्त
निर्भय गुण गानै ॥ अगर बसत जो रामपद जमहि चुनौती देहि ।
सुखसोवै नोद कुम्हारिया चौर न मटिया लेहि ३ ॥

दिल्लीपतिवादशाहअहिदी पठायेलेनताकोसोसुनायो
सूबैविप्रज्यायोजानियो । देखिबेकोचाहेनीकेसुखसोनि
वाहेआइकहीबहुविनैगहीचलेमनआनिये ॥ पहुँचेनृपति
पासआदरप्रकाशकियो दियोउच्चआसनलेबोल्यामृदुवा
निये । दीजेकरामातिजगख्यातसबमातकिये कहीझंठीबा,
तरकरामपहिँचानिये ५११ देखोरामकोसोकहिकैदकियेके
येहियेहूजियेकृपालहनुमानजदयालहो । ताहीसमैफैलिग
येकोटिकोटिकपिनयेलोचैतनखैचैचीरभयोयोविहालहो ॥
फोरेकोटमारैचोटकियेडारैलोठपोटलीजेकौनओटजाइमा
नोप्रलैकालहो । भईतबआखेंदुखसागरकोचाखेंअबवेई
हमैराखेंभाखेंवारो धनमालहो ५१२ आइपाइलियेनुम
दियेहमप्राणपावेंआपसमभावें करामातिनेकलीजिये ।
लाजदबिगयोनृपतबराखिलियोकह्यो भयोघररामजूकोबे
गिलोडिदीजिये ॥ सुनितजिदियोऔरकरयोलेकैकोटिन
यो अबहंनरहैकोऊवामेंतनखीजिये । काशीजाइवृन्दा
वनआइमिलेनाभाजूसो सुन्योहोकवित्तनिजरीझमति
भीजिये ५१३ ॥

दियोउच्चआसन ॥ दोहा ॥ ब्यासबड़ाई जगतकी कूकरकी
पहिचानि ॥ प्यारकियेसुखचाटई बैरकिये तनहानि १ ॥ हूजिये
पद ॥ ऐसीतुम्हें न चाहिये हनुमान हठीले । साहब सीतारामसे
तुमसे जुवसीले ॥ तेरेदेखत सिंहके शिशु मेडकलीले । जानतहू

कलि तेरेहू मनो गुणगणकीले ॥ हांकलुनत दशकंधके बंधनभये
 ढाले । सोबलगयो किधौंभयो गहरगहाले ॥ सेवकको परदाफटे
 तुमसमरथ शीले । अधिक आपते आयनो सुनमानसहीले ॥ यह
 गति तुलसीदासकी देखिसुयश तुहीले । तिहूनाल तिनको भला
 जोरामरंगीले २ ॥

मदनगोपालजकोदरशनकरिकही सहीरामइष्टमेरेट
 गभावपागीहै । वैसोईस्वरूपकियोदियोलेदिखाइरूप म
 नअनुरूपछविदेखिनीकीलागीहै ॥ काहूकह्यो कृष्णअव
 तारीजुप्रशंशमहारामअंश सुनिबोलेमतिअनुरागीहै ।
 दशरथसुतजानोसुंदरअनूपमानो ईशताबताईरतिकोटी
 गुणीजागीहै ५१४ ॥

रामइष्ट ॥ दोहा ॥ कहाकहोछविआजकी भलेविराजे नाथ ॥
 तुलसी मस्तक जवनवै धनुषबाणलेउहाथ १ ॥ वैसोई ॥ क्रीट
 सुकुट माथेधरयो धनुषबाण लियोहाथ ॥ तुलसी जनके कारणे
 नाथभये रघुनाथ २ ॥

मूल ॥ गोप्यकेलिरघुनाथकीश्रीमानदासपरगटक
 री ॥ करुणावीरशृंगारआदिउज्वलरसगायो । परउप
 कारकधीरकवितकविजनमनभायो ॥ कोशलेशपदकमल
 अनन्यदासनव्रतलीनो । जानकिजीवनसुयशरहतीनिशि
 दिनरंगभीनो ॥ रामायणनाटककीरहसियुक्तिउक्तिभाषा
 धरी । गोप्यकेलिरघुनाथकीश्रीमानदासपरगटकरी १३०
 श्रीबल्लभजूकेवंशमेंसुरतरुगिरिधरभ्राजमान् । अर्थधर्म
 काममोक्षभक्तिअनपायनिदाता ॥ हस्तामलश्रुतिज्ञानस
 बहिशास्त्रनकेज्ञाता । परिचर्यात्रिजराजकुंबरकेमनकोक

षे । दरशनपरमपुनीतसभातनअमृतवर्षे ॥ विद्वनाथनंद
 नसुभावजगकोऊनहिंतासमान । श्रीबल्लभजूकेवंशमेंसुर
 तरुगिरिधरभ्राजमान १३१ श्रीबल्लभजूकेवंशमेंगुण
 निधिगोकुलनाथअति ॥ उदधिसदाअक्षोभसहजसुन्दर
 मितभाखी । गुरुवत्तनगिरिराजभलापनसबजगसाखी ॥
 विद्वलेशकीभक्तिभयोबेलादृढताके । भगवततेजप्रताप
 नमितनरवरपदजाके ॥ निर्व्यलीकआशैउदारभजनपुंज
 गिरिधरनरति । श्रीबल्लभजूकेवंशमें गुणनिधिगोकुल
 नाथअति १३२ ॥

जानकीजीवन ॥ कवित्त ॥ सखादुरावें चौर उरवशी उड़ावें
 मोर सावित्री चरण सवें महसी महशकी । बरुण धनेशराज
 उदुराज रविराजगंधरवीकन्यासुकवारी नागशेशकी ॥ द्वारे पर
 आइसब ठाढ़ी सखी तिनमाहिं दामिनिसी दसकि रही अबला
 नरेशकी । सुरति किशोर रतिपति के समूहराज आसपास तिन
 बीच बेटी मिथिलेशकी १ ॥ सवैया ॥ दूलहश्रीरघुनाथबन्यो
 दुलही सिय सुन्दरि मंदिरमाहीं । गावतगीत सबैमिलिसुन्दरि
 वेदभ्रुचाजुरि विप्रपढ़ाहीं ॥ रामकोरूप निहारति जानकि कंक
 णके नगकीपरिछाहीं । औरसबैसुधि भूलिगई करटेकिरही पल
 टारतिताहीं २ ॥ उक्त भाषा हनुमन्नाटके ॥ आकृष्टेयुधिकार्मुके
 रघुपतौवामोब्रवीद्वक्षिणं पुण्येकर्मणिभोजनेचभवतः प्रागल्भ्यस
 स्मिन्नकिम् ॥ वामान्यःपुनरब्रवीन्मममनःप्रष्टुनिजस्वामिनं छिं
 न्यारावणवक्तपंक्तिमथवाप्येकैकमादिश्यताम् ३ ॥

टीका गोकुलनाथजूके ॥ आयोकोऊशिष्यहोनला
 योभेंटलाखनकीभाखनकीचातुरीपैमेरीमतिरीझिये । कहूं

१ पादांतमें रकारको गुरुमानके दो मात्रायें गिनी जायेंगी ॥

है सनेहतेरो जाके मिले बिना देह ब्याकुलता होइ जो पै तो पै दी
 क्षा दी जिये ॥ बोल्यो अजु मेरो काहू बस्तु सो न हेतुने कुनेति
 नेतिक हीं हम गुरुदंडि ली जिये ॥ प्रेम ही की बात इहां कर ही प
 लटि जात गयो दुख गात कहीं कै से रंग भी जिये ५१५ कान्ह
 होह लाल खोरि घोरि दियो मन लै कइया मरस सागर में नागर
 रसाल है । निशिको स्वपन मां भूनि पुण श्रीनाथ जीने आजा
 दई भीति नई भई ओट साल है ॥ गोकुल के नाथ जू सो वे गिदै ज
 ताइ दी जै की जैया ही दूरि छवि परि देखो ख्याल है । मोर जो
 बिचारै न हीं धीरज को धारै वहां जाऊं कोऊ नारै पै डे प लोय ह
 लाल है ५१६ ऐसे दिन तीन आजा देत वै प्रबीन नाथ हाथ
 कहा मेरे बिना गये न हीं सरै गो । गये द्वार द्वार पाल बोले जू वि
 चारि एक दी जै सुधिकान सुन खी जै वात करै गो ॥ काहू ने सु
 नाइ दई ली जिये बुलाइ अहो कहो और दूरि करो करे दुरि ठरै
 गो । जाइ वही कही लही आपनी पिछान मिले सुनो मेरो नाम
 इयाम कहो न हीं टरै गो ५१७ ॥

कहू है सनेहतेरो ॥ दोहा ॥ इहां किया नाहिं इश्कका इस्ता-
 माल संधार ॥ सो साहवसो इश्कवहकर क्या सकै गंवार १ ॥ रस
 सागर ॥ मांभ ॥ लोनासांवरनांगर सागरवर मुरलीधुनिगर जै ।
 बल्लभरसिकतानल है आवत गावत मुरपर जै ॥ मोरपक्षकर डलै दुलै
 कलगीत पुतरिलौं वरजै । रूपकहर दरियाव आव जिन नावधर्म
 की लरजै ॥ प्रेम ही की बातसो प्रेममोपै न वनै कलिपलांटी है जैसे
 जलको बरहा प्रेमहरिहूपै न बन्यो लहटू चकई डोरि लूटी छा-
 ङ्कके स्वभाव खट्टे मीठेको स्वाद सब बनाये जो सनेह कृष्णसो है
 तैसो पुत्रनसो कियो सुतहित कियो सो बलदेवजाने २ ॥ ओट
 साल है नाथजीको भीतिकी ओटको बड़ो दुख भयो अरु लरिका

कान्हा देखे विना हलाल औरसों भलीप्रीति करी ३ ॥ ख्यालहै
तापे ककरीको अरु लरिकाकी गुडीको दृष्टांत ॥

मूल ॥ रसरसिकरंगीलोभजनपुँजसुठिबनबारीश्याम
को ॥ बातकबितबडचतुरचोखचौकसअतिजानै । सारा
सारदिवेकपरमहंसनिपरमानै ॥ सदाचारसंतोषभूतसब
कोहितकारी ॥ आरजगुनतनअमितभक्तिदशधाव्रतधारी ॥
दरशनपुनीतआशयउद्धारअलापूरुचिरसुखधामको ।
रसरसिकरंगीलोभजनपुँजसुठिबनबारीश्यामको १३३ ॥

बात ॥ कवित्त ॥ कीरतिको मूल एक रैनिदिन दानदेबो धर्म
कोहैमूल एक साधु पहिचानिबो । वहिवेको मूल एक ऊंचो मन
राखिवाई जानिवे को मूल एक भली बात जानिबो ॥ व्याधि
मूल भोजन उपाधि मूल हास्य जानो बारिदको मूल एक आरस
बखानिबो । हारिवेको मूल एक आतुरीहै रणमाँझ चातुरी को
मूल एक बात कहि जानिबो १ ॥ दोहा ॥ बातनि हाथी पाइये
वातनि हाथीपाइ ॥ बातनिसों विषऊतरेवातनि विषहै जाइ २
तापे केशवदास को अरु धीरवल को दृष्टांत ॥ कवित्त ॥ आयो
एक पंडित अखंडित विचारवान वेद औ पुराण मंत्र यंत्रवि को
गातुरी । ताने पुनि कही सही हाडहू को सिंहकरो लावो लाइ
दियो लियो अतिहुलसातुरी ॥ आप ड्रुम चढ़यो तिन पानी लैके
पढ़यो पुनि छिरकेते जियो अति कियो जाको घातुरी । कीजिये
विवेक एक चातुरीसों बच्यो याते एक ओर चारिवेद एक ओर
चातुरी ३ ॥ दोहा ॥ घात बिडारै भूत को घात बचावै प्रान ॥
बात अधिक भगवान ते कही हंस अख्यान ४ हरि आवै पेबात
न आवै जैते ब्रह्माको सनकादिक पूछी चित्त विषयमेंजाइ विषय
चित्तमें जाइ न्यारी कैसे होय तब उत्तर न आयो तब हंसरूप
धरिके श्रीभगवानने जवाब दियो ५ ॥ दोहा ॥ कागा काको धन
हरे कोयल काको देइ ॥ मीठी दाणी बोलिके जग अपनो करि

लेइ ६ प्रस्तावे ॥ हेजिह्वरससारज्ञेमधुरंकिन्नभाषसे ॥ मधुरंवदक
 ल्यागिसर्वदासधुरप्रिये ७ चतुराई वात कहा एक पंडित वीर-
 बलपैआयो वात वासों पूछी कछु पढ़ेहौ कही पढ़ेह वेद शास्त्र
 पुराण कवित्त वात ८ कवित्त वडचतुर ॥ कवित्त ॥ मेह बरसाने
 तेरे नेह बरसाने देख एक बरसाने घर मुरली वजावेंगे । साजि
 लाल सारी लाल करै लाल सारी देखिबेकी लालसारी लाल
 देखे सुख पावेंगे ॥ तुही उरवशी उरवशी नाहि आन तिय कोटि
 उरवशी तजि तोसों चित लावेंगे । सेज बनवारी बनवारी तन
 भूषनारी गोरे तनवारी बनवारी आज आवेंगे ६ ॥

भागवतभलीविधिकथनकोधनजननीएकैजन्यो ॥ ना
 मनरायनमिश्रवंशनवलाजुउजागर । भक्तनकीअतिभी
 रशक्तिदशधाकोआगर ॥ आगमनिगमपुराणसारशास्त्रन
 सबदेखे । सुरगुरुशुकसनकादिव्यासनारदजुविशेखे ॥
 सचिसुधाबोधमुखसुरधुनीयशबितानजगमेंतन्यो । भा
 गवतभलीविधिकथनकोधनजननीएकैजन्यो १३४ ॥
 कवित्त ॥ मिश्र श्रीनारायण जु मधुपुरी वास कियो
 पुनि हरह्वरमें नृसिंहारण्यसों मिले । तिनोकी सुआज्ञा
 पाइ बद्रिकाश्रमहिं जाइ मिलि शुकदेवजू से महासुख
 में मिले ॥ आयैफिरिकाशीसुखराशीवेसंन्यासीपायेतिन
 हूंसोंजनमनिसुखमनमेंहिले । पंडितप्रवीणजितेतिनकी
 कथासोंतितेचितेमोचितेइरहेमानोंमहाअहिकिले ५१८ ॥

भागवत ॥ छप्पै ॥ निगम कल्पतरु उदै सोई भागवत प्रमा-
 ना । द्वादश मोटी डार सोई अस्कद बखाना ॥ त्रिंशत पुनि पैंतीस
 ऽध्यायसों छोटी शाखा । सूक्ष्म कली श्लोक सहस्र अष्टादश
 भाषा ॥ इत अक्षरवर पुनि पंच लख सहस्र छिहत्तर और गुनि ।

तत्त्ववेत्ता तीनिहुँ लोकमें ब्रह्मबीज भागवत पुनि १ भली विधि ॥
 कवित्त ॥ भागवत कथन समुद्र को मथन हरि गुण नाम रूप
 जैसे अमृत उधारयो है । मृत्युप्राय जीव जग भक्ति दान दैके
 दुसतर भवसागर को पारलै उतारयो है ॥ प्रेमरंग राते कहै नेह
 भरी वातें सब जगतके नाते करि इति सो उधारयो है । करुणा-
 निधान गुण रत्न की खानि मानो ते ज्ञान विज्ञान युक्ति जीव
 विसतारयो है २ धन जननी जैसे माता एक पुत्र जनै तैसे एक
 इन्हीं को श्रीशुकदेव जीने भागवत दई है औरन पै कैसे आइ
 सो पका फल सुवा डारै एकतो कैसेह मुखते गिरतेही ऊपरही
 लेलहि । एक जमीन में ते लेहि तिन को सवाद नहीं ऐसे
 सुवारूपी शुक तिन के मुखते लई ३ ॥ नाम ॥ दोहा ॥ नाम
 नरायण मिश्रजी नवला वंश सुहात ॥ कोटि जनम के तम
 हरै आतपलों विख्यात ४ ॥ भक्तन की ॥ दोहा ॥ साधु तहांही
 संचरै जहां धर्मकी सीरा ॥ सरवर सूखे पशुरामहंसन बैठेतीर ५ ॥
 कवित्त ॥ सजतहै भक्तराज मानुष समाज प्रेम रस नीर भीर से
 गंभीर सुख छायो है । हरिगुण रूपजाल मानिक रसाल मानो
 छायासो विशाल जस सही सरसायो है ॥ श्रेणी कलहंस मानो
 भूमि रहे परमहंस अतिही प्रशंस रंग रूप बिरमायो है । अल-
 बेली अली आश है विश्वास रासिकन प्रेमही को राशि सो
 उल्लिष्ट शेष पायो है ६ ॥ सारशास्त्र भागवते ॥ मन्यसुरान् भागवता
 नधीशे संभमार्गाभिनिविष्टचित्तान् । येसंयुगे चक्षत तार्क्यपुत्रस्यासे
 सुनाभायुधमापतन्तम ७ सुधा बोध ॥ सवेया ॥ भक्तिसुधारसज्ञान
 वचन मुख सुखद सबहिसो सहजहि बोलै । परम प्रवीन विचित्र
 नवीन प्रथन को प्रथी गूढ़प्रथकी खोलै ॥ नारायण जग तारण
 कारणी भूमण्डल सुरसरि संग डोलै । जा जस शीतल छांह तरंग
 धिन अलबेली अलि हंस कलोलै ८ ॥

मूल ॥ कलिकाल कठिन जग जीतियो राघवकी पूरी परी ॥

कामक्रोधमदमहलोभकीलहरनलागी । सूरजज्यो जलग
हेबदुरिताहीज्योत्यागी ॥ सुंदरशीलस्वभावसदासतनसे
वाचत । धर्मनिषकनिबह्योविश्वमेविदितबडोभृत ॥ श्रीअ
ल्हुरामरावलकृपाआदिअंतधुकतीधरी । कलिकालकठि
नजगजीतियोरघवकीपूरीकरी १३५ हरिदासभुलप्यन
भजनबलवावनज्योबढ्योवावनो ॥ अच्युतकुलसोदोषस्व
एनहूउरनहिअन्यो । तिलकदामअनुरागसवनगुरुजन
करिमान्यो ॥ सदनसाहिदेराग्यविदेहनिकीसीभाती । रा
मचरणमकरदरहतिमनसामदमाती ॥ योगानंदउजागर
वंशकसिनिशिदिनहरिगुणगावलो । हरिदासभलप्यनम
जमबलवावनज्योबढ्योवावनो १३६ ॥

अच्युत ॥ दोहा ॥ कामी साधुहि कृष्ण कहि लोभी वासन
ज्ञानि ॥ क्रीधीको नरसिंह कहि नहीं भक्तकीहानि १ रामचरण ॥
जिहिघट नौबतनामकीसो घटछीनीनाहि ॥ प्रकट देखिकबीर
ज्योदीपिकभोडलनाहि २ ॥ जंगली कह्यो नाम न लियो सो नाभा
जी एककुवाके मनखडेपे बैठे है तहाँ साथे तिलकधारे माला
मारवाड़ी आइगये जब ह्यो छुपे वनाई जंगली देसके कहे तिन
को आचार्यजी पछेको दृष्टांत ३ ॥

जंगलीदेशकेलोगसबपरशुरामकियेपारषद ॥ ज्यो
चदनकोषवनतीत्रिपुनिचदनकरई । बहुतकालतमनिबि
डउदयदीपकज्योहरई ॥ श्रीमठपुनिहरिब्याससंतमारग
अनुसरई । कथाकीरतमनेसरसनिहरिगुणउच्चरई ॥ गो
विंदभक्तिगदरोगगतितिलकदामसदबैदहद । जंगलीदे
शकेलोगसबपरशुरामकियेपारषद १३७ श्रीपरशुराम
जीकीटीका ॥ राजसीमहंतदेखिगयोकोऊअतलेनवा

ल्योज्ज्वलतहरिसगेमायाटारिये । चलेउठिसंगवाके
 पहरिकोपीनअंग बैठिगिरिकंदरामेलागीठौरप्यारिये ॥
 तहांबनजारोआइसंपतिचढ़ाइदई औरसंगपालकीहूम
 हिमानिहारिये । जाइलपटान्यापाइभावमैनजान्योकलु
 आन्योउरमाभआवैप्राणवारिडारिये ५१६ ॥

गदरोगगतिमुजाग सुन्दरवैद्य जगैतौ भारीरोगजाइ तिल-
 लक दाम औषधि दई तिलक दोम हनकी सद औषधि है १॥
 इलोक ॥ तुलसीकाष्ठमालांतुप्रेतराक्षसप्रदूतका ॥ दृष्टानश्यंतदूरे
 णयातोद्धृतयथादलमरुकिरातहूणाप्र ॥ छप्पे ॥ सैत तिलककर-
 तार तिलक शंकर शिरसो है । ब्रह्माके शिर तिलक तिलक विन
 जगमें कोहे ॥ तिलक विना शिर अशुभ तिलक राजा मदपति ।
 तिलक संतसन्मान तिलक सौ महंत कहावै ॥ जश जियेयुगति
 भूषेमुकाते सुरगण मुनि जन शिर धरै । तुलसी तिलकसतगुरु
 कमल वलै भवसागर तरै ३ बैठि गुरुके पास तिलकालेखारहि
 कीजे । विना तिलक जो अफल तिलक करि दीक्षादीजे ॥ दान
 पुण्य तप धर्म तिलक विन निष्फल जावै । तिलकधार कंठु क-
 रौ अभित फल वेद वतावै ॥ त्यो तिलक दखि यमहू डरै तिलक
 विना कहि दीनजन । तत्त्ववत्ता तीनिहुँलोक में भोड़ी मुहड़ो ति-
 लक विन ४ तिलकहि सत अस्नान तिलक ब्राह्मण शिरसोहै ।
 तिलक विनाकलुकरौ सबै फल निष्फल जोहै ॥ तिलकतिया शृं-
 गार तिलक नृप शीश लगावै । तिलक वेद परमाण तिलक त्रैलो-
 क चढ़ावै । है तिलक तत्त्व युगयुगसदा तिलक मिलै तिधिपाइ-
 ये । श्रीपरशुराम ब्रह्मांड में सुयज्ञ तिलक को गाइये ५ दोहा ॥
 धानो बड़ो दयाल को तिलक छाप अरु माल ॥ यम डरपै काल
 कहै भय माने अपाल ६ माया टारिये ॥ माया सगी न तनसगो
 सगो न यह ससार ॥ परशुराम या जीव को सगो सु सिरजन-
 हार ७ कहते हैं करते नहीं मुँहके बड़े लवार ॥ कारो मुहड़ो

होइगो साईके दरबार ८ ॥ भाव में न जान्यो आप में आपभाव
 लायो आपु बोले तुम बड़े उपकारी हो ॥ पद ॥ रे मन सत बड़े उ-
 पकारी । यद्यपि सकल सिद्धि इनके संग जीवन सों हितकारी ॥
 निर्मलजल बोलै अतिनिर्मल निर्मल कथा दृढ़वै । निर्मल में
 मलदेखै कबहूँ तो ततकाल छुड़ावै । माया मिलै महाक्षो माडै
 आनँदमें दिनकाटै । करि हरिभक्ति तरे भवसागर और न तारन
 माडै ॥ त्यागै लेह देह पुनि त्यागै चित लालच नहिं काई । चतुर-
 दास इन भक्तनि को संग छाँड़ि अनत नहिं जाई ॥ ६ ॥ आप तो
 गुणग्राही हो तापै ऊँटकी नारिको दृष्टांत पै मैं अपराध कियो पै
 तुम ताही न निंदा पहुँचै न अभाव पहुँचै १० कुण्डलिया ॥ अगर
 श्यामके भृत्यसन दुनी देत घिसि जात । आकाशे बिचुरीखिवै
 खरी चलावै लात ॥ खरी चलावै लात विमुखकृत भक्तनि निंदा ।
 उलटिपरे तिहि छार छार परसे नहिं चंदा ॥ ज्यों छाया उपहार
 प्रहार न लागौ तनको । त्यों जंगकी उपहास कहा पहुँचै हरिजन
 को ११ सत उपकारी पै साहूकार को सुई दीनी से दृष्टांत ॥

मूल ॥ गुणनिकरगदाधरभट्टअति सबहिनकोलागै
 सुखद ॥ सज्जनसुहृदसुशीलवचनआरजप्रतिपालै ।
 निरमत्सरनिष्कामकृपाकरुणाकोआलै ॥ अनन्यभजन
 दृढकरनधखोबपुभक्तनकाजै । परमधरमकोसेतुविदित
 वृन्दावनगाजै ॥ भागवतसुधावरषैवदन काहूकोनाहिं
 नदुखद । गुणनिकरगदाधरभट्टअतिसबहिनकोलागै
 सुखद १३८ ॥

निर्मत्सर ॥ दोहा ॥ बात कहै निर्लोभकी भरयो हिये आत
 लोभ ॥ युगल प्रेम रस रूपकी कैसे उपजै गोभ १ सो ऐसो वक्ता
 न होइ । श्रोता ऐसो चाहिये जाके तनमन श्याम ॥ वक्ताहू हरि
 को भगत जाके लोभ न काम २ श्रोता ऐसो न होइ । कथा सुनै
 नहिं कीरतन वकै आपनीवाइ ॥ पापी मानुष परशुराम के औघे

उठिजाइ ३ श्याम ॥पद॥ सखीहों श्याम रंगरंगी । देखि विक्राड
 गई वह मूरति मूरति साहिं पगी ॥ संगहुतो अपनो सपनो सो
 सोइरही रसखोई । जागेहु आगे वृष्टिपरै सखि नेकु न न्यारोहोई ॥
 एक जु मेरी अंखिबनि में निशि खोस रह्यो करि भौन । गाइ
 चरावनजात सुनौसखी सोधौ कन्हैयाबौन ॥ कासों कहों को
 पतियाइरी कौन करै बकवाद । कैसेकै कह्योजात गदाधर गुंगेको
 गुरुस्वाद ४ ॥ कवित्त ॥ मोरपक्ष धरे पटपीतवन मालगरे सांवरी
 सी मूरति प्रवीन सोसों पगीहै । टरत न टारी पलक्षणहुं न होति
 न्यारी जेतिक विसारी विसरति नाहिं खगी है ॥ चलतिहों तो
 चलतिहै बैठीहों तो बैठीहै सोईहों तो सोई हैरी जागीहों तो
 जगी है । तुम सब मिलि मेरी आंखिन को दोषदेत येऊ तो मैं
 मूंदराखी तऊ तहां लगी है ५ कान न करति सीख कानन फिर-
 तिसुनि अतिही हठीली फिरि पाछे पछिताई है । धाम अलिजैहै
 काम अंगनि में ऐहै काम नैनसर लागै घूमि घूमि गिरिजाईहै ॥
 अबलौं न मानती ही मेरी कही बात सुनि पाछे जलजातनि के
 पातनि पिछाई है । दीठिकहुं ऐहै मनसोहन मनोज छवि दौरि
 दौरि अटनि चढ़ेको फलपाई है ६ ॥

टीकागदाधरमइजूकी ॥ श्यामरंगरंगीपदसुनिकैगुसा
 ईजीवपत्रदपठायोउभैसाधुवेगिधायेहैं । रैनीदिनरंगके
 से चढ्योअतिशोचबढ्योकागदमेंप्रथमढ्योतहांलैकैआ
 येहैं ॥ पुरढिगकूपतहांबैठेरसरूपलगैपूछिवेकोतिनहींसों
 नामलैवतायेहैं । रह्योकौनठौरशिरमौरचुन्दावनधामनाम
 सुनिमूर्च्छाहैकैगिरैप्राणपायेहैं ५२० कान्हकहीभइश्रीग
 दाधरजीयेईजानोमानोउहिपातीचाहकैरीकैजिवायेहैं ।
 दियोपत्रहाथलियोशीशसोंलगाइचाइवांचतहीचलेवेगि
 चुन्दावनआयेहैं ॥ मिलेश्रीगुसाईजीसोंआखेंभरिआ

ईनीरसुधिनदारीरधीरेधीरवहीगाये हैं । पदसत्रग्रंथसंग
नानाकृष्णकथारंग र सकीउसंगअंगअंग भावछाये हैं
५२१ नामहैकल्यानसिंहजातिरजपूतपूतबैठोआइ कथा
सोअभूतरंगलाग्योहै । निपटनिकटवासधौरहाप्रकाश
गांवहासपरहासतज्योतियादुखपाग्योहै ॥ जानीभटसंग
सोंअनंगवासदूरिभईकरौलैकैनईआनिहिये कामजाग्यो
है । मांगतफिरतहुतीयुवतीआंगर्भवतीकहीलैरुपैयां बी
सनेकुहौराग्यो है ५२२ ॥

विषय महादुरितही है ब्रह्मा पुत्रीके पाछे परयो चन्द्रमा गुरु-
पत्नी के महादेवजू श्रीमोहनी के ब्रह्मा के रोंगटाके फोंगटाकी
मसीकी तुसी पै अध्याससों कादिये १ ॥ कवित्त ॥ सूधेकहे तू अवे
नाहिं मानत तू इत फेरि न नेकु चितैहै । भूमि में आंक धनावत
मेदतपोथिये कांखलिये दिनजैहै ॥ सांचीहों भाषति सोहिं दद
कीसों प्रीतमकी गतितरिपै हैहै । मोसों कहा अंठिलात अजा-
सुत कैहों ककाजूसों तोहूं पढ़ैहै २ ॥

गदाधरभट्टजीकीकथामेंप्रकाशकहोअहोकृपाकरोअ
बमेरीसुधिलीजिये । दईलौंड़ीसंगलोभगंगचितभंगकि
येदियैलैबताइअबमेरोकामकीजिये ॥ बोलेआपबैठियेजू
जापनितकरोहियेपापनहींमेरोगईदरशनदीजिये । श्रोता
दुखपाइभाषैझूठीयहिमारिनाखै सांचीकहिराखैसुनित
नमनछीजिये ५२३ फाटिजाइभूमितौसमाइजाइश्रोता
कहैबहैदगनीरहैअधीरसुधिआईहै । राधिकाबल्लभदास
प्रकटप्रकाशभासभयोदुखराशितब सुनिसोबलाई है ॥
सांचीकहिदीजै नाहींअभीजीवलीजै डरसबैकहिदईसुख

लियोसंज्ञाभाई है । कादितरवारितिथामारिवेकल्यानग
योदयोसोप्रबोधहै मैकरीदयानाई है ५२४ ॥

मेरो काम कीजिये पद ॥ साधो जगमें कामिनि ऐसीरे ।
राजा रंक सबनिके घरमें बाधिनि हैकै बैसीरे ॥ बसती छोटिरहै
वनबासा चावति सूखे पातारे । दांवपरें तिनहूं को मारै दैछाती
पर लखतारे ॥ ज्ञानी गुनी शूरवे पंडित घेतो सबै सयानेरे । सूधे
होइ परें फांसीमें युवती हाथ बिकानेरे ॥ तीनिलोकमें कोउ न
छांडयो दिधे दाह तरसारे रे । हरीदास हरिसुमिरण लागे तब
भगवंत उबारेरे १ दियो परबोधन्याय ॥ कामान्धायनपर्यन्ति ज
न्मान्धश्चनपश्यति ॥ नपश्यन्तिमदोन्मत्ता अर्थीदोषेनपश्यति ॥
दोहा ॥ विषयचुगौ जिनि चुगैसन चुगत कछू सुखहोइ ॥ फिरि
फांसी ऐली परै तिहि सम दुःख न कोइ ३ रेसन कबहूं जाइ
जिनि भूलि विषैवन रंग ॥ मनमथ ठग मारत तहाँ लिये बहुत
ठगसंग ४ राधावल्लभ लाल बिन व्यास न पायो सुःख ॥ डार
डार मैहूं फिरयो पात पात में दुःख ५ ॥

रहैकाहूदेशमेंमहंतआयोकथामाहिंआगेलैबैठायेदेखि
सबैसाधुभीजेहैं । मेरेअश्रुपातकयोनहोतशोचसोतपरेक
रेलैउपाइदेलभाइमिचखीजेहैं ॥ संतएकजानिकैजताइद
ईभइजकोगयेपाससबैजबमिलिअतिरीझेहैं । ऐसीचाह
होइमेरोइकैपुकारकरी चलीजलधारनैन प्रेमआइधीजे
हैं ५२५ आयोएकचोरघरसंपतिबटोरिगांठिबांधीलैम
रोरिक्योहूं उठैनाहिंभारीहै । आइकैउठाइदईदेखीहन
रीतिनई पूछीनामप्रीतिभईभूलोमैबिचारीहै ॥ बोलेआप
लैपधारोहोतहीसंचारीआवैऔरदशगुणीमेरेतेरेयहीज्या
रीहै । प्राणनकोआगेधरोआनिकैउपाइकरोरहेसमुझाह
भयोशिष्यचोरीदारीहै ५२६ ॥

जलधारि ॥ दोहा ॥ परसा हरियशसुनतहीं खत्रै न जलभरि
 आंखि ॥ भरि भरि मूठी धूरिकी तिन आंखिनमें नांखि १ हरियश
 सुनिकै नैन जो खत्रै न भरि भरि वारि ॥ परसा मूठी धूरि की
 तिन आंखिनमें डारि २ फुटो नयन फाटो हियो जरौ सुनत किहि
 काम ॥ खत्रै ड्रवै पुलकै नहीं तुलसी सुमिरत राम ३ ॥ सोरठा ॥
 हरियश जीवनभरि तुलसी सुनत न हग खत्रै ॥ तिन नैननि में
 धूरि भरिभरि मूठी मेलिये ४ ॥

प्रभुकीटहलनिजकरनकरतआपभक्तिकोप्रतापजानैभा
 गंवतगाईहै । देतहुतेचौकाकोऊशिष्यबहुभेटलायोदूरि
 हीतेदासदेखिआयोयोजनाईहै ॥ घोवोहाथबैठोआइसुनि
 कैरिसाइउठेभेवाहीमेंआइयाकोखीजिसमुझाईहै । हियेहि
 तराशजगआशको बिनाशकियोपियोप्रेमरसताकीआश
 लैदिखाईहै ५ २७ मूल ॥ हरिचरणशरणचारणभगतहरि
 गायकयेताहुआ ॥ चौमुखचौराचंडजगतईश्वरगुणजानै
 करमानंदअरुकोलहअलहूअक्षरपरचानै ॥ माधवमथुरा
 मध्यसाधुजीवानंदसीवा । दुदानरायणदासनाममांडन
 तप्रीवां ॥ चौरासीरूपकरचिचतुरबाणीबरनतनिजजुवा ।
 हरिचरणशरणचारणभगतहरिगायकयेताहुवा १३८
 टीकाकरमानंदचारनकी ॥ करमानंदचारनकी बाणीकी
 उचारनमें दारुणजोहियोहोइसोअपिघिलाइये । दियो
 गृहत्यागिहरिसेवाअनुरागभरे बटुवासुग्रीवहाथब्ररीपध
 राइये ॥ काहूठौरजाइगाइवेहीपधरायेवापैलायेउरप्रभु
 भूलिआयेकहांपाइये । फेरिचाहैमईवई श्यामकोजताइ
 बातलईमंगवाइ देखिनतिलैभिजाइये ५ २८ ॥

निजकर ॥ हृषीकेश हृषीकेशसचनभक्तिरुच्यते ॥ रामभक्ति

यश में नहीं देखी । लोचनमोरपक्षफरलेखी ॥ सोसमकुलिश क-
 ठोर सुछाती । रघुपति चरित न सुनि हरधाती ॥ जगआश को
 विनाश कियो ॥ सवैया ॥ आशको दास रहे जबलौं तबलौं जग
 को नरदासकहावै । त्यागी गुनी कवि-प्रण्डितकोऊहो आशलिये
 सबको भरसावै ॥ स्वर्ग महीतल वासकहूँ करौ आश जहाँलगि
 नाच नचावै । ताते महामुखपाइ निराश में आशतजै भगवानको
 पावै १ ॥ दिखाई है ॥ कुंडलिया ॥ अथकहै अपस्वारथी परमा
 रथ पूजालेइ । आपु न जाई सासुरै औरनको सिखदेइ ॥ औरन
 को सिखदेइ हिया अपनो नहीं शोधै । नखशिख जटित अज्ञान
 मूढ़ जगको परबोधै ॥ निज आखिनके अंध गैल औरनि उपदेशौ
 भवजल भस्वो अपार ताहि तरिसकै न शैशै २ ॥ दोहा ॥ सीता
 राम सुजानतजि करै औरको जाप ॥ ताके मुख में दीजिये नौ-
 सादर को वाप ३ ॥ फेरि चाहभई ॥ हरिसेवा राखिलई गुरुको
 त्यागि दियो माता पिता पुत्र स्त्री आदिक क्योकि सबको त्यागि
 हरिकी सेवा करनी नहीं तौ धूरि लगाइकै धूरिही फांकनी हरि
 सेवा घरही में क्यो न करी एकान्त बिना न होइ गृह में दुख
 आइ लगे ४ वनमें काहेको दुखहोइ । लेना एक न देना दोइ ५
 तापै दृष्टांत डुकरियाकी हंसुलीको ॥श्लोक॥ अहंभक्तपराधीनः ॥

कोलह अलहू भाईदोऊकथासुखदाईसुनोपहिलोविरक्त
 मदमांसनहिखातहै । हरिहीकेरूपगुणबाणीमेंउचारकरै
 धरैभक्तिभावहियेताकीयहबातहै ॥ दूसरोअनुजजानोखा
 इसवअनुमानोनृपहीकोगावैप्रभुकभगाइजातहै । बड़ेके
 अधीनरहैजोईकहैसोईकरै । ईशकरिचाहैआपदीनतामें
 मातहै ५२९ बड़ेआथकहीचलौद्वारकानिहारिसर्हीमिथ्या
 जगभोगयामेंआपुहीविहातहै । आज्ञाकेअधीनचल्यो
 आयेपुरलीनभयेनये चोजमंदिरमेंसुनौकानबातहै ॥ को

लहनेसुनायेसबजेजेनानाछंदगाये पाछेअलहदोइचारक
 हैसकुघातहै । भखोईहुँकारोप्रभुकहीमालागरैडारोलाय
 पहरावोकह्यो मेरोबड़ोभ्रातहै ५३० दयोपैनयाहिदयो
 बड़ोअपमानभयोगयोबड़ोसागरमेंदुखकोनपरहै । बूढ़
 तहीआमैंभमिपाइचलोझमिप्रीतिसाँ अनीतिभूलैनाहि
 मानोतरिवारहै ॥सोईअयिलेनहरिजनमनचैनझिलयोमि
 ल्योकृष्णजाइपायोअतिसुखसारहै ॥वैठेजबभोजनकोदर्ई
 उभैपातरिलै दूसरीजुकैसी कहीवहीभाईप्यारहै ५३१ ॥

आपुही बिहात है ॥ पद ॥ सुपनो सो धन अपनो श्याम ।
 आदि अन्त तालों ना विछुरिय परत काल सों काम ॥ तन धन
 सुत दारा यह सर्वसु जाहि भजै लैनास । देखि देखि फूलों जिनि
 भूलौ जग नटवाको धाम ॥ ज्यों बछराके धोखे गइया चाटति
 है वह चाम । ऐसे ब्यास आश सब झूठी सांचो है हरिनाम १ ॥
 कुंडलिया ॥ एक छेदकी यह दशा देहाहि घने देखाइ । गिलति
 कटोरी वारिको गिली आपही जाइ ॥ गिली आपही जाइ विषै
 भोगत अज्ञानी । जानी परै न बात आप कित जात बितानी ॥
 पुनि जैसे जल लैन थके दूरै जलवेली । ऐसेही सब विषै मिटै
 गुरु चेला चेली २ ॥ पाछे अलह ॥ सबैया ॥ देश विदेश के देखे
 नरेशन रीतिके कोऊ जो ब्रह्म करैगो । याते तनै तन जातगिरो
 गुण सौगुण औगुण गांठि परैगो ॥ वांसुरीवारो बड़ो रिश्वार
 है श्याम जु नेक सोढार ढरैगो । लाड़िलोछैल छबीलो अहीरको
 पीर हमारे हियेकी हरैगो ३ ॥ नये नये चोज ॥ विरक्तको आदर
 सत्कार मन्दिरमें भगवान् सदा करै हैं सो न कियो विषयी को
 कियो यह नयो चोज ॥

सबैविषभयोदुखगयोसोईहुवोनयोदियोपरबोधवाकी
 बातसुनिलीजिये । तेरोछोटोभाईमेरोभक्तसुखदाईताकी

कथालैबलाईजामेंआपहीसोंधीजिये ॥ प्रथमजनममांझ
बड़ोरजपुत्रभयोगयोगृहत्यागिसदामोसोंमतिभीजिये ।
आयोवनकोऊभूपसंगरागरंगरूप देखिचाहभईदेहदई
भोगकीजिये ५३२ तेरेईबियोगअन्नजलसबत्यागिदियो
जियोनहींजातवापैवैगिसुधिलीजिये । हाथपैप्रसाददीनो
आइघरचीन्हिलीनोसुपनोसोगयोबीतिप्रीतिवासोंकीजि
ये ॥ द्वारकाकोसंगसुनिआवतहीआगेचल्यो मिल्योभूमि
परिद्वगभरिबहेदीजिये । कहीसबवातश्यामधामतज्योता
हीक्षणकख्योवनवासदोऊमतिअतिभीजिये ५३३ अलह
हीकेवंशमेंप्रशंसयाहिजानिलेहु बड़ोऔरुभाईछोटोना
रायणदासहै । दीरघकमाऊलघुउपज्योउडाऊभाभीदियो
सीरोभोजनलैभयोदुखरासहै ॥ देवोमोकोतातोकरिबोली
वहक्रोधभरियहूजाहूकरोभरवावैकियोहासहै । गयोगृह
त्यागिहरियागकख्यो वैसेहीजु भक्तिवशश्यामकह्योप्रकट
प्रकाशहै ५३४ ॥

दियो प्रबोध ॥ कुंडलिया ॥ अगर असत आलाप तजि हरि
गुण हिरदे लेखि । परवतको कह देखिये पाइन तरकी देखि ॥
पाइन तरकी देखि बात जनि कहै पराई । आनि जरौ कोउ बरौ
राखि उर जरतौ भाई ॥ सारो राखत सती सुनो नहिं राखत
यारो । अपनो पहरै जागि गांठितो सुतो उबारो १ ॥ गयो गृह
त्यागि ॥ कवित्त ॥ दूरहीसे मीठी मीठी बातें सो बनाइ कहै अं-
तर कपट तासों पल न पतीजिये । बाणी बिन पंडित बिबेक बिन
भूपति औ ज्ञानहीन गुरु ताकी दीक्षाहू न लीजिये ॥ कहै हरि
भक्त राज बिन कैसो रजपूत बिना सनमान ताको दान कहा छी-
जिये । नदी बिन ग्राम हरिसेवा बिन काम कैसो जामें नहीं प्रीति

सोई मित्र कहा कीजिये २ ॥ दोहा ॥ या भवपारावारके उल्लंघि
पार को जाइ ॥ तिय छवि छाया ग्राहिनी वीचहि पकरै आइ ३
रसन शिशन संयम करै हरिचरणनतर वास ॥ तवहीं निश्चय जा-
निये राम मिलनकी आस ४ तजविलास जो विषयके जौन
प्रेमसों जाहिं ॥ भानु उदय तमरहै तो वहै भानही नाहिं ५ ॥

मूल ॥ नरदेवउभैभाषानिपुणपृथीराजकविराजहुव ॥
सवैयोगीतश्लोकबेलिदोहागुणनवरस । पिंगलकाव्यप्र
माणविधिधविधिगायोहरियस ॥ परदुखविदुखदलध्य
वचनरचनाजुबिचारै अर्थविचित्रनिमोलसवैसागरउद्धा
रै ॥ रुक्मिणीलतावर्णनअनुपवागवदनकल्याणसुव । नर
देवउभैभाषानिपुणपृथीराजकविराजहुव १४० ॥

उभयभाषानिपुण ॥ पंडित हैके भाषाको प्रमाण नहीं करै
जामें हरियश होइजाइ भाषाको विवेकी है ते सब प्रमाण करै हैं
१ ॥ श्लोक ॥ साधुभिर्ग्रस्तहृदयोभैर्भक्तजनप्रियः २ ॥ अज्ञा-
नी नहीं प्रमाण करै हैं तापै दृष्टांत वैष्णवको अरु पंडितको ३
हरियश ॥ दोहा ॥ हरियश रसनहिं कवित महिं सुने कौन फल
ताहि ॥ शठ कठपुतरी संग घुरि सोयेको फल काहि ४ वचन रच-
ना ॥ सुवरणको चाहत सदा कवि व्यभिचारी चोर ॥ पांवधरत
चिंता करै श्रवण सुहात न शोर ५ ॥

टीकापृथीराजराजाकी ॥ मारवारदेशबीकानेरकोन
रेशबडोपृथीराजनामभक्तिराजकविराजहै । सेवाअनु
रागअरुविषयवैराग्य ऐसोरानीपहिं चानीनाहिंमानोदेखी
आजहै ॥ गयोहोविदेशतहांमानसीप्रवेशकियोहियोनहीं
छुवैकैसेसरमनकाजहै । बीतेदिनतीनिप्रभुमंदिरनदीठि

परैपाछैहरिदेखिभयोसुखकोसमाजहै ५३५ लिखिकैप
 ठायोदेशसुंदरसँदेशयह मंदिरनदेखेहरिबीतेदिनतीन
 हैं । लिख्योआयोसांचुबांचिअतिहीप्रसन्नभयेलगैराज
 बैठेप्रभुबाहरप्रवीनहैं ॥ सुनोऔरएकयोप्रतिज्ञाकरीहि
 येधरीमथुराशरीरत्यागकरैरसलीनहैं । पृथ्वीपतिजानि
 कैमुहीमदईकाविलकी बलअधिकईनहींकालकेअधीन
 हैं ५३६ जीवनअवधिरहेनिपटअलपदिनकलपसमान
 बीतिप्रलनविहातहै । आगमजनाइदियोवाहैंइन्हेंसांचो
 कियो लियोभक्तिभावजाकेछायोगातगातहै ॥ चल्योच
 ढिसांड़िनीपैलईमधुपुरीआनिकरिकैसनानप्रानतजेसुनी
 वातहै । जयजयधुनिभईव्यापिगईचहुंओरभूपतिचकोर
 यशचंददिनरातहै ५३७ मूल ॥ द्वारिकादेखिपालंटती
 अचढ़िसीवकीधीअटल ॥ असुरअजीतअनीतिअग्नि
 मेंहरिपुरकीधौं । सांगनसुतनैसादराइरनछोरैदीधौं ॥
 धराधामधनकाजमरणबीजाहूमांडौं । कमधुजकुटकेहु
 वौचौकचत्तुरभुजचांडौं ॥ बाढेलबाढिकीबीकटकचांद
 नामचाड़ेसबल । द्वारिकादेखिपालंटतीअचढ़िसीवकीधी
 अटल १४१ ॥

विषय वैराग्य ॥ कवित्त ॥ हांसी में विषाद बसै विद्या में वि
 वाद बसै भोगमाहिं रोग पुनि सेवामाहिं दीनता । आदरमें मान
 बसै शुचिमें गिलान बसै आवन में जानबसै रूपमाहिं हीनता ॥
 योगमें अभोग औसंयोगमेंवियोग बसै पुष्य माहिं बंधनऔलोभ
 मेंअधीनता । निपट नवीन ये प्रवीनति सुवीनलीन हरिजूसोंप्रीति
 सबहीसों उदासीनता ६ सांवखाचितो राजाने बाहर क्यो न देखे
 बाहरकी आवना नहीं प्रतिज्ञादेशकी भक्तनिको उपेक्षानहीहै ३ ।

टीका ॥ कांवापतिसीवांसुतसांगनकोप्यारोहरिद्वारा
 वतिईशयोपुकारेरत्ताकीजिये ॥ सदाभगवानआयभक्तप्र-
 तिपालकरैकरौप्रतिपालमेरोसुनिमतिभीजिये ॥ तुरकअ-
 जीतनामधामकोलगाईआभि लईबागघोरकीओयेहटक
 कीजिये । दुष्टसनमारेप्रभुकष्टतेउबारेनिजप्राणवारिडारे
 यहनयोरसपीजिये ५३८ ॥

करौ प्रतिपाल मेरो ॥ दोहा ॥ करैनकरावैआपही नाम त
 अपनो लेहि ॥ साईहाथ बढाइयो जिहिभावे तिहि देहि ३ ॥ भक्त
 भूप बडे नडे राजा सबदिशानको जीते पै इन्द्रिय न जीतिजाहि ॥

मूल ॥ श्रीपृथ्वीराजनृपकुलबधूभक्तभूपरतनावती ॥
 कथाकीरतनप्रीतिभीरभक्तनिकीभावे । महामहोब्राह्मिदित
 नित्यनंदलाललडावे ॥ मुकुंदचरणचितवन भक्तमहिमा
 धुजधारी । पतिपरलोभनकियोटेकअपनीनहिंटासी ॥ भ-
 लपनसबैविशेषहीआपेरसदनसुनखाजती । श्रीपृथ्वीरा
 जनृपकुलबधूभक्तभूपरतनावती १४९ ॥ टीका रतनाव
 तीजीकी ॥ मानसिहराजाताकोछोटोभाईभाधोसिंहताकी
 जानोतियाताकीबातलैबखानिये । दिगजोखवासिनिस्सो
 इवासनिभरतनाम रटतिजटितप्रेमरानीउरआनिये ॥ न
 वलकिशोरकभूनंदको किशोरकभूवृन्दावनचंदकहिआखे
 भरिपानिये । सुनतविकलभईसुनिबेकीचाहभईशीतियह
 नईकलुप्रीतिपहिचानिये ५३९ ॥

भक्ति न होइ इन अवलाने इन्द्रियजीतिके भक्तिकरी याते भ-
 क्तिभूपकहो १ कथा कीर्तन सांभ ॥ आहपावै न निवाह कसी-
 दा असीतिसीराहझां । इश्कदिलावे देना लेना लेमहिं बंदीग-
 झां ॥ साहजुलफछझां तिसछझे असीतिसी तरसझां । बल्लभ

रासिकरुमाललालपर भूम हमेसा झुझा १ चाहभई ॥ कवित्त ॥
जादिनते श्रवण परयो है कान्ह तादिनते लग्योई रहत रसनामें
आठोयास है । चोवाचौर पानीपान चंदन चमेली हार मांगतही
सुख निकसत धनश्याम है ॥ शोचिके सकोचनि रमोचनि सकल
हुंख सुखको दिनेश जियको सो निजधाम है । प्रीतिरीति तंत्र
जग जीतिबेको यंत्र मन मोहनी को मंत्र मनमोहन को नाम है
२ जाको जासों मनलग्यो सोई ताको राम । रोमरोम में रम
रह्यो नहीं आनसों काम ॥ सुनिबेकी ॥

वारवारकहैकहाकहैउरगहैमेरो बहैदगनीरहोशरीर
सुधिगईहै । पूछोमतिबातसुखकरौदिनरातयह सहैनि
जगातरागीसाधुहृपाभईहै ॥ अतिउतकंठादेखिकहैसो
विशेषसवरसिकनरेशनकीबानीकहिदईहै । टहलछुटाई
औंसिरानेलैबैठाईवाहि गुरुबुधिआईयइजानों रीतिन
ईहै ५४० ॥

वारवार ॥ कवित्त ॥ कवहुंके अंग अंगराइ रोंपि डारत है
अलिन भोरावै क्योंहुं कल न परतिहै । उचरसहेली लाई तिनके
सँदेश सुनि करत प्रसिद्ध कवि ऐसेही अरति है ॥ कैसे कैसे
गई कहु कैसे कीसो बातें भई कहां हैं ललन सुनि धीर न धरति
है । एक बेर पूँछि फेरि पूँछि फेरि फेरि पूँछि बेर बेर वेई बातें
पूँछिबो करति है १ पूँछो मति ॥ हेरत वारहि वार उतै अजु वा-
वरी वाल कहाधों करैगी । जो कवहुं रसखानि लखै फिरि क्यों-
हुन वीररी धीर धरैगी ॥ मानिहैं काहुकी कानि नहीं जब रूप
ठगी हरि रंग ढरैगी । याते कहुं शिखरानि भटू यह हेरनि तेरेई
पँडे परैगी २ दोहा ॥ प्रीति कि रीति अनीतिहै प्रीति करौ जिनि
कोइ ॥ सुख दीपक कैसेवरै विरह नाग जहँ होइ ३ बिद्या आवर
लक्ष्मी और ज्ञान गुणसर्व ॥ प्रेमपौरि पतधरतही गये ततक्षण

सर्व ४ नेहनेह सब कोउ कहै नेहकरो मतिकोइ ॥ मिलै दुखी
बिछुरैदुखीनेही सुखी न होइ ५ नेहस्वर्गते उतरयो भूपर कीर्णो
गौन ॥ गलीगली दूढ़त फिरै विन शिर को धरकौन ६ जरेजरे
सो जरिबुभे बुझर जरेहुनाहिं ॥ अहमद दाइप्रेम के बुझि बुझि
कै सुलगाहिं ७ प्रेम कठिन संसार में नाकीजै जगदीश ॥ जो
कीजै तो दीजिये तन मन धन अरु शीश ८ ॥

निशिबिनसुन्योकरैदेखिबेकोअरवरै देखेकैसेजातज
लजातदृगभरे हैं । कछुकउपाइकीजैमोहनदिखाइदीजै
नबहींतौजीजैवेतौआनिउरअरेहैं ॥ दरशनदूरिराजछो
डैलोटेधूरि पैनपावैद्विपूरिएकप्रेमबशकरेहैं । करौहरि
सेवाभरिभावधरिमेवा पकवानरसखानदैबखानमनधरेहैं
५४१ इंद्रनीलमणिरूपप्रकटसरूपकियो लियोवहैभाव
यां सुभावमिलिचलीहै । नानाविधिरागभोगलाडकोप्र
योगयामैयामिनीसुपनयोगभईरंगरलीहै ॥ करतशिंगार
छविसागरनपारावाररहतनिहारियाहीमाधुरीसोंपलीहै ।
कोटिकउपाइकरियोगयज्ञपारपरै ऐपैनहींपावैयहदूरिप्रे
मगलीहै ५४२ ॥

सुपन ॥ दोहा ॥ सोयेदिग बातकरै जगै उठत गहैवाट ॥ कित
है आवत जालकित पौरीलगे कपाट १-नख शिख रूपभरे खरे
तऊ चहत सुसुकानि ॥ लोचन लोभी रूपके तजैनलोभीवानि २॥

देख्योई चहततऊकहतउपाइकहा अहाचाहबातक
हौकौनकोसुनाइये । कहीजुवनावोदिगमहलकेठौरएक
चौकीलैबैठावोचहुंओरसमुझाइये ॥ आवैहरिप्यारेतिन्हैं
आवैवेलिवाइइहारहेतेधुवाइपाँइरुचिउपजाइये । नाना

विधिपाकसामांआगेआनिधरेआपडारिचिकदेख्योश्याम
दृगनलखाइये ५४३ ॥

चाहबात ॥ चौपाई ॥ कुंवरि कहै सखिको बिस रहै । जहँ
वह सांवरो प्रीतमरहै ॥ सो दिश हाथसों सखिनि बताई । सो
दिश जीवनमूर सिमाई ॥ कमलपत्र लै पक्ष बनावै । उड़योचहै
सो क्यों उड़ि आवै ॥ मनसों कहै कुटिल तू आइ । इकलोई
उठि पियपै जाइ ॥ नेक तौ नैननिहूँ संगलैरे । मोहन मुखको
देखन दैरे ३ ॥

आवैहरिप्यारेसाधुसेवाकरिटारेदिनकिहूँपावँधारे जि
न्हैव्रजभूमिप्यारिये । युगलकिशोरगावैनेननिबहावैनीर
हैगईअधीररूपदृगनिनिहारिये ॥ पूँछीवाखवासिनिसाँ
रानीकौनअंगजाकेइतनीअटकसंगभंगसुखभारिये । च
लीउठिहाथगह्योरह्योनहींजातअहो सहोदुखलाजबड़ीत
नकबिचारिये ५४४ ॥

आवै ॥ पद ॥ चलिमन हँदुन जैये सतगुरुके छौना । शिर
के साँटें पाइये ये राम खिलौना ॥ प्रेम जँजीर जरायके गहि
राखो भाई । इन सन्तनिके मोहते मिलिहैं रघुराई ॥ कृष्णकृष्ण
नित पढ़तहैं शुचिते चित लागे । पाई टिके नहिं पाप के दुख
सबही भागे ॥ कहि मलूक सब छाड़िके गहिलै यह हाला ।
जोइ जोइ मूरति सन्तकी सोइ देखि गुपाला १ ॥ युगल ॥
कवित्त ॥ वृन्दावन बासआस बहत हुलास रास बिबिध बिलास
सदा सुख हरिदासके । भाल पै तिलक श्याम बन्दनी औ कंठ
माल तुलसी रचत गुंज छापे दै प्रकासके ॥ युगलकिशोर हिये
मुखमें भूकोर नामनीर बौर भूमिके सुसूचक बिलासके । सदा
सतसंग बिनै अंग अंग पगे पुनि जगे जग माहिं नीके लागे
आस पासके ॥

देख्यो मैं बिचारि हरिरूप परस सारताको कीजिये अहार
 लाज कानिनीके टारिये । रोकत उत्तरि आई जहां संतसुख
 दाई अनिल पटाई पाई बिनतीलै धारिये ॥ संतनजिमाइवे
 कीनिजकर अभिलाख लाखलाख भांतिनसो कैसेकै उचारि
 ये । आज्ञा जोई दीजै सोई कीजै सुखवाही भेंजु प्रीति अलग
 हीकरोलागी अतिप्यारिये ५४५ प्रेमभेननेमहेमधारलै उ
 मंगिचलीचली दृगधारसो परोसिकैजिभायेहैं । भीजिंगयो
 साधुनेहसागरअगाध देखि नैनननिमेषतजीभयेमनभा
 येहैं ॥ चंदनलगाइ आनिवीरीहूखवाइश्यामचरचाचला
 इचपरूपसरसायेहैं । धूमपरीगावँभूमिआयेसबदेखिबे
 कोदेखिनृपपासलिखिमानुसपठायेहैं ५४६ हूँकरिनिशं
 करानीधंकगतिलईनई दईतजिलाजवैठीमोड़नकीभीर
 में । लिख्योलैदिवाननरआयेलैबखानकियो बांचिसुनि
 आंचलागीनृपकेशरीरमें ॥ प्रेमसिंहसुतताहीकालसोर
 सालआयोभालपैतिलकभालकंठीकंठीरमें । अपकोस
 लामकियोनरनजताइदियो बोलयोआवमोड़ीकरैपत्योम
 नपीरमें ५४८ ॥

टारिये ॥ मेरी कुल पूजि तूही मानी ठकुरानी करि तूही
 नित आखिन में हिये में धरतिहौं । तेरेई संतोष देत दक्षिणा
 रसीले गुन मनमानि आलिनकी सीख निदरतिहौं ॥ आनि
 बन्धो योग अब मेरे बड़ भागिनतैं ताहीते अधीनता लै दीनता
 करतिहौं । देखन दैनेक प्राणप्रीतम मुखारविदहाय लाज आजु
 तेरे पाईन परतिहौं ३ ॥ प्रेमसिंह ॥ कवित्त ॥ सदा साधु सेवा
 रंग नितही प्रसन्न सुनि भीजि जाइ हियो जान्यो प्रीतको स्व-
 रूप है । प्रेमसिंह नामताको अर्थ अभिराम सुनो सिंहसम भक्ति

वलाहिये श्याम रूप है ॥ दोऊ मिलि नाम मानों जानों नरसि-
हवत रतिकी चढ़ाई यात भयो भक्त भूप है । हरिदेव इष्ट मिष्ट
लागी सन्त सेवा याको शिष्ट गुण वैस लक्षु कीरति अनूप है १ ॥
प्रेम भैरव मोरमुकुट पै प्रियदास गोविंद संग रहैं बरसाने ते वाइ
एक मोहनभोग प्रभात करि लैगई पाटों दांतुन नहीं करी यह
क्यों न खावो लकड़ी भली २ ॥

कोपभीरराजागथी भीतरतेशोचनयो पात्रेपुच्छिलियो
कह्यो नरनिखानिकै । तवतोबिचारीअहोमोड़ीहैहमारी
जातिभयोसुखगातभक्तिभात्रउरआनिकै ॥ लिख्योपत्र
साजीकोतुशीतिहियेसाजीजोपै शीशपरबाजीआइराखों
तजिप्रानिकै । सभामध्यभपकहींमोड़ीको बिरूपभयोरहों
अवमोड़ीकेहीभूलोमतिजानिकै ५४८ लिख्योद्वैपठायो
वेगिमानुसलैआयेजहां रानीभक्तितानीहाथदईपातीबा
चिये । आथोचदिरंगबांचिसुतकोप्रसंग बार भीजेजेफुले
लदूरिकियेप्रेमसांचिये ॥ आगेसेवापाकनिशिमहलबस
तजाइलाईवाहीठौरप्रभुनीकेगाइनाचिये । अन्ननृपत्यागि
दियोलिखिपत्रपुत्रदियो भाईमोड़ीआजुतमहितकरिया
चिये ५४९ ॥

तजिप्रानिको ॥ दोहा ॥ धनद्वै नीके राखितन तनद्वै राखौ
लाज ॥ लाज प्राण तजि दीजिये एक प्रेम के काज १ नेह करैते
वावरे करि तूरै ते कूर ॥ धुर निरवाहैं जे कोऊ तेई प्रेमी शूर २ ॥
प्रेम कि चौपरि है मही तामें वाजी शीश ॥ कायरताको जे गहैं
तो पावैं वह खीश ३ ॥ दूरिकिये ॥ जबलगि शिर पर शिर हुतो
तव लगि फूलन हार ॥ नाहि सभारो जात है शिर उतरे को
भार ४ ॥ अन्न नृप त्यागि दियो ॥ पात्रो ॥ प्रार्थयेद्वैष्णवस्यान्नप्रय

लेन विचक्षणः ॥ सर्वपापविशुद्धयर्थतद्भावेजलापिवेत ५ मार्कण्डे-
ये ॥ अवेष्णवग्नेभुक्त्वापीत्वावाज्ञानतोयदि ॥ शुद्धिश्चान्द्रायणे
प्रोक्ताऋषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ६ ॥ शुद्धं भागवतस्यांशुद्धं भागीरथी
जलम् ॥ शुद्धं विष्णुपरिचितं शुद्धमेकादशीव्रतम् ७ ॥

गयेनरपत्रदियोशीशसौलगाइलियो वांचिकैमगन
हियेरीझबहुदईहै । नौवतिबजाईद्वारवांटतबधाईकाहून्
पतिसुनाई कहीकहारीतिनईहै ॥ पूछैभूपलोककह्योमिटे
सबशोकभयेमोड़ीके जुयोगस्वांगकियोवनगईहै । भूपति
सुनतबातअतिदुखभयोगात लयोवैरभावचढ़्योत्यारीई
षांभईहै ५५० नृपसमुक्ताइराख्योदेशमेंचवावह्लैहै बुधि
वंतजनआइसुतसौजनाईहै । बोल्योबिषैलागिकोटिकोटि
तनखोयेएक भक्तिपरकामआवैयहैमनआईहै ॥ पाईपरि
मांगिलईदईजुप्रसन्नतुम राजानिशिचल्योजाइकरोजिय
भाईहै । आयोनिजपुरढिगधरिनरसिलेआनिकह्योसोब
खानिसबचिंताउपजाईहै ५५१ भवनप्रवेशकियोमंत्रीजो
बुलाइलियो दियोकहिकटीनाकलोहूनिरवारिये । मारि
बोकलंकहूनआवोयोसुनाईभूप काहूबुधिवंतनबिचारिले
उचारिये ॥ नाहरजूपीजरामेदीजैछोड़िलीजैमारि पाछेतें
पकरिवहबातदाबिडारिये । सबनिसुहाईजाइकरीमनभाई
आयोदेखोवाखवासिकहींसिंहजूनिहारिये ५५२ करिह
रिसेवाभरिंरंगअनुरागदृग सुनीयहबातनेकनैनउतटारे
हैं । भावहीसौजानैउठिअतिसनमानैअहो अजमेरेभाग
श्रीनृसिंहजूपधारेहैं ॥ भावनासचाईवहीशोभालौदिखाई
फूलमालपहराईरचटीकोलागेप्यारेहैं । भौनतेनिकसिधा

ये मानो खम्भफारिआये विमुखसमूहततकालमारिडारे
हैं ५५३ ॥

नृसिंहजू पधारे हैं ॥ तब पूछहू लाई क्योंकि सूक्ष्म अलंका-
र १ ॥ श्लोक ॥ कान्तमायान्तमालोक्यगत्त्रागुरुजनान्तिकम् ॥ करे
कलितमम्भोजसंकोचयतिसुन्दरी २ ॥ कवित्र ॥ वांसुरी के बीच
एक भौर डारि लाई सखी मूंघो वहु शब्द बलै बुधि बल भारी
सों । भनत पुराण यामें आपही सों धुति होति कान दैकै सुनो
कह्यो धरि सुकुमारी सों ॥ रीक्रिरिकिवार अति मन में मगन
भई आप तनचाह मुख ढांक्यो श्याम सारीसों । अंचलमें गांठि
दे विहंसि उठि चली सखी प्यारी हंसि कह्यो आजु बसिये
हमारी सों ३ ॥

भूपकोखबरिभईरानीजूकीसुधिदई सुनीनीकीभांति
आपनस्रह्लैकैआयेहैं । भूमिपरिसासटांगकरिहरीमतिभई
दयाआपआइवाकेबचनसुनायेहैं ॥ करतप्रणामराजाबो
लीअजूलालजूको नेकफिरिदेखोएकठोरयेलगायेहैं ।
बोल्योनृपराजधनसबहीतिहारोधारोपतिपैनलोभकहीक
रौसुखभायेहैं ५५४ राजामानसिंहमाधौसिंहउभैभाईच
ढेनावपरकहूंतहांबूडिबेकोभईहै । बोल्योबड़ोआताअब
कीजियेयतनकौन भौनतियाभक्तकहीछोटेसुधिदईहै ॥ ने
कुध्यानकियोतबै आनिकैकिनारोलियो हियोहुलसायो
जेठचाहनईलईहै । कह्योआनिदरशनबिनैकरिगयोरा
जाअतिहीअनूपकथाहियेव्यापिगईहै ५५५ मूल ॥ पा
रीखप्रसिधकुलकांधयाजगन्नाथसीवाधरम ॥ रामानुज
कीरीतिप्रीतिपनहिरदहिधाख्यो । संस्कारसमतत्त्वहंस
ज्योबुद्धिबिचाख्यो ॥ सदाचारमुनिवृत्तिइंदिरापधतिउजा

गर । रामदाससुतसंतअनन्यदशधाकोआगर ॥ पुरुषो
त्तमकेपरसादते उभैअंगपहिर्योबरम । पारीखप्रसिद्धकु
लकाँधड्याजगन्नाथसीवाधरम ॥ १४३ ॥

मुनिवृत्ति ॥ राजधानी न लेहिं भारते ॥ एक ब्राह्मण सि-
लौकरैहौ तासों अज्ञानी ने कही हमारे राजा पै जाउ तौ बहुत
द्रव्य मिलै तब रोइउठ्यो कृष्ण सों कही तेऊ रोइ उठे युधि-
ष्ठिर सों कही तेऊ रोइ उठे कृष्णसों पूछी याको हेत कहा तब
कही ब्राह्मण याते रोयो ऐसी निषिद्ध धान्य वतायो कलियुग में
सांगेहू न मिलैगो उभै अंग कवच पहिर्यो प्रकट अंग में तौ लोह
को राजा के प्रोहित याते यह हीरे के अंगमें ज्ञानको वचन बाण
काहूको न लभै ? ॥

कीरतनकरतकरस्वपनेहूमथुरादासनमंडियो ॥ सदा
चारसंतोषसुहृदसुठिशीलसुभासै । हस्तकदीपकउदय
मेटितमबस्तुप्रकासै ॥ हरिकोहियबिश्वासनंदनंदनबल
भारी । कृष्णकलससोनेमजगतजानैशिरधारी ॥ श्रीव
र्द्धमानगुरुवचनरतिसोसंग्रहनहिंछंडियो । कीरतनकर
तकरस्वपनेहूमथुरादासनमंडियो १४४ टीका ॥ वासकै
तिजारैभांभभक्तिरसराशिकरीकरीएकबातताकोप्रकटदि
खाईहै । आयोवेषधारीकोऊकरैशालिग्रामसेवाडोलैसो
सिंहासनपैआनिभीरछाईहै ॥ स्वामीकेजुशिष्यभयेतिन
हूँकोभावदेखिवाहीकोप्रभावकह्योआपहियेभाईहै । नेकु
आपचलौवहरीतिकोबिलोकियेजु बड़ेसरवज्ञकही दूषेन
हिंजाईहै ५५६ पाईपरिगघोलैकैजाइदिगठाढेभये चाह
तफिरायोपैनफिरैशोचपख्योहै । जानिगयेआपकछयाही
कोप्रतापऔपैसारेकरिजाइयोविचारमनधख्योहै ॥ मूठि

लैचलाईभक्तितेजआगेपाईनाहिं वाईलपटाईभयोऐसो
मानोमख्योहै । ह्वैकरिदयालजाजिवायोसमझायोप्रीतिपं
थदरशायोहियभयोशिष्यकख्योहै ५५७ ॥

स्वपनेहु ॥ स्वपने में कौन मांगै है प्रकटही मांगै है दृष्टान्त
कलावत को अरु ब्राह्मण को विश्वास सुगल अरु वनिये को
दृष्टान्त १ ह्वै करि दयाल ॥ हरिजन हंस दिशनि वों डोलै ।
मुक्ताफल विन चोच न खोलै ॥ मौन गहै कै हरि यज्ञ बोलै ।
असद अलाप न कबहुं लोलै ॥ मानसरोवर तट के बासी । हरि
सेवा रति और उदासी ॥ नीर क्षीर को करै निवेरा । कहै कबीर
सोई गुरु मेरा २ वाहि यह उपदेश करयो चौरैही में ठाकुर को
बैठावनो ऐसी क्रिया न कीजै ३ ॥

मूला॥नववृत्तकनरायणदासकोप्रेमपुंजआगेबढो ॥ प
दलीनोपरसिद्धप्रीतिजामेंदढनातो । अक्षरतनमयभयोम
दनमोहनरंगरातो ॥ नाचतसबकोउआइकाहिपैवहवनि
आवे । चित्रलिखतसोरह्योत्रिभंगदेशीजुदिखावै ॥ हंडि
यासराइदेखतदुनीहरिपुरपदवीकोचढो । नववृत्तकनराय
णदासकोप्रेमपुंजआगेबढो १४५ टीका॥हरिहीकेआगेनृ
त्यकरैहियेधरैयहीठरैदेशदेशनमेंजहांभक्तभीरहै । हंडिया
सराइमध्यजाइकैनिवासलियो लियोसुनिनामसोमलेच्छ
जानिमीरहै ॥ बोलिकैपठायेमहाजनहरिजनसबैआयोहै
सदनगुनीलावोचाहपीरहै । आनिकैसुनाईभईअतिकठि
नाईअबकीजैजोईभावैवहनिपटअधीरहै ५५८ ॥

दृढ नातो पद ॥ सांचो एक प्रीति को नातो । कै जानै राधि-
का नागरी मदन मोहन रंग रातो ॥ यह शृंखला अधिक बल-
वन्ती बांध्यो मन राजमातो । मीराप्रभु गिरिधर संग हिलि

मिलि सदा निकुंज घसातो १ ॥ दोहा ॥ हितचित्त चाहन चतु-
रई बोल न आवत गात ॥ राधा भोहन प्रेमकी कहत घनै नहि
वात २ आइ कलाइक जगत हित जानि सुदेश विदेश ॥ पर
उपकारी साधु ये नहि अधरम को लेश ३ त्रिभंग देशी ॥ सूधी
जो कुछ उर गइ सो निकसे दुख होइ ॥ कुंवर त्रिभंगी जहँ गइ
सो दुख जानै सोइ ४ पण्डित कविता ढाड़िया कहिवेहीलौ दौरा ॥
कहि कान्हा जूझै नहीं जूझनवारे और ५ हँडिया सराइ प्रागते
छः कोस ६ ॥ हरिहीके आगे ॥ दोहा ॥ मनमंजुष गुण रतन है चुप
काढ़ि दै हठ तार ॥ पारखि आगे खोलिये कुंजी वचन रसाल ७
तापै दृष्टांत अकबरशाहको तानसेनको हरिही के आगे गावै ८ ॥

बिनाप्रभुआगेनृत्यकरियेननेमयहै सेवावाकेआगेक
होकरैसोविसतारिये । कियोयोविचारउंचेसिंहासनमाला
धारितुलसीनिहारिहरिगानकख्योभारिये ॥ एकओरबैठो
सीरनिरखैनैनकोरमगनकिशोररूपसुधिलौविसारिये ।
चाहैकछुवाख्योपरेऔचकहीप्राणहाथ रीभिसनमानकि
योमीचलागीप्यारिये ५५९ मूल ॥ गुणगणनविशदगो
पालकेयेतेजनभयेभूरिदा ॥ बोहितरामगुपालकुंवरगोवि
देमांडिल । क्षीतस्वामिजसवंतगदाधरअनंतानंदमल ॥
हरिराममिश्रदीनूदासवच्छपालकन्हरगायन । गोसुरा
मदाम्नाईइयासपुनिहरिनारायन ॥ श्रीकृष्णजिवनभग
वानजनइयासदासबिहारीअमृतिदा । गुणगणनविशद
गोपालकेयेतेजनभयेभूरिदा १४६ निर्वर्तभयेसंसारतेते
येरेजिजमानसब । उधवरामरेणुपरशुगंगाधूखेतनिवा
सी । अच्युतकुलकृष्णदासशेषसाहीकेवासी ॥ किंकर

कुंडाकृष्णदासखेससोठगुपानंद । जयघोरीघवविदुरद
यालमोहनपरमांतद ॥ रघुनाथदमोदरचतुरनगनकुं
जश्रीकजेवसतअब । निर्वर्त्तभयेसंसारतेतेमेरेजिजमान
सब १४७ ॥

भूरिदा ॥ दशमे ॥ तवकथाश्रुतंतसजीवनंकविभिरीडितंकलम
षापहस्य ॥ श्रवणमङ्गलश्रीसदातंतभुविगृणन्तितेभूरिदाजनाः १ ॥
संत जन बड़े दाता भक्ति संपत्ति के देनहारे जन तो सामान्य
मनुष्यनको कहे हैं सो नहीं ॥ इलोक ॥ सालोक्यसाधिसामी
प्यसारूप्यैकत्वसप्युत ॥ दीयमाननगृह्णन्तिविनामत्सेवनंजनाः २
जे ऐसे जन तो नहीं चुटकी टुक मांगत डोलें ॥ दोहा ॥ राम
झमल माते फिरै पीवै प्रेम निशंक ॥ आठ गांठि कोपीनमें कहै
इन्द्र सों रंक ३ ॥

टीका ॥ भीथडैडिगहीमेजैतारनविदुरभयोभयोहरि
भक्तसाधुसेवामतिपागीहै । बरषानभईसबखेतीसूखिगई
चितानईप्रभुआज्ञादईबड़ोबड़भागीहै ॥ खेतकोकटावो
औगहावोलैउड़ावोपावो दोहजारमनअन्नसुनीप्रीतिजा
गीहै । करीवहरीतिलोगदेखैनप्रतीतिहोतिगायेहरिमात
राशिलागीअनुरागीहै ५६० मूल ॥ श्रीस्वामीचतुरोन
गनमगनरैनिदिनभजनहित ॥ सदायुक्तअनुरक्तभक्तमंड
लकोपोषत । पुरमथुराब्रजभूमिरमतसबहीकोतोषत ॥
परमधरमहदकरनदेवश्रीगुरुआराध्यो । मधुरबैनसुनि
ठौरठौरहरिजनसुखसाध्यो ॥ सबसंतमहंतअनंतजनय
शबिस्तारेजासुनित । श्रीस्वामीचतुरोनगनमगनरैनिदि
नभजनहित १४८ आर्वैगुरुगेहयोसनेहसोलैसेवाकरैध
रैहियेसांचभावअतिमतिभीजिये । टहललगाइदईनईरू

पवतीतियादियावासोंकहिस्वामीकहैंसोइकीजिये ॥ सेवा
कैरिझायेयातेप्रेमउरनितनयोदयोघरघरबधूकृपाकरिली
जिये । धामपधराइसुखपाइकैप्रणामकरि धैरीत्रजभूमिउ
खसेरसपीजिये ५६१ ॥

खेती सुखिगई ॥ वेषहरयो भयो वहुत चढ़िगयो भगवान्
वेष बढ़ायो चाहै तौ अकालपरै सो परयो तव विचारी कहूं उठि
जाइये १ मगन रैन दिन सतोगुणवृत्तिते रजोगुण तमकी नि-
वृत्ति भक्तमंडल को पोषत द्वारपै रमत ॥ सबैया ॥ डोलत है
इकतीरथ एकनि वार हजार पुराण वके हैं । एकलगे जपमें तप
में थक सिद्धि समाधिमें अटके हैं ॥ वृद्धि जो देखतहों रस-
खानिजु मड़महा सिंगरे भटके हैं । सांचे हैं वे जिन आपनपौ
इहि सांवर ग्वालपै वारिछके हैं २ ॥ टहल लगाई लाहौर में
कान्हा फकीर तुलसी खत्रानी सेवाकरै ३ ॥

श्रीगुविंदचंदजूकोभोरहीदरशकरि केशवशृंगारराज
भोगनंदग्राममें । गोवर्द्धनराधाकुंडहैंकैआवैचुन्दावनमन
मेंहुलासनितकरैचारियाममें ॥ रहैपुनिपावनपैभूखदिन
तीनिबीतेआयेदूधलैप्रवीणयेऊरंगेइयाममें । मांग्योनेकु
पानीलावौफेरिवहप्रानीकहां दुखमतिसानीनिशिकह्यो
कियोकाममें ५६२ ॥

मांग्यो नेकुपानी ॥ दौहा ॥ सबसों बुरोजु मांगिवो मांगत
निकसै जीव ॥ पानिप चाहै आपनी मांगि न पानी पीव १ मांगन
तापै जाइये जाके मुखमें लाज ॥ मांगिते जु प्रसन्नहै पूजै मनके
काज २ आवत देखे साधके पुलकि उठै सब अंग ॥ तुलसी
ताके जाइये कीजै तासों संग ३ ॥

पानीसोंनकाजत्रजभूमिमें विराजदूधपियोघरघरआ

ज्ञाप्रभुजनेदईहै । येतौब्रजवासीसदाक्षीरकेउपासीकैसे
 सोकोलनदेहैकहीदेहैसुनीनईहै ॥ डोलेधामश्यामकह्योजो
 ईमानिलियोसोईदियोलेपरचौहूप्रतीतितबभईहै । जहां
 जाछिपावैपात्रवेगिठूढ़िआपलावै अतिसुखपावैकीनीली
 लारसमईहै ५६३ मूल ॥ मधुकरीमांगिसेवैभगततिनष
 रहौबलिहारकियो ॥ गोपापरमप्रधानद्वारकामथुराखोरा ।
 कालषसांगानेरभलौभगवानकोजोरा ॥ बीठलटोड़ेखेमपै
 डागूंनारेगाजै । श्यामसेनकेवंशचिधरपीपारविराजै ॥ श्री
 जैतारनगोपालकोकेवलकूबैमोललियो । मधुकरीमांगि
 सेवैभगततिनपरहौबलिहारकियो १५१ ॥

क्षीरके उपासी ॥ माता यशोदाने तुमको डारि दूध उफना-
 तो राख्यो ॥ सबैया ॥ यज्ञ सुदान सुमौनकरै बहुकपरु वापी
 तडाग बनावै । करै व्रत नेम सुइंद्रियनिग्रह उग्रह योग ससाधि
 लगावै ॥ है रसखानि हृदै जिनके कबहु नहिं सो सुपने में न
 आवै । ताहि अहीरकी छोहरियां छछिया भरि छाछिको नाच
 नचावै ४ लक्ष्मीसी जहां मालिनि डोले वंदनवारै बांधति पूजा
 पै दृष्टान्त रुक्मिणीजी के बेटाको ६ ॥

टीका ॥ कहतकुम्हारजगकुलनिसतारकियो केवल
 सुनामसाधुसेवाअभिरामहै । आवैबहुसंतप्रीतिकरीलेअ
 नंतजाकोअंतकोनपावैएपैसीधोनहींधामहै ॥ बडीपैगर
 जचलेकरजनिकासिबेको बनियानदेतकुवांखोदौकीजो
 कामहै । कियोबोलिकहीतोलिलियोनीकेरोलिकरिहित
 सौंजिमायेजिन्हेंप्यारोएकश्यामहै ५६४ गयेकुवांखोदि

१ लियो और कियो पदों में यो, को लघुकर पढ़ने या उनके स्थानमें यकार
 करने से पद हीक बनत है ॥

बेकोसुवाज्यों उचारै नाम हुआ कामवानै जानी भयो सुखमा
री है । आइरेत भूमि भूमि भूमि माटी दबि रहे केतक हजार म
न होत कैसे न्यारी है ॥ शोक करि आये धाम राम नाम धुनिका हू
कान परी बीत्यो मास कही वात प्यारी है चलेवा ही ठौर सुरसु
नि प्रीति भौर परे रीति कछु और सुधिवुधि अति टारी है ५६५ ॥

करज ॥ एकादशे ॥ मञ्जक्त पूजाभ्यधिका ॥ वैष्णव मन्धुसत्क
त्या १ सम्बन्धी को उधारयो लाइके सब कोई सत्कार करै है यह
धर्म साधु सेवा धर्म २ आदि पुराणे ॥ यो मे भक्त जनः पार्थ ३
न्यारी है ॥ कूवा जो माटी में रहै जैसे तिवारो महाराज में पै एक
हाथ ऊँचो जल प्रसाद पहुंचे माटी क्यों दूरिकरी सिधाई लगे
याते तो महाराज क्यों ऊँची राखी । कूवा देखिके यह वात
यादिर है जैसे सिद्धको गुफामें बैठारे सिद्धाई को रंगद्वार खान
पान पहुंचे ऐसे हरिने करी ४ ॥

माटी दूरिकरी सब पहुंचे निकट तब बोलिके सुनायो हरे
वानी लागी प्यारिये । दरशन भयो जाइ धाइ पाई लपटाइ
रहे महाराज सीहूँ कूबहूँ निहारिये ॥ धख्यो जल पात्र एक दे
खि बड़े पात्र जाने आनि निजगेह पूजा लागी अति प्यारिये ।
भई भीर द्वार नर उमड़ि अपार आये महिमा अपार बहु संप
तिलै वारिये ५६६ सुंदर सरूप श्याम लाये पधराइ बेकोसा
धुनि जधाम आइ कूवांजूके लसे हैं । रूपको निहारि मनमें बि
चार कियो आप करै कृपामो पै प्रभु अचल है बसे हैं ॥ करत उ
पाइ संत दरतनने कुकहूँ कही जु अनंत हरि रीझे स्वामी असे
हैं । धख्यो जानराइ नाम जानिलई हिये वात अंगमें नमात
सदा सेवा सुखरसे हैं ५६७ चले द्वारा वति छापला वै यह म
ति भई आज्ञा प्रभु दई फिरि घरही को आये हैं । करौ साधुसे

वाधरौभावहियेदृढमांभ टरौजिनिकहूंक्रीजैजेमनभाये
हैं ॥ गेहहीमेशङ्खचक्रआदिनिजदेहभये नयेनयेकौतुक
प्रकटजगगायेहैं । गोमतीसोंसागरकोसंगमहोरह्योसु
न्यो सुमिरनीपठाइके दोऊलैमिलाये हैं ५६८ भयेशिष्य
शाखाअभिलाषासाधुसेवहीकी महिमाअगाधजगप्रकट
देखाईहै । आयेघरसन्ततियाकरतिरसोईकोई आयोवा
कोभाईताकोखीरलै बनाईहैं ॥ कूबाजूनिहारिजानीवाको
हितसादरसोंकीजियेविचारएकसुमतिउपाईहै । कहीम
रिलावोजलगईडरकलपैन लईतसमईसबभक्तनिजिमा
ईहैं ५६९ ॥

कबहूँ निहारिये ॥ महीनाभरि भूमि में दबेरहे सो कूबाभयो
रघुपति ने रक्षाकियो सो प्रसंग गोमती सों सागर को संगम
रह्यो सुमिरनीदे पठाई ॥ संगम भयो सो प्रसंग १ भयेशिष्यशा-
खाद्वै प्रकारके फरसाफूँकी कानफूँका २ ॥

वेगिजललाईदेखिआगिसीवराईहिये भाकेमुखभई
दुखसागरबुड़ाईहै । विमुखविचारितियाकूबाजूनिकारिद
ईगईपतिकियोऔरऐसीमनआईहै ॥ पख्योअकालबेटा
बेटीसोनपालिसके तकेकोऊठौरमतिअतिअकुलाईहै ।
लियेसंगकखोजोईपुत्रपतिमुखभोई आइपरीझींथडामें
स्वामीकोसुनाईहै ५७० ॥

विमुख ॥ पद ॥ जिनके प्रिय न रामबैदेही । सो त्यागिये
कोटि वैरीसों यद्यपि परम सनेही ॥ तज्यो पिता प्रह्लाद विभी-
षण बन्धु भरत महतारी । बलिगुरु ब्रजयुवतिन पति त्याग्यो
जगभये मङ्गलकारी । नातौ नेह रामसों सांचो हृदै सुखील जहां
लौ । अंजन कहा आंखि जो फूटे बहुतीकहाँ कहाँलौ ॥ लतुसी

सोइ हित बन्धु सुप्रीतम पूजि प्राणते प्यारो । जासँगवाहै नेह
 राम सों सोइ निजहितू हमारो १ ॥ दोहा ॥ साधाआयाअन-
 मनी भाया आयासूरि । केवल कूवा कहें तू निकसि बाहरीपूरि ॥
 पहिले तौ सुख को संगहोइ पाछेते सत्संग सो ज्ञान पाइके त्याग
 करै ॥ भक्तहरिः ॥ यांचिन्तयामिसततंमयिसाविरक्तासाप्यन्यमि-
 च्छतिअनंसजनोन्यसक्तः ॥ अस्मत्कृतेतुपरितुष्यतिकाचिदन्या
 धिक्ताञ्चतञ्च मदनञ्चइमाञ्चमाञ्च ॥

नानाविधिपाकहोतआवैसन्तजैसेसोतसुखअधिकआई
 रीतिकैसेजातगाईहै । सुनतवचनवाकेदीनदुखलीनमहा
 निपटप्रवीनमनमांभदयाआईहै ॥ देखिप्रतिमेरोऔर
 तेरोपतिदेखियाहिकैसेकैनिबाहिसकैपरीकठिनाईहै । र
 हौद्वारभारौकरौपहुंचैअहारतुम्हें महिमानिहारिदृगधार
 लैबहाईहै ५७१ कियोप्रतिपालतियापूरीकोअकालमा
 स भयोजबसमैविदाकीनीउठिगईहै । अतिपछितातिव
 हबातअबपावैकहां जहांसाधुसंगरंगसभारसमईहै ॥ करै
 जाकोशिष्यसन्तसेवाहीवतावैकरौजोअनन्तरूपगुणचाह
 मनमईहै । नाभाजूबखानकियोमोकोइनमोललियोदियो
 दरशाइअतिलीलानितनई है ५७२ ॥

दया आई है ॥ साधवोदीनवत्सलाः ३ ॥ दोहा ॥ कबीरा ॥
 साधु मिलै तौ हरिमिलै अन्तररही न रेख ॥ रामदुहाई सतकहा
 साधुआय अलेख ४ हरिते अरु हरिजननिते रंचक अन्तरनाहिं ॥
 येईतोहिं पावनकरै चितवतही क्षणमाहिं ५ ॥

मूल ॥ श्रीअग्रअनुग्रहतेमयेशिष्यसबैधर्मकिधुजा ॥
 जङ्गीप्रसिधप्रयागविनोदीपूरनवनवारी । भलनृसिंहभ
 गवानदिवाकरदृढ़तधारी ॥ कोमलहृदयकिशोरजगत

जगनाथसुलघौ । श्रीरौ अनुगउदारखेमखीचीलघुऊ
 धौ ॥ तेत्रिविधतापमोचनसबै सौरभप्रभुजिनशिरभुजा ।
 श्रीअग्रअनुग्रहतेभयेशिष्यसबैधर्मकिधुजा १५२ भारत
 खण्डभूधरसुमेरटीलाकीपद्धतिप्रकट ॥ अङ्गदपरमानन्द
 दासयोगीजगजागे । खरतरखेमउदारध्यानकेशवअनु
 रागे ॥ अस्फुटत्योलाशब्दलोहकरवंशउजागर । हरीदास
 कविप्रेमसबैनवधाकेआगर ॥ श्रीअच्युतकुलसेवैसदादा
 निसंतदशधाअघट । भरतखण्डभूधरसुमेरटीलाकीपद्ध
 तिप्रकट १५३ मधुपुरीमहोछौमँगलरूपकान्हरकैसेकोका
 रै ॥ चारिवरणआश्रमहुरंकराजाअनपावै । भक्तनिकोबहु
 मानविमुखकोऊनहिजावै ॥ बीरीचन्दनबसनकृष्णकीरंत
 नवरषै । प्रभुकेभषणदेइ महामनअतिशयहरषै ॥ श्रीबी
 ठलसुतविमल्योफिरैदासचरणरजशिरधरै । मधुपुरीमहो
 छौमँगलरूपकान्हरकैसेकोकरै १५४ हरिभक्तनिको
 कलियुगमलैनिबहीनिबाखेतसे ॥ आवहिंदासअनेकउठि
 वआदरहरिलीजै । चरणघोइदण्डौतसदनमैडैरादीजै ॥
 ठौरठौरकरिकथाहदैअतिहरिजनभावै । मधुरवचनमहु
 लाइविविधभांतिनिजुलडावै ॥ सावधानसेवाकरैनिदू
 षणरतिचेतसे । हरिभक्तनिकोकलियुगमलै निबहीनि
 बाखेतसे १५५ ॥

त्रिविध ॥ तृतीये ॥ शारीरामानुषादिव्या वैहासेयेचमानुषाः ॥
 भौतिकाइचकथंक्लेश बाधन्तेहरिसंश्रयान् १ कोऊ कहै दूरि कैसे
 होइंगे शरीर सो लगेहै सत्संगते आत्मज्ञान आत्मज्ञानते मिटे २ ॥
 अच्युतः ॥ दोहा ॥ पिंड सुपीडा परशुराम हितकारी कोउएक ॥

और नगरकी शोभता आवैं जाहिं अनेक २ आवैं जाहिं सुकौतुकी
पूछै मनकी बात ॥ परसाप्रीतस वाहरी को पूछै कुशलात ३ ॥

ज्यो बसन बढे कुन्ती बधूत्यो तूँवर भगवानके ॥ यह अच
रज भयो एक खांड धृत मैदावरधै । रजतरु कमकीरेल सृष्टि
सबही मनहरधै ॥ भोजन रासबिलास कृष्णकीरतनकीनो ।
भक्तनिको बहुमानदान सबहीको दीनो ॥ कीरतिकानीभी
ससुतसुनिभूपमनोरथ आनके । ज्यो बसन बढे कुन्ती बधूत्यो
तूँवर भगवानके १५६ ॥ टीका ॥ बीततवरषमास आवै म
धुपुरीनेम प्रेमसोमहोच्छोराशिहेमही लुटाइये । संतनिजि
माह्नानानापटपहराइपाछे । द्विजनिबुलाइकछूपजैपैनभाइ
ये ॥ आयोकोऊकालधनमालजाबिहाल भयेचाहेपनपाखो
आयेअलपकराइये । रहेविप्रदूखसुनिभयोसुखभूखवढी
आयोसमाजकरोधारीमनआइये ५७३ ॥

घसन बढे ॥ कवित्त ॥ ऐसी भीर परेपर भीरको हरनहार
गिरिको धरनहार सोई धीर धरिहै । दीननिको बांधव विरद
ताको सदा रख्यो दावानल पानकियो सोई पीर हरिहै ॥ पंडुनिकी
पतनी कहत ठाढ़ी पंचनिमें लपटयो है चीर सोतो कैसेकै निवारि
है । खैचौ क्यों न आनि यो दुशासन से दश और मोर पक्ष धरिहै
सो मोर पक्ष करि है ३ पांडवकी रानी गहि रावरसों आनी शिरो-
मणि बिलखानी बिललानी पै न चेतहै । घटत घटाये पट न
घटत ऐंचे पट दुशासन बार बार ढेर कैकै लेतहै ॥ पांचतन छित
आंच तनकन लागी तन लखिकै विपति यदुपति कीनो हेतहै ।
गोपिन के चीरि चोरि रखे पट कोरि कोरि तैइ मानौ जोरि
जोरि द्रौपदीको देतहै २ आनि कुरुवंशको अकरम उदय होत
चाह्यो छल दुहुँओर बन्धुनके गेहमें । पंडवनको तो मानखंडन

सभाके बीच द्रौपदी पुकारि कह्यो गोविन्द सनेहमें ॥ अम्बर के
हैगये अटम्बर आकाश लागि खँचि खँचि हारो खल पावत न छेह
में । भक्तनिके काज ब्रजराज लाज राखन को आप है बजाज
बैठे द्रौपदीकी देहमें ३ ॥ होमही ॥ कवित्त ॥ जिन जिन करनाई
तिन तिन करआई करनहीं नाई तिन करनहीं आई है । कागज
लिखाई जिन कागद लिखाई पाई धरामें धराई तिन धरा धूरि
खाई है ॥ देवै लवराई जिन लई है पराई अब ताहूपास नेकहू न
रहति रहाई है । जिनजिन खाई जिन उदर समाती खाई जिन
न खवाई तिन खाई बहुताई है १ ॥ दोहा ॥ ब्रांस चढ़ी नटिनी
कहै मति कोउ नटिनी होइ ॥ मैं नटकै नटिनी भई नटै सुनटिनी
होइ २ दीया जगत अनूपहै दिया करौ सब कोइ ॥ धरको धरयो
न पाइथे जो कर दिया न होइ ३ नारदते घर पाइके प्रथम सु-
न्दरी होइ ॥ पति बरते सोरीभई सुत बरते पुनिसोइ ४ तापै
नारदजीको अरु ब्राह्मणको वृष्टान्त ॥

अतिसनमानकियोलियजोईसौंपदियो लियोगाठि
बाधितबबिनतीसुनाइये । संतनिजिमावोभावैरासलैकरा
वोभावैजैवोसुखपावोकीजैवातमनमाइये ॥ सीधोलाइको
ठैधख्योरोकहीसोथीलीभख्यो द्विजनिबुलाइदेतक्योहूनि
घटाइये । जितनोनिकासैतातेसौगुनोबढतऔरएकएक
ठौरबीसगुनोदैपठाइये ५७४ ॥

निघटाइये ॥ दोहा ॥ बुरो बिचारै दुष्ट जन चाहै कियो बि-
गार ॥ जिनको काम न बीगैरै रक्षक नन्दकुमार १ जैमाल इनको
बड़ो भइया सो बड़ो भक्तहो ॥ सोरठा ॥ बेटा वाषत नेह जोपै
चीलहै चालनी ॥ जननी काहि जनेह भाँडे मुख भोड़ो तनाहि २ ॥

मूला ॥ जसवन्तभक्तिजैमालकीरूडारखोराठवड ॥ भक्त
नसोअतिभावनिरन्तरअन्तरनाहीं । करजोरैइकपाइमु

दितमन आज्ञामाहीं ॥ वृन्दावनदृढवासकुंजक्रीडारुचि
 भावै । राधावल्लभलालनित्यप्रतिताहिलडावै ॥ परप
 रमधरमनवधाप्रधानूसदनसांचनिधिप्रेमजड । जसवन्त
 भक्तिजैमालकीरूडाराखोराठवड १५७ हुयेहरीदासभ
 क्तनिहितैधनिजननीएकैजन्यो ॥ अमितमहागुनगोप्य
 सारचितसोईजानै । देखतकैतुलाधारदूरिआसैउनमा
 नै ॥ देइदमान्योपैजविदितवृन्दावनपायो । राधावल्लभ
 भजनप्रकटप्ररतापदिखायो ॥ परमधरमसाधनसुदृढक
 लिकामधेनुसेभैगन्यो ॥ हुयेहरीदासभक्तनिहितैधनिजन
 नीएकैजन्यो १५८ ॥ टीका ॥ हरीदासबनिकसोकाशी
 ढिगवासजाको ताकोयहपनतनत्यागोव्रजधूमिही । भू
 योजुरनारीछीन छीड़िगये वैदतीन बोल्योर्योप्रबनीनवृन्दा
 वनरसभूमिही ॥ बेटीचारिसन्तनिकोदईअड्डीकारकरौध
 रौडोलीमाझमोकोध्यानदृढभूमिही । चलेसावधानराधा
 वल्लभकोगानकरैकरैअचरजलोगपरोगामधूमिही ५४५
 आवतहीमगमांभछूटिगयोतनपनसांचोकियो उयामवन
 प्रगटदिखायोहै । आइदरशनक्रियोइष्टगुरुप्रेमभरिपरयो
 भावपूरोजाइचीरघाटन्हायोहै ॥ पाछेआयेलोगशोगकर
 तभरतनैन वैनसबकहीकहीतादिनहीआयोहै । भक्तिको
 प्रभात्रयामेभावऔरआनीजिनि विनहरिकृपाधहकैसेजा
 तपायोहै ५७६ ॥

श्रीवृन्दावनदृढवास ॥ अरिह ॥ चिन्तामणिकी राशि विपिन
 तजि पाइये । अन्त मिलै हरि आपु तरु नहि जाइये ॥ वृन्दा-

वनकी धूरि सुधूसर तन रहै । यह आशा रहै चित्त कहूँ को ना
चहै ३ राठवड़ ॥ दोहा ॥ साध न भेंट भरि भुजा पदरज धरी
न शीश ॥ बड़ी बड़ी करनी करी सो सब है गड़ खीश ४ बधि
सो बाधा मिले कबहुँ छोड़ै नाहिं ॥ मिलै आनि निर्वर्त्त सो छुटैजु
पलके माहिं ५ येमेभक्तजनाःपार्थ नमेभक्तास्तुतजनाः ६ ॥

मूल ॥ भुविभक्तभारजूडैयुगलधर्मधुरंधरजगविदित ॥
बावोलीगोपालगणनिगंभीरगुनारट । दक्षिणदिशविष्णु
दासगांवकासीरभजनभट ॥ भक्तनिर्सायहभावभजैगुरु
गोविंदजैसे । तिलकदासआधीनसुवरसंतनिप्रतिजैसे ॥
इनअच्युतकुलपनएकरसनिबह्योज्यांश्रीमुखगदित । भु
विभक्तभारजूडैयुगलधर्मधुरंधरजगविदित १५६ टीका ॥
रहैगुरुभाईदोऊभाई साधुसेवाहिधेऐसेसुखदाईनईरीति
लैचलाईहै । जाइजामहोछमेबुलायेहुलसायेअंगसंगगा
डीसामासोभंडारीदैमिलाईहै ॥ याकोतातपर्यसन्तघट
तीनसहीजातिवातवेनजानैसुखमानैमनभाईहै ॥ बड़ेगु
रुसिद्धजनमहिमाप्रसिद्धबोले बिनैकैउचारीसोईकहिकै
सुनाईहै ५७७ ॥

जूडैयुगल ॥ दोहा ॥ हरदी तौ जरदी तजे चूना तजे सुपेत ॥
प्रीतिजु ऐसी चाहिये दोउ मिलि एकै हेत १ दोऊ एकमन है
भक्तिको बोझ उठावेतौ उठतौ गुरुगोविन्द वैष्णव सब एकरूप
हैं १ भक्त भक्ति भगवंत गुरु चतुर नाम बपु एक २ ॥

चाहतमहोछौ कियोहुलसतहियोनितलियोसुनिबोले
करौवेगिदैतियारिये । चहुँदिशिडाख्योनीरकसौन्योतौऐ
सेधारआवैबहुभीरसेतठौरनिसवारिये ॥ आयेहरिप्यारे
चारौखंडतेनिहारेतैन जायपगधारेशीशबिनैलैउचारिये।

भोजनकराइदिनपांचलगिछायरह्यो पटपहराइसुखदियो
 अतिभारिये ५७८ आज्ञागुरुदईभोरआवौफिरिआसपा
 समहासुखराशिनामदेवजनिहारिये । उज्ज्वलवसनतनए
 कलेप्रसन्नमनचलेजातवेगिशीशपाइनिमेंभारिये । वेईदे
 वताईश्रीकबीरअतिधीरसाधु चलेदौऊमाईपरदक्षिणावि
 चारिये । प्रथमनिरखिनामहरषिलपटिपगलगिरहेबोड
 तनबोलेसुनौधारिये ५७९ साधअपराधजहांहोततहां
 आवतनहोइसनमानसबसंततहींआइये । देखीसोप्रती
 तिहमनिपटप्रसन्नभयेलयेउरलाइजावोश्रीकबीरपाइये ॥
 आगेजोनिहारैभक्तराजदृगधरै चलीबोलेहैंसिआपकोई
 मिल्योसुखदाइये । कह्योहांजूमनिदईभईकृपापूरणयो
 सेवाकोप्रतापकहो कहांलगिगाइये ५८० ॥

विमैलै उचारिये ॥ महाराज संततौ बहुत आये सामां कहां
 येती ॥ गुरुबोले मनमानौ जितौ देतजावो घटैगी नहीं देनहारौ
 समर्थ है १ आस पास प्रदक्षिणा अश्वमेधी यज्ञोंके फलकी भोग
 के फेरि जन्मधरै दंडोतसों जन्म कटैगो २ ॥

मूल ॥ श्रीकीलहकृपाकीरतिविशदपरमपारषदशिषि
 प्रगट ॥ आशकरनऋषिराजरूपभगवानभक्तगुरु । चतुर
 दासजगअभयछापछीतरजुचतुरबर ॥ लाखाअद्भुतरा
 इखेममनसाक्रमवाचा । रसिकराइमलगोडदेवदामोदर
 राचा ॥ येसबैसुमङ्गलदासदृढधर्मधुरन्धरभजनभट ।
 श्रीकीलहकृपाकीरतिविशदपरमपारषदशिषिप्रगट १६०
 रसराशिउपासकभक्तराजनाथभट्टनिर्मलवयन ॥ आगम
 निग्रमपुराणसकलशास्त्रनजुविचाह्यो । ज्योपारोदैपुटहि

सबहिकोसारउधारयो ॥ रूपसनातनजीवभट्टनारायण
भाख्यो । सोसर्व्वसुउरसांचयतनकरिनीकेराख्यो ॥ हुव
फनीवंशगोपालसुवरागाअनुगाकोअयन । रसरासिउपा
सकभक्तराजनाथभट्टनिर्मलवयन १६१ ॥

रसराशि उपासक ॥ रसराशि शिंगार ताके उपासिक नाथ
भट्ट हैं शिंगार रस में चारों रस हैं शांत मन की लगन नि-
र्व्वल्य दास्य स्वामी के आधीन सख्यमित्रता समता विश्वास
स्वभाव विपर्यय न होइ ॥ वात्सल्य पुत्रवत् लड़ाये ॥ शिंगार कां-
तकांता समप्रीति आसक्ति सो असाक्तिमें चारों रसरहें जैसे पृथ्वी
को गुण सुगन्ध अरु तत्त्व में न मिलै चारों तत्त्व पृथिवीमें मिले
अप तेज वायु आकाश ऐसेही रसराशि शिंगार रस कहावै १ ॥
भागवते ॥ मन्येसुरान् भागवतानधीशे संरंभमार्गाभिनिविष्ट-
चित्तान् । येसंगुगेचक्षतताक्ष्यपुत्रस्यासिसुनाभायुधमापतंतत् २ फ-
नीवंशगोपाल दासके पुत्रनारायणदास ऊंचेगात्रवालेके पुत्र ३ ॥

कड़कठिनकालकलियुगमेंकरमैतीनिकलँकरही ॥ न
श्वरपतिरतित्यागिकृष्णपदसौरतिजोरी । सबैजगतकी
फांसतरकितनुकाज्योंतोरी ॥ निर्मलकुलकांथडाधन्व
परसाजिहिजाई । विदितबृंदावनबाससंतमुखकरतब
डाई ॥ संसारस्त्रादसुखत्रांतकरिफेरिनहींतिनतनचही ।
कड़कठिनकालकलियुगमेंकरमैतीनिकलँकरही १६२ ॥

कठिनकाल ॥ अछीचून को दियो है बाहर तौ रहे श्वानखा-
वै ॥ भीतर रहे तौ मसोखावै अछी की भलीकथा कथा कहौ हो
याकठिन कालमें करमैतीही निष्कलंक रही सतयुगमें विषय में
ब्रह्मा महादेव तपस्वी ऋषीश्वर इंद्रिचाल होतभये बड़े राजा
दिशाजीतिपै इंद्री न जीतीजाहिं या अबलाने सब इंद्री जीतिकै
मन बशकरि बैराग्य कियो १ ॥

टीका ॥ सेखावतनृपकेपुरोहितकीबेटीजानौं वासहौं
खड़ेलाकरभैतीसोबखानिये । बस्योउरश्यामअभिरामको
टिकामहूँते भूलैधामकामसेवामानसीपिछानिये ॥ बीति
जातियामतनवामअनुकलभयो फलअंगगतिमानोमति
छबिसानिये । आयोपतिगौनोलैनभायोपितुमातहियेलि
येचितचावपटआभरणआनिये ५८१ ॥

बस्योउरश्याम ॥ संगत ध्यान श्याम कैसे बस्यो ॥ भागवते ॥
यःस्यात्सर्वत्र सर्वदा ॥ ज्ञान वैराग्य भक्ति सर्वत्र सर्वदेशमें हैं सब
के हृदयमें हैं घटिवहिक्यों गिन्योहैं सो सुनो श्री भगवानको ना-
म बासुदेवहै शुद्ध हृदय में झलकैहैं दर्पणमें मोरचाहोइ तौ न झ-
लकै मँज्योहोइ तौ आइ झलकैसो हृदय दर्पण विषयवासना मो-
रचे सो करमैती को हृदयउज्ज्वल हरिआइ झलके सतसंग विना
हृदय कैसे उज्ज्वलभयो कही पूर्वजन्मकी भक्ति अजररही शो उ-
दयअई ॥ ऐसे अंधेरी कोठरीमें बस्तु धरिकै विदेशकोगयो ॥ आव-
तही तुरत उठाइ लीनी ऐसे पछिले जन्मकी भक्ति सिद्धकरी
जानौं तौ संगकी उपेक्षा तही १ सानिये ॥ कचिस ॥ अवहीं गई
खरिक गाइके दुहाइबेको बावरीहैआइ डारिदोहनी औपानिकी ।
कोऊकहै छरीकोऊ भोनपरी डरीकहै कोऊकहै मरीगति हरीअन-
यानिकी ॥ सासुब्रतठानै नश्वोलति सयानै धाइ दौरि दौरि आ-
नै मानौ खोरि देवतानिकी । सखी सबहूँसे मुरझानि पहिचानी
कहूँ देखी घुसिकानि वारंगीले रसखानिकी २ ॥

पर्योशोचभारीकहाकीजियेबिचारीहाडचामसौसँवा
रीदेहरतिकनकामकी । तातैदेवोत्यागिसनसोबैजिनिजा
गिअरेमिटैउरदागएकसांचीप्रीतिश्यामकी ॥ लाजकोन
काजतौपैचाहैत्रजराजसुतबडोईअहाजतौपैकरै सुधिआ

मकी । जानी भोरगौनो हीतसानी अनुरागरंगसंग एकवही
चली भी जो मतिवामकी ५८२ ॥

हाड़ चाम सों सानो मांसग्रथी देह तो मलीन ॥ सवैया ॥
यौवनजोर मली ललिता सब देखि थकी यह अगम अथाहै । वात
चलै चहुँ ओरहुतै सुयहै मनमें अतिशोच महाहै ॥ खेवनहार पु-
कारकरै अलि मांभ क्री धारलखी परहाहै । नेहकीनावकुदावपरी
मनमेरे मलाह सलाह कहाहै ? जोवनकी सरितागहिरी अरु नैन-
निनीरनदी उमही है । पीतमको पतिया जु लिख्यो बिन खेवटि-
याकहुँ पारभईहै ॥ मानको राजमहा भक्तझोरत प्रेमकी डोरि
सो लागिरही है । मनमेरे मलाह मिलै तो बचो नहिँ बोरि अ-
थाह सलाह यही है २ सोवेजिनि ॥ कुंडलिया ॥ अगर आलकस
जिनिकरो दुर्लभ मानुषदेह । अशा अंधेरी छाड़िदे हरिभजि
लाहोलेह ॥ हरिभजि लाहोलेह देह जिनि राचीतैरी । नातर
यमकेद्वार मूढ़ पैठे जु पवैरी ॥ नादुपटै अति चेतचालै जौ भाई ।
भुलेयमपुरजाइ समझि ध्रुवलोक बसाई ३ ॥ अगर अजाके स्वा-
दतै तृपित न देख्यो कोइ । जो दिन जाहि अनंद में जीवन को
फलसोइ ॥ जीवनको फलसोइ नंदनंदन उरधारै । मंत्रीज्ञान
विवेक असुर अज्ञान निवारै ॥ पदम पत्र ज्यों रहै काल सम
विषै पिछानै । जग प्रपंच ते दूरि सत्व सीता पति जानै ४ ॥
अगर श्याम उपकार निधि भज्यो नहीं गोपाल । पानी को धननी
कस्यो ऊरन भयो गुवाल ॥ ऊरन भयो गुवाल प्रभाहि मानुष
तनदीयो । भक्ति सुधारस छाड़ि जहर बिषयारसपीयो ॥ श्रवण
प्राण मुख प्राण वरण हग उमैगी आपी । तिनको दीनी पीठि
निलज्ज कृतघ्नी पापी ॥

आधीनिशिनिकसी योबसी हिये मूरतिसो पूरतसनेहत
नसुविबिसराईहै । भोरभयेशोरपश्योपितामातशोचक

स्थोकरिकैयतनठौरठौरढुंढिआईहै ॥ चारोंओरदौरैनर
आयेढिगटरिजानीऊंटकेकरंकमध्यदेहजादुराईहै । जग
दुरगंधकोऊऐसीबुरीलागीजामें बहुदुरगंधसोसुगंधलौ
सराईहै ५८३ ॥

सुधि बिसराई है ॥ कवित्त ॥ वैदनि बुलाइ लावो स्याननि
अनेक भांति पर्यति यतन रूप लागति है नरमें । योगी यती जोइ
सी उपासक देव भैरोंके कामरू के वासी पचि मीडो हाथ हेरे
में ॥ लोटि लोटि जाइ वीर वोलै न अजान खाइ पनिआकोनि-
कसी आजु अधिक अंधेरे में । वावरी अनाहक ये भूतन वधाये
फिरे आई ब्रजवाल नंदलालजूके फेरे में १ ॥ चारों ओर वातरस
ठौर ठौर ढुंढिआयेहैं । क्योगिनिको आत्मा अप्राप्त तैसे न मिली
जगदुर्गंध कोऊ ऐसी बुरी लागी जगत दुर्गंधहूं ते डरी ॥ ऊंटको
करंक की सुगन्धमानी जगदुर्वासना करंकहूंसे षड़ीमानी २ ॥

बीतेदिनतीनिवाकरंकहीमेंशंकनहीं बंकप्रीतिरीतियह
कैसेकरिगाइये । आयोकोऊसंगताहीसंगगंगातीरआई
तहांसोअन्हाईबेभूषणबनआइये ॥ ढूढतपरसरामपिता
मधुपुरीआये पतेलैब्रतायेजाइमाथुरमिलाइये । सघनवि
पिनब्रह्मकुंडपरवरएकचढिकरिदेखी भूमिअसुवाभिजा
इये ५८४ उतरिकैआइरोइपाईलपटाइगयो कटीमेरी
नाकजगमुखनदिखाइये । चलौगृहबेगिसबलोकउपहा
सुमितैसासुघरजावोमतिसेवाचितलाइये ॥ कोऊसिंहव्या
घ्रअजुबपुकोघिनाशकरैत्रासमेरेहोइ फिरिमृतकजिवाइ
ये । बोलीकहीसांचबिनभक्ततनऐसोजानौजोपैजियोचा
हौकरैप्रीतियशगाइये ५८५ ॥

वे भूषणवनआई है ॥ रजोगुणको धानो करिके वृन्दावन कहाजाहि । जैसे विदुरजी दुर्योधन की पौरिपे धनक धरिके निकसे श्रीधरजीने लिख्योहै डरै नहीं ॥ चक्रवर्ती लिख्यो अधिक को बानो तीर्थयात्रा में कहा करै यह श्रीवृन्दावन धामहै वैकुण्ठहूते सर्वोपरिहै १ बरपर चढ़िकरि देखो शरीरमें पिंडोलमाटी लगाये हैं २ मृतक जिवाइये तुम सांची कही भक्ति बिना तौ प्राणी मृतकही तुल्यजानौ ३ नागलोक स्वर्गलोकमेंहूँ भक्तिनहीं ॥

कहीतुमकटीनाककटे जोपैहोइकहूँ नाकएकभक्तिना कलोकमेंनपाइये । बरषपचासलगिविषैहीमेंबासकियो तऊनउदासभयेचनेकोषबाइये ॥ देखेसबभोगमेंनदेखेए कइयामतातेकामतजिधामतनसेवामेंलगाइये । रातिते ज्योंप्रातहोतऐसेतमजातभयो दयोलैसरूपप्रभुगयोहिये आइये ५८६ ॥

क्योंकि चारि कौड़ी कीभागसों बावरो है जाइ है ॥ तापैपो स्तीको वृष्टांत अरु भंगीको जहां रागरंग अमृत भोगकैसे न बावरो होइ ताते बिया धन राज्य पाइकैमत्तहोइहै जैसे चोखोधन को पाइकै बावरो भयो ॥ आपुको आपही धिरकार है १ बरष पचास ॥ संसमे ॥ मतिर्नकृष्णपरतःस्वतोत्रा मिथोभिपद्येतग्रह व्रतानाम् ॥ अदांतगोभिर्विशतांतमांधं पुनःपुनश्चर्वितचर्वणानाम् २ ॥ कवित्त ॥ धनदियो धामदियो भामसुत नामदियो दियोजग यंश ताके तू चलयो न रुखमें । नरदेही दीनी सब सुरति सुपरी कीनी कामिनी नबीनी नहीं जानदीनों दुखमें ॥ दामनको रौबे निशिबासर जनम खोवै हरि जो बिलारै गौदी ऐसे तेने सुखमें । धूरिपरी कुलमें बड़ाई में अंगारपर भारपर बुद्धि क्षार परी तेरे मुखमें ३ पुत्रकलत्र सों चौरासी सों छूटैगो सों नहीं ४ ॥ कुण्डलिया ॥ अगर उबारै रामपद के सन्तनिकी वाह । हाहा करे न

छुटि है वैरी वश परिजाह ॥ वैरी वश परिजाह काल यमके संग
 हैंगो । तात मात सुत वाम धीर कोउ नाहि धरैगो ॥ वान पुण्य
 औषधी तिनहुँते काज न सरही । होनहार सो बड़ी उलट घट
 को अनुसरही ५ ॥ अंगर आलकस जिनकरौ हरिभजिये केहेत ।
 बहुत गई थोरीरही थोरीहूमें चेत ॥ थोरीहूमें चेत अमल घट
 थोरै थोरै । आरग विषै वितार शीशुदै सिचपति औरै ॥ द्वै घ-
 टिका में अंग भूप गोविंद पदपायो । दुर्मति तजिके पिगला
 रयामहठ सेज वसायो ६ ॥ दयोलै सरूप ॥ पंचम ॥ कर्म करन
 उपजनि पुनि नाश । सुख दुख शोक मोह नित त्राश ॥ इनके
 हेत दियो हरिने तन । ताहि अन्यथाकरै कौन जन ७ जासु वेद
 वानी बड़दाम । दूढ़ गलबंधा कर्म गुणनाम ॥ ताभें बंधे हरिहि
 हम ऐसे । बहुत है वैल धनी को जैसे ५ गुण कर्मनकरि दुख
 सुख जो जो । देतहैं हरि हमलेतहैं सो सो ॥ ताही के वशरहत
 हैं ऐसे । अन्ध सआखिकेवश जैसे ६ मुक्तहु निजतन धारैतौलों ।
 गर्वत्यागी प्रारब्धहै जौलों ॥ और देह पुनि धरे न ऐसे । स्वप्नको
 तन जाग्यो जन जैसे १० अहिवनहूमें भयहै याते । संगहैंछहइंद्री
 रिपुजाते ॥ आत्माराम जितेन्द्री महा । ता बुधको ग्रह दूषण
 कहा ११ पहले छह इन्द्री वैरीजे । घरमें रहि ऐसे जीतते ॥ ज्यों
 गढ़में रहि रिपुनि जीतजन । फिर तहैं रहै जहां मानै मन १२ ॥
 श्रीशुकउवाच ॥ त्रिभुवन गुरुकी यह आज्ञा सुनि । अपनी है
 हलिकई जदिय पुनि ॥ अति भागवत तऊ प्रियव्रत जो । आदर
 सो गिरनाय लई सो १३ विधिहू मनुकी पूजालै पुनि । लखिस-
 नमान प्रियव्रत तारद सुनि ॥ मन वाशी व्यवहार अगोचर । ता
 ब्रह्महि सुमिरत गमने घर १४ पाय मनोरथ विधिते मनु जो । ना-
 रदको सम्मत लैके सो ॥ सुतहि राजदे अपु त्यागो घर । अतिही
 विषम विषै विषको शर १५ यों निर्मल मानद प्रियव्रतजो । हरि
 इच्छाते पाय राज्य सो ॥ जिहि प्रभाव जग बंधन हरै । तिह
 हरिपद में जित चित धरै १६ ॥

आयेनिशिघरहरिसेवापधरायअतिमनकोलगायवही
 टहलसुहाईहै । कहूंजातआवतनभावतमिलापकहूं आय
 नृपपूछैद्विजकहांसुधिआईहै ॥ बोल्योकोऊतनधामइयाम
 संगपागेसुनि अतिअनुरागेबेगिखबरमंगाईहै । कहोतुम
 जायईशईहांईअशीशकरौ कहीभूपआयोहियचाहउप
 जाईहै ५८७ देखीनृपप्रीतिरीतिपूछीसबवातकही नैन
 अश्रुपातवहरंगीश्यामरंगमें । बरजतआयोभूपजायकै
 लिवायल्याऊं पाऊंजोपैभागमेरेवहीचाहअंगमें ॥ कालि
 तीकेतीरठाढीभीरदृगभूपलखी रूपकछुऔरैकहाकहैवैउ
 मंगमें । कियोमनैलाखबैरआयेअभिलाषराजा कीनीकुटी
 आयेदेशभीजेसोप्रसंगमें ५८८ ॥

भूपआयो ॥ बनवारीदास मुंसी अरु दारासिकोह शाहजादो
 ताको प्रसंग राजाको आशीर्वाद न कियो तापै फकीर अरु बाद-
 शाहको प्रसंगपायँ फइलाइदिये १ ॥ दोहा ॥ जबलग योगी जगत
 गुरु तबलग आश निरास ॥ तुलसी आशा करतही जगगुरु योगी
 दास २ ॥ कवित्त ॥ दुरितविदारिनी सकल जगतारिनी हो नित
 प्रतिपारिनी हो प्यारी ब्रजनाहकी । वृन्दावन रसकैलिकारिनीहो
 हारिनीहो सचनिके तीकी आति तनमन दाहकी ॥ सूरति सुकवि
 रविनंदिनी कृपाकै दीजे लाडिली औ लालकी सुभक्ति उतसाह
 की । और जितिका मनाते सबैपरवाहदेहु रहैपरवाह एकतेरेपरवा-
 हकी ३ ॥ छप्पै ॥ प्राणजाहु तो जाहु जाहु यश सकल बड़ाई ।
 होहु धर्मको नाश अशहि मन गहो जड़ाई ॥ आधिव्याधिके दुख
 करे जे तनको जीरन । करी नहीं उपचारको हो नाना पीरन ॥
 बहुविध बचन कठोर कहि सबै निरादर करो किन । श्रीवृन्दा-
 वनको छाड़िये आवो मन भूलि जित ४ ॥

मूल ॥ गोविंदचंदगुणग्रथनकोखड्गसेनवाणीविस

द ॥ गोपिग्वालपितुमातुनामनिर्णयकियभारी । दानके
 लिदीपकोप्रचुरअतिबुद्धिउचारी ॥ सखासखीगोपालका
 ललीलामेंबितयो ॥ कायथकुलउद्धारभक्तदृढअनतनचित
 यो ॥ गौतमीतिंत्रउरध्यानधरतनत्यागोमंडलरसद ।
 गोविंदचंद्रगुणग्रथनकोखड्गसेनवाणीविसद १६३ ॥
 टीका ॥ ग्वाखियरवाससदारासकोसमाजकरैशरदउज्या
 रीअतिरंगबढयोभारीहै । भायकीबढनिदृगरूपकीचढनि
 तत्ताथेईकीरढनिजोरीसुंदर निहारीहै ॥ खेलतमेंजायमि
 लेत्यागितनभावनासों भेलतअपारसुखरीभिदेहवारी
 है । प्रेमकीसचाईताकीरीतिलै दिखाईभई भावकनिसर
 साई बातउगीप्यारीहै ५=९ ॥

वाणीविशद ॥ पद ॥ द्वै गोपिन विचविच नंदलाला । इयाम
 मेघके दुहुंओर राजत नव दामिनिबाला ॥ करतनृत्य संगीत भेद
 गति गरजत मोर मराला । फहरत अञ्चल चञ्चल कुण्डल
 थहररहै उर माला ॥ मध्यमिली मुरली मोहनधुनि गान वि-
 तान छयो तिहिंकाला । चलिये झमकि झकभँकरि बलयमिलि
 नूपुर किंकिणि जाला ॥ देव विमाननि कौतुक मोहे लखि भयो
 मदन विहाला । खड्गसेन प्रभुरै नि शर्वकी बाढयो रंगरसाला १
 पदपदगावत गावतहाँ प्राण त्यागे देहवारी है । देह छोड़िकै ताहीं
 भावको प्राप्तभयो । सनेहकी द्वै जाति एक बिलुरनि पूरे सनेही
 तन मिलनिहूँ में छोड़े बिलुरनहूँ में छोड़े २ ॥ दोहा ॥ चढ़िकै
 मैं नुरग पर चलियो पावक माहि ॥ प्रेमपन्थ ऐसो कठिन सब
 कोउ निषहत नाहि ३ ॥

मूल ॥ शुभसखाश्याममनभावतोगंगग्वालगंभीरम
 ति ॥ इयामाजूकीसखीनामआगमविधपायो । ग्वालगा

वैभ्रजगौवपृथकनीकेकरिगायो ॥ कृष्णकेलिमुखझोलिअव
टउरअंतरधरई । तारसमेनितगमनअसदआलापनकर
ई ॥ ब्रजवासआसब्रजनाथगुरुभक्तचरणरजअनन्यग
ति । शुभसखाइयाममनभावतो गंगवालंगभीरमति
१६४ टीका ॥ पृथ्वीपतिआयोळंदावनमनचाहभई सारं
गसुनावैकोऊजोरारिलयायेहै । बल्लभहूसंगस्वरभरत
हीछायोरंग अतिहीरिभायोदगअसुवावहायेहै ॥ ठाढो
करजोरिबिनैकरीपैनधरीहिये जियेब्रजभमिहीसोबचन
सुनायेहै । कैदकरिसाथलियेदिछीतेछुटायेदिये हरीदास
तौबरनैआयेप्राणपायेहै ५९० ॥

ब्रजवास आस ॥ भूलना ॥ निकुञ्ज को चन्द अरविन्द रस
सिन्धु को लाडिली कुंवरि मोहिं यहै दीजै । आनन्द को धाम
अभिराम या विपिन को जनम पर जनम कोऊ जीव कीजै ॥
रहू अति धीरे धूसर सदा प्रेम सय सुनत बर बानी कल केलि
जीजै । नवल नत्र कुञ्ज में फिरौ अलबेली दिन निरखि बन
रूप भरि दृगन प्रीजै १ परे जे पतौवा सुख भूख में पीयूख जैसे
खाऊँ रूख रूख तरे ऐसी मोको जीवका । प्यास ते बढैजु पीर
तरनितनैया तीर अंजुलि को भरि धीर छीर नीर पीवका ॥
केलि कल जोहत बिमोहत सुहैहै कवि वृन्दावन कुञ्ज फुज
अमर अमीवका । आनन्द में रूमि घूमि बसींगा बिलास भूमि
आरती को दूमि जैसे सुख पावै हीवका २ ब्रज भूमि को ताल
जुने स्वाद अपने मुखसो लियो ब्रह्माडघाटपै १ इग असुवा ॥
दोहा ॥ रूप चोजकी बात पुनि और कटीली तान ॥ रसिक प्र-
वीननके हृद छेदन करै वे बान १ बतरस नीर गंभीर अतिकोउन
पावत थाह ॥ मीन लीन रस रसिक जो सोई पावत ताह २ ॥

मूल ॥ सोतीशलाध्यसंतनिसभादुतियदिवाकरजा

नियो ॥ परमभक्तिप्रतापधर्मधुजनेजाधारी । सीतापति
 कोसुयशबदनशोभितअतिभारी ॥ जानकिजीवनचरण
 शरणथातीथिरपाई । नरहरिगुरुप्रसादपूतपोतेंचलिआ
 ई ॥ श्रीरामउपासकछापट्टद्वारनकछुउरआनियो ।
 सोतीशलाध्यसंतनिसभा दुतियदिवाकरजानियो १६५
 जगजीवतयशपुनिपरमपदलालदासदोनो लही ॥ हिरदै
 हरिगुणखानिसदासतसंगअनुरागी । पद्मपत्रज्योरह्यो
 लोभकीलहरनलागी ॥ विष्णुरातसमरीतिवधेरेंसोतन
 त्याज्यो । भक्तबरातीचन्दमध्यदूलहज्योराज्यो ॥ खुबखरी
 भक्तिहरिषांपुरैगुरुप्रतापगादीगही । जगजीवतयशपुनि
 परमपदलालदासदोनोलही १६६ ॥

सुयश बदन शोभित ॥ दोहा ॥ तुलसी रसना जो भली
 निशि दिन सुमिरै राम ॥ नहीं तो खैचि निकारियै मुखमें भले
 न चाम १ ॥ छापट्ट ॥ सवैया ॥ आगम वेद पुराण बखानत
 कोटिक निर्गुण जाहि न जाने । जे मुनिते पुनि आपहि आपको
 ईना कहावत सिद्ध सयाने ॥ धर्म सबै कलिकाल ग्रसे जप योग
 वैरागि लै जीव पराने । को करि शोक मरै तुलसी हम जानकी
 नाथ के हाथ विकाने १ ॥ जीवत यश ॥ कुंडलिया ॥ अगर उ
 भयत्ताकी बने है सन्तानि के साथ । यक द्वैद्वै अरु चौपरी पुनि
 लाई दुहुँ हाथ ॥ पुनि लाई दुहुँ हाथ कथा हरिजन मिलिगावै ।
 जीवत यश जगमाहि बहुरि सदगति को पावै ॥ देव पितरविधि
 अवाधि कोऊ बाधा नहि करई । अनन्य भजन गुरु गावित नित्य
 मोबिद अनुसरई १ दो० । काय कसोकै वन ब्रसो हँसो रह्यो गहि
 मौन ॥ तुलसी मन जीते बिना मिटै नहीं दुख जौन ॥ विष्णु राते
 बधेरें परायण करवाई जब पूरीभई तब शरीर त्यागि दियो १ ॥
 इतभक्तहितभगवानरचिदेहीमाधोगवालकी ॥ निशि

दिनयहैबिचारदासजिहिविधिसुखपावै । तिलकदानसों
 प्रीतिहृदैअतिहरिजनभावै ॥ परमारथसोंकाजहियेस्वार
 थनहिंजनै । दशधामत्तमरालसदालीलागुनगानै ॥ अति
 आरतहरिगुणशीलसमप्रीतिरीतिप्रतिपालकी । इतभक्त
 नहितभगवानरचिदेहीमाधवगवालकी १६७ ॥ श्रीअग
 रसुगुरुपरतापतेपूरीपरीप्रयागकी ॥ मानसधाचक्रकाय
 रामचरणनचितदीनों । भक्तनसोंअतिप्रेमभावनाकरि
 शिरलीनों ॥ रासमध्यनिर्याणदेहद्युतिदशादिखाई । आ
 डौचलियोअंकमहोछौपूरीपाई ॥ क्यारेकलशाओलीध्व
 जाविहुषरलाघाभागकी । श्रीअगरसुगुरुपरतापातेपूरी
 परीप्रयागकी १६८ ॥ पृथिप्रकटअमितगुणप्रेमनिधिधन्य
 विप्रनामहिधर्यो ॥ सुंदरशीलसुभावमधुखाणीमंगलक
 रु । भक्तनकोसुखदैनफलयोबहुधादशधातरु ॥ सदन
 वसतनिवेदसारमुक्जगतअसंगी । सदाचारऊदारनेम
 हरिदासप्रसंगी ॥ द्रुतदयादृष्टिवशआगरैकथालोकपाव
 नकर्यो । पृथिप्रकटअमितगुणप्रेमनिधिधन्यविप्रनामहि
 धर्यो १६९ ॥

दयादृष्टि करिकै जगत्को पारउतारै । यातेबृन्दावत निकट
 ताहि छोड़िकै आगरे रहै कथा तो सबही कहै ॥ प्रै कियावान्
 जनकी सुनिकै पारलगै ॥ कवित्त ॥ जैसे शशि निशिको अकाश
 में प्रकाश पावै अमी वरसावै औ सिरावै ताप तनकी । तैसे
 रसिकाई औ अननताई भाई अति वातमुख शोभितहै कियावा
 नजनकी ॥ जैसे धनधामभामश्यामजूके लागेकाम होत अभिराम
 दुखग्राम नागैमनकी । ऐसेहरिगुण कोऊ पुण्य न बखानकरैतौ
 पैकान प्राणहरै सुनिगुणगनकी १ आगरे ॥ दो ॥ बृन्दावनकेघाटको

जल आवत इह बाट ॥ ताते यह है आगरो और गांवसवघाट १ ॥

टीका ॥ प्रेमनिधिनामकरैसेवाअभिरामश्यामआगरो
शहरनिशिशेशजलल्याइये । बरषासुऋतुजिततित
अतिकीचभई भईचितचिताकैसेअपरसआइये ॥ जोपै
अंधकारहीमेंचल्योतीबिगारहोत चलेयोविचारिनीचछु
वैनसुहाइये । निकसतद्वारजवदेख्योशुकवारएकहाथमें
भसालयाकेपाछेचलेजाइये ५९१ जानीयहैवातपहुंचाये
कहूजातयहअबहीबिलातभलेचैनकोऊधरीहै । यमुनालों
आयोअचरजसोलगायोमन तनअन्हवायोमतिवाही
रूपहरीहै ॥ घटभरिधल्योशीशपटवहआयगयो आयग
योघरनहींदेखकहाकरीहै । लागीचटपटीअटपटीनसम
भ्रिपरैभटभटिभईनईनैननीरझरीहै ॥ ५९२ ॥

सुकुवार ॥ एकमसालमें कूपीते तेलडारिविकी शोभाहो न्या-
री ॥ कबित्त ॥ लाल चहुचही पागवांधी अनुरागहीसों तापै झुकि
रह्योतुरा अतिही विशालहै । झगाधरदार फेटा बांध्यो अतिचातु-
रीसों गरेगुजमाल शोभादेत प्रेमजाल है ॥ बाहुजंचोकै चढाय
चूडाचमकायअति औचकही आये जिस हाथ में मसाल है । आ-
गेअगे चल्योजाय मनको लगाय लियो सुधि विसराय चित क-
रत निहाल है १ सोरटा ॥ जामुखसों जो नाम निकसत सो
प्रगटतभयो । बहुरंगी वह श्याम है सरूप अखियन लग्यो २
होहा ॥ पुतरी कारी आंखिकी रूप श्यामको मानि ॥ वासों सब
जगदेखियेवाविन अंधोजानि ३ कारीदृगकी पूतरी कारो हरि
झोअंश ॥ जिनसों सब जगदेखिये जिन विनरूपन रंग ४ प्रेम
किनिधिअति प्रेमनिधि भरयो प्रेमउरजाल ॥ सोई मूरतिधारकै
प्रकटभयो तिहिकाल ॥ प्रेमप्यारमें अंतरनहीं १ प्रेम प्रीतिमें अं-
तरयेतो । बीसीतीन साठहै तेतो २ कहाकरी है और तो अंधरे

केचोर । याने मसालबरायके चितचुरायो भजन भूलिगयो मसालहीको ध्यानरहै ६ ॥

कथाएसीकहैजामेगहैमनभावभरे करैकृपादृष्टिदुहुजनदुखपायोहै । जायकैसिखायोबादशाहउरदाहभयोकहीतियाभलीकोसमूहघरछायोहै ॥ आयेचोबदारकहेचलौयहीबारबार भारीधख्योप्रभुआगेचाहैशोरलायोहै । चलेतवसंगगयेपूत्रेनृपरंगकहा तियनिप्रसंगकरौकाहिकैसुनायोहै ५९३ काहूभगवानहीकीबातसोबखानकहौआनिबैठेनारीनरलागीकथाप्यारीहै । काहूकोविडारैझिझकारैनेकुटारैविषै दृष्टिकैनिहारैताकोलागैदोषभारीहै ॥ कहीतुसभलीतेरीगलीहीकेलोगमोको आनिकैजताईवहबातकछून्यारीहै । बोल्योयाकोराख्योसबकरोनिर्धारनीकेचलेचोपदारलैकैरोकैप्रभुधारीहै ५९४ सोयोबादशाहनिशिआयकैसुपनदियो कियोवाकोइष्टभेषकहीप्यासलागीहै । पीवोजलकहाआबखानेलेबखानेतव अतिहीरिसानेकोपिवावैकोउरागीहै ॥ फिरिमारीलातअरेसुनीनहींबातमेरीआयफुरमावोजोईप्यावैबड़भागीहै । सोतोतैलैकैदकख्योसुनिअरवरयोडख्यो भख्योहियेभावमतिसोवततैजागीहै ५९५ बौरैनरताहीसमैबेगिदेलिवायल्याये देखलपटायेपायनृपदृगभीजेहै । साहिबतिसायेजायअबहीपिवावोनीरऔरपैनपीवैएकतुमहींपैरीझेहैं ॥ लेवोदेशगावँसदापावँहीसालग्योरहौं गहोनहींनेकुधनपायबहुछीजेहैं । संगदैमसालताहीकालमेंपठायेयो कपाटजालखुलेलालप्यायोजलधीजेहैं ५९६ ॥

क्या ऐसी कहै ॥ दोहा ॥ नातो नेह रत रंग भरि कहैं क्या
निवेद ॥ जैसे निठी विदेशकी वांचनही नै भेद ३ राहो नहीं
नेहु ॥ दोहा ॥ जवलागि भक्ति सकामता तवलागि कर्षी सेव ॥
कहि कवीर वे क्यों निले निहकारी निजदेव २ ॥

मूल ॥ दूवरोजाहिदुनियाकहै भक्तमजतमोटीमहत ॥
सदाचारगुरुशिष्यस्यागिविधिप्रकटदिखाई । बाहरनी
तरविमदलर्गानहिंकलियुगकाई ॥ राघवरुचिरसुभाव
अमदआलापनभावे । कथाकीरतननेमनिलेसंतनिगुण
गावे ॥ तापनोतिपूरोनिषकन्यो धनअहरजहीरोतहत ।
दूवरोजाहिदुनियाकहै भक्तमजतमोटीमहत १७० दृढ़
दासनिकेदासत्वकोचौकसचौकीयेमई ॥ हरिनारायनव
पतिपदमचोरछैविराजे । गावैहुशंगावादअटलजयोभरु
जाजे ॥ मेलैतुलसीदासमउरुष्यावदेषकर्याने । बोहिथ
विगराम्दामसुहेलपरमजुजाने ॥ आलीपरमानंदकथुजा
सबलधर्मकोमहिगई । दृढ़दासनिकेदासत्वकोचौकस
चौकीइनमई १७१ अबलाशरीरसाधनसबलयेवाइहरि
भजनवल । उमाप्रकटनुनिरामवाइवीराहीरानि । लली
नारालक्षियुगलपार्वतीजगतधनि ॥ श्रीचनिकेसीधनागो
मतीभक्तउपासिनि । वादररानीविदितगंगावसुनरैदासि
नि ॥ श्रीनेवाहरषाजोपसिनिहुंवररायकीरतिअमल ।
अबलाशरीरसाधनसबलयेवाइहरिभजनवल १७२ श्री
कन्हरदाससंतनिदुपाहरिहृदयालम्बोरुहो ॥ श्रीगुरुग
रनेआयभक्तिमारगसतजान्यो । संसारीअमछांडिभूठि
अरुसांचपिछान्यो ॥ क्योंशाखाहुमचंदजगततेइहिबि

धिन्यारो । सर्वभूतसमदृष्टिगुणनगंभिरश्रुतिभारो ॥ भ
निभक्तभलाईवदननितकुवचनकबहूँनहिँकह्यो । श्रीक
न्हरदाससंतनिकृपाहरिहृदयालम्बोलह्यो १७३ ॥

भजनवल ॥ हरिके भजन सों कलियुग में साधन सबल
किये ॥ छप्ये ॥ महि महाकठिन कलिकाल में कहो लाज कैसे
रहै ॥ जनम करम नित नेम प्रेमसों हरिगुण गावै । ताहि कहत
पाखंड काहि तू जग भरभावै ॥ लावर लौंड लबार ताहि आदर
करिलीजै । शीलवन्त गुणवन्त साधु गहि धक्का दीजै ॥ नित
चतुरदास इक आशुहरि स्वइ व्रतपन नाहिँन गहै । महि महा
कठिन० १ सहनशील संतोष सत्य मनमें नहिँ लावै । निष्प्रेही
हरिशरण प्रेमसों हरिगुण गावै ॥ राग द्वेष सों रहित रुचिर सत
संगति कीजै । हरि गुरु साधुप्रसाद सोई हिरदै धरिलीजै ॥
नित चतुरदास राधारवन निशि वासर इहिविधि कहै । महि महा
कठिन कलिकालमें० २ ॥ कवित्त ॥ आज कलिकाल ऐसो आयो
है कराल अति राखै जो गुपाल टेक तौतौ धृन्दजीजिये । वो-
लिये न चालिये जु वैठि पिंड पालिये जु आंखि कान मूंददोय
मौनव्रत लीजिये ॥ देखी अनदेखी जानि सुनी अनसुनी मानि
माला गहि पानि हानि लाभ चित दीजिये । कीजिये न रोष जो
पै कहै कोऊ वीस सोप्र लीजै धरि शीश जगदीश साखि की-
जिये ३ यह भक्ति को स्वरूप है लम्बो लह्यो एक तौ देखत को
बड़ो एक गुणमें बड़ो जैसे गोरखकी डीबी सो इनको हृदय गुण
में बड़ो दश अंगुल की तापै दशहजार गारी समाय जाहिँ क्षमा
सों १ सवही ते धरा बड़ी जापै नवखंड बसै ताते बड़े सिन्धु
तापै टापू दिखरातहै । ताते बड़े कुम्भजते तीनहीं चुलू में किये
ऐसेहू अकाश में अलेखे जोइ जात है ॥ दीरघ गगन अनी पूरन
पगन भयो माच ब्रह्मांड गयो बामनको गातहै । होतो तुम बड़े
तुमहूँ ते बड़े संत जाके हृदयमें जगन्नाथ जूमसि समातहै १ ॥

दोहा ॥ सबही घट में हरि वसे ज्यों गिरिसुत में ज्योति ॥ ज्ञान
गुरु चकसक बिना कैसे परगट होति २ भूठि अरु सांचि सो संत
सो ज्ञान होय जब पिछाने जैसे गुमास्ते के संग सों साहूकारके
बेटे ने भूँठो जवाहर पिछान्यों तब फोरि डारयो ॥ ऐसे सत्संग
सो ज्ञान है जब संसार भूँठो जानै तब छोंडि दे १ कुत्रचन क-
बहुं ॥ दोहा ॥ संतन निर्दा अति बुरी भूलिकरो जिनकोय ॥ किये
सुकृत सब जनम के क्षण में डारै खोय २ ॥

लखिलद्व्योलटेराआनिविधि परमधरमअतिपीनत
न ॥ कहिनीरहिनीएकएकप्रभुपदअनुरागी । यशविता
नजगतन्योसंतसंमतबडभागी ॥ तैसोपूतसपूतनूतफल
जैसोपरसा । हरिहरिदासनिटहलकवितरचनापुनिसर
सा ॥ सुरसुरानंदसँप्रदायदृढकेशवअधिकउदारमन । ल
खिलद्व्योलटेराआनिविधिपरमधरमअतिपीनतन १७४
श्रीकैवलरामकलियुग्गकेपतितजीवपावनकिया ॥ भगत
भागवतबिमुखजगतगुरुनामनजाने । ऐसेलोगअनेक
ऐचिसनमारगआने ॥ निरमलरतिनिष्कामअजातैसदा
उदासी । तत्त्वदरशीतमहरणशीलकरुणाकीरसी । तस
तिलकदाननवधारतनकृष्णकृपाकरिदृढदिया । श्रीकैवल
रामकलियुग्गकेपतितजीवपावनकिया १७५ टीका ॥ घ
रघरजायकहैयहैदानदीजैमोको कृष्णसेवाकीजैनामली
जैचितलायकै । देखेवेषधारीदशबीसकहुअनाचारी दि
येप्रभुसेवनकैरीतिहिंसिखायकै ॥ करुणानिधानकोऊसु
नैनहींकानकहू बैलकेलगायोसांढोलोटेदयाआयकै । उ
पख्योप्रकटतनमनकीसचाईअहौ भयेतदाकारकहोकैसे
समुभायकै ५९७ ॥

लखिलटयो लटेरा ॥ दोहा ॥ कबिरा हरिके भावतो दूरिहि ते
दीखंत ॥ तन छीने मन उन मने जग रूढड़े फिरंत १ ॥ सौरठा ॥
कहा चीकने गात रस पूछत खिसले परैं ॥ सरस न आवै वात
राख उड़ै रूखे हिये २ और अनुमान करै जैसे मुजावर औ काजी
ने लंगरी भेड़ को अनुमान कियो तत्वदर्शी तापै दृष्टांत बाद-
शाह अरु सुपरा को घर घर जाय कहै क्योंकि करुणासिंधु हैं ॥
जैसे क्रोऊ बेरी हथकरीवाले को जाय कै छुटावै क्योंकि वह तो
आपसकै नहीं । आपनहीं जायकै छुटावै ॥ साधवो दीनवत्सला ॥
जैसे चंद्रा सुधरा ने घर बैठेही बादशाह को तत्व दरशायो रीति
दिखायके भोग लगायके खायो ३ ॥

मूल ॥ श्रीमोहनमिश्रितपदकमलआशकरनयशबि
स्तथो ॥ धर्मशीलगुणसर्वमहाभागवतराजऋषि । पृ
थीराजकुलदीपभीमसुतविदितकीलहशिषि ॥ सदाचार
अतिचतुरविमलवाणीरचनापद । शूरधीरऊदारबिनय
भलपनभक्तनिहद ॥ सीतापतिपदराधासुवरभजननेमकू
रमधर्यो । श्रीमोहनमिश्रितपदकमल आशकरनयश
विस्तथो १७६ ॥ टीका ॥ नरवरपुरताकोराजानरवर
जानोमोहनजुधरिहियेसेवानीकीकरी है । घरीदशमंदिर
मेंरहैरहैचौकद्वारपावतनजानकोऊऐसीमतिहरीहै ॥ प
र्योकोऊकामआयअवहींलिवायल्यावो कहैपृथ्वीपतिलो
गकानमेंनधरीहै । आईफौजभारीसुधिदीजियेहमारीसुनि
वहुबातटारीअतिपरीखरभरीहै ५९८ कहिकैपठाईकहो
कीजियेलराईसुनिरुचिउपजाईचलिपृथ्वीपतिआयोहै ।
पर्योशोचभारी तबवातयोविचारी कहीआय एकजावो
गयोअचरजपायोहै ॥ ॥ सेवाकरिसिद्धिसासटांगहैकैमू
मिपरेदेखिवडीबेरिपावैखड्गलगायोहै । कहिगईएडीऐपै

टेढीहूनभौहकरीकरि नितनेमरीतिधीरजदिखायोहै५१९
 उठिचिकडारितबपाछेसोनिहारिकियोमुजराबिचारि वा
 दशाहअतिरीझेहै । हितकीसचाईयहैनेकुनकचाईहोत
 चरचाचलाईभावसुनिसुनिभीजेहै ॥ बीतेदिनकोऊनूप
 भक्तसोसमायोपृथ्वीपतिदुखपायोसुनीभोगहरिछीजेहै ।
 करैविप्रसेवातिन्हैगाँधलिखिन्यारेदिये प्राणप्यारेलाइक
 रीकरीकहिधीजेहै ६०० ॥

पावत न जानकोऊ खटकेमें मन चटजाय १ क्षणमें प्रवीण
 क्षणमायामें २ पैअठालौ मन न रहै मनलगाइये वांसकी गाँठिकी
 नाई साधनकरिये मनवश करिबेको जैसे ठाटी हरीनै साधन
 कियो सो उलीचोही धीरज फकीर शाहजादे को दृष्टान्त ३ ॥

मूल ॥ निहकिंचनभक्तनभलभजै हरिप्रतीतिहरिवं
 शके ॥ कथाकीरतनप्रीतिसंतसेवाअनुरागी । खरियाखु
 रपारीतिताहिज्योसर्वसुत्यागी ॥ संतोषीसुठिशीलअसद
 आलापनभावै । कालवृथानहिजायनिरंतरगोविंदगावै ॥
 सुशिष्यसपूतश्रीरंगकोउदितपारषदअंशके । निहकिंच
 नभक्तनभलभजैहरिप्रतीतिहरिवंशके १७७ ॥

खरियाखुरपारीति ॥ भारत को इतिहास खरिया खुरपा सर्व-
 सुदान बीये । सो बदरिया वाही के शिरपर रही । बड़े बड़े राज-
 नने बड़ो बड़ो दान दियो पै खरिया खुरपा की बरोबर न भयो
 सर्वसु दियो ॥

हरिभक्तमलाईगुणगंभीरवांटेपरीकल्याणके ॥ नवल
 किशोरदृढ़ाइननन्यमारगइकधारा । मधुरवचनमन
 हरणसुखदजानतसंसारा ॥ परउपकारबिचारिसदाकरु
 णाकीरासी । मनबचसर्वसुरूपभक्तपदरेणुउपासी ॥ ध

भदाससुतशीलसुठिमनमान्यो कृष्णसुजानके । हरिभक्त
भलाईगुणगंभीरवाटेपरीकल्यानके १७८ बीठलोदासह
रिभक्तकोदुहंहाथलाडूलिया ॥ आदिश्रंतनिरबाहभक्तप
दरजव्रतधारी । रह्योजगतसोएँडतुच्छजानैसंसारी ॥ प्र
भुतापतिकीपधतिप्रकटकुलदीपप्रकासी । महतसभामें
मानजगतजानैरैदासी ॥ पदपदतभईपरलोकगतिगुरु
गोविंदयुगफलदिया । बीठलोदासहरिभक्तकोदुहंहाथला
डूलिया १७९ ॥

हरि भक्त भलाई ॥ छप्यै ॥ गुरुभक्ता गुणवन्त ज्ञान विज्ञान
बिचारै । पर उपकारी पिण्डप्रान परद्रोह निवारै ॥ परधन को
परित्याग रहै परनारि उदासा । सर्वात्मा सर्वज्ञ सर्व उर में नित
वासा ॥ तत्त्ववेत्ता तीनिहुँ लोक में ऐसी धरनी जो धरै । सुखई
को सरसै आपनै पुरुष पुरातन उद्धरै १ तुच्छ जाने ॥ दोहा ॥
चाख्यो चाहै प्रेमरस राख्यो चाहै मान ॥ इक द्वै द्वै अरुचोपरी
देत सुनौ नहिं कान २ ॥

भगवन्तरचेभारीभगतभक्तनके सनमानको ॥ काह
वश्रीरंगसुमतिसदानंदसर्वसुत्यागी । श्यामदासलघुबा
लअनन्यलाषाअनुरागी ॥ मारुमुदितकल्याणपरसंबंशी
नारायन । चैताग्वालगुपाल शंकरलीलापारायन ॥ सद
सन्तसेयकारजकियातोषतश्यामसुजानको । भगवन्तरचे
भारीभगत भक्तनकेसनमानको १८० तिहुँतिलकदाम
परकामकोहरीदासहरिनिर्मयो ॥ शरणागतकोसिवरदान
दद्धीचिटेकबलि । परमधरमप्रह्लादशीशजगदेवदेनक
लि ॥ बीकावतवानैतभक्तिपनधर्मधुरन्धर । तूबरकुलके
दीपसंतसेवानितअनुसर ॥ पारथपीठाश्रचरजकबनस

कलजगतमें यशलयो । तिहुँतिलकदामपरकामको हरीदा
 सहरिनिर्मयो १८१ नितटेक एकवंशीतनीजनगोविन्द
 कीनिर्बही ॥ युगुलचन्दकिरपालतासुकोदासकहावै ॥ बाद
 शाहसोपैजहुकुमनहिंवेनुबजावै ॥ वीकावतवानैतभक्तवै
 शपांडवतारी । कपिज्योत्रिरालियोशीशअंवरकैभ्तारी ॥
 पढ़िपीठपरीक्षितसारकासभाशापसन्तनकही । नितटेक
 एकवंशीतनीजनगोविन्दकीनिर्बही १८२ ॥ टीका ॥ प्र
 हलादआदिभक्तगायेगुणभागवतसर्वइकठोरै आयदेखे
 हरिदासमें । रीझजगदेवसोंयो कहिकैवखानकियो जान
 तनकोऊसुनोकरैलैप्रकासमें ॥ रहैएकनटीशक्तिरूपगुण
 जटीगावै लागैघटपटीमोहयाचैमृदुहासमें । राजारिभूवा
 रकरैदेवेको बिचारिपैनपावैसारकाटयोशीशराख्योतेरेपा
 समें ६०१ दियोकरदाहनोमेंयासो नहीयाच्योकाहूसुनि
 एकराजाभेदभावसोंबुलाईहै । नृत्यकरिगाईरीझलेवोक
 ही आयदेऊओड़योवाधोहाथरिसभरिकैसुनाईहै ॥ येतो
 अपमानपानदक्षिणलैदियोयेहो नृपजगदेवजुको ऐसेक
 हांपाईहै ॥ तासोंदशगुणीलीजैमोकोसोदिखाईदीजैदईन
 हीजायकाहूमोहीकोसुहाईहै ६०२ ॥

तोषत श्याम ॥ श्लोक ॥ भक्तेतुष्टे हरिस्तुष्टो हरौतुष्टे च देव
 ताः । भवन्तिसिक्ताःशाखाश्चतरोर्मूलनिषेचने ॥ रहै एकनटीसो
 कालीको अवतार रहै । सो वह नटीरूप गुणगान । राई त्रिदोष-
 तामें आयकैको न मरै सो जगदेव पँवार मोह्यो सो मरयोहीहै ॥

कितौसमुझावैल्यावोकहै यहैजकलागीगईबड़भागी
 प्रासवस्तुमेरीदाजिये । काटिदियोशीशतनरहैइशशक्ति

लखोल्याईबकशीशथारठांपिदेखिलीजिये ॥ खोलिकैदि
खायो नृपमरछागिरायोतनधनकीनबातअबयाको कहाकी
जिये । मैजुदीनोहाथजानिआनिग्रीवजोरिदईलईवही
रीभूपदतानसुनिलीजिये ६०३ सुनीजगदेवरीतिप्रीति
नृपराजसुतापितासोबखानिकहीवाहीकोलैदीजिये । तब
तो बुलायेसमुझाये बहुभाति खोलिबचनसुनाये अजब
टीमैरी लीजिये । नट्योसतबारजब कहीडारोमारिबैलै
मारिबेकोबोलीवहमरोमतिभाजिये । दृष्टिसोनदेखेकही
ल्यावोकाटि मूढ़ल्याये चहैशीशआंखिनिकोगयोफिरि
रीझिये ६०४ ॥

रीभूपद ॥ कवित्त ॥ नृत्यगान अभिनय रूपरीझि रचिकरि
विधिहू को शोच परयो नेही कैसे बचेंगे । लाख लाख लोगन
के घाट घर कैसे कहूं पांच सात वनिआये तेऊ यामें पचेंगे ॥ करत
विचार शोच सागर न वारापार वेई करतार कछु बुद्धिबल रचें
गे । हियेही में आय कही मति पछिताहि तब वाहि वाहि रोयबो
बनाय और सचेंगे ॥ सोरठा ॥ नेहीअक्षर दोय धेतौ बिधना ना
रचे ॥ को पावेगो ओय नेह पंथ नेही बिना १ प्रीति नृपराजसुता
कै भई वाके रूप पै रीझि वादशाह की बेटी जाति पांति न बि-
चारी ॥ दोहा ॥ नृप विद्या अरु बेलि तियये न गनैकुल जाति ॥
जो इनके नियरे बसै ताही को लपटाति २ याको कहा कीजिये
रीझके पचायबेको वाह वाड़कार है ३ शाहजहां को दृष्टान्त ४ ॥

निष्ठारिभवाररीतिकीनीबिसतारयह सुनोसाधुसेवा
हरीदासजुनेकरीहै । परदानसंतसोहैदेतहैअनन्तसुखर
ह्योसुखजानिभक्तसुताचितधरीहै ॥ दोऊमिलिसोवैऋतु
ग्रीषमकीछातपर गातपरगातमोयेसुधिनहींपरीहै । दा

तनकेकरबेकोचढोनिशिशेषआप चादरउठायनीचेआये
 ध्यानहरीहै ६०५ जागिपरेदोऊअरवरदेखिचादरकोपे
 खिपहिंचानिसुतापिताहीकीजानीहै।सन्तदृगनयेचलेबैठे
 मगपगलयेगयेवेएकांतमें योबिनतीबखानीहै ॥ नेकुसाव
 धानहैकैकीजियेनिशंककाज दुष्टराजछिईपाय कहैकटुबा
 नीहै । तुमकोजुनावधरैजरैसुनिहियोमेरोडरै निंदाआप
 नीनहोतसुखदानीहै ६०६ इतनीजतावनीमेंभक्तिकोक
 लंकलगेऐपैशंकवहीसाधुघटतीनभाइये । भईलाजभारी
 विषैवासधोयडारीनीके जीतेदुखराशिचहैकहूंउठिजाइ
 ये ॥ निपटमगनकियेनानाविधिसुखदियेदियेपैनजानिमि
 लिलालनिलडाइये । गोविंदअनुजजाकेवांसुरीकोसांचो
 पनमनमेंनल्यायोनुपइहिविधिगाइये ६०७ ॥

वांसुरी को सांचोपन ॥ दोहा ॥ गोविन्दा गाढ़ी गही हुकुम
 किया बादशाह ॥ कै मुरली की टेरदै अंबर चपुपेवाह १ अंबर
 चपुपे वाहसी मुरली बाजै नाह ॥ मुरली बाजै नाहदेह एकसाधव
 के माह २ ॥

मूल ॥ श्रीनंदकुवैरकृष्णदासको निजपदतेनूपुरदि
 यो ॥ तानमानसुरतालसुलयसुंदरसुठिसोहै । सुधाअंगभ्रू
 भंगगानउपमाकोहै ॥ रत्नाकरसंगीतरागमालारंगरा
 सी । रीझैराधालालभक्तपदरेनुउपासी ॥ सतस्वर्णकारख
 डगूसुवनभक्तभजनपनददलियो । श्रीनंदकुवैरकृष्णदास
 कोनिजपदतेनूपुरदियो १८३ टीका ॥ कृष्णदासयेसुनार
 राधाकृष्णसुखसार लियोसेवापाछेदृत्यगानविसतारिये ।

ह्वैकरिमगनकाहूदिनतनसुधिभूली । एकपगनूपुरसोगि
 खोनसँभारिये ॥ लालअतिरंगभरेजानियतभंगभईपायँ
 निजखोलिआपवांध्योसुखभारिये । फेरसुधिआईदेखिधा
 रालैबहाईनैनकीरतियोछाईजगभक्तिलागीप्यारिये ६०८
 मूल ॥ प्रभुपरमधरमप्रतिपोषिकै संन्यासीयेमुकुटमनि ॥
 चितसुखटीकाकारभक्तिसर्वोपरिराखी । दामोदरतीरत्य
 रामअर्चनविधिभाखी ॥ चन्द्रोदयहरिभक्तनरसिंहारनकी
 नी । माधोमधुसूदनसरस्वती परमहंसकीरतिलीनी ॥
 परबोधनंदरामभद्रजगदानंदकलियुगगधनि । प्रभुपरम
 धरमप्रतिपोषिकैसंन्यासीयेमुकुटमनि १८४ प्रबोधानं
 दसरस्वतीकीटीका ॥ श्रीप्रबोधानंदबड़ेरसिकजानंदकंद
 श्रीचैतन्यचंद्रजूकेपारषदप्यारेहैं । राधाकृष्णकुंजकेलि
 निपटिनवेलि कहीझेलिरसरूपदोजकियेदृगतारेहैं ॥ वृ
 न्दावनवासकाहुलासलैप्रकासकियो दियोसुखसिंधुकर्म
 धर्मसबटारेहैं । ताहीसुनिसुनिकोटिकोटिजनरंगपायोबि
 पिनसुहायोबसेतनमनवारैहैं ६०९ ॥ मूल ॥ अष्टांगयो
 गतनत्यागियोद्दार्कादासजानेदुनी ॥ सरिताकूकसगांव
 सलिलमेंध्यानधरयोमन । रामचरणअनुरागसुदृढजाके
 सांचोपन ॥ सुतकलत्रधनधामताहिसोंसदाउदासी । क
 ठिनमोहकोफंदतरकितोरीकुलफांसी ॥ गुरुकील्हकृपाब
 लभजनकैज्ञानखड्गमायाहुनी । अष्टांगयोगतनत्यागि
 योद्दार्कादासजानेदुनी १८५ ॥

रागमाला ॥ कवित्त ॥ भैरव बिलावल मिलावत ललित
 मांभू गूजरी देव गंधार प्रातही विभासरी । प्रथम मलार मेघ

रामकली आसावरी जैतिश्री आदि ऐसे अमरधनासरी ॥
हिंडोल सारंग नट अडानो उपावे घटि कालिंगड़ी खंभायची
सोहै चतुर्मासरी । शिरीरागसिंधु गौरी मालव बसंत टोड़ी सो-
रठ सदा सो रहत उदासरी १ दीपक सूहो कल्याण केदारो गान
बखत विहागरे को गावत बिलासरी । पंचम बड़े अपानो जंगली
काफी सयानो माल गौड़ मालकोश रागको निवासरी ॥ कहत
दयाल पै गुपाल के छतीसों राग ऐसी विधि मोहन बजाई बन
बासरी । सोई तो सुजान हरि केरे गुणगाय जाने बाकीको बकत
ज्यों भुवंग लेत सासरी २ रागज्ञान ॥ सुखिनिसुखनिवासो दुः
खितानाविनोदः श्रवणहृदयहारीमन्सथस्थाग्रदूतः ॥ रतिरभसवि
धातावल्लभः कामिनीनां जगतिजयतिनादः पञ्चमश्चोपवेदः १ भै
रवः पञ्चमोनाटयो मल्लारोगौडमालवाः । ललितोगुर्जरीदेशी
वराडीरामरुत्तथा ७ मतारागार्णवैरागाः पंचैतेपंचमाश्रिताः २
नटनारायणः पूर्वो गान्धारः सारंगस्तथा ॥ तद्वत्केदारकर्णाटौ पंचैते
पंचमाश्रयाः ३ मेघोमल्लारकोमालकोशकः प्रतिमंजरी ॥ आसाव
रीचपंचैते रागामल्लारसंश्रयाः ४ हिंडोलछीगुलाधारी गौरीकोला
हलस्तथा ॥ पंचैतेगौरनामानं रागमाश्रित्यसंस्थिताः ५ भूपालोहरि
पालश्च कामोदाघोरणीस्तथा ॥ त्रैलावलीचपंचैते रागादेशाह्वया
श्रिताः ६ अन्ये च बहवोरागा जातादेशविशेषतः ॥ मारुप्रभृतयो
लोकपंचभद्रासिकास्समृताः ७ सस्वरं सरसंचैव सरागं मधुराक्षरम् ॥
सालंकारप्रमाणंचषड्विधंगीतलक्षणाम् स्वरेणपदसंयुक्तं छंदसा
चसुसंयुतम् ॥ स्वैनाङ्कितस्वतालंच स्वगीतं तेन भण्यते ६ वृन्दावन
वासको हुलास ॥ कवित्त ॥ परे जे पतौवा सूख भूखमें पियूख
जैसे खाऊं रूख रूख तरे ऐसी तौको जीवका । प्यासते वड़े जु
चार तरन तनैया तीर अंजलीको भरि भरि धीर नीर पीवका ॥
केलि कल जोहत सो है है कवि वृन्दावन कुंज पुंज अमर यो
अमर अमीवका । आनंदमें भूमि घूमि बसौंगो विलास भूमि
आरतको ड्रुम जैसे सुखपावै हीरका ३ ॥ छप्यै ॥ प्राण जाहु तै

जाहुहोहि यश सकल बढ़ाई । होहु धर्मको नाश भरम मन गहै
जड़ाई ॥ आधि व्याधिके दुःख करै जे तनको जीरन । करौ नहीं
उपचार कोटि हो नाना पीरन ॥ भगवान इहि विधि बचन क-
ठोर कहि सबै निरादर करौ किन । औवृन्दावनको छाँड़िये यह
आवो मनमाहिं जिन ४ ॥

पूरणप्रकटमहिमाअनंतकरि हैकौनबखानको ॥ उदय
अस्तपरवत्तगहरुमधिसरिताभारी । योगयुगतिविश्वा
सतहांदृढआसनधारी ॥ व्याघ्रसिंहगूँजेहुखरेककुशंकन
माने । अर्द्धनजातेपवनउलटऊरधकोआने ॥ सुठिशा
खिशब्दनिर्मलमहाकथियापदनिर्बानको । पूरणप्रकटम
हिमाअनंतकरि हैकौनबखानको १८६ श्रीरामानुजपद्धति
प्रतापभट्टलक्षमणअनुसख्यो ॥ सदाचारमुनिवृत्तिभजन
भागवतउजागर । भक्तनसोंअतिप्रीतिभक्तिदशधाको
आगर ॥ संतोषीसुठिशीलहृदयस्वारथनहिलेशी । परम
धरमप्रतिपालसंतमारंगउपदेशी । श्रीमद्भागवतबखानि
कैनीरक्षीरविवरणकख्यो । श्रीरामानुजपद्धतिप्रताप भट्ट
लक्षमणअनुसख्यो १८७ दधीचिपाछेदूसरकरीकृष्णदा
सकलिजीतिहै ॥ कृष्णदासकलिजीतिन्योतिनाहरपलदी
यो । अतिथिधरमप्रतिपालप्रकटयशजगमैलीयो ॥ उ
दासीनताअवधिकनककामिननहिरात्यो । रामचरणम
करंदरहतनिशिदिनमदमात्यो ॥ गाहिगलितैगालितअ
मितगुणसदाचारसुठिनीतिहै । दधीचिपाछेदूसरकरी कृ
ष्णदासकलिजीतिहै १८८ टीका ॥ बैठेहागुफामेदेखे
सिंहद्वारआयगयो लयोर्योबिचारहोअतिथिआजुआयो
है । दईजांघकाटिडारिकीजियेअहारअजूमहिमाअपार

धर्मकठिनबतायोहै ॥ दियोदरशनआयसांचनेरह्योनजा
यनिपटसचाईदुखजान्योनबिलायोहै । अन्नजलदेवेहीको
हीखतजगतनरकरिकौनसकैजनमनभरमायोहै ६१० ॥

योगयुक्ति विश्वास ॥ कवित्त ॥ पंडी वायें पांवकी लगावै
सीवनी के बीच वाही जौनठौर ताहि नीके करिजानिये । तैसेही
युगतिकरि बिधिसों प्रकार मेट मेटहुके ऊपर दक्षिण पावँ आ-
निये ॥ सरलशरीर बृह इंद्रियसँयम करि अचल उरधदृष्टि त्रूके
मध्य ठानिये । मोक्षके कपाट को उघारत अघश्यमेव सुन्दर क-
हतसिद्ध आसन बखानिये १ ॥ छन्द ॥ दक्षिण ऊरु उपर प्रथम
वामहिंपगथानहिं । वायें ऊरु उपर तवाहिं दक्षिण पगथानहिं ॥
दोऊ करि पुनि फेर दृष्टि पीछेकर आवय । दृढ़कै गहे अंगुष्ठ चिबुक
बक्षस्थल लावय ॥ इहिभांति दृष्टि उनमेष करि अग्रनासिका
राखिये । सबव्याधि हरण योगीनकी पद्मासन महि भाखिये २
प्रथम अंग यम कहो दूसरो नेम बताऊं । त्रिविध सुआसन भेद
सुतो अब तोहिं सुनाऊं ॥ चतुरथ प्राणायाम पंचमो प्रत्याहार ।
षष्ठसुनो धारणाध्यान सप्तविस्तार ॥ पुनि अष्टअंग सामाधिके सो
सबतोहिं सुनाइहौं । सुठि सावधानहै शिष्य सुनि भिन्नभिन्न स-
मुझाइहौं ३ प्रथम अहिंसा सत्यजानिपुनि चोरी त्यागे । ब्रह्मचर्य
वृद्धगहै क्षमा धृति सो अनुरागे ॥ दया बड़ो गुण होय ओय जब
हिरदय आनै । प्रत्याहार पुनिकरै शोच नीके विधि जानै ॥ ये दश
प्रकारके यम कहै हठप्रदीपिकाग्रंथ में । जो पहिले इनको गहै
सो चलत योगके पंथमें ॥ तप संतोषो गहै बुद्धि आस्तिक सो
आनै । दान समझि करि देय मानि पूजा न बखानै ॥ वचन सि-
धांत सु सुनो लाज मति वृद्ध करि राखै । जायक मुख सों अल्प
असद आलापन भाखै ॥ पुनि होशकरै इहिविधि जहां तैसीविधि
सतगुरु कहै । ये दश प्रकारके यमकहै ज्ञान बिना कैसे लहै ४ ॥

मूल ॥ भुविभलीभांतिनिबहीभगति सदागदाधर

दासकी ॥ लालबिहारीजपतरहतनितवासरफूलयो ।
 सेवासहजसनेहसदाआनंदरसभूलयो ॥ भक्तनिसोंअति
 प्रीतिरीतिसबहीमनभाई । ऐसीअधिकउदाररसमहरि
 कीरतिगाई ॥ हरिविश्वासहियआनिकै सपनेहुआनन
 आशकी । भुविभलीभांतिनिबहीभगति सदागदाधर
 दासकी १८६ टीका ॥ बुरहानपुरदिगवागतामैबैठेआय
 करिअनुरागगृहत्यागपागेर्यामसों । गावँमैनजातलोग
 कितेहाहाखातसुखमानलियो गांतनहीं कामअरुकाम
 सों ॥ पथ्योअतिमेहदेहबसनभिजायडारे तबहरिप्यारे
 बोलेस्वरअभिरामसों । रहेएकशाहभक्तकहीजायल्याबो
 उन्हें मन्दिरकरावोतेरोभख्योघरदामसों ६११ नीठिनीठि
 ल्यायेहरिबचनसुनायेजवतब करवायोऊंचोमन्दिरसँवा
 रिकै । प्रभुपधरायेनामलालऔबिहारीश्याम अतिअभि
 रामरूपरहतनिहारिकै ॥ करैसाधुसेवाजामें निपटप्रसन्न
 होतवासीनरहतअन्नसोवैपात्रभारिकै । करतरसोईसोई
 राखीहीछिपायसामांआये घरसंतकहीआयज्यायेप्यारि
 कै ६१२ बोल्योप्रभुभूखेरहैताकेलियेराख्योकछुभाख्यो
 तबआपकाढोभोरऔरआवैगो । करिकैप्रसाददियोलियो
 सुखपायोतब सेवारीतिदेखिकहीजगयशगावैगो ॥ प्रात
 भयेभूखेहरिगयेतीनयामटरिहेक्रोधभरिकहै कबधौंछुटा
 वैगो । आयोकोऊताहीसमैद्वैशतरूपयाधरे बोलेगरुशी
 शलकैमारोकितौपावैगो ६१३ ॥

भलीभांति निबही ॥ नवातहे इनको निर्वाहभयो ॥ निष्काम
 भक्ति सरूपकी है सहजक मनकी वृत्तिलगे १ सोवै पात्र भारि ॥

दोहा ॥ सबतत्त्वनिको तत्त्वहै शोच प्रकट संसार ॥ लगे न अहिं
डोचोरकी ज्यों माटीतत्त्व कुम्हार ॥ सबको सार भजन २ ॥

डख्योवहशाहमतिमोपैकलुकोपकियो कियोसमाधान
सबबातसमुझाई है । तबतोप्रसन्नभयोअन्नलगैजितोदे
यसेवासुखलेतशाहरुचिउपजाईहै ॥ रहेकोऊदिनपुनि
प्रभुपुरीवासलियोपियो ब्रजरसलीलाअतिसुखदाईहै ।
लाललैलड़ायेसंतनीकेभुगतायेगुण जानेजितेगायेमति
सुंदरलगाईहै ६१४ ॥ मूल ॥ हरिभजनसीवस्वामीसर
सश्रीनारायणदासअति ॥ भक्तियोगयुतसुदृढ़देहनिज
बलकरिराखी । हियेस्वरूपानंदलालयशरसनाभाखी ॥
परचयप्रचुरप्रतापजानमनरहसिसहायक । श्रीनाराय
णप्रकटमनोलोगनसुखदायक ॥ नितसेवतसंतनिसहित
हितदाताउत्तरदेशगति । हरिभजनसीवस्वामीसरस
श्रीनारायणदासअति १६० टीका ॥ आयेबद्रीनाथजू
तेमथुरानिहारिनैनचैनभयो रहेजहांकेशीजूकोद्वार है ।
आधेदरशनलोगजूतिनकोशोगहिये रूपकोनभोगहोत
कियोयोंबिचारहै ॥ करैरखवारीसुखपावतहै भारीकोऊ
जानैनप्रभावउरभाव सोअपारहै । आयोएकदुष्टपोटपुष्ट
सोतोशीशदई लईचलेमगएसोधीरजहीसारहै ६१५ ॥

रहेकोऊ दिन ॥ सवैया ॥ काल कराल गयो सु गयो अजहूं
सुनि जो छिनहीं छिन छीजै । श्रीमथुरा यमुनातट वासकै जी-
वत जीवन को फललीजै ॥ नाथनिरंतर केशव सुंदर लाल को
आगवतामृत प्रीजै । छांड़ि सबै नतिया अँखिया भरिकै सबको
सुख देखिबो कीजै १ जूतिनको शोग ॥ दोहा ॥ हरिके मंदिर
जात है हरिदर्शन की आश ॥ औधोहोय पायँनिपरै चित्तपन्है

यनपास २ लै चले ॥ दोहा ॥ कायाकोठी लोहकी पिय पारषद
हमाह ॥ रजवंतन सुखसों मढ़े कंचन होती नाह ३ ॥

कोऊबड़ोनरदेखिमगपहिंचानिलियोकियोपरनामभू
मिपरिभूरिनेहको । जानिकैप्रभावलियेपावमहादुष्टहूने
कष्टअतिपायोछूट्योअभिमानदेहको ॥ बोलेआपचिता
जिनकरोतेरोकामहोतनैननीरसोतमुखदेखोनहींगेहको ।
भयोउपदेशभक्तिदेशऊनजान्यो साधशक्तकोविशेषयही
जान्योभावमेहको ६१६ ॥ मूल ॥ भगवानदासश्रीसहि
तनितसुहृदशीलसज्जनसरस ॥ भजनभावआरूढगूढ
गुणवलितललितयस । श्रोतार्थीभागवतरहसिज्ञाता
अक्षररस ॥ मथुरापुरीनिवासआशपदसंतनिइकचित ।
श्रीयुतखोजीश्यामधामसुखकरिअनुचरहित ॥ अतिगं
भीरसुधीरमतिहुलसतमनजाकेदरस । भगवानदासश्री
सहितनितसुहृदशीलसज्जनसरस १६१ ॥

धीरज को सारहै । विचारयो हरिहीने यह पोटि धरी है यह
कौनहै ॥ श्रुतौ ॥ सर्व खल्विदं ब्रह्म ॥ ऐसो ज्ञान आवै तब सुखी
होय नहीं तौ दुखपावै जैसे चल्यो जाय काहू कही बैल मारै-
गो ॥ कही ब्रह्म सब में है ॥ बैलने मारयो कहनेवालो भी तौ
ब्रह्म है । अवश्यमेवभोक्तव्यंकृतकर्म शुभाशुभम् ॥ हरिकी सेवामें
कहा लाभहै जो कर्मभोगे ॥ कर्मक्षीण होय है सेवाते १ भाव
मेह को ॥ पद ॥ मुंडमुड़ाये की लाज निबहियो । माला तिलक
स्वांगधरि हरिको मारिगारि सबही की सहियो ॥ विधि व्यो-
हार जारसों कलियुग हरिभरतार गाढ़ोकरि गहियो । अनन्य
व्रत धरि सत जिन छाड़ो विमद संतकी संगति गहियो ॥ अग्नि
खादि विषको लै पीवो विषयनिको मुखभूलि न चाहियो । व्यास

आशुकरि राधापति की वृन्दावन को वेगि उमहियो २ ॥

टीका ॥ जानिवेकोपनपृथ्वीपतिमनआई योंदुहाईलै
दिवईमालातिलकनधारिये । मानिआनिप्राणलोभकेति
कनित्यागिदिथे छिपेनहींजातजानिवेगिमारिडारिये ॥
भगवानदासउरभक्तिसुखराशिभयो कखोलैसुदेशवेष
रीतिलागीप्यारिये । शीभ्योनृपदेखिरीझिमथुरानिवात
पायोमन्दिरकरायोहरिदेवसोनिहारिये ६१७ ॥ मूल ॥
भरिभक्तपक्षउद्धारतायहनिबहीकल्यानकी ॥ जगन्नाथको
दासनिपुणअतिप्रभुमनभायो । परमपारषदसमझिजा
निप्रियनिकटबुलायो ॥ प्राणपयानोकरतनेहरघुपतिसो
जोख्यो । सुतदाराधनधाममोहतिनकाज्योतोख्यो ॥ कोध
नीध्यानउरमेंबस्यो रामनामसुखजानकी । भरिभक्तपक्ष
उद्धारतायहनिबहीकल्यानकी १६२ ॥

जानिवे को पतिसो भगवान्दासके संग सो रसखानि मीर
माधव आदिभक्त बहुत होतभये रसखानि के कंठ में दैसै का
माला रहै तिनसों जहाँगीर कही कंठीमाला सब कोऊ पहिरै
तुमपती क्यो पहिरी तब रसखानि बोले ॥ दोहा ॥ तनपाहन जल
अगम को तनक काठ करैपार ॥ बड़ेकाठ ऊपरतरै जबतन पा-
हिन भार १ अरु मीरमाधव कृष्णनाम प्रेमसों जु लेख सुनिवेको
कैसे रामलोग फिरयो करै तिनसों बादशाह कही नाम तो सब
कोऊलेहै तिहारेही पाछे क्यो फिरयो करैहै तब मीरमाधवकही ॥
दोहा ॥ मधुर वचन सुनि सुवा के काहु न अचरज होय ॥ बोल-
नि कागाकी कठिन सुनि धावै सबकोय २ तबपन देखिवेको दुहा-
ई फिरई ॥ मालाकंठी न धारै करयोले सुदेश वेश ॥ श्लोक ॥
यद्विवातादिदोषेणमद्भक्तोसांचविस्मरेत् ॥ तर्हिस्मराभ्यहंभक्तंसया
तिपरसांगतिम् ३ हरिको काहे को निहोरा कीजिये कंठीमाल पै

नारीरद्वोड़िये ॥ दोहा ॥ कंठीमाला सुमिरणी पहिरत सबसंसार ॥
पनधीरो कोउ एकहै और कियो शृंगार ४ ॥

जेसोदरशोभूरामकेसुनोसंततिचकीकथा ॥ संतदास
सदन्नत्तराछोईकरिडाख्यो । महिसामहाप्रबीणभक्तिवि
तधर्मविचाख्यो ॥ बहुरोमाधवदासभजनबलपरचोदीनो ।
करियोगिनिसोवादवसनपावकप्रतिलीनो ॥ नितपरम
धर्मविस्तारिहितप्रकटभयेनाहिनतथा । जेसोदरशोभूरा
मकेसुनोसंततितनकीकथा १६३ बूड़ियेविदितकन्हरकृ
पालआत्मरामआगमदरसि ॥ कृष्णभक्तिकोथंभद्रहकुल
परमउजागर । क्षमाशीलगंभीरसर्वलक्षणकोआगर ॥
सर्वसुहरिजनिजानिहृदयअनुरागप्रकाशै । अशनबसन
सनमानकरतअतिउज्ज्वलआशै ॥ श्रीशोभूरामप्रसादते
कृपादृष्टिसवपरवरसि । बूड़ियेविदितकन्हरकृपालआत्म
रामआगमदरसि १९४ ॥

योगीबोले तुमतौ मालाकंठी अंगनमें धरो हंसशृंगी मुद्रा मा-
धवदास बोले अचला कोपीन धरेंगे ॥ दोहा ॥ कंठी माला सुमि-
रणी पहिरत सब संसार ॥ पनधारी कोउ एकहै और न कियो
शृंगार १ शोभूमाला शोभकी पनकी माला नाहि ॥ एडेको सोतड़-
गडो पाल रह्यो गलमाहि २ ॥ अचला कोपीन बचगये ॥ शृंगी
मुद्राजलगेय पारथके क्षमाशील ॥ दोहा ॥ क्षमा धडेनको चाहिये
ओछेनको उतपात ॥ कहा विष्णुको घटिगयो जो भृगु मारी
लात ३ ऐसे क्षमावान् हैं सो नारायणही हैं शील गंभीर स्वभाव
गंभीर समुद्र सो घटै धडै नहीं सर्वलक्षणको आगर सो भगवान्
दास पारायण उज्ज्वल आशय निष्कपट विषय वासनाकी चाहै
सो समान नाहींकरै है यह उज्ज्वलआशय ४ ॥

रचिभक्तरत्नमालासुधनगोविंदकंठविकाशकिय ॥ रु
चिरशीलघननीललीलरुचिसुमतिसरितपति । विविध
भक्तअनुरक्तव्यक्तबहुचरितचनुरअति ॥ लघुदीरघसुरशु
द्धबचनअविरुद्धउचारन । विस्वावीसविश्वासदासपर
चैविस्तारन ॥ जानजगतहितसबगुणिसुसमनरायण
दासदिय । रचिभक्तरत्नमालासुधनगोविंदकंठविकाश
किय १६५ भक्तेशभक्तभवतोषकरिसंतनृपतिबासोकुँवर ॥
श्रीयुतनृपमणिजगतसिंहदृढभक्तिपरायण । परमप्रीति
कियसुबसशीललक्ष्मीनारायण ॥ जासुसुयशसहजहहि
कुटिलकलिकल्पजुधायक । अज्ञाअटलसुप्रकटसुभटक
टकनिसुखदायक ॥ अतिहीप्रचंडमार्तंडसमतमखंडनदो
दंडबर । भक्तेशभक्तभवतोषकरिसंतनृपतिबासोकुँवर
१६६ टीका ॥ जगताकोपनमनसेवाश्रीनारायणजुभयो
ऐसोपारायणरहैडोलासंगही । लरबेकोचलैआगेआगेस
दापाछेरहैल्यावैजलशीशईशभख्योहियेरंगही ॥ सुनियश
वंतजयसिंहकेहुलासभयोदेख्योदिल्ली मांभनीरल्याव
तअभंगही । भूमिपरिविनैकरीधरीदेहतुमहींनेजातेपायो
नेहभीजिगयोयौप्रसंगही ६१८ ॥

विविधभक्त अनुरक्त पंचरसकी भक्ति सबहीमें अनुराग कोऊ
दास्य कोऊ शृंगार के उपासक १ ॥ धरीदेह ॥ कवित्त ॥ जिन
हरि गाढ़िगाढ़ि एतक बनायो ताहि तुलसीको दल काहेते चढ़ा-
यो नाहि । खान परधान सब रचे तेरे भावते पै ऐसी मन भावतो
जु तेरे मन भायो नाहि ॥ गाढ़ी करि गह्यो व्रत प्रभुको न मान्यो
कृत प्रभुने रिंकायो और प्रभुतैं रिंकायोनाहि । लक्षजगजीवनिके
नेहबिन देहधरी जावो जग माहिं ऐसे मेरेजानि जायोनाहि २ ॥

नृपजयसिंहजूसौबोल्योकहानेहमेरे तेरीजुबहिनता
 तीगंधकोनपाऊमैं । नामदीपकुँवरिसोबड़ीभक्तिमानजा
 तवहरसखानिएपैकछुकलड़ाऊमैं ॥ सुनिसुखभयोभारी
 इतीरिसवासौटारीलियेगाँवकाढिफेरि दियेहरिध्याऊमैं ।
 लेखिकैपठाईवाईकरैसोईकर्नदीजे लीजेसाधुसेवाकरि
 नेशिदिनगाऊमैं ६१९ ॥ मूल ॥ गिरिधरनग्वालगोपा
 लकोसखासांचलोसंगको ॥ प्रेमीभक्तप्रसिद्धगानअति
 गद्गदवानी । अंतरप्रभुसोंप्रीतिप्रकटरहैनाहिनछानी ॥
 श्रुत्यकरतआमोदविपिनतनवसनत्रिसारै । हाटकपटहि
 उदानरीझिततकालउतारै ॥ मधिनालपुरैमंगलकरनरा
 नरच्योरसरंगको । गिरिधरनग्वालगोपालकोसखासांच
 लोसंगको १६७ ॥ टीका ॥ गिरिधरनग्वालसाधुसेवहीसों
 ल्यालजाके देखियोनिहालहोतप्रीतिसांचीपाईहै । सं
 ततनछूटेहूतेलेतचरणामृतजो औरअबरीतिकहौकापै
 जालिगाईहै ॥ भयेद्विजपंचइकठारैसोऊपंचमानोआन्यो
 प्रभामांझकहैछांडोनसुहाईहै । जाकेहोअभावमतिलैबी
 नंप्रभात्रजान्योमृतकयोबुद्धिताकोवारोसुनिभाईहै ६२० ॥

गद्गद ॥ एकादशे ॥ वाग्गद्गदाद्रवतेयस्यचित्त हसत्यभीक्षण
 शदितिकत्रिच्च । विलज्जउद्गोपतिनृत्यतेच मद्भक्तियुक्तोभुवनं
 मुनाति ॥ विश्वासःसमतानित्यं सख्यत्वंभीवउच्यते ॥ द्वै मित्रन
 को दृष्टान्तः ॥ ऐसे विश्वास होय तौ हरि सदा संगही रहै जैसे
 राण्डवनके ॥ दोहा ॥ समता शिष्य सुमित्रता हिये सुदृढ़ वि-
 श्वास ॥ पांडव द्रौपदि गज समय प्रकट भये अनियास ॥ सुई
 हाथीनको दृष्टांत ॥ या वचनसों सत्यव्रत राजाको सन्देह भयो
 राजीगर को दृष्टांत ३ ॥

मूल ॥ गोपालीहरिजनपोषकोजगतयशोदाभवतरी ॥

प्रकटअंगमें प्रेमनेमसोंमोहनसेवा। कलियुगकलुषनलग्यो
 दासतेकबहुंनखेवा ॥ बाणीशीतलसुखदसहजगोविंदधु
 निलागी। लक्षणकलागंभीरधारसंतनअनुरागी ॥ अतिअं
 तरशुद्धसदारहैरसिकभक्तिनिजउरधरी । गोपालीहरिज
 नपोषकोजगतयशोदाअवतरी १९८ श्रीरामदासरसरीति
 सोंभलीभांतिसेवतभगत ॥ शीतलपरमसुशीलवचन को
 मलमुखनिकसै । भक्तउदितरविदेखिउदौवारिजजिमिदि
 गसै ॥ अतिआनंदमनउमंगिसंतपरिचर्याकरई। चरणघो
 यदंडवतविविधभोजनविस्तरई ॥ वल्लभननिवासविइवास
 हरियुगलचरणउरजगभगत । श्रीरामदासरसरीतिसोंभ
 लीभांतिसेवतभगत १९९ ॥ टीका ॥ सुनि एकसाधुआयो
 भक्तिभावदेखिवेको बैठेरामदासपूछैरामदासकौनहै । उ
 ठेआपधोयेपांवआवै रामदासअवरामदासकहांमेरेचाहि
 औरगौनहै ॥ चलौजूप्रसादलीजैदीजैरामदासआनियही
 रामदासपगधारोनिजमौनहै । लपटानोपायनसोंचायनि
 समातनाहिं भायनिसोंभख्योहियोछाईयशजौनहै ६२१ ॥

जनपोषको ॥ मल्लिङ्गमङ्गलजनदर्शनस्पर्शनार्चनम् ॥ परिच
 र्यास्तुतिप्रह्लागुणकर्मानुकीर्तनम् ॥ सो भगवान्को यशोदाजीने
 लड़ायो साधनीके लड़ाइवेकी मनमें अभिलाष रहीही गोपालीरूप
 धरिके पूरणकरी १ भलीभांति ॥ एकादशे ॥ मङ्गलपूजाभ्यधिका ०१
 चाहै अभिमान तो जातहूरहै पै जाति अभिमान न जाय जन्मते
 मरणताई रहै चितामें धस्यो तऊ कहै ब्राह्मण हाथलगवै और न
 लगावै यह सनौढिया ब्राह्मण साधु इष्ट माने बडो आश्चर्य है ॥
 बेटीको विवाह घरबडोउतसाहभयो कियोपकवानसब
 कोठेमांभधरे हैं । करैरखवारीसुतनातीदियेतारोरहै और
 हीलगाइतारीखोल्योनहींडरेहै ॥ आयेगृहसंततिन्हैपोट

निबँधायदईपायोयोंअनंतसुखऐसेभावभरे हैं । सेवाश्री
 बिहारीलालगाईपाकस्वच्छताईमेरे मनभाईसबसाधुउर
 हरे हैं ६२२ ॥ मूल ॥ बरविप्रसारसुतघरजनमरामराय
 हरिरतिकरी ॥ भक्तिज्ञानवैरागयोगअंतरगतिपाग्यो ।
 कामक्रोधमदमोहलोभमत्सरसबत्याग्यो ॥ कथाकीरतन
 मगनसदाआनंदरसभूल्यो । संतनिरखिमनमुदितउदि
 तरविपंकजफूल्यो ॥ बढिबैरभावजिनद्रोहकियतासुपाग
 खसिभूपरी । बरविप्रसारसुतघरजनमरामरायहरिरति
 करी २०० भगवंतमुदितउदारयशरसरसनाआस्वाद
 किय ॥ कुंजबिहारीकेलिसदाअभ्यंतरभाशौ । दंपतिसह
 जसनेहप्रीतिपरमितपरकाशौ ॥ अनन्यभजनरसरीतिपुष्ट
 मारगकरदेखी ॥ विधिनिषेधबलत्यागिपागिरतिहृदयविशे
 खी ॥ श्रीमाधवसुतसम्नतरसिकतिलकदामधरसेवलिय ।
 भगवंतमुदितउदारयशरसरसनाआस्वादकिय २०१ ॥

रामराय ॥ भगवान्दासजी के गुरु रहैं ॥ गोकुलस्थगोसाई
 जीको अरु भगवान्दासजी को प्रसंग ॥ दोहा ॥ सुतहित सुधि
 ता हंस में ताके अचरज नाहि ॥ कामदेह को हंसकरि त्यहि दे-
 खन सब जाहि १ ऐराकी निजगति चले ताको अचरज नाहि ॥
 पुनिखर ताकी गतिचले त्यहि देखन सब जाहि २ तब गोसाई
 जी सुनिके बहुत प्रसन्नभये ॥ साधुन के ये लक्षणहैं क्यों न आदर
 होय १ वैरभाव ॥ दोहा ॥ कमलहृद कोमलमिल्यो नंदनकाटत
 ताहि ॥ काठ कटोर हृदमिल्यो मधुकर काटतजाहि २ ॥

टीका ॥ सजाकेदिवानभगवंतरसवंतभयेतृन्दावनबा
 सिनकीसेवाऐसीकरीहै । विप्रकेगुसाईसाधुकोउन्नजवा
 सीजाहुदेतबहुधनएकप्रीतिमतिहरीहै ॥ सुनिगुरुदेवअ
 धिकारीश्रीगोविंददेवनामहरिदासजायदेखैचितधरीहै ।

योगताईसीवाप्रभुदूधभातमांगिलियो कियोउतसाहत
ऊपेवैअरवरीहै ६२३ सुनीगुरुआवतअमावतनकिहू
अंगरंगभरितियासोयोकहीकहाकीजिये । बोलीघरवारप
ठसंपतिभँडारसब भेटकरिदीजैएकधोतीधारिलीजिये ॥
रीभेलुनिबानीसांचीभक्तितेरीजानीमेरे अतिमनमानीक
हिआखैजलभीजिये । यहीवातपरीकानश्रीगुसाईलईजा
निआयेफिरिदृन्दावनपनमतिधीजिये ६२४ रह्योउतसा
हउरदाहकोनपारावार कियोलैविचारआज्ञामांगिवनआ
येहैं । रहेसुखलहेनानापदरधिकहैएक रसनिरवहैब्रजवा
सीजालुटायेहैं ॥ कीनीघरचोरीतऊनेकुनासामोरीनाहिबो
रीमतिरंगलालप्यारीदृगछायेहैं । बड़ेबड़भागीअनुरागी
रतिजागीजगमाधवरसिकवातसुनौपितापायेहैं ६२५ ॥
नेकुनासा मोरी नाहिं ॥ कवित्त ॥ धनलेहु जनलेहु अरधंगी
हरिलेहु साँगैतेन देहुँ जोपै उदभटगामी हैं । सुतहू को मारौ तन
दूकदूककरिडारौ दूखहूको न निवारौ बड़े मति ठामी हैं ॥ ऐसे
ब्रजवासी ताकी जगकरे उपहासी मेरेतो अभासी घेतौ सुकृत
सुधामी हैं । पुनिहोतौ ज्ञानौ भगवंत इष्ट करिमातौ इनमें जो
दोषआनी बड़ी जियखामीहैं १ ॥ दोहा ॥ वांदर कांटेडीमदुख
ब्रजवासी अरु चोर ॥ षटकलेश या कुंजमें आशा युगल किशोर ॥
आयोअंतकालजानिबेसुधिपिलानिसबआगरेतेलैकैच
लेदृन्दावनजाइयेआयेआधीदूरिसुधिआईबोलेचूरहूकै
कहालियेजातकूरकहींजोईध्याइये ॥ कह्योफेरोतनवनजा
येबेकोपात्रनहींजरैवासआवैप्रियापियकोनभाइये । जान
हारोहोइसोईअंयगोयुगलपास ऐसेभावराशिचलिताही
ठौरआइये ६२६ ॥ मूल ॥ दिहदुर्लभमानुषदेहकोलालम
तीलाहोलियो ॥ गौररयामसौप्रीतिप्रीतियमुनाकुंजनसौं ॥

बंशीबटसों प्रीति प्रीति ब्रजरजपुंजनिसों ॥ गोकुलगुरुजन
प्रीति प्रीति घनबारहवनसों । पुरमथुरासों प्रीति प्रीति गिरि
गोबर्द्धनसों ॥ बसवास अटल वृन्दा विपिन दृढ़ करिसोनगरी
क्रियो ॥ दिह दुर्लभ मानुष देह को लाल मती लाहो लियो २०२

दुर्लभ ॥ दोहा ॥ कहूं कटनकट प्रेमकी सीखो लाल विवेक ॥
जैसे नौलख कामरूप पै दरवाजो एक १ एकदशे ॥ दुर्लभो मानु
षो देहो देहिनाक्षण भंगुरः २ गौरश्यामसों ॥ तस्माज्ज्यातिरभूद्वेधा
राधामाधवरूपकम् ॥ तस्मादिदं महादेवि गोपालेनैव भाषितम् २ स
ब्रह्महासुरापीच स्वर्णस्तेयी च पञ्चमः ॥ एतैर्दोषैर्विलप्येत तजोभेदा
न्महेश्वरि ३ सो लाड़िलीलाल लड़ाये जाते नहीं लाहो लह्यो ४
यमुना ॥ क्वचित् ॥ सात्रल वरण गात न्हातजाको करै गौर आप
जलरूप वाको करै कलिरूप है । आपनो प्रवाह वाहि करै थिर
वृन्दावन आपघटै वड़े वह एकही स्वरूप है ॥ आप रज राखै वाके
खोवै रज तमतीनों कीनों और ठाट यह कौतुक अनूप है ॥ कृष्ण
पटरानी ऐसी यमुना बखानी कहिसकत न बानी नीके जानै भक्त
भूप है ५ वास अटल ॥ दोहा ॥ छांड़िस्वाद सुख देहके और जगत
को लाज ॥ मनहि न मारत हारिके वृन्दावन में गाज ६ ॥

कविजनकरत विचार बड़ो को उताहि मनीजे । कोउक
है अवनी बड़ी जगत आधार फनीजे ॥ सोधारी शिरशेषशेष
शिवभूषणकीनो । शिवआसनकैलासभुजनभरिरावणली
नो ॥ रावणजीत्यो बालिबाली राघवइकशायकगड़े । श्रीअ
गरकहै त्रैलोक्यमें हरि उरधरि तेबड़े २०३ हरिसुयशंप्रीति
हरिदासकेत्यो भावै हरिदासयश ॥ नेहपरस्पर अघटनिब
हिचारौ युग आयो । अनुचरको उत्कर्षश्याम अपने मुखगा
यो ॥ आतप्रोत अनुराग प्रीतिवोही जगजानै । पुरप्रवेश
रघुवीरभृत्यकीरति जु बखानै ॥ श्रीअगरअनुगगुणवरणते

सीतापतितिनहोयवश । हरिसुयशप्रीतिहरिदासकेत्यो
भावेहरिदासयश २०४ ॥

विचार करिकही ॥ अबनि बड़ी जैसे नारायण भृगु आदिक
यज्ञ करके कहै ॥ समर्चनकौनको करै जो बड़ो होय सो भृगु ने
नारायणके परीक्षा करी सो क्षमाकरिके नारायणही बड़े ॥ ऐसे
क्षमासे पृथ्वी बड़ी १ हरि उरधारै ॥ कवित्त ॥ सबहीते बड़ीक्षिति
क्षितिहूँते सिंधुबड़े सिंधुहूँते बड़े सुनि वारिध अँचैरहे । तिनहूँतेबड़े
नभ तामें सुनिसे अनेक जाके बीच तारागण चारों ओर छैरहे ॥
नभहूँते बड़े पगवावन बढ़ाये जव तिनकी उँचाईदेख तीनोंलोकने
रहे । तिनहूँते बड़े संत साहिव अगमगति ऐसेहरि बड़ेजाके हृद
यर कै रहे १ भागवते ॥ निरपेक्षंमुनिशान्तनिर्वैरंसमदर्शनम् १
जिनके चरणकी रज हरिने चाही याते वही बड़े ३ हरिसुयशनव
मे ॥ साधवोहृदयंमह्यं साधूनांहृदयंत्वहम् ॥ मदन्यंतेनजानन्तिना
हेतेभ्योमनागपि ॥ मनुष्य पागपलटै हरिने हृदयपलटै हरिसाधन
के गुण कहै अरु सुनै जैसे साधु हरिकेगुण कहै अरु सुनै पुरप्रवेश
करतकहै तो भरतसौं हनुमान् आदिककेसुने नारदजी सौं पांडव-
निके सन्तहूँ अनन्यहै जैसे प्रह्लाद ऐसेही हरि अनन्यहै ५ ॥

उत्कर्षसुनतसन्तनहूँकोअचरजकोऊजनिकरौ ॥ दुर्वा
साप्रतिश्यामदासवसताहरिसाखी । ध्रुवगजपुनिप्रह्लाद
रामशबरीफलसाखी ॥ राजसूययदुनाथचरणध्वैजूठ
उठाई ॥ पांडवविपतिनिवारिदियोविषविषयापाई ॥ कलि
युगविशेषपरचौप्रकटआस्तिकहूँकैचितधरौ । उत्कर्षसु
नतसंतनहूँकोकोऊअचरजजनिकरौ २०५ ॥ फलश्रुति
सार ॥ दोहा ॥ पादपयेइहिसींचतेप्रविंअंगअंगपोष ॥
पूरवजाज्योवरनतेसबमानियोसँतोष २०६ ॥ भक्तजितेभू
लोकमेंकथेकौनपैजाय ॥ समुदधानश्रद्धाकहांचिरियापेट
समाय २०७ ॥ श्रीसूरतिब्रैष्णवलघुदीरघगुणनअगा

ध ॥ आगेपाछेबरेतैजिनमानोअपराध २०८ फलकोशो
भालाभतरुतरुशोभाफलहोय ॥ गुरुशिष्यकीकीर्तिमें
अचरजनाहींकोय २०९ चारियुगनमेंजेभगततिनकेपग
कीधूरि ॥ सर्वसुशिरधरिराखिहोमेरीजीवनमूरि २१० ॥

कर्मानन्द चारनकी छरी प्रभु लायदई यह हम न मानेंगे
दुर्वासा प्रति हरिने बस्तुतः कही ॥ नवसे ॥ अहभक्तपराधीनो
ह्यस्वतन्त्रइवद्विजः १ ॥ पृथ्वीराजको प्रभुने द्वारकासां आयके
दरशनदीनो हम न मानेंगे ध्रुवसधोर्वने दिदृक्षयागतः कौधीप्रेम-
निधिको प्रभु मसाललैके आये यह हम न मानेंगे जैसे गजको
प्रतिमाकू नामदेवने दूध पिवायो वा इनके बोलते हरि आयगये
यह हम न मानेंगे जैसे प्रह्लाद कर्माके खीचरीखाते ते त्रिलोचनके
घरमें चौदह महीना प्रसादपायो सो हम न मानेंगे जैसे शवरी
सनको स्वरूप धरिके राजाके तेल लगायो यह हम न मानेंगे जैसे
राजसूययज्ञमें कवीरकी जागे जागे रक्षा प्रभुनेकरीसोहम न मानें-
गे जैसे बहुपाण्डव विपत्तिनिवार अंगदकोबहिनने विषदियो और
प्रभाव न भयो सीराको विष नन्दने दियो सो प्रभाव न भयो सो
हम न मानेंगे जैसे चन्द्रहास के अक्षर ऐसे प्रभाव १ कलि विशेष
तीनियुगनमें तो परचे होयहीहै पर कलियुगमें विशेष आस्तिकपै
दृष्टांत महापुरुषको अरु ऊंटको २ ॥

जगकीरतिमंगलउदयतीनीतापनशाय ॥ हरिजनको
गुणवरणतेहरिहृदअटलबसाय २११ हरिजनकोगुणवर
णतेजोजनकरैअसूय ॥ इहांउदरबाढेव्यथाअरुपरलोक
नसूष २१२*जोहरिप्राप्तिकीआशहैतौहरिकोयशगाय ॥
नतरुसुकृतभुजेबीजज्योजनमजनमपञ्चिताय २१३ ॥

जगकीरति ॥ एकादशे ॥ मालिङ्गमङ्गलजनदर्शनस्पर्शनार्च
नम ॥ परिचर्यास्तुतिप्रह्लागुणकर्मानुकीर्तनमः १ मेरो अरुमेरेभक्त
को गुण सामान्य है भक्त भगवन्त में भेद नहीं ॥ बैष्णवो समद

हस्तु तस्मात्पूज्यो महामुने ॥ अन्ययत्नं परित्यज्य वैष्णवान्भजशा
 श्वतम् १ तृतीयेमैत्रेयवाक्यम् ॥ शारीरामानसादिव्या वैहासेयेच
 मानुषाः ॥ भौतिकाश्चकथंक्लेशावाधन्तेहरिसंश्रयम् २ हरिजनको
 मार्कण्डेयवाक्यम् ॥ योहिभागवताँल्लोके उपहास्यं द्विजोत्तम ॥ क-
 गोतितस्यनश्यन्ति धर्मार्थसुयशःसुताः ३ निन्दांकुर्वन्तियेमहा वै
 ष्णवनांमहात्मनाम् ॥ पतन्तिपितृभिस्सार्धं महारौरवसंज्ञके ४
 आदिपुराणे ॥ समभक्तजनान्दृष्ट्वा निन्दांकुर्वन्तियेनराः ॥ तेषां
 सर्वाणिनश्यन्ति सत्यं सत्यं धनं जय ५ दशमे भगवद्वाक्यम् ॥ राजसा
 घोरसंकल्पाः कानुकाअहिमन्यवः ॥ दांभिकामानिनः प्रायो विहसं
 त्यच्युतप्रियान् ६ अतूया पद ॥ श्रीपति दुखित भक्तअपराधैः ।
 संतनद्वेष द्रोहता करि नित आरति सहित मोहिं आराधै ॥ सवै
 सुनो वैकुण्ठ के वासी सत्य कहत मानो जिन खेदै । तिनपर कृपा
 कैसेकै करिहो पूजत पावँ कंठको छेदै ॥ संतन द्रोह प्रीतिमोह
 सों मेरोनाम निरंतर लैहै । अग्रदास भागदत्त वदतहै मोहिं भ-
 जत पर यमपुर जैहै १ इहां उदर वाढे वृथा जालन्धरका रोग ॥
 होय अथवा अनेक योनिकी व्यथाहोय ? ॥

भक्तदामसंग्रहकरैकथनश्रवणअनुमोद ॥ प्रभुकोप्यारो
 पुत्रसोवैठेहरिकेगोद १४ अच्युतकुलयशवैरयकजाकीम
 तिअनुराग ॥ भक्तभजनकेसुकृतकोनिश्चयहोयविभागि
 १५ भक्तदामजिनजिनकथीतिनकीजूठनपाय ॥ सोमलिसा
 रुद्वैअक्षरकीन्होसिलौबिनाय १६ काहकेवलयोगयज्ञकुल
 करनीकीआसा ॥ भक्तनाममालाउरबसौनरायणदास २१७
 इति श्रीभक्तमालमूलश्रीनारायणदासजीकृतसमाप्तम् ॥

टीकाकर्ताकेइष्टगुरुदेववर्णनं ॥ कवित्त ॥ रसिकाई
 कविताईजाहिदीनीतिनपाईभईसरसाई हियेनवनवचा
 ईहै । उररंगभवनमेराधिकारवनवसेलसेज्योमुकुरमध्य
 प्रतिनिवभाईहै ॥ रसिकसमाजमेबिराजरसरराजकहैचहै

मुखसवैफूलेसुखसमुदाई है । जनमनहरिलालमनोहरना
मपायोउनहूकोमनहरिलीनोयातेराईहै ६२७ ॥

भक्तिदाससंगहकरे ॥ नारदगीतायाम् ॥ तिसुतेवैष्णवशास्त्रालि
खितंयस्यमन्दिरे ॥ तत्रनारायणोदेवः स्वयं वसति नारद १ विभागो ॥
एक बापके चारिपुत्र कोऊ वरषको कोऊ पांचवरषको कोऊ छह
वरषको कोऊ आजको बांठो बरोवरिपावै ॥ माला ॥ दोहा ॥ श्रीना
भानभ उदित शशि भक्तमालसो जान ॥ रसिक अनन्य चकोर
तुम पान करौ रसखान १ आगम निगम अरु स्मृति सब पुराण
मतसार ॥ भक्तमाल में लाखधरि संतभये भवपार २ ॥

इनहीकेदासदासदासप्रियादासजानोतिनलैबखानो
मानोटीकासुखदाईहै । गोबर्द्धननाथजकेहाथमनपखो
जाकोकखोवासठंदाबनलीलामिलिगाईहै ॥ मतिअनु
सारकह्योलह्योसुखसंतनके अंतकोनपावैजोईगावैहिय
आईहै । घटबढ़िजानिअपराधमेरोक्षमाकीजैसाधुगुण
ग्राहीयहमानिकैसुनाईहै ६२८ कीनोभक्तमालसुरसाल
नाभास्वामीजीनेतरेजीवजालजगजनमनपोहनी । भक्त
रसबोधनीसुटीकामतशोधनीहै बाँचतकहतअर्थलागेअ
तिसोहनी ॥ जोपैप्रेमलक्षनाकीचाहअवगाहियाहि मिटे
उरदाहनेकुनैननहूजोहनी । टीकाअरुमूलनामभूलिजा
यसुनैजवरसिकअनन्यसुखहोतविश्वमोहनी ६२९ ॥

वृन्दावन ॥ कवित्त ॥ लागी अति प्यारीभूमि जहाँप्रियाप्रीतम
जु प्रीति सुविहारकरै तेईगुणगाइवो । रसिक अनन्यनिके लखि-
ये मुखारविंदगुणन निहारियेरु जिय हुलसाइवो ॥ मधुर रसाल
कथा लाल अभिराम नाम यही आठोयाम निज श्रवण सुनाइ-
वो ॥ वृन्दावन रसबस हैके सब छांडीमैतो गहीएक ऐडतजि पै-
डहून जाइवो १ विश्वमोहनी ॥ कवित्त ॥ घरहू छुटाये काम

पूरेनपरनपाये मन हुलसाये रूपमति श्रतिलालकी । असन वस-
न भूले लोचन सरोज फूले मनरसभूले सुनिवाणी सुरसालकी ॥
लोककुलधर्मटारे धीरज विदारिडारे रंग भरिभरि शोभा अध्वर
विशालकी । प्रेमसुखजालरही काठूना सँभालरही किधौंभक्त
माल किधौं बासुरी गोपालकी १ राधारमणकी गुसाँइन कथामें
उतावली चली घरमें ढहवी मूंददई एक स्त्री उतावली चली
पाइजेबगिरी एकस्त्रीने अपने हाथकी चूरीवैष्णवको फोरदीनी १

नाभाजूकोअभिलाषपूरणलैकियोमैंतौ ताकीमाखी
प्रथमसुनाईनीकेगाइकै । भक्तिविशदासजाकेताहीकोप्र
काशकीजैभीजैरंगहियोलीजैसंतनलड़ाइकै ॥ संवतप्र
सिद्धदशसातसौउन्हत्तरये फालगुनमासवदीसप्तमीवि
ताइकै । नारायणदाससुखराशिभक्तमाललैकै प्रियादास
दासउरबसौरहौछाइकै ६३० ॥

भक्तिविश्वास जाके होय ताहीकोसुनाइये अविश्वासीको न
सुनावै क्योकि नामापराध होयहै ॥ प्रमाण नामापराधका श्लो
क ॥ सतानिन्दानाम्नः परममपराधंवितनुते यतः ख्यातियातंकथ
मपिहिनिन्दाविषहते ॥ शिवस्यश्रीविष्णोर्षद्वहगुणनामादिसकलं
धियाभिन्नपश्येत्सखलुहरिनामाहितकरः ॥ गुरोरवज्ञाश्रुतिशास्त्र
निन्दनयथार्थवादोहरिनासकल्पनम् । नाम्नोबलाद्यस्यहिपापवु
द्धिर्नविद्यतेतस्ययमैर्हिशुद्धिः ॥ श्रुत्वापिनाममाहात्म्यंयःप्रीतिर
हितोत्तरः अहंममादिपरमोनाम्नि सौप्यपराधकृतः ॥ कवित्तः ॥ वेद
हूकी निंदा और साधुन की निंदाकरै गुरुकी अवज्ञा विष्णु शिव
भेदमानिये । नामहीके आसरे सों करै बहुपापऔ अश्रद्धावानही
सों उपदेशलै बखानिये ॥ एक अर्थवाद अरु बारवार कुतरककरै
सुनि माहिमाको हिये नहि आनिये । नामकी समान और धर्म
सब कर्मफल मानत ये अपराध दशजिय जानिये १ ॥ पंचाध्या-
यी ॥ हीन अश्रद्धा नास्तिकहूहरिधर्मबहिर्मुख । तिनसों कवहुं

न कहै कहै तो नहीं लहै सुख ॥ भक्तजननसों कहै सदा भा-
गवतधर्मबल । ज्योयमुनाकी मीन लीनदिनरहत यमुन जल ॥
यद्यपिसप्तनिधि भिद भेदनी यमुना निगमबखानई । त्योंतहीं
धारिधारारमत छवितनहीं जलआनई १ गीतायाम् ॥ श्रद्धावानन
सूयश्चशृणुयादपियोनरः ॥ सोपिमुक्तःशुभाल्लोकान्प्राप्नुयात्
पुण्यकर्मणा ९ श्रद्धावान् श्रोता सुन्योकरै चिंता नहीं १ ॥

अग्निजरावोलैकैजलमेंबुड़ावोभावै शूलीपैचढ़ावो
घोरिगरलपिवायवी । बीछूकटवावोकोटिसापलपटावो
हाथीआगेडरवावोईतिभीतिउपजायवी ॥ सिंहपैखवावो
चाहौ भूमिगड़वावोतीखी अनीविधवावोमोहिंदुःखनहीं
पायवी । ब्रजजनप्राणकान्हवातयहकानकरो भक्तसोंवि
मुखताकोमुखनदिखायवी ६३१

इति श्रीभक्तमालटीकाभक्तिरसबोधनीसमाप्त ॥

अग्निजरावो ॥ पद ॥ जो दुखहोय विमुख घरआये । ज्यों
कारो कारीलोगे निशि कोटिक बीछूखाये ॥ दुपहरि जेठ परत
बारूमें घायनि लोनलगाये । कांठनमांभफिरै बिन पनहीं मूंड
भेटोलाखाये ॥ टूटत चाबुक कोटिपीठिपर तरवर बांधिउठाये ।
जो दुख होय अग्निके दाहे सर्वसु धनहिं हेराये ॥ ज्योंबांभहि
दुखहांत सौति के सुंदर बेटाजाये । देखतही सुखहांत जितो वह
विसरत नहिं विसराये ॥ भटकत फिरत निलज बरजतही कूकर
ज्यों झहराये । गारीदेत विलग नहिं मानत फूलत दमरीपाये ॥
अतिदुख दुष्ट जगतमें जेतै नेकु न मेरेभाये । वाके दरश परश
मिलवतही कहत व्यास यों न्याये ॥ दोहा ॥ दाग जु लाग्यो नी-
लको सौ मन साबुन धोय । कोटिन यतन प्रबोधिये कौवा हंस
न होय १ संगति भई तौ कहभयो हिरदो भयो कठोर । नौनेजे
पानीचढ़ो तऊ न भोजीकोर ॥ ऐसे शठ कथामे क्यों आवै है ॥
श्लोक ॥ देवोजातुक्षमावान्यो गन्धर्वोमधुरस्वरः । मानुषोमतिचा

सुर्यःपिशाचोमतिनिगुर्णः ॥यक्षोयस्यभयनास्तिराक्षसश्चोप्रताम
सः।खरश्चवाणीविभ्रष्टोभृगश्चमृत्तिकातरः ॥मर्कटोमतिचारण्डालः
सर्वभक्षीचवायसः । एवंजातिर्भनुष्येषुदशवासस्यगुच्यते १ तर्क
करवे को आवेहैं तर्क कहा वक्ता कहै प्रह्लादकी अगिनिते रक्षा
करी विमुख बोल्यो वक्ताहूको डारिदेहु वचनौ सांचोसांचो नहीं
भूठो वक्ताकहै रामनाम सौ पाथरतरै विमुखकहै अब तरावौतो
सांच नहीं तो भूठ वक्ता कहै गंगाजलसौ स्नानकरावो विमुख
कहै मत्तिकरावो पादोदकी है वक्ता कहै सुर्यको यमुनाजलसौ
जलदानकरै विमुख कहै मत्तिकरौ पुत्री है पुत्री को जल कैसे
लेगो वक्ता कहै तुलसीचरणामृत प्रसाद लेहु विमुख कहै मति
लेहु उदर में विगरे याते इनसौ न कहिये २ ॥ ब्रजजनप्राण ॥
संधैया ॥ चंदन घोरिये विंदलगाइके कुंजनते निकस्यो मुसक्या-
तो । राजति है वनमाल गरे अरु सोरपखा शिरपै फहरातो ॥
जबते रसखानि विलोकतही तबते कलु और न मोहिसुहातो ।
प्रीतिकि रीति में लाज कहा कलुहै सो बड़ो यहनेहको नातो २ ॥
एक समै वनसीधनि में रसखानि लियो कहनाम हमारो । ताक्ष-
णतेवह वैरिन सु कितौकियो भांकन देति न द्वारो । होतचवा-
इ बलायसौआलिरीजोभरि अंकभेलीजतप्यारो । घाटचलैतवहीं
ठटकी हियरे अटक्यो पियरेपटवारो २ ॥ घालकुटीअरुकामरिया
पर राज्य तिहंपुरको तजिडारों । आठहुसिद्धि नवोनिधिको मुख
नंद कि गाय चराय विसारों ॥ कोटिक ये कलधौतके धाम करीर
के कुंजन ऊपरवारों । रसखानिकहैं इन नैननसौं ब्रजके वनवाग
तड़ाग निहारों ३ अहोभाग्य १ स्कंदपुराणको इतिहास कृष्णके
पास एईगई वे न आये १ सोरठा ॥ जिन भक्तनकीमालपरिहारो

॥ तेईरसिक रसाल यसौसो वृन्दाविपिननित २ ॥

इति श्रीभक्तमालाख्यग्रन्थःसटीकःसंपूर्णः ॥

इत्तहार

देवीभागवतभाषा ॥

इसका उल्था पण्डित महेशदत्तसुकुलने किया है—इसमें मुख्य करके श्रीदेवी जी के पाठ आदिक का विस्तार और सर्वप्रकार की शक्तियोंका कथन और उनके अवतार, मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र, कवच, कीलक, अर्गला, पूजा, स्तोत्र, माहात्म्य, सदाचार, प्रातःकृत्य, रुद्राक्षमहिमा, गायत्री और देवियों के पुरस्करण का वर्णन, सन्ध्योपासन, ब्रह्मयज्ञादि असंख्य तन्त्रमन्त्ररूप विषय हैं भाषा ऐसी स्पष्ट है कि साधारण लोग भी समझसक्ते हैं ॥

लिङ्गपुराण ॥

इसका उल्था छापेखाने के बहुत खर्च से जयपुरनिवासि पण्डित दुर्गाप्रसादजीने भाषा में किया है—जिसमें अनेकप्रकार के इतिहास, सूर्यवंश, चंद्रवंशका वर्णन, ग्रह, नक्षत्र, भूगोल और खगोलका कथन, देव, दानव, गंधर्व, यक्ष, राजस और नागादि की उत्पत्ति इत्यादि बहुतसी कथायें हैं ॥

भक्तमाल ॥

राजा प्रतापसिंहकृत—इसमें संसारभरके वैष्णव भक्तों की कथा-रचित है ॥

श्रीवाराहपुराण पूर्वार्द्ध व उत्तरार्द्ध ॥

जिसका जयपुरनिवासि पण्डित माधवप्रसादजीने मुंशी नवलकिशोर जीके व्ययसे संस्कृतसे देवनागरीमें भाषा किया है और पण्डित दुर्गाप्रसाद और पण्डित सरयूप्रसादजीने शुद्ध किया है इसमें श्रीभगवान् वाराहनारायणने धरती से चौबीसहजार श्लोकों में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सिद्ध होने के लिये इतिहास संयुक्त कथायें वर्णन की हैं ॥

भैनेजर नवलकिशोर प्रेस

हजरतगंज—लखनऊ

